हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला २१७

रोगनामावलीकोष

(रोगनिदर्शिका)

तथा

वैद्यकीय मान-तौल

रचयिता
वैद्यराज हकीम ठा० दलजीत सिंह

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस,
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

२१७

रोगनामावलीकोष

(रोगनिदर्शिका)

तथा

वैद्यकीय मान-तौल

रचयिता

वैद्यराज हकीम ठा० दलजीत सिंह

रायपुरी, चुनार, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

भूमिका लेखक

डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर

बी. एस्-सी., एम. बी. बी. एस्., आयुर्वेदाचार्य,

प्रोफेसर : आयुर्वेद महाविद्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : द्वितीय, वि० सं० २०४२
मूल्य रु० :

© Chowkhamba Sanskrit Series Office
K. 37/99, Gopal Mandir Lane
Post Box 1008, Varanasi-221001 (India)
Phone : 63145

प्रधान वितरक
कृष्णदास अकादमी
पो० बा० नं० १११८
चौक, (मित्रा सिनेमा बिल्डिंग), वाराणसी-२२१००१

भूमिका

आयुर्वेदाचार्य—

श्री भास्कर गोविन्द घाणेकर

बी. एस्-सी; एम. बी, बी. एस्.

अँग्रेजोंकी राजकीय पराधीनता नष्ट होनेपर मानिक पराधीनता नष्ट करनेके लिए अँग्रेजी भाषाके स्थानमें हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित की गयी। परन्तु जैसे केवल घोषणासे राजकीय पराधीनता नष्ट न हो सकी वैसे मानिक पराधीनता भी नष्ट न होगी। उसके लिए राजकीय पराधीनता नष्ट करनेके विविध प्रयत्नोंके समान अधिक वर्षों तक अनेक विद्वान् लेखकोंको अनेक दिशाओंसे विविध प्रयत्न करने पड़ेंगे। इन प्रयत्नोंमें प्राचीन विविध शास्त्रोंकी परिभाषाकी खोज करना, अर्वाचीन विविध शास्त्रोंके लिए प्राचीन परिभाषाके आधारपर नयी परिभाषाका निर्माण करना, उसके कोश बनाकर उन्हें प्रकाशित करना ये प्रयत्न विशेष महत्वके हैं क्योंकि, किसी भी भाषाका विकास, अभ्यास तथा प्रसार अच्छे-अच्छे शब्दकोशोंके बिना नहीं हो सकता। कविराज ठाकुर दलजीत सिंहजीका यह 'रोगनामावली कोश' उनके द्वारा आजतक वैद्यक शास्त्रके उन्नत्यर्थ इस दिशामें किये हुए अनेक प्रयत्नोंमेंसे एक प्रयत्न है।

इस संसारमें कोई भी चेतन सृष्टपदार्थ अमर नहीं है। किसी न किसी दिन उसका नाश हुए बिना नहीं रहता। जिस घटनासे यह नाश होता है उसको मृत्यु कहते हैं। मृत्युके अनेक कारण होते हैं जिनमें रोग एक प्रधान कारण है। इसका तात्पर्य यह है कि रोग केवल मनुष्योंमें ही होते हैं, यह बात नहीं, अपितु सम्पूर्ण चेतन देहधारियोंमें पाये जाते हैं। देहनाशनकी दृष्टिसे यद्यपि रोग एक[1]

---

१. एको रोगो रुजाकरण(रुज् हिंसायाम्)सामान्यादिति भार्गवः प्रमतिः॥

(काश्यपसंहिता)

है तथापि हेतु, लक्षण, शारीरिक विकृति इत्यादिके कारण उसके असंख्य[1] भेद होते हैं। और इन भेदोंका आपसमें पार्थक्य करनेके लिए उनके नामकरणकी आवश्यकता होती है। आयुर्वेदने प्राचीनकालमें मानवी रोगोंके भेदों तथा उनके नामोंकी ओर काफी ध्यान दिया। परन्तु उसकी निदानचिकित्सापद्धति त्रिदोषाधिष्ठित होनेके कारण प्रत्येक भेदके लिए स्वतन्त्र नाम होना ही चाहिए इस प्रकारकी उसको आवश्यकता[2] प्रतीत न हुई। प्राचीन आयुर्वेदमें अनेक आधुनिक रोग न मिलनेके जो अनेक कारण हैं उनमें यह कारण प्रधान है।

अर्वाचीन युगकी विशेषताओंको प्रदर्शित करनेके लिए उसको अनेकों द्वारा अनेक नाम दिये गये हैं। भाषाकी दृष्टिसे मैं उसको **वैज्ञानिक नामकरण युग** (Age of scintific nomenclature) कहता हूँ, क्योंकि संपूर्ण सृष्टिका कोई भी ज्ञात पदार्थ अनामक न रहे, प्रत्येकके लिए निश्चित नाम हो इस प्रकारकी इस युगकी प्रवृत्ति रही है। इसका परिणाम अन्यान्य शास्त्रोंके समान वैद्यक शास्त्रपर भी हुआ और रोगोंके असंख्य भेदोंके लिए निश्चित नाम रक्खे गये।

यह रोगनामावली कोश मनुष्योंमें होनेवाले रोगोंके नामोंका है। अतः इसमें आयुर्वेदोक्त सम्पूर्ण प्राचीन रोगों और लक्षणोंका समावेश किया गया है। इनके अतिरिक्त अर्वाचीन कालमें पाश्चात्य वैद्यकोक्त असंख्य रोगों और लक्षणोंके अँग्रेजी नामोंके लिए आधुनिक विद्वान् लेखकों द्वारा जो नये हिन्दी तथा संस्कृत प्रतिशब्द बनाये गये हैं और बहुत कुछ प्रचलित हो चुके हैं वे भी इसमें समाविष्ट हैं। संक्षेपमें मानवी रोगों और लक्षणोंके नामोंकी दृष्टिसे हिन्दीमें यह अद्ययावत् संग्रह कोश बन गया है।

इस कोशमें सम्पूर्ण रोगों और लक्षणोंके नाम देवनागरीमें वर्णानुक्रमसे दिये गये हैं; प्रत्येक नामके सामने संक्षेपमें उसका अर्थ दिया है, जहाँ अधिक विवरणकी आवश्यकता रही है वहाँ आयुर्वेद तथा पाश्चात्य वैद्यकके आधारपर स्पष्टीकरण

---

१. हेतुप्रकृत्यधिष्ठानविकल्पायतनार्थतः। ज्ञेया रोगा असंख्येयादिचिकित्सानां च विस्तरात्॥ (काश्यपसंहिता)। त एवापरिसंख्येया भिद्यमाना भवन्ति हि। रुजावर्णसमुत्थानस्थानसंस्थाननामभिः (चरक)।

२. विकारनामा कुशलो न जिह्रीयात् कदाचन। न हि सर्वविकाराणां नामतोऽस्ति ध्रुवा स्थितिः॥ (चरक)।

किया गया है और जहाँपर मतभेद रहा है वहाँपर उसका निर्देश करके विद्वानोंके वचन उद्धृत किये गये हैं। इस प्रकार अर्थविवरण करनेके पश्चात् देवनागरीमें फारसी और अरबी प्रतिशब्द दिये हैं। अन्तमें देवनागरी तथा रोमन लिपिमें अँग्रेजी तथा ग्रीक-ल्याटिन नाम भी दिये गये हैं। रोगोंके नाम तथा लक्षण चिकित्सापद्धति निरपेक्ष होनेके कारण हिन्दीके द्वारा आयुर्वेद, यूनानी, एलोपैथी या अन्य चिकित्सापद्धतिका अभ्यास करनेवाले विद्यार्थियोंके लिए, उनका व्यवसाय करनेवाले चिकित्सकोंके लिए, हिन्दीके वाचकों और लेखकोंके लिए यह एक बहुत ही उपयोगी संग्रहणीय कोश बन गया है। कोशके अन्तमें आयुर्वेद, यूनानी और एलोपैथीके नापतोलका भी कोश जोड़ा गया है। इससे इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

इस प्रकारका यह प्रथम ही प्रयत्न होनेके कारण इसमें कुछ दोषोंका रहना स्वाभाविक है। परन्तु पुस्तककी उपयोगिताकी दृष्टिसे ये दोष नगण्य हैं। आशा है द्वितीय आवृत्तिके समय ये दूर किये जायँगे।

अन्तमें मैं इस कोशके लेखनके लिए कविराज ठाकुर दलजीतसिंहका हृदयसे धन्यवाद करता हूँ और आशा करता हूँ कि जिस प्रकार आजतक आपने अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ लिखकर हिन्दीके द्वारा वैद्यकीय साहित्यकी सेवा की उसी प्रकार भविष्यमें भी ग्रन्थलेखनका कार्य जारी रखकर करते रहेंगे। इसके लिए मैं भगवान् धन्वन्तरिसे उन्हें शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्वास्थ्य प्रदान करनेकी प्रार्थना करता हूँ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
विजयादशमी
संवत् २००८

भास्कर गोविंद घाणेकर

प्रस्तावना

सम्प्रति भारतवर्षमें यद्यपि अनेक चिकित्सापद्धतियाँ प्रचलित हैं; तथापि उनमें प्रत्यनीक चिकित्सापद्धतिकी आयुर्वेदीय, यूनानी और पाश्चात्य अर्थात् एलोपैथीय यह तीन पद्धतियाँ विशेष प्रसिद्ध एवं मान्य हैं। इनमें आयुर्वेद और उसके बाद यूनानी सर्वाधिक प्राचीन—प्राचीनतम तथा एलोपैथी अर्वाचीन है। इनमें भी वास्तवमें यूनानी चिकित्सापद्धति किसी-न-किसी प्रकार आयुर्वेदसे ही संभूत, समय-समयपर उससे प्रभावित एवं परिपुष्ट हुई है तथा उसके बहुत समीप है। सिद्धान्त, औषधि, निर्माणकी पद्धति, निदान-चिकित्सापद्धति और व्यवहारपद्धति आदि यूनानी तथा आयुर्वेदकी बहुत-कुछ मिलती-जुलती हैं। वात-पित्त-कफके सिद्धान्तको भी यूनानी चिकित्सापद्धति किसी न किसी रूपमें स्वीकार करती है। इसलिए इसके सिद्धान्त आदिका ग्रहण आयुर्वेदमें सुगमतापूर्वक हो सकता है। किसी कालमें जिस प्रकार यूनानी चिकित्सापद्धतिके अनुयायी आयुर्वेदसे जो अंशांश भेदयुक्त, परन्तु अधिकांशमें उसके समान है, अपने सिद्धान्तादिको स्थिर अपरिवर्तित रखते हुए, उससे सब कुछ लेकर भी अपनी पद्धतिको निर्दोष रख सके। उसी प्रकार अपने सिद्धान्तोंको स्थिर रखते हुए जो कुछ भी उत्तम एवं संग्रहणीय विषय यूनानी (या पाश्चात्य) पद्धतिमें हैं, उन्हें अपनी पद्धतिमें लेनेमें कोई दोष नहीं है। इसी प्रकार यद्यपि एलोपैथीमें इन दोनोंसे कुछ अधिक भेद है, तथापि इसका मूल सिद्धान्त भी व्याधिप्रत्यनीक होनेसे यह भी मूलमें उनके समान ही है। अस्तु, इससे भी उत्तमोत्तम, विज्ञानसम्मत, उपादेय एवं आवश्यक विषय ग्रहण करनेमें कोई दोष नहीं है। क्योंकि विज्ञान और विद्याके लिए देश-काल, धर्म-जाति (वा पद्धति) का बंधन नहीं होता; वह कहींसे मिले, पवित्र, आदरणीय और ग्राह्य है।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है, प्रगति और समन्वयका युग है। हमें आयुर्वेदको उज्ज्वल बनाना है। इसके भण्डारको भरकर तथा समयोपयोगी सर्वांगपूर्ण एवं सर्वग्राही बनाकर इसको राष्ट्रीय चिकित्सापद्धतिके अपने प्राचीन आसनपर आसीन करना है। इस कार्यमें जिन चिकित्सापद्धतियोंसे हमें सहायता मिले, उनका स्वागत करना चाहिये। परन्तु इस कार्यमें सबसे बड़ी कठिनाई भाषाकी है। उक्त

तीनों पद्धतियोंके मूल ग्रंथ एवं शिक्षा-दीक्षा अलग-अलग भाषामें होनेसे ये तीनों पृथक्-पृथक् एवं परस्पर एक दूसरेसे दूर-दूर बनी हैं।

बड़े हर्षकी बात है कि आज देश स्वतंत्र हो जानेसे एवं जनतामें राष्ट्रीय चेतना जागृत हो उठनेसे एक राष्ट्रीय भाषा (एवं चिकित्सापद्धति) की ओर उनका ध्यान आकृष्ट हुआ है। फलतः भारतीय प्रजातंत्रकी राष्ट्रभाषा हिंदी घोषित कर दी गई है। इतना ही नहीं, अपितु उत्तरप्रदेशीय सरकारने तो यूनानी शिक्षाका माध्यम भी हिंदी घोषित कर दिया है तथा आयुर्वेदीय एवं यूनानी विद्यालयोंमें इन दोनों विषयोंके तुलनात्मक अध्यापनका आदेश भी जारी कर दिया है। ऐसा ही एलोपैथी अर्थात् पाश्चात्य वैद्यके संबन्धमें भी होनेवाला है और यह उचित भी है।

अस्तु, अब इस बातकी बड़ी आवश्यकता प्रतीत होने लगी है कि इन तीनों पद्धतियोंके तुलनात्मक या स्वतंत्र ग्रंथ हिंदी भाषामें लिखे जायँ। इस कार्यमें सबसे बड़ी कठिनाई पारिभाषिक शब्दोंकी है। प्रत्येक विज्ञानमें उसके अपने पारिभाषिक शब्द होते हैं। आयुर्वेद और यूनानी भी पाश्चात्य वैद्यककी भाँति एक विज्ञान है। अस्तु, उनमें भी उनके अपने पारिभाषिक शब्द हैं। इसलिए इन पद्धतित्रयके तुलनात्मक अध्ययन एवं विचारके लिए, जिसके बिना इनका समन्वय एवं एकीकरण असंभव है, इन तीनों पद्धतियोंके पारिभाषिक शब्दोंकी पर्यायावलीका ज्ञान नितांत आवश्यक है। यही उपाय है जिससे अनुवादकर्ताओं, लेखकों तथा तुलनात्मक अध्ययनकर्ताओंका अपना उक्त कार्य सुकर हो सकता है। इसके अतिरिक्त इससे इन तीनों पद्धतियोंके अनुयायियोंमें परस्पर मेल, सौहार्द्य, विचारोंका परस्पर आदान-प्रदान और इनमेंसे प्रत्येकका एक दूसरेको समीपसे समझना, आसान हो सकता है तथा इससे समयकी आवश्यकता भी पूरी हो सकती है।

इसी बातको ध्यानमें रखकर इस ग्रंथका प्रणयन किया गया है तथा पूर्वमें भी 'यूनानी द्रव्यगुणविज्ञान', 'यूनानी सिद्ध योग संग्रह', 'यूनानी वैद्यकके आधार-भूत सिद्धांत (कुल्लियात)', 'यूनानी चिकित्सा-विज्ञान' प्रभृति ग्रंथोंकी रचना तथा प्रकाशन किया जा चुका है। वर्तमान ग्रंथ उसी शृंखलाकी एक कड़ी है। इसका नाम रोगनामावली कोष है। इसमें सर्वप्रथम रोगके आयुर्वेदोक्त *(संस्कृत) प्राचीन और कुछ नवीन नाम अकारादि वर्णक्रमानुसार तथा उनकी* परिभाषा एवं रोगपरिचय हिंदीमें, फिर उनके अन्य संस्कृत, हिंदी या उर्दू, फारसी, अरबी, यूनानी तथा डॉक्टरी (अँग्रेजी, लेटिन) ठीक एवं निश्चित पर्यायनाम

हिन्दी लिपिमें और डॉक्टरी नाम अँग्रेजीमें भी दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त स्थान-स्थानपर विषयको सुबोध एवं सरल बनानेके लिए आवश्यक वक्तव्य लिखे गये हैं। इसके साथ ही इसमें रोगके भेदोंका भी नामोल्लेख कर दिया गया है, जिससे यह केवल रोग पर्यायोंका ज्ञान करानेवाली अर्थात् रोगनामावली ही नहीं, अपितु रोगोंका यथार्थ परिचय करानेवाली अर्थात् रोगदर्शिका कहलानेके सर्वथा उपयुक्त है। ग्रंथके अंतमें आयुर्वेदीय यूनानी, अरबी, फारसी और पाश्चात्यवैद्यकीय प्रायः सभी प्राचीन-अर्वाचीन मानतौलोंको आधुनिक प्रचलित मान-तौलोंके विवरणसहित हिंदी भाषा और लिपिमें अकारादि वर्णक्रमानुसार दिया गया है।

यह ग्रंथ तुलनात्मक अध्ययन-अध्यापनकर्ताओं, अनुवादकों, वैद्यों, हकीमों, डॉक्टरों तथा वैद्यकानुरागी अन्य लोगों, इन सभीके लिए उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा मत है।

इस पुस्तकके लिखनेमें मुझे अनेक संस्कृत, हिंदी, अरबी, फारसी, उर्दू तथा अँग्रेजी ग्रंथोंसे सहायता मिली है। अतः उन ग्रन्थकारोंके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। आयुर्वेद और पाश्चात्य वैद्यकके अपूर्व ज्ञाता, प्रसिद्ध लेखक, विद्वद्वर डॉक्टर भास्कर गोविंद घाणेकर बी० एस-सी, एम० बी० बी० एस, आयुर्वेदाचार्य, प्रोफेसर आयुर्वेद महाविद्यालय (हिंदू यूनिवर्सिटी) ने मेरी इस तुच्छ कृतिके लिए भूमिका लिखनेको जो उदारता दिखलाई है, उसके लिए मैं आपका हृदयसे आभार मानता हूँ।

यह संभव नहीं है कि इस ग्रंथमें त्रुटियाँ न हों। इसलिए मैं विद्वान् चिकित्सकों एवं सहृदय पाठकोंसे नम्र निवेदन करता हूँ कि आप लोग दोषोंकी ओर दृष्टि न देकर गुणोंको ग्रहण करें और लेखकके साहसको बढ़ावें। आपकी दृष्टिमें इसमें यदि कहीं त्रुटि ज्ञात हो तो उससे मुझे अवश्य सूचित करें, जिससे अगले संस्करणमें उसका परिहार कर दिया जावे।

आयुर्वेदानुसंधान प्रासाद
रायपुरी, चुनार
विजया दशमी सं० २००८

विदुषामनुचरः—
दलजीत सिंह
(आयुर्वेदीय विश्वकोषकार)

संकेताक्षरों का विवरण

अथर्व०	अथर्ववेद	सं०	संस्कृत
च०	चरक	हिं०	हिंदी
सु०	सुश्रुत	उ०	उर्दू
अ० सं०	अष्टाङ्गसंग्रह	यू०	यूनानी
अ० हृ०	अष्टाङ्गहृदय	फा०	फारसी
वा०	वाग्भट	अ०	अरबी
काश्यप	काश्यपसंहिता	अं०	अंग्रेजी
शार्ङ्ग०	शार्ङ्गधर	ले०	लेटिन
चक्र०	चक्रपाणिदत्त	फ्रें०	फ्रेंच
भे० म० माला	भेषजमणिमाला	रो०	रोमन
मा० नि०	माधवनिदान	दे०	देखो
याज्ञ०	याज्ञवल्क्य	बहुव०	बहुवचन
भेल०	भेलसंहिता	वि० दे०	विशेष देखो
भा०	भावप्रकाश		
चि०	चिकित्सास्थान		
यो० र०	योगरत्नाकर		

॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

रोग नामावली कोश

(अ)

अंशुघात—उष्णवातातपदग्ध ।

अंसशोष—बाहुशोष नामक वातव्याधि । सु० । अ० सं० । (अं०) ऑस्टिओआर्थ्राइटिस ऑफ दी शोल्डर-जॉइंट (Osteoarthritis of the shoulder joint) ।

अकालकृतरोग—यथाविधि आहार-विहारादि से शरीर की रक्षा न करने के कारण उत्पन्न हुए रोग । अकालकृत स्वाभाविक रोग । ये रोग कालस्वभाव के कारण नहीं होते, अपितु मिथ्याहाराचारादि से त्रिदोष वैषम्य होने के कारण होते हैं । इसलिये लिखा है—अपरिरक्षकृता अकालकृताः । इनका समावेश दोषबलप्रवृत्त रोगों में होना चाहिये ।

अकालज पलित—समय से पूर्व बाल श्वेत होना । पलित । सु० । (अ०) शैब गैरतबई । (अं०) होरिनेश (Hoariness), प्रिमेचर केनायटीज (Premature canities) दे० 'पलित' ।

अकालज्वर—अकालजनित ज्वर । (अ०) हुम्मा कह्तिय्या, हुम्मा नुक्सिय्या (नाकिसा), हुम्मा राजेआ । (अं०) फेमीन फीवर (Famine fever) ।

अक्षतनाम—नरकइहा । च० । दे० 'चिप्प' ।

अक्षिपाक—नेत्रशोथ । (अ०) इल्तिहाबुल्ऐन । (फा०) वरमे चश्म । (अं०) ऑफ्थल्माइटिज (Ophthalmitis) ।

अक्षिपाकात्यय—समस्त कृष्ण भाग का ढँकनेवाला शुक्ल (फूला) । (अ०) इन्सकाब सदीदी फ़िल्ऐन । (अं०) हाइपोपियोन अल्सर (Hypopyon ulcer (eye) ।

अक्षिशूल—नेत्रशूल। (हिं) आँख का दर्द। (अ०) अलमुल्ऐन। (फा०) दर्दचश्म। (अं०) ऑप्थल्मैल्जिया (Ophthalmalgia), ऑप्थल्मोडिनिया (Ophthalmodynia)।

अग्निदग्ध—अग्नि से जला हुआ। सु०। (अ०) हर्क़ुन्नार। (अं०) बर्न (Burn)।

अग्निदग्धज किलास—किलास का एक भेद। दे० 'किलास'।

अग्निमांद्य—दे० 'मन्दाग्नि'।

अग्निवात—दे० 'जालगर्दभ'।

अग्निविसर्प—आग्नेय विसर्प। च०। सुश्रुतोक्त वातज विसर्प।

अग्न्याशयिक रोग—क्लोमके रोग। (अ०) अमराज बानकरास। (अं०) पॅनक्रिएटिक कॅलक्युलाई (Pancreatic calculi)।

अग्न्याशयिक शोथ—क्लोम (लबलाब) की सूजन। (अ०) इल्तिहाबुल् बनकर्यास, वरम बानकरास। (फा०) सोजिश लबलबा। (अं०) पॅनक्रिएटायटिस (Pancreatitis)।

अग्न्याशयिक शोथ, चिरज—अग्न्याशयका चिरज शोथ। (अ०) वरम बानकरास मुज्मिन। (अं०) क्रॉनिक पॅनक्रिएटायटिस (Chronic pancreatitis)।

अग्न्याशयिकशोथ, दूषित—अग्न्याशयका दूषित शोथ। (अ०) वरम बानकरास फ़ासिद। (अं० ॲक्यूट नेक्रोसिस ऑफ दी पॅनक्रियास (Acute necrosis of the Pancreas)।

अग्न्याशयिकशोथ, रक्तस्रावी—अग्न्याशयका रक्तस्रावी (तीव्र) शोथ। (अ०) वरम बानकरास हादद जिरयानी। (अं०) ॲक्यूट हीमोरेजिक पॅनक्रिएटायटिज (Acute haemorrhagic Pancreatitis)।

अङ्कुशमुख कृमिरोग—रूढधान्याङ्कुराकार कृमिरोग (अ०) अमराज दूदए इश्ना अश्रिया फ़ोतातिया। (अं०) हुकवर्म डिज़ीज़ (Hookworm disease) ऐंकिलोस्टोमिआसिस (Ankylostomiasis)।

अङ्गघात—दे० 'घात'।

अङ्गनाश—अंग का निर्जीव हो जाना और सड़ जाना। मरण, नाश। (अ०) मौतुल्अज्व, ताक्कुल। (अ०) नेक्रासिस (Necrosis)।

अङ्गमर्द—अँगड़ाई। (अ०) तमत्ती। (फा०) खमयाजा। (अ०) पंडिक्यूलेशन (Pandiculation)।

अङ्गस्फुरण--अंगस्पंदन, अंग फड़कना। (अ०) एख्तिलाज। (अं०) ॲटक्सिआ (Ataxia)।

अङ्गुलिवेष्टक--उपनख। दे० 'चिप्प'।

अजकाजात--एक प्रकार का शुक्लरोग जो नेत्र के कृष्ण भाग पर बकरी की मेंगनी के समान उभरा हुआ होता है। सु०। (हिं०) गहरा उभारवाला फूला। टेंट। (अ०) बयाज़ समकिय्या। (अं०) ल्युकोमा (Leucoma)।

अजीर्ण--अपचन, अपच। (अ०) फ़साद हज़्म, बुत्लान हज़्म। (उ०) बदहज़मी। (अं०) डिस्पेप्सिया (Dyspepsia), ॲपेप्सिया (Apepsia), इनडाइजश्चन (Indigestion)।

अजीर्ण, कफ (आम)—कफज अजीर्ण। (अं०) सूऽहज़्म ज़ोफ़ी। (अं०) ॲटोनिक डिस्पेप्सिया (Atonic dyspepsia)।

अजीर्ण, पित्त (विदग्ध)—पित्तज अजीर्ण, विदग्धाजीर्ण। (अ०) सूऽहज़्म सफ़रावी, सूएहज़्म सोज़शी। (अं०) इरिटेबल डिस्पेप्सिया (Irritable dyspepsia) एसिड या बिलिआटिक डिस्पेप्सिया (Acid or Biliatic dyspepsia)।

अजीर्ण, वात (विष्टब्धसंज्ञक)—वातज अजीर्ण, विष्टब्धाजीर्ण। (अ०) सूऽहज़्म असबी। (अं०) नर्वस डिस्पेप्सिया (Nervous dyspepsia)। **वक्तव्य**—इनके अतिरिक्त **रसशेषाजीर्ण, निर्दोष दिनपाकी** और **प्राकृत** (प्रति दिन होनेवाला) अजीर्ण के ये तीन भेद आयुर्वेद में और लिखे हैं।

अजीर्ण, आशुकारी—तीव्र अपचन। (अ०) सूऽहज़्म हाद्। (अं०) ॲक्यूट डिस्पेप्सिया (Acute dyspepsia), गॅस्ट्रायटिस (Gastritis)।

अजीर्ण, चिरज—चिरकालानुबंधी अजीर्ण। (अ०) वर्म मेदा मुज़मिन। (अं०) क्रॉनिक डिस्पेप्सिया (Chronic dyspepsia)।

अञ्जननामिका--अञ्जनी सु०। (हिं०) बिलनी, गुहेरी, गुहाँजनी, अञ्जनहारी। (अ०) शईरा, शईरतुल् जफ़न। (अं०) स्टाई (Stye) हॉर्डिओलम् (Hordiolum)।

अण्डप्रकोप--कुरण्डप्रकोप, वृषण प्रकोप, वृषण (अण्ड) ग्रन्थिशोथ।

(हिं०) आँड़ी की सूजन या आमास । (उ०) खुसयों की सूजन (आमास या वरम) । (अ०) इल्तिहाब खुसया, वरम खुसया (खुसियतैन), वरम उन्सियतैन । (अं०) ऑरकाइटिज (Orchitis) ।

अतिक्षिप्त--वह संधिमुक्त जिसमें मांस-सिरा-धमनी आदि अंग विदीर्ण हुए होते हैं । इसमें सन्धिकी दोनों हड्डियाँ दूर होती हैं और पीड़ा होती है । सु० । क्षिप्त । मा० नि० । (अं०) कॉम्प्लीकेटेड फ्रॉक्चर (Complicated fracture) ।

अतितीव्रसंतापी ज्वर--तीव्र ज्वर । (उ०) तेज़ बोख़ार । (अ०) हुम्मा मुह्रिका, हुम्मा हाद्दा, तपे मुह्रिका, तपे शदीद । (अं०) हाइपर पाइरेक्सियल फीवर (Hyperpyrexial fever) ऑस्थेनिक फीवर (Asthenic fever) ।

अतितेजसादग्ध--आकाशविद्युत् से जला हुआ, बिजली से जलना, बिजली गिरना । सु० । (अ०) हर्क़ुस्साएका । (अं०) लाइटेनिंग स्ट्रोक (Lightening stroke) ।

अतिदग्ध--अग्निदग्ध का वह प्रकार जिसमें मांस (नीचे की तरफ) लटकता है, इत्यादि । सु० ।

अतिदुग्धस्राव--एक स्तनरोग जिसमें स्तनों में अत्यधिक दूध उत्पन्न होता है । दूध (स्तन्य) की अधिकता । (अ०) सैलानुल्लबन, कसरतुल्लबन । (अं०) गैलक्टोरिया (Galactorrhaea) ।

अतिनिद्रा –निद्रातियोग, नींद की अधिकता, गहरी नींद । (अ०) सुबात । सॉम्नोलेन्स (Somnolence) ।

अतिपातित भग्न--पूर्ण भग्न का एक भेद जिसमें पूरी (निःशेष) हड्डी टूट जाती है । हड्डी का बिल्कुल टूट जाना । हड्डी का दो टुकड़े हो जाना । सु० । (अ०) कस्र कामिल । कॅम्प्लीट फ्रॅक्चर (Complete fracture) ।

अतिवृद्धि--किसी अङ्ग का बड़ा होना । (अ०) अज़मे अज़्व । (अं०) हाइपरट्रॉफी (Hypertrophy) ।

अतिश्लक्ष्णता--त्वचा मुलायम और चमकीली होना (अं०) हाइपरकेराटोसिस (Hyperkeratosis) ।

अतिसरण--प्रवाहणातिसार । (अं०) टेनेस्मस (Tenesmus) ।

अतिसार—स्वनामाख्यातोदरामयरोग। इसमें सदैव पतला दस्त होता है। अतीसार। (हिं०) पेट चलना, दस्त आना, दस्तों का रोग (मर्ज़)। (अ०) इसहाल, इख्तिलाफ, ख़िल्फा, ख़ल्फ, ज़रब, जर्ब, लीनुल्बत्न, ज़ल्कुल् अम्आऽ (मेदा)। (फा०) पा रवी, शिकम रवी। (अं०) डायरिया (Diarrhoea), लाइएन्टरी (Lientery), लाइएन्टरिक डायरिया (Lienteric diarrhoea), लूसनेस ऑफ दी बॉवेल्ज़ (Looseness of the bowels)।

भेद—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक (कफज), त्रिदोषज, शोकज, आमातिसार और रक्तातिसार।

अतिस्वेद—बहुत पसीना आना। (अ०) कसरतुल् अरक़। (अं०) हाइपर हाइड्रोसिस (Hyperhidrosis)।

अत्यन्त कार्श्य—शोषरोग का एक भेद। अत्यन्त दुर्बलता। (अ०) हुज़ाल मुफ्रित।

अधिकदन्त, अधिदन्त—अधिक दांत निकलना, खलवर्धन। अ० सं०। वर्धन। सु०। (अ०) अस्नानुज्ज़ाइदा। (अं०) एक्स्ट्रा टूथ (Extra tooth)।

अधिजिह्व, अधिजिह्वा—एक कण्ठगत रोग जिसमें जिह्वा के ऊपर शोथ होता है। सु०। उपजिह्विका। च०। वा०। (अ०) इल्तिहाब गुजरूफ़ मुकब्बी, वरम लिसानुल् मिज्मार। (अं०) एपिग्लोटायटीज (Epiglotitis)।

अधिजिह्विका—जिह्वा के नीचे होने वाला शोथ। च०। अ० सं०। उपजिह्विका। सु०। दे० 'उपजिह्विका'।

अधिदन्त—दांत का अर्बुद। सु०। दे० 'दन्तार्बुद'।

अधिमन्थ—एक नेत्ररोग जो अभिष्यंदजनित होता है। (अं०) ऍक्यूट ऑर्बिटल् सेल्यूलायटीज (Acute arbital cellulitis)।

अधिमांस—दन्तमूलगत रोग विशेष। सु०। अ० सं०। अधिमांसक। मा० नि०। (अं०) इम्पेक्टेड विज्ड्म् टूथ (Impacted wisdom tooth)।

अधिवृक्करोग—(अ०) अमराज कुलाह गुर्दा। (अं०) सुपर-रेनल डिजीज (Super-renal disease)।

अधिवृक्कार्बुद—(अ०) सल्आ फ़ौकलकुलया। (अं०) हाइपरनेफ्रोमा (Hypernephroma)।

अधोशाखा घात--निम्नांग घात । (अ०) इस्तिरख़ाऽ जिस्मे अस्फल ।

अधोहनु उपत्वचा शोथ—(अ०) इल्तिहाबुन्नस्जिल्खुलवी तहतल-फक । (अं०) सबमॅक्झिलरी सेल्यूलायटीज (Submaxillary cellulitis) ।

अध्यर्बुद—पहले अर्बुद होते हुए भी अन्य अर्बुद उत्पन्न होना । (अं०) मेटास्टेटिक ग्रोथ्स (Metastatic growths) ।

अध्यस्थि- अस्थिका अर्बुद । सु० । दे० 'अस्थ्यर्बुद' ।

अध्रुष--बहुधा तालुप्रकोप । सु० । (अ०) इल्तिहाबुल् हुनूक । (अ०) पैलेटायटीज (Palatitis) ।

अनन्तवात--(१) एक प्रकारका शिरोरोग । भौंका दर्द । मा० नि० । (२) अन्यतोवात । सु० । (अ०) असाबा । (अं०) टिक् डोलोरो (Tic Douloureux) ।

वक्तव्य—सुश्रुत के मतसे यह एक वातव्याधि है, परन्तु अर्धावभेदक से सादृश्य के कारण शिरोरोग में वर्णित है । माधव ने इसका पृथक् वर्णन किया है । इसमें एक या दोनों भौओं और कभी चेहरे में भी दर्द होता है । पाँचवीं मास्तिष्कनाड़ियों में यह विकृति होती है ।

(२) वातरोग । अन्यतोवात । सु० ।

अनपत्या वन्ध्या—वह वन्ध्या जिसको गर्भधारणा कदापि नहीं हुई है । (अं०) ॲब्सोल्यूट स्टेरिलिटी (Absolute sterility) ।

अनभिघातज अपतानक--अभिघात के बिना होनेवाला अपतानक, निजापतानक, दोषज अपतानक । (अ०) कुज़ाज़ जाती, कुज़ाज़ मरज़ी । (अं०) इडिओपैथिक टेटनस (Idiopathic tetenus) ।

अनभिघातज अपस्मार--निज या दोषज अपस्मार । (अ०) सरअ असली, सरअ ज़ाती, सरअ दिमागी । (अं०) इडिओपैथिक एपिलेप्सी (Idiopathic epilepsy) ।

अनात्ययि (·क) अर्बुद--वह अर्बुद जिसके कारण मृत्यु होने का भय नहीं होता । सौम्य अर्बुद । (अ०) सलआ महमूदा, सलआ सलीमा, सलआ गैर ख़बीसा (मुह्लिका) । (उ०) गैर ख़बीस या सादा रसौलियाँ । (अं०) बेनाइन या इनोसेंट ट्यूमर (Benign or Innocent Tumour), नॉन-

मैलिग्नॉन्ट ट्यूमर (Non-malignant Tumour), बेनाइन ग्रोथ्स (Benign growths)।

अनार्तव—आर्तवशोणित का नियत समय पर न आना, मासिक धर्म का बन्द होना, आर्तवादर्शन, नष्टार्तव, नष्टरक्त, शोणितावबन्ध। (अ०) एह्तिबास तम्स, उस्तम्स। (अं०) अमेनोरिआ (Amenorrhoea)।

अनावश्यक अतिवृद्धि—किसी अङ्ग का अधिक होना, वैकृतिक (Pathological) अतिवृद्धि। (अ०) हाइपर प्लाशिआ (Hyperplasia)।

अनिद्रा—नींद न आना, निद्रानाश, वैकारिकी निद्रा (सु०)। (अ०) सहर, अरक, बेखाबी, बेदारी। (अं०) इन्सॉम्निया (Insomnia)।

अनियतकालिक ज्वर—वह ज्वर जिसके आने का समय नियत न हो। (अ०) हुम्मा मुख्तलिता।

अनुत्रिकास्थिशूल—गुदास्थिगतशूल, पुच्छास्थिशूल दुमची के स्थान का दर्द। (अ०) वज्उल् उस्उस। (अं०) कॉक्सिजोडीनिया (Coccygodynia)।

अनुदर्घ्य भग्न—वह पूर्ण भग्न जिसमें अस्थि लम्बाई में टूटती है। अस्थिच्छल्लित (सु०) बहुधा ऐसा ही भग्न है। अस्थिच्छल्लिका (मा० नि० मधुको०) (अ०) कस्र मुस्ततील, कस्र तूलानी, कस्र तूली, सद्अ। (अं०) लॉंगिच्यूडिनल फ्रॅक्चर (Longitudinal fracture)।

अनुलोमक्षय—क्षयरोग का वह भेद जिसमें कफप्रधान दोषों से रसादिवह स्रोतों के रुक जाने से शेष सभी धातुएँ भी (पोषक पदार्थ के न मिलने से) क्षीण हो जाती हैं, तदनु मनुष्य सूख जाता है अर्थात् उसे शोथ (राजयक्ष्मा) हो जाता है।

अन्तरायाम—अपतानक रोग का एक भेद जिसमें शरीर सामने की ओर झुक जाता (छाती की ओर टेढ़ा हो जाता) है। आभ्यन्तरायाम। सु०। (अं०) कुज़ाज़ अमामी, कुज़ाज़ कुद्दामी। (अं०) (एम्प्रॉस्थोटोनोस (Emprosthotonos)।

अन्तरित संधिविश्लेष—सामान्य हेतु से बार-बार होनेवाला संधिविश्लेष। (अ०) खलअ मुतराजेअ। (अं०) रेकरेंट डिस्लोकेशन (Recurrent dislocation)।

अन्तर्दाह—भीतरी दाह, सूजन। (अ०) वरम, तलह्हुब, इल्तिहाब। (अं०) इन्फ्लमेशन (Inflammation)।

अन्तर्मुखी भगन्दर—पाश्चात्यवैद्यक के मत से भगन्दर का वह भेद जिसका केवल एक मुख होता है और वह मलाशय में खुलता है। सुश्रुतभगन्दर-चिकित्सा में भी इस भेद (अन्तर्मुख) का उल्लेख मिलता है। (अं०) इन्टर्नल फिस्च्यूला (Internal fistula)।

अन्तर्मुखी योनि—एक प्रकार का योनिरोग जिसमें योनि अपने स्थान से हट जाया करती है। च० । वा० दे० 'योनिभ्रंश'।

अन्तर्मृत्यु—गर्भस्थ शिशुका गर्भ के भीतर मृत हो जाना।

अन्तर्वलित नेत्रच्छद—(ग०) शतरा दाख़िलिय्या। (अं०) एन्ट्रोपियॉन (Entropion)।

अन्तर्हृदयावरण शोथ—हृदय की भीतरी सूजन। (अ०) वरम-बतानए क़ल्ब, इल्तिहाब ग़िशाइ बातिन क़ल्ब। (अं०) एन्डोकार्डाइटिज (Endocarditis)।

अन्तःशल्य—(अ०) सुद्दा। (अं०) एम्बोलस (Embolus)।

अन्तःशल्यता—वाहिन्यवरोध। (अ०) इन्सिदाद उरूकिया। (अं०) एम्बोलिज्म (Embolism)।

अन्त्रच्छेदजन्य बद्धगुदोदर—दे० 'परिस्राव्युदर'।

अन्त्रवृद्धि—आन्त्रागमजन्यवृषणवृद्धि (आँत आदि का टलकर अपनी जगह से दूसरी अप्राकृतिक जगह में चला जाना)। आन्त्रवृद्धि (सु०)। इसमें केवल अन्त्र उदरगुहा का अपना स्थान छोड़कर नीचे वृषण में आ जाता है। आधुनिक परिभाषा के अनुसार आयुर्वेदोक्त आन्त्रवृद्धि को 'वङ्क्षणी आन्त्रवृद्धि' या 'आन्त्रजन्य वृषणवृद्धि' कहते हैं। (अ०) फतक़, कीला। (फा०) बादखाया, दबाख़ाया। (अं०) हर्निया (Hernia), सील (Cele), रैप्चर (Rapture)। (यू०) कील (Kele=रसौली, उभार)।

वङ्क्षणी आन्त्रवृद्धि—(अ०) फ़तक़ुल्उबिय्या, फ़तक़ उर्बी। (अं०) इंग्विनल हर्निया (Inguinal hernia)।

आन्त्रजन्य वृषणवृद्धि—(अ०) फ़तक़ मिआई (मिअवी), कील।

मिआई, फत्क अमुआऽ ४ (अं०) इन्टेस्टाइनल हर्निया (Intestinal hernia)।

भेद—१ अप्राप्तफलकोशवृद्धि, २ कोशप्राप्तवृद्धि, ३ वपाजन्य वृषणवृद्धि, ४ वङ्क्षणी आन्त्रवृद्धि, ५ ओर्वी आन्त्रवृद्धि, ६ नाभिगत आन्त्रवृद्धि (तुण्डि, उत्तुण्डिता)।

अन्यभेद-दबने वाली वृद्धि—(अ०) फत्क इन्गिमाज़ी। (अं०) रेडयूसिबल हर्निया (Reducible hernia)।

न दबनेवाली वृद्धि—(अ०) फत्क आसी। (अं०) इरिडयूसिबल हर्निया (Irreducible hernia)।

बस्तिगत अन्त्रवृद्धि—(अ०) फत्क मसानी (मसानवी), कीला हशाई (या मसानवी, मसानी)। (अं०) वेसिकल हर्निया (Vesical hernia)।

प्लीहागत आन्त्रवृद्धि—(अ०) कीला तिहाली। (अं०) स्प्लीनोसील (Splenocele)।

आमाशयगत अन्त्रवृद्धि—(अ०) फत्क मेदी। (अं०) गॅस्ट्रिक हर्निया (Gastric hernia)।

गर्भाशयगत अन्त्रवृद्धि—(अ०) कीला रहमी। (अं०) मेट्रोसील (Metrocele)।

सशोथ अन्त्रवृद्धि—शोथयुक्त अन्त्रवृद्धि। (अ०) फत्क इल्तिहाबी (मुत्वर्रिम, वरमी)। (अं०) इन्फ्लेम्ड हर्निया (Inflammed hernia)।

अन्त्राद—अन्त्रस्थ कृमि, आँतो के कीड़े। वा०। (अ०) दीदानुल् अम्आऽ, दीदान मिअवियया, दीदान शिकम। (अं०) इन्टेस्टाइनल वर्म्स (Intestinal worms)।

अन्धता, अन्धत्व—अन्धापन। (अ०) अमा, बुल्लानुल्बसर, फक्दुन्नज़र। (फा०) कोरी, ना बीनाई। (अं०) ब्लाइण्डनेस (Blindness), अनॉप्सिया (Anopsia) अॅब्लेप्सिया (Ablepsia)।

अन्ननलिका शोथ—आहार की नाली की सूजन। (अ०) इल्तिहाब मरी, वरम मरी। (अं०) ईसोफॅजायटीज (Oesophagitis)।

अन्ननलिका संकोच—आहार की नाली का जुड़ (संसक्त) जाना। (अ०) इन्तबाकुल मरी। (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ ईसोफॅगस (Stricture of Oesophagus)।

अन्नमार्गाक्षेप—अन्ननलिकाक्षेप । (अ०) तशन्नुज मरी । (अं०) ईसोफैगोस्पैज़्म (Oesophagospasm) ।

अन्येद्युष्क ज्वर—वह विषम ज्वर जो दिन-रात में एक बार आता है। प्रतिदिन आने वाला बारीका ज्वर । (का०) तपे हररोज़ा । (अ०) हुम्मा मुवाज़िबा, इम्गियारीनूस । (अं०) कोटिडियन फीवर (Quotidian Fever) ।

भेद—(यूनानी) १. हुम्मा लैफूरिया (अन्तर्वेग ज्वर) और २ हुम्मा इन्फियालूस (बहिर्वेग ज्वर) । यह कफज होता है ।

अन्येद्युष्क विपर्यय—दे० 'सतत ज्वर' ।

अपक्व श्लेष्मलत्वक् शोथ—नासागत प्रसेक । (अ०) नज़ला अन्फिया । (अं०) नेज़ल कॅटारे (Nasal catarrh) ।

अपची—कण्ठमाला, गण्डमाला । (अ०) ख़नाजीर, दाउल् ख़नाजीर, रीश खोक । (अं०) स्क्रॉफ्यूला (Scrofula), क्रॉनिक ट्यूबरक्यूलस लिम्फेडीनाइटोज़ (Chronic tuberculos lymphadenitis) ।

अपतन्त्रक—सुश्रुत के अनुसार अपतानक या मृगी के सदृश किंतु उससे भिन्न एक स्वतन्त्र वातव्याधि जो पुरुषों तथा स्त्रियों में होती है । (हिं० उ०) बाबगोला । (अ०) इख्तिनाकुर्रिहम । (अं०) हिस्टीरिआ (Hysteria) ।

अपतानक—आक्षेपक वातरोग का एक भेद । (हिं०) चांदनी । (अ०) इज़्ल, कुज़ाज़, तमद्दुद । (अं०) टेटनस (Tetanus) ।

अपदार्थगद—बिना किसी व्याधि के रोग का भ्रम (वहम) । दे० 'गदोद्वेग' ।

अ (परि) क्लिन्नवर्त्म—एक नेत्रवर्त्मगत रोग जिसमें बार-बार धोने पर भी वर्त्म (पलक) जुड़ जाते हैं । पलक चिपकना । पिल्ल । (अ०) इल्तेसाकुल्-जफ़न, इल्तेसाकुल् अज्फान । (अं०) अंकिलोब्लीफेरोन (Ankyloblepharon) ।

अपस्मार—मृगी । (अ०) अबीलप्सिया, सरअ, क़सी । मरज़ साकित । (फा०) नैदुलान, मरज़ काहनी (जादूगरों का रोग) । (अं०) एपिलेप्सी (Epilepsy), एपिलेप्सिया (Epilepsia) ।

वक्तव्य—इसके वातिक, पैत्तिक और श्लैष्मिक आयुर्वेदोक्त भेदों को यूनानी में क्रमशः सौदावी, सफ़राबी बलग़मी लिखा है । इसके सान्निपातिक भेद के यूनानी में ये दो उपभेद किये हैं—(१) सरअ रद्दी, अबीलीमिया, अबीलप्सिया, हालत सरई (अ०) । (अं०) स्टेटस एपिलेप्टिकस (Status epilepticus) ।

(२) सरअशदीद, अबर (अ) कल्सा (अ०)। (अं०) ग्रंड माल (Grand mal), हॉट माल (Haut mal), एपिलेप्सिया ग्रेविअर (Epilepsia gravior)। यूनानी में इनके सिवाय एक रक्तजभेद (सरअदम्वी) और लिखा है।

अपस्मारोन्माद—उन्माद का एक भेद। (अ०) जुनून सरई। (अं०) एपिलेप्टिक मेनिया (Epileptic mania)।

अपीनस—पूतिगंधिचिरकालीननासास्रावका एक भेद। इससे पीड़ित मनुष्य अच्छे या बुरे रस वा गंध को नहीं जान सकता। सु०। च०। पीनस। (अं०) अट्रॉफिक रिह्नायटीज (Atrophic rhinitis)।

अपूय प्रतिहारिणी सिराशोथ—प्रतिहारिणी सिरा का पूयरहित शोथ। (अ०) गैर अफूनी वरम बाबुल्कबिद। (अं०) नॉन सप्यूरेटिव पेलि-फ्लेबाइटीज (Non-suppurative peliphlebitis)।

अपूर्ण आन्त्रवृद्धि—आयुर्वेद में इसे अप्राप्त फलकोशवृद्धि (सु०) कहते हैं।

अपूर्ण भग्न—कांडभग्न का एक भेद जिसमें हड्डी का कुछ भाग टूट जाता है। जैसे—छिन्न। (अ०) कस्र नाकिस। (अं०) इन्कम्प्लीट फ्रॅक्चर (Incomplete fracture)।

अप्राप्तफलकोष वृद्धि—वह अन्त्रवृद्धि जिसमें अन्त्र बहिर्वङ्क्षणीय छिद्र तक आकर ग्रन्थिके रूप में स्थित होता है। सु०। आधुनिक परिभाषा में इसको अपूर्ण आन्त्रवृद्धि कहते हैं। (अ०) फतकुल् उर्वियया नाकिस। (अं०) इन्कम्प्लीट हर्निआ (Incomplete hernia) ब्युबोनोसील (Bubonocele)।

अफसंतीन विषमयता—मदात्यय की भाँति अफसंतीन के अत्यधिक सेवन से उत्पन्न हुआ रोग। (अ०) मरजुल् अफसंतीन। (अं०) ॲब्सिन्थिज़म् (Absinthism)।

अभिघात—आघात, चोट (लगना)। (अ०) जरब। (अं०) ट्रॉमा (Trauma)।

अभिघातज अपतानक—अभिघातजन्य (आगन्तु) अपतानक। आक्षेपक (सु०)। (अ०) कुज़ाज़ ज़रबी, कुज़ाज़ जुरही। (अं०) ट्रॉमैटिक टेटनस (Traumatic tetanus)।

अभिघातज अपस्मार—क्षतज अपस्मार। (अ०) सरअ ज़रबी। (अं०) ट्रॉमैटिक एपिलेप्सी (Traumatic epilepsy)।

अभिघातज ज्वर—क्षतजन्य ज्वर। (अ०) जरबी। (अं०) ट्रॉमैटिक फीवर (Traumatic fever)।

अभिघातज दुर्गन्ध ज्वर--(अ०) हुम्मा अफनिया आरजिया। (अं०) सेप्टिक ट्रॉमैटिक फीवर (Septic Traumatic fever)।

अभिघातज शोथ--क्षतज सूजन। (अ०) इल्तिहाब (वरम) ज़रबी। (अं०) ट्रॉमैटिक इन्फ्लमेशन (Traumatic inflammation)।

अभिघातज संधिविश्लेष--आघातजन्य संधिमुक्त। (अ०) खल्अ ज़रबी। (अं०) ट्रॉमैटिक डिसलोकेशन (Traumatic dislocation)।

अभिघातजन्य आक्षेपक—(अ०) तशन्नुज ज़रबी। (अं०) ट्रॉमैटिक स्पैज़्म (Traumatic Spasm)।

अभिचारज ज्वर--श्येनादि यागों से होनेवाला आगन्तुज ज्वर।

अभिन्यास ज्वर--ज्वर का एक भेद जो अधिकतर प्रत्याख्येय होता है। मा० नि०।

अभिशापज ज्वर--ब्राह्मण-गुरु-सिद्धादि के शाप से होनेवाला ज्वर।

अभिषंग ज्वर-भूत, देव, ग्रहादि के अभिषंग (संबंध) से होनेवाला ज्वर।

अभिष्यंद--नेत्रसर्वभागगतरोगविशेष। शुक्लास्तरदाह में होनेवाला मामूली स्राव। स्यंद। (हिं०) आँख आना (दुखना)। (अ०) रमद। (अं०) कन्जंक्टिवायटीज (Conjunctivitis)।

वक्तव्य—इसके सुश्रुतोक्त भेद-वातज, पित्तज, कफज और रक्तज। चरक में इनके अतिरिक्त आगन्तुज अभिष्यंद भी लिखा है। इसके **अन्यभेद**--सपूय नेत्राभिष्यंद, फिरङ्गीयाभिष्यन्द, पर्वणी और औपसर्गिक पूयमेहजन्य अभिष्यन्द।

अभ्यन्तरीय अर्श--दे० 'परिस्रावी अर्श'।

अम्लकामिता--स्वाभाविक खाद्यद्रव्यों के लिये अरुचि और मिट्टी, भस्म, चूना, खट्टे पदार्थ इन अस्वाभाविक पदार्थों के लिये अभिलाषा। (अं०) वहम, फसादुश्शहवत। (अं०) पाइका (Pica), लॉगिंग्स (Longings)।

अम्लपित्त—(अ०) हमूजत। (फा०) तुर्शी। (अं०) एसिडिटी (Acidity)। **भेद**--ऊर्ध्वगा और अधोगा।

अम्लमेह--पित्तज प्रमेह का एक भेद जिसमें रोगी (अम्लमेही) अम्ल-

रस और अम्लगंध का मूत्र त्याग करता है। सु० (अं०) लिथ्यूरिआ (Lithuria)।

अम्लरक्तता—रक्त में क्षारीयता का अश कम होना। (अं०) ॲसिडोसिस (Acidosis)।

अम्लाध्युषित दृष्टि—नेत्रसर्वभागगत रोग। इसमें सारी आंख पक जाती है। सम्पूर्ण नेत्रगोलक का पाक। शुक्लास्तरदाह। (फा०) आशोबे चश्म। (अ०) ऑपथल्मिआ (Ophthalmia)।

अम्लिका—कलेजा जलना, आमाशयदाह, हृदयोत्क्लेश, हृदयोद्वेष्टन (सु०)। (अ०) हुर्कते मेदा। (अं०) हार्ट-बर्न (Heart-burn)।

अम्लोद्गार—खट्टी डकार, अम्लीका। (अं०) जुशाऽ हामिज। (फा०) आरोग् तुर्श।

अरजस्का—लोहितक्षया योनिरोग। नष्टार्तवा। च०। दे० 'बन्ध्यायोनि'

अरतिमान स्वप्न—ठीक नींद न आना, अधूरी या कच्ची नींद (काश्य०)। (अ०) नौम मुत्मलमिल। (अं०) डिस्टर्ब्ड स्लीप ((Disturbed sleep)।

अरुंषिका—क्षुद्ररोगान्तर्गत शिरोव्रण (शिरोपिडका) विशेष। सिर का छाजन। सु०। अरुंषिका। मा० नि०। (हिं०) गज, सिरका दाद। (अ०) शह् दिय्या, साफा, कुराअ। (अं०) ऐक्जेमा ऑफ दी फेस एण्ड स्कॅल्प (Eczema of the face and scalp), फेवस (Favus)।

अरुण—महाकुष्ठ का एक भेद। सु०। मण्डल। च०। वा०।

अरोचक—वह रोग जिसमें रोगी को अन्न सेवन करने में रुचि नहीं होती। अरुचि, भक्तोपघात (सु०), भक्तस्यानशन (च०), अन्नानभिनन्दन, भक्तद्वेष, अभक्तच्छन्द। (अ०) बुत्लान इश्तिहा (शहवत), सुकूत शहवत, नुक्सान इश्तिहा (शहवत), ज़ोफ़ शहवत, ज़ोफ़ इश्तिहा तआम। (अं०) लॉस ऑफ टेस्ट एन्ड अपेटाइट (Loss of taste and appetite), अनोरेक्सिया (Anorexia)।

वक्तव्य—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक (त्रिदोषज) या आयासज और आगन्तुक भेद से यह पांच प्रकार का होता है।

अर्जुन—नेत्र श्वेत (शुक्ल) भागगत रोग जिसमें नेत्र के सफेद भाग में

खरहे के रक्त के समान (शशासृक् प्रतिम) अकेला बिंदु होता है। (अ०) तर्फा। (अं०) एकीमोसिस (Ecchymosis)।

अर्दित—एक वातव्याधि जिसमें आधा चेहरा बांका होता है, ग्रीवा भी टेढी होती है। मुँह का टेढा हो जाना। सु०। एकायाम। अ० सं०। व्यावहारिक भाषा में इसे 'लकवा' कहते हैं। चरकसंहिता में दृढबल अर्दित का अर्थ 'मुखार्धघातयुक्त पक्षाघात या मुखार्धघात' करते हैं। (अ०) लकवा ; (अं०) फेशियल पालसी (Facial Palsy), बेल्स पैरालिसिस (Bell's paralysis)।

अर्धदृष्टि—अर्धान्धता। (अ०) नजर निस्फी। (अं०) हेमिओपिया (Hemiopia) हेमि-अनोप्सिया (Hemi anopsia), हॉफ ब्लाइडनेस (Half blindness)।

अर्धविसर्गी—एक प्रकार का ज्वर जो कई दिनों तक बना रहता है, दैनिक अन्तर दो अंश से अधिक होता है। परन्तु स्वाभाविक अंश तक नहीं उतरता। स्वल्पविराम या मर्यादा ज्वर। (उ०) लाजमी या दायमी बुखार। (अ०) हुम्मा मुत्फत्तिरा, हुम्मा मुफत्तिरा। (अं०) रेमिटेंटफीवर (Remittent fever)।

अर्धाङ्गवात, अर्धाङ्गवायु—पक्षाघात।

अर्धाङ्गशोथ—आधे अंग की सूजन।

अर्धावभेदक—आधे सिरका दर्द, आधासीसी, शिरोग्रह (च०)। (अ०) शक़ीक़ा, दर्द शक़ीक़ा, सुदाअ निस्फी। (फा०) दर्दे नीमसिर। (अ०) हेमिक्रेनिया (Hemicrania), माइग्रीन (Migreina), माइग्रियम्। (Migrium)।

वक्तव्य—सारे सिर में होने वाले दर्द को अरबी में 'शक़ीक़ा आम' कहते हैं। यह 'सुदाअ बैज़ा व ख़ोज़ा' से भिन्न है।

अर्बुद—(१) गाँठ। (अं०) टोफी (Tophi)। (२) तालुगतरोग। तालवर्बुद। सु० (३) नासातत अर्बुद। (४) शरीर के किसी प्रदेश में प्रवृद्ध हुए दोष-मांस (मेदादि शरीर के धातुओं) को अत्यंत दूषित करके गोलाकार, स्थिर, अल्प पीड़ा देने वाला, गहरा, बहुत दिनों के बाद बढ़नेवाला ऐसा मांसच्छाय के रूप में प्रतीत होनेवाला शोथ उत्पन्न करते हैं, आयुर्वेदविद् उस शोथ को अर्बुद कहते हैं। सु०। यह शरीरस्थ धातुओं की एक देशीय अतिवृद्धिके अनेक विकारोंमें से एक महत्त्व का विकार है। यह सदा ग्रन्थिवत् होता, पकता

नहीं और न रक्तस्राव स्रवता है। (हि०) रसौली, बतौड़ी। (अ०) सल्आ, वर्म, जदरा। (अं०) ट्यूमर (Tumour), नीओप्लाज्म (Neoplasm)। (५) वाग्भट के अनुसार ओष्ठ का एक रोग। ओष्ठ का अर्बुद—'खर्जूर सदृशं चात्र क्षीणे रक्तेऽर्बुदं भवेत्। अर्बुद बहुधा 'एपिथेलिओमा Epithelioma' होगा (अ) सरतानुश्शफता। (अं०) कैन्सर ऑफ दि लिप्स (Cancer of the lips)।

भेद—(आयुर्वेदीय) १ वातार्बुद, २ पित्तार्बुद, ३ कफार्बुद (श्लेष्मार्बुद), ४ रक्तार्बुद, ५ मांसार्बुद, ६ मेदोर्बुद, ७ अध्यर्बुद और ८ द्विरर्बुद। रोगी के जीवन की दृष्टि से अर्बुदों के निम्न भेद होते हैं—१ अनात्ययिक, २ घातक या आत्ययिक और ३ उपघातक। शरीरधातु के अनुसार अर्बुदों के भेद—१ त्वगंकुरार्बुद, २ अस्थ्यर्बुद, ३ तरुणास्थ्यर्बुद, ४ दन्तार्बुद, ५ मज्जार्बुद, ६ नाड्यर्बुद, इत्यादि।

अन्यभेद—अधिवृक्कार्बुद, अश्रवर्बुद, आमाशयगत अर्बुद, ओष्ठार्बुद, कर्णार्बुद, कर्कटार्बुद, गर्भाशयगत अर्बुद, गुदकैन्सर, जरायवर्बुद, जलगर्भग्रन्थि, तन्त्वर्बुद, तारकागत अर्बुद, तालवर्बुद, धमनी प्राचीररोग, नासागत कैन्सर, पादार्बुद, प्रतिजरायुज रक्तग्रन्थि, प्लीहार्बुद, फिरंगीय कर्णार्बुद, भगस्थ-लिङ्गार्श, मांसीय सार्कोमा, मूत्रार्बुद, यक्ष्मीय कर्णार्बुद, रक्तार्बुद, लसीकार्बुद, लिङ्गार्श, वङ्क्षणीयांत्रवृद्धि, वाहिन्यर्बुद, वृक्क ग्रन्थि, वृक्कार्बुद, श्वेतार्बुद, सौत्रिक तन्त्वर्बुद, स्तन्यार्बुद और हरितार्बुद।

अर्म—नेत्रश्वेतमागगत रोग। एक त्रिकोणाकार या अर्धचन्द्राकार प्रवर्द्धन जो शुक्लास्तर पर भीतरी नेत्रकोण में उत्पन्न हो जाता है। (हि०) नाखुना, नाखूना। (अ०) जु (ज़) फ़रा। (रो०) अंग्रोस। (अं०) टेरीजियम् (Pterygium)। दे० 'रक्तार्म और शुक्लार्म'।

भेद—अस्रिमांसार्म, प्रस्तार्यर्म, रक्तार्म, शुक्लार्म, स्नाय्वर्म और क्षतज अर्म।

अर्श—(१) दोनों के कारण नासादि विविध अंगों की त्वचा में उत्पन्न हुए मांसाङ्कुर। च०। अर्शका यह साधारण अर्थ है। (सं०) मांसाङ्कुर, मांस प्ररोह। (हि०) मस्सा। (अ०) बासूर (बहुव० बवासीर), बोलीबूस (पॉलिपस से अरबीकृत)। (अं०) पॉलिपस (Polypus)। (२) गुदा में उत्पन्न हुए मांसाङ्कुर। यह अर्श का एकदेशीय या विशेष अर्थ है। (सं०) गुदागत अर्श, अर्श, दुर्नाम। (हि०) बवासीर, बयसी। (अ०)

बवासीर, अमूरीदूस (यूनानी 'अमरूदिस' से अरबीकृत)। (यू०) हिमूरीदूस (=रक्तस्राव)। (अ०) हीमोराइड्स (Hæmorrhoids)। पाइल्स (Piles)।

विशेष अर्श के भेद—१ वातजन्य (वातार्श), २ पित्तजन्य (पित्तार्श), ३ कफजन्य (श्लेष्मार्श), ४ शोणितजन्य (शोणितार्श) या रक्तजन्य (रक्तार्श), ५ सन्निपातजन्य और ६ सहज। सु०। अष्टाङ्गसंग्रह के अनुसार सहज और जन्मोत्तर कालज ऐसे अर्श के दो प्रधान विभाग हैं। सुश्रुत ने जो अर्श के छः प्रकार निर्दिष्ट किये हैं, उनमें से पहले पाँच प्रकार जन्मोत्तरकालज अर्श के हैं। चरक और वाग्भट में इसके छः प्रकार वर्णन किये हैं; क्योंकि, वहाँ संसर्ग स्वतंत्र प्रकार माना गया है। सुश्रुत में संसर्ग का समावेश 'सन्निपात' में ही किया है। स्थानिक विकृति और व्यवहार की दृष्टि से अर्श के दो ही भेद किये जाते हैं—१ शुष्क और २ परिस्रावीशुष्कस्राविविभेदाच्च। (अ० हृ०)। ये भेद भी दोषों के अनुसार ही किये गये हैं—शुष्कार्श वातश्लेष्मोल्वण और प्रस्रावी वा आर्द्र रक्तपित्तोल्वण होता है। (च० अर्श-चि०)। आधुनिक परिभाषा में शुष्क को बाह्य (External) और परिस्रावी को आभ्यंतरीय (Internal) कहते हैं। दे० 'परिस्रावी अर्श' और 'शुष्कार्श'।

अन्यभेद—१ लिङ्गार्श और २ चर्मकील अर्श (त्वग्गतार्श)। अर्श में दोषसंसर्ग के छः भेद—वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, वातरक्त, पित्तरक्त और कफरक्त।

अलजी—(१) नेत्रसंधिगत रोग। नेत्र के शुक्ल और कृष्ण भाग की संधि में होनेवाली पर्वणीवत् पिड़का (फुंसी) विशेष। सु०। यह पर्वणी से स्थूल होती है। (अ०) वदका। (अ०) फ्लिक्टीन्यूल्स (Phlyctenules)। (२) प्रमेह-पिड़का विशेष। (३) लिंग का शूकदोष, शूकरोग। सु०। (४) अन्धालजी। सु०। अन्त्रालजी। मा० नि०।

अलजीमय तारकाशोथ—अलजी की तरह की कृष्णमंडल पर निकली हुई फुंसी। (अ०) वरम क़र्निया वद्क़िया, वरम क़र्निया नफ़ातिया, वरम क़र्निया बुसूरिया, बुसूर कर्निया। (अं०) फ्लिक्टीन्यूलर केरेटायटीज (Phlyctenuler Keratitis)।

अलस—एक क्षुद्ररोग। पैर सड़ना। सु०। (अ०) तस्क़ुल अत्राफ़। (अं०) चिल्ब्लेन (Chilblain)।

अलसक—(१) एक प्रकार का क्षुद्र कुष्ठ जो खुजली आदि लक्षणों से युक्त होता है। च०। (हिं०) सिरकी भूसी। (अ०) हजाज, बफा। (अं०) लीचेन् (Lichen)। (२) एकरोग जिसमें मनुष्यका उदर अत्यंत फूल जाता है, मूर्छा तथा आर्तनाद होता है, रुका हुआ वायु जिसके कुक्षिमें ऊपरकी ओर आता है, एवं मलमूत्र और अधोवायु तथा उद्गार की अत्यधिक रुकावट हो जाती है। दे० 'विलम्बिका'।

अलास—जिह्वा के नीचे कफरक्तप्रधान दोषजन्य गंभीर शोथ। सु०। (अ०) दुबैला तह् तलिसान। (अं०) सबलिंग्वल अॅब्सेस (Sublingual abscess)।

अल्पक्षीरता—दूध कम उत्पन्न होना। दूधकी कमी, क्षीराल्पता, स्तन्याभाव। (अ०) किल्लतुल्लबन। (अं०) नो सफिशिअंट ऑफ मिल्क (No sufficient of milk), वॉन्ट ऑफ मिल्क (Want of milk), लेस सक्शन ऑफ मिल्क (Less suction of milk)।

अल्पस्वेदता—पसीना कम आना। पसीने या स्वेद की कमी। (अ०) किल्लतुल् अरक, तनाकुसुल् अरक। (अं०) अनहाइड्रोसिस (Anhydrosis)।

अवक्षिप्त—वह संधिविश्लेष जिसमें हड्डी नीचे की ओर सरक जाती है। सु०। अवःक्षिप्त। मा० नि०। (अ०) डाउनवर्ड डिस्प्लेसमेंट (Downward displacement)।

अवनत भग्न—पूर्ण भग्नविकार का वह भेद जिसमें हड्डी टूटकर अन्दर दब जाती है। (अ०) कस्र इन्खिफाजी, कस्र मज्यूत। (अं०) डिप्रेस्ड फ्रॅक्चर (Depressed fracture)।

अवपाटिका—एक क्षुद्र रोग जिसमें शिश्नके ऊपर का चर्म फट जाता है। सु०। (अ०) शुकाकल् गुल्फा (कुल्फा)। (अं०) टिअर इन दि प्रीप्यूस (Tear in the prepuce)।

अवबाहुक—एक वातरोग। सु०।

अवमन्थ—शूकदोष। सु०।

अवरोधजन्य कामला—एक प्रकार का कामलारोग जिसमें पित्तोसर्ग में बाधा उत्पन्न होती है। (अ०) यरकान सुद्दी, यरकान, सुद्दए मरारा। (अं०) ऑब्स्ट्रक्टिव जॉन्डिस (Obstructive jaundice)।

अवरोधजन्य शिरोरोग--अवरोध के कारण उत्पन्न शिर:शूल । (अ०) सुदाअ सुद्दी । (फा०) दर्देसिर सुद्दी । (अं०) एम्बोलिक हेडएक (Embolic headache) ।

अवरोधजन्य शूल--अवरोध से उत्पन्न हुआ शूल । (अ०) कुलंज सुद्दी । (अं०) ऑब्स्ट्रक्टिव कॉलिक (Obstructive colic) ।

अवर्णता--रंगहीनता । (अ०) इन्एदामुल्लौन । (अं०) अॅक्रोमॅटिज्म (Achromatism) ।

अवसन्नता--(अ०) इन्हितात, इन्तिहाक, सुकूत कुव्वत । (अं०) प्रास्ट्रेशन (Prostration) ।

अवसाद--हृदयावसाद, निढाल होना । (अ०) इन्हितात कुल्ली, इन्हितात कुवा, हुबूत कुवा, बर्दुल् अतराफ, जोफ शदीद । (अं०) कोलेप्स (Collapse) ।

अविसर्गी--वह ज्वर जो कई दिनों तक बराबर बना रहता है । जिसका दैनिक अन्तर दो अंशसे अधिक नहीं होता है तथा जो स्वाभाविक अंश तक नहीं उतरता है । सतत (सु०) । (उ०) मीआदी बुखार । (अ०) हुम्मा मुस्तमिर्रा, हुम्मा लाजिमा (दाइमा) । (अं०) कन्टिन्यूड (कन्टिन्युअस) फीवर (Continued (Continuous) fever) ।

अव्रण भग्न--वह भग्न जिसमें क्षत न हो । इसमें केवल भीतर की हड्डी टूट जाती है । (अ०) कस्र बसीत कस्र साजिज । (अं०) सिम्पल फ्रॅक्चर (Simple fracture) ।

अव्रण विश्लेष--क्षतविरहित संधिविश्लेष (श्रीकण्ठदत्त—मधुकोष-व्याख्या) । (अं०) क्लोज्ड डिस्लोकेशन (Closed dislocation) ।

अव्रण शुक्ल--नेत्रकृष्णभागगत रोग (शुक्र), आँख की हलकी सफेदी (फूली) अव्रणशुक्र (सु०) । (अ०) सहाब, ग (गि) माम फाफालियून, असर, बयाज रकीक । (अं०) ओपेसिटी ऑफ दी कॉर्निया (Opacity of the cornea) नीब्यूला (Nebula) ।

अशोथनेत्रपाक--नेत्रसर्वभागगत रोग । शोथहीन नेत्रपाक । अशोथपाक ।

अश्मरी--(१) पथरी । (अ०) हसाऽ, हसात । (फा०) संगरेजा । (अं०) कॅलक्यूलस स्टोन (Calculus stone) । (२) वस्तिगत अश्मरी, वस्त्यश्मरी । सु० । (अ०) हसातुल्मसाना । (अं०) वेसिकल कॅलक्यूलस (Vesical calculus) कॅलक्यूलस वेसिकाई (Calculus vesici) ।

भेद श्लेष्माश्मरी, पित्ताश्मरी, वाताश्मरी और शुक्राश्मरी। **अन्य भेद**-अग्न्याशयस्थ अश्मरी, अश्रुनलिकागत अश्मरी, गवीनीगत अश्मरी, पित्ताशयस्थ अश्मरी, मूत्राश्मरी, यकृदश्मरी, वृक्काश्मरी और सिरागत अश्मरी। **अश्मरी विकार**-शर्करामेह, सिकतामेह और भस्मकाख्यमेह ये अश्मरी के ही विकार हैं।

अश्मरीज मूत्रकृच्छ्र—अश्मरीहेतुक मूत्रकृच्छ्र (मा० नि०)। शर्कराज मूत्रकृच्छ्र (सु०)। दे० 'मूत्रकृच्छ्र'।

अश्मोपम कठिन अर्बुद—कैन्सर का एक प्रकार जो अत्यन्त कठिन (अश्मोपम) होता है। इसे स्कीर्हस (Scirrhus) या स्क्लीरोमा (Scleroma कहते हैं। (उ०) सख्त वरम, (अ०) बरम सलिब, सरतान सलिब, सकीरूस, सरतान सकीरूसी। (अं०) स्कीर्हस कैन्सर (Scirrhus cancer)।

अश्रुनलिकागत अश्मरी—आँसुओं की नालियों की पथरी। (अ०) हसात दम्इय्या। (अं०) डैक्रयोलिथ (Dacryolith)।

अश्रुनिग्रहज उदावर्त—आँसू बहना रोकने से हुआ उदावर्त।

अश्ववर्बुद—आँसू बंद हो जाने से भीतरी नेत्रगोलक में उत्पन्न हुआ एक उभार। (उ०) अश्की रसौली। (अ०) सलआ दम्इय्या। (अं०) डैक्रयोमा (Dacryoma)।

अश्वकर्णभग्न—एक प्रकार का तिर्यक् भग्न जिसमें हड्डी टेढ़ी होकर टूटती है या बल खा जाती है। घोड़े के रकाब के समान ऊँचा हुआ भग्न। सु०। (अ०) कस्र हिलजूनी, कस्र लौलबी। (अं०) स्पाइरल फ्रैक्चर (Spiral fracture)।

अश्वमूत्र-(अ०) बोलुलखैल। (अं०) हिप्प्यूरिआ (Hippuria)।

अष्ठीलिका—शूकदोष। सु०।

अष्ठीला—अष्ठीलाग्रन्थिकी वृद्धि। अष्ठीलावृद्धि, वाताष्ठीला (सु०)। प्रोस्टेटग्रन्थिवृद्धि। (अ०) अज्म गुद्दए मजी। (अं०) एन्लार्ज्ड प्रोस्टेट Enlarged prostate), एन्लार्जमेंट ऑफ दी प्रोस्टेट (Enlargement of the prostate), प्रोस्टेटिक एनुलार्जमेंट (Prostatic enlargement)।

अष्ठीलाग्रन्थिरसमेह-अष्ठीलाग्रन्थि (पौरुषग्रन्थि) रसस्राव। (अ०) जिरयान मजी, सैलान मजी, जरुर मजी। (अं०) प्रॉस्टेटोरिआ (Prostatorrhoea)।

अष्ठीलाग्रन्थि वृद्धि—अष्ठीलावृद्धि । दे० 'अष्ठीला' ।

अष्ठीलाग्रन्थिशोथ—अष्ठीलाशोथ ।

अष्ठीलावृद्धि—अष्ठीला ।

अष्ठीलाशोथ—फोस्टेटग्रन्थि (अष्ठीला) का शोथ । शिश्नमूलग्रन्थिशोथ । (अ०) चरम गुद्दए मज़ी । (अं०) प्रॉस्टेटायटीज (Prostatitis) ।

असंगति—तिर्यग्गति, तिर्यक्दर्शन, तिरश्चीनजनन । (अं०) शोल्डर ऑर ट्रान्सवर्स प्रेजेण्टेशन (Shoulder or Transverse presentation)

असाध्य रोग—साध्यके विपरीत निष्प्रतिक्रिय रोग । (अ०) अमराज मुस्तअसिया । (अं०) इन्क्योरेबल डिजीज (Incurable disease) ।

असृग्दर—प्रदर, रक्तप्रदर (सु०) । (अ०) गरारतुत्तमूस, कसरत तमूस, सैलानुत्तमूस, इस्तेहाजा, नजीफ रहमी । (अं०) मेनोरिआ (Menorrhoea) मेनोरेजिआ (Menorrhagia), मेट्रोरेजिआ (Metrorrhagia) ।

वक्तव्य—दोषानुसार यह चार प्रकारका होता है । यथा—वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज । वर्णानुसार प्रधानतः दो प्रकार का होता है । एक श्वेतप्रदर और दूसरा रक्तप्रदर । इसमें से रक्तप्रदर तो 'असृग्दर' ही है । दूसरे के लिए दे० 'श्वेतप्रदर' ।

अस्थिकाठिन्य—हड्डी का कठोर या सख्त हो जाना । (अ०) तहज्जुरुल् अजम । (अ०) ऑस्टिओ स्क्लीरोसिस (Osteo-sclerosis) ।

अस्थिकाण्डभग्न—काण्डभग्न ।

अस्थिक्षय—(१) हड्डियों का क्षय । अथर्व० । (अ०) सिल्लुल् अजम । (अं०) ट्यूबरक्यूलोसिस ऑफबोन (Tuberculosis of bone) । (२) फक्क ।

अस्थिगत ज्वर—हड्डी का बोखार ।

अस्थिगत विद्रधि—हड्डी का विद्रधि (फोड़ा) । सु० । अस्थिमज्जा-विद्रधि । (अ०) इल्तिहाबुन्नुखाउल् इजाम । (अं०) इन्फेक्टिव ऑस्टिओमायलायटीज (Infective osteomyelitis) ।

अस्थिगत श्वेतरक्त—(अ०) दमे अब्यज अजमी । (अं०) ऑसियस-ल्यूकीमिआ (Osseus leukæmia) ।

अस्थिग्रन्थि—हड्डी की गाँठ । अ० सं० । (अं०) फाइब्रस यूनिअन । (विशस यूनिअन) ऑफ बोन (Fibrous union (Vicious union) of bone) ।

अस्थिच्छल्लिका—अनुदैर्घ्य भग्न (मधुकोष) ।

अस्थिच्छल्लित—वह भग्न जिसमें अस्थि एक तरफ नीचा और दूसरी तरफ ऊँचा होता है । सु० । अस्थिच्छल्लिका (मधुकोष) । दे० 'अनुदैर्घ्य भग्न' ।

अस्थिनाश—हड्डी का मुरदार (मृतप्राय) पड़ जाना । (अ०) मोतुल् अज्म । (अं०) ऑस्टिओ नेक्रोसिस (Osteo-necrosis) ।

अस्थिभग्न—हड्डी का भग्न, हड्डी टूटना । अस्थिकाण्डभग्न, अस्थिभङ्ग, काण्डभग्न (सु०) । (अ०) कस्र, हाशिमा । (अं०) फ्रैक्चर (Fracture) ।

अस्थिभङ्गुरता—हड्डियों की भुरभुराहट । (अ०) हशाशतुल् अज्म । (अ०) फ्रेजिलिटास ऑसियम् (Fragilitas osseum) ।

अस्थिभञ्जक ज्वर—हड्डीतोड़ बोखार । (अ०) हुम्मद्दुंज । (अं०) ब्रेकबोन फीवर (Break-bone Fever) ।

अस्थिमज्जागत विद्रधि—अस्थिगत विद्रधि ।

अस्थिमज्जाशोथ—अस्थिमज्जा की सूजन । हड्डियों के गूदे की सूजन । (अ०) वर्म मुख्खिल् एजाम, वरम मुख । (अं०) ऑस्टिओ-मायलायटीज (Osteo-myelitis) ।

अस्थिमृदुता—हड्डियों का नरम हो जाना, अस्थिमार्दव । (अ०) लीनुल्-एजाम । (अं०) ऑस्टिओ-मलेशिआ (Osteo-malacia), मोलीटेटस ऑसिअम् (Molitatus osseum) ।

अस्थिरोग—अस्थि के रोग ।

अस्थिवक्रता—फक्क नामक बालरोग (काश्यप) । (हिं०) सूखा, मसान । (अ०) इअ्विजाजुल् एजाम, कुसाह, दाउल्कुसाह । (अं०) रिकेट्स (Rickets), रेकिटीज (Rachitis) ।

अस्थिवृद्धि—(अ०) फतक अजमी । (अं०) ऑस्टिओ-केफेलोमा (Osteo-cephaloma) ।

अस्थिशूल—हड्डी का दर्द, अस्थितोद । (अ०) अलमुल् एजाम । (अं०) ऑस्टैल्जिआ (Ostalgia), ऑस्टिओडीनिया (Osteodynia) ।

अस्थिशोथ—हड्डी की सूजन । (अ०) इल्तिहाब अजमी, वरमुल् अज्म । (अं०) ऑस्टिआइटिज (Osteitis) ।

अस्थिशोष—हड्डियों का शोष । सु० । (अं०) ऑस्टिओ-पोरोसिस (Osteo-Porosis) ।

अस्थिसंधिगत रोग—हड्डी और जोड़ का मर्ज । (अ०) मर्ज अल्मी मफ़्सिली । (अं०) ऑस्टिओ-आर्थोपैथी (Osteo-Arthopathy) ।

अस्थ्यर्बुद—अस्थि की गाँठ, अस्थि का अप्राकृतिक उभार या रसौली, अस्थि का अर्बुद, अध्यस्थि (सु०) । (अ०) सल्आ अजमिय्या । (अं०) ऑस्टियोमा (Osteoma), ऑसिअस ट्यूमर (Osseus tumour), एक्सॉस्टोसिस (Exostosis) ।

अस्थ्यर्बुद, सुषिर—अस्थि का सुषिर अर्बुद । (अं०) ऑस्टिओमा कैन्सेलस (Osteoma cancellus) ।

अस्थ्यावरण शोथ—हड्डी की झिल्ली की सूजन । (अ०) वरम गिशाअजमी । (अं०) पेरी-ऑस्टिआइटीज (Peri-osteitis) ।

अस्वेद—पसीना न आना । अस्वेदन ।

अहिपूतन—बालकों का गुदपाक । गुदकंद (सु०), गुदकुट्टक (अ० सं०), मातृकादोष, पूतन, प्रष्टारु, गुदकुन्द (गुदकुट्ट), अनामिक (अ० हू०) । (अं०) इन्फण्टाइल एरिथीमा ऑफ जाक्वेट (Infantile erythema of jacquet), नैप्किन रैश (Napkin rash) । सोअर बटक्श (Sore buttocks) ।

अहिपूतना—'अहिपूतन' नामक बालरोग । मा० नि० ।

(आ)

आकस्मिक दग्ध—(अ०) इतरथादग्ध ।

आकस्मिक रोग—वह रोग जिनका ठीक कारण मालूम नहीं । जो कहीं २ हों, महामारी की भाँति न हों । (अं०) स्पोरडिक (Sporadic) । (अ०) मर्ज मुत्फ़रिक ।

आकाशविद्युद्दग्ध—दे० 'अतितेजसादग्ध' ।

आक्षेप(क)—शरीर की अधिकांश या सम्पूर्ण पेशियों में होने वाली अकस्मात् और प्रबल सिकुड़न, (सु०) आक्षेपण, ऐंठन, बाँयटे । (अ०) तशन्नुज । (अं०) कन्वल्शन्स (Convulsions) ।

आक्षेप(ण)—झटके के साथ शरीर की पेशियों में संकोच उत्पन्न करना। (अं०) स्पैज्म (Spasm)।

आक्षेपक ज्वर—(१) आक्षेपयुक्त ज्वर। (अं०) स्पैज्मॅटिक फीवर (Spasmotic Fever)। (२) शीर्षसौषुम्नज्वर, गर्दनतोड़ बोखार। दे० 'मस्तिष्क सौषुम्न ज्वर'।

आखोविष—चूहे का जहर, मूषिक विष। (अ०) लद्गुल्फार। (अं०) रैट-बाइट (Rat-bite)।

आखोविषजन्य ज्वर—दे० 'मूषक ज्वर'।

आगन्तु(ज) ज्वर—चोट आदि से, श्येनादि यागों से, ब्राह्मण-गुरु-सिद्धादि के शाप से तथा भूतादि वा कामादि से होने वाला ज्वर। (अं०) अडवेण्टिशियस फीवर (Adventitious Fever)। इसके भेद ज्वर में आगन्तुकज्वरभेद शीर्षक में देखें।

आगन्तुक व्रण—व्रण का एक भेद। दे० 'व्रण'।

आगन्तु(क) रोग—चोटादि लगने के कारण होने वाले रोग। सुश्रुत के अनुसार अभिघात (चोट) शब्द से शस्त्र, व्याल और कालका अभिघात समझ कर संघातबलप्रवृत्त, दैवबलप्रवृत्त, और कालबलप्रवृत्त (सु०) रोगों का समावेश आगन्तुक रोगों में करना चाहिये।

आघातजन्य ग्रन्थि—अभिघातज ग्रन्थि। (अ०) कीसा जरबी। (अं०) ट्रॉमैटिक सिस्ट (Traumatic cyst)।

आघातजन्य ज्वर—अभिघातज ज्वर। (अ०) हुम्मा जरबी। (अं०) ट्रॉमैटिक फीवर (Traumatic Fever)।

आघातजन्य दूषितज्वर—अभिघातज दूषित ज्वर। (अ०) हुम्मा अफूनिया आरजिया। (अं०) सेप्टिक ट्रॉमैटिक फीवर (Septic traumatic Fever)।

आटोप—(१) उदर में वायु का संचलन। (२) उदर (पेट) में वेदना के साथ गुड़गुड़ शब्द होना—आटोपो गुड़गुड़ाशब्दः प्रोक्तो जठरसंभवः (मा०)। पेट की गुड़गुड़ाहट, अन्त्रकूज। (अ०) कराकुर, कराकुर मेदा (शिकम)। (अं०) बोर्बोरिग्मस (Borborygmus), गर्गलिंग (Gurgling)। (३) पेट में वात का निरोध न होकर फूलना। (अं०) टिम्पॅनाइटीज (Tympanitis)।

आढ्यरोग—वातरक्त ।

आढ्यवात—दे० 'ऊरुस्तम्भ' ।

आतङ्कसमुत्पन्न व्याधि—रोग के उपद्रव स्वरूप में उत्पन्न हुआ व्याधि। उपद्रवरूप रोग । इसको अप्रधान, अनुबन्ध या अस्वतन्त्र व्याधि कहते हैं । सु० ।

आत्ययिक अर्बुद—वह अर्बुद जिसके कारण मृत्यु हो । यह त्वचा, अस्थि, मज्जा इत्यादिमें होता और तेजी से बढ़ने वाला होता है । घातक अर्बुद । (अ०) सल्आ खबीसा या मुहलिका । (उ०) खबीस या मुहलिक रसौलियाँ । (अं०) मैलिग्नेंण्ट ट्यूमर (Malignant tumour) । **वक्तव्य**—पाश्चात्य वैद्यक में इसके यह दो विभाग किये गये हैं—(१) सार्कोमा और (२) कैन्सर या कार्सिनोमा ।

आदिबलप्रवृत्त—माता-पिता के शुक्र-शोणित दोषों के कारण संतति में प्रवेश करने वाली व्याधियाँ (सु०), कुलज (च०), कुलसंचारी, संचारी (याज्ञ०); कुलोद्भव, सहज (वा०), प्रकृतिप्रभव (भेल) । (अ०) अमराज मुतवारिसा, खानदानी । (अं०) इन्हेरिटेड डिजीज (Inherited disease), हेरीडिटरी (Heriditary) ।

आधिदैविक—देवता, गंधर्व, यक्ष, राक्षस इत्यादि के कारण उत्पन्न हुए विकार ।

आधिभौतिक—मनुष्य, पशु, पक्षी, सरीसृप इत्यादि भूतों के कारण उत्पन्न हुए विकार ।

आध्मान—अन्त्र में वात (Gas) का संचय होने से उदर (पक्वाशय) का (मशक की भाँति) खूब फूलना । इसमें कब्ज, शूल, गुड़गुड़ शब्द इत्यादि अन्य लक्षण भी साथ होते हैं । इसका कारण अधोवात का अवरोध है । सु० । (अ०) इन्तिफाखुल्बत्न, रियाहअमआऽ (शिकम) । (अं०) टिम्पॅनाइटीज (Tympanitis), मिटिऑरिज्म (Meteorism) । दे० 'प्रत्याध्मान' ।

आध्यात्मिक रोग—समनस्क आत्मायुक्त पंचमहाभूतात्मक चिकित्साधार शरीर अर्थात् पुरुष में उत्पन्न हुए विकार अर्थात् बाह्योपाधि के सिवाय केवल शरीरगत त्रिदोषों से और मानसिक रज और तम इनसे उत्पन्न हुए विकार ।

आनाह—कब्ज के साथ वायु से पेट फूलना (सु०), अफारा । (अ०) नफ्ख, नफ्खा, नफ्ख शिकम । (अं०) फ्लैच्युलेंस (Flatulence) ।

आनाहशूल—आनाहजन्य (आध्मान-आटोपजन्य) शूल । (अ) कुलंज रीही, रीही कुलंज । (अं०) फ्लैच्युलेंट कॉलिक (Flatulent colic) ।

आन्त्रक्षय—अन्त्रका क्षय, आन्त्रिक क्षय (अथर्व०) । (अ०) सिल्लुल् अमआऽ । (अं०) इन्टेस्टाइनल ट्यूबरक्युलोसिस (Intestinal tuberculosis) ।

आन्त्रघात—अन्त्र का शिथिल या ढीला हो जाना । (अ०) इस्तिरखाउल् अमआऽ । (अं०) एण्टेरोटोसिस (Enterotosis) ।

आन्त्रच्छेदजन्य उदरावरणशोथ—दे० 'परिस्राव्युदर' ।

आन्त्रजन्य वृषणवृद्धि—दे० 'आन्त्रवृद्धि' ।

आन्त्रदौर्बल्य—अन्त्र की कमजोरी, अन्त्रसंमूर्च्छन (च०) । (अ०) जोफ मिअवी (अमआऽ) । (अं०) वीकनेस ऑफ दी इन्टेस्टाइन्ज (Weakness of the intestines) ।

आन्त्रपरिवर्तनज शूल—(१) वह शूल जो अन्त्र के बल खा जाने (आन्त्रपरिवर्तन) या अपनी जगह से टल जाने अथवा उसमें ग्रंथि पड़ जाने के कारण उत्पन्न होता है । प्राचीन यूनानी हकीमों ने इसकी उपस्थिति स्थूलान्त्र विशेषकर उण्डुक नामक अन्त्र में बतलाई है । किन्तु पाश्चात्य वैद्य (डॉक्टर) इसकी उपस्थिति स्थूलान्त्र और क्षुद्रान्त्र दोनों में बतलाते हैं । यूनानी हकीम इसे 'कुलञ्ज इल्तिबाई' और डॉक्टर वॉल्व्युलस (Volvulus) कहते हैं । (२) शूल का वह दुश्चिकित्स्य प्रकार जिसमें क्षुद्रान्त्र में शूल होता है । तीव्रता की दशा में मलगंधिछर्दि आने लगती है । अंत में वमन में मल की उपस्थिति तथा गंध भी रहती है । रोगी के शरीर और मुख से दुर्गंध आती है । इसमें वस्तिदान आदि से लाभ नहीं होता; क्योंकि इसमें शूल तथा अवरोध ऊपर वाली आँतों में होता है । इसके विपरीत शूलरोग (कुलञ्ज) में दर्द नीचे वाली और स्थूलान्त्र में होता है । यूनानी हकीम इसे 'एलाऊस' कहते हैं । (अ०) मग़्स रब्बेइर्हम । (फा०) दर्देशिकम पनाहबखुदा । (अं०) ईलिअस (Ileus), ईलियक पैशन (Ileac passion) । दे० 'बद्धगुदोदर' ।

वक्तव्य—**सुश्रुत** ने बद्धगुदोदर के लक्षणों में एक प्रधान लक्षण 'मल के समान गंध की उलटी होना' लिखा है—'विट्समगन्धिकं च । प्रच्छर्दयन् बद्धगुदो विभाव्यः ।' **चरक** ने बद्धगुदोदर के कारणों में 'आन्त्रसंमूर्च्छन' और

'उदावर्त' इन दो कारणों 'उदावर्तैस्तथार्शोभिरन्त्रसमूर्च्छनेन वा' का उल्लेख किया है। आन्त्रसंमूर्च्छन का अर्थ चक्रपाणिदत्त के अनुसार 'आन्त्रपरिवर्तन' है जिसको अरबी में 'इल्तिवाऽ' और अँगरेजी में 'वॉल्व्यूलस' कह सकते हैं। चरक ने इसका दूसरा कारण उदावर्त लिखा है जिसका एक लक्षण शूल भी है। यद्यपि सुश्रुत और चरकादि ने बद्धगुदोदर के लक्षणों में शूल का उल्लेख नहीं किया है; तथापि चरक में इसके कारणों में उदावर्त का उल्लेख होने से इसमें शूल होने का अनुमान किया जा सकता। चरक ने इसके कारणों में बद्धगुद का भी उल्लेख किया है जिसका अर्थ है गुदसन्निरोध। इसमें आन्त्र-संमूर्च्छन या आन्त्रपरिवर्तनादि के कारण अन्त्र का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है—अन्त्रसंमूर्च्छनेन वा। अपानो मार्गसंरोधाद्वात्वग्निकुपितोऽनिलः। वर्चःपित्त-कफान् रुद्ध्वा जनयत्युदरं ततः॥ (च० उदर–चि०)। यूनानी ईलिअस (एलाऊस) का भी अर्थ आन्त्रपरिवर्तन (अन्त्र मे बल पड़ना) है। यही अर्थ अरबी इल्तिवाऽ और अँगरेजी वॉल्व्युलस का है अर्थात् ये पर्याय हैं। इन लक्षणों एवं निरुक्ति आदि का विचार करने पर हम उपर्युक्त यूनानी परिभाषाओं (संज्ञाओं) के लिए आयुर्वेदोक्त 'बद्धगुदोदर' संज्ञा का प्रयोग कर सकते हैं।

आन्त्रपुच्छशोथ—उपान्त्रशोथ।

आन्त्रवृद्धि—अन्त्रवृद्धि।

आन्त्रव्रण—अन्त्र का व्रण। (अ०) कुरूहुल् अमआऽ। (अं०) अल्सरेटिव्ह एण्टराइटीज (Ulcerative enteritis), इन्टेस्टाइनल अल्सर (Intestinal ulcer)।

आन्त्रशूल—(१) आँतों का दर्द। (अ०) वज्उल् अमआऽ, दर्दे अमआऽ। (अं०) एण्टरल्जिया (Enteralgia)। (२) आँतों का शूल। (अ०) कुलंज मिअवी (असली कुलंज)। (अं०) इन्टेस्टाइनल् कॉलिक (Intestinal colic)।

आन्त्रशोथ—अन्त्र की सूजन। (अ०) वरम (वरमुल्) अमआऽ। (अं०) एन्टरायटीज (Enteritis)।

आन्त्रशोथ, चिरज—अन्त्र का पुराना शोथ। (अं०) क्रॉनिक एन्टरायटीज (Chronic enteritis)।

आन्त्रशोथ, प्रसेकजन्य (प्रतिश्यायज)—अन्त्र का प्रतिश्याय-

जन्य शोथ। (अ०) वरमुल अमआऽनजली। (अं०) कॅटारल एण्टरायटीज़ (Catarrhal enteritis)।

आन्त्रसम्मूर्च्छन—(१) दे० 'आन्त्रदौर्बल्य'। (२) अन्त्र का बल खाना, आन्त्रपरिवर्तन (चक्र०)। (अ०) इल्तिवाउल् अमआऽ। (अं०) वॉल्व्युलस ऑफ दी इण्टेस्टाइन्ज़ (Volvulus of the intestines)।

आन्त्रसम्मूर्च्छनजन्य बद्धगुद—आन्त्रपरिवर्तनज बद्धगुद। (अ०) सद्दुल् अमआऽद्दाद्, इन्सिदाद अमआऽ (इल्तिवाई) शदीद। (अं०) ॲक्यूट इण्टेस्टाइनल ऑब्स्ट्रक्शन (Acute intestinal obstruction)।

आन्त्रातिसार—अन्त्र की खराबी से होने वाला अतिसार। (अ०) इसहाल मिअवी। दे० 'रक्तातिसार'।

आन्त्रान्त्रानुप्रवेश, आन्त्रान्योन्यानुप्रवेशित (प्रविष्ट)—एक अन्त्र का कोई भाग दूसरी में चला जाना। (अ०) इल्तिवाउल्लफाइफ, इल्तिवाउल्अमआऽ। (अं०) इण्टसस्सेप्शन (Intussasception)।

आन्त्रावरोध—अन्त्र का अवरोध (बन्द हो जाना)। (अ०) सुद्दुल् अमआऽ, इन्सिदाद अमआऽ। (अं०) इण्टेस्टाइनल् ऑब्स्ट्रक्शन (Intestinal obstruction)।

आन्त्रावरोधजन्य वृषणवृद्धि (आन्त्रवृद्धि)—अवरोधजन्य वह अन्त्रवृद्धि जिसके कारण अन्त्र बन्द हो जायँ। (अ०) फत्क सुद्दी। (अं०) इन्कार्सिरेटेड हर्निया (Incarcerated hernia)।

आन्त्रावरोधजन्य शूल—अन्त्र के अवरोध से होने वाला शूलरोग।

आन्त्रिक ज्वर—आन्त्रज्वर, आन्त्रिक सन्निपातज्वर। दे० 'मन्थरक ज्वर'।

आन्ध्य—अन्धता, अन्धापन। दे० 'अन्धता'।

आभ्यन्तर कृमिरोग—आन्तरिक क्रिमियों से होने वाला रोग।

आभ्यन्तर विद्रधि—वह विद्रधि जो शिरोगुहा, उरोगुहा और उदरगुहा में उत्पन्न होता है। अन्तर्विद्रधि।

वक्तव्य—आभ्यन्तरीय विद्रधियों से आयुर्वेद में कहीं-कहीं शोथ वा पाक (Inflammation) का अर्थ भी निकलता है।

आभ्यन्तरायाम—अन्तरायाम।

आमज तृष्णा—दृढ़ तृष्णा। दे० 'तृष्णा'।

आमज्वर—अपक्व ज्वर ।

आमपीनस—पीनस रोग का अपक्व भेद (मा० नि०) ।

आमवात—गठिया का रोग । (अ०) वजा (वजउल) मफासिल, दाउल् मफासिल, हिदार । (फा०) दर्द बन्द-बन्द । (अं०) रूह्यूमॅटिज्म (Rheumatism) ।

आमवात (-ज,-तिक) ज्वर—सन्धिक ज्वर, गठिये का बोखार । (अ०) हुम्मा वजउल् मफासल (-ली), हुम्मा हिदारिया । (अं०) रूह्यूमॅटिक फीवर (Rheumatic fever) ।

आमवातज वातव्याधि—गठिया से उत्पन्न हुआ वातरोग ।

आमवातिक रक्तपित्त—आमवातजन्य पप्यूंरा (रक्तपित्तरोगभेद) रोग । यह श्याव होता है । (अ०) फरफूरा वज्उल् मफासली, कुह्बत वज्उल् मफासिल, अर्जवानिया हिदारिया । (अ०) पप्यूंरा रूह्यूमटिका (Purpura rheumatica), शॉनलिन्स डिजीज (Shonlin's disease) ।

आमशूल—कफशूल के समान लक्षणों वाला आमोद्भव शूल । मा० नि० ।

आमाजीर्ण—कफाजीर्ण ।

आमातिसार—(१) आंवमिश्र पीड़ायुक्त दस्त । मा० नि० । (अं०) म्युकस कोलायटीज (Mucous colitis) । (२) अपक्वातिसार ।

आमाशयगत वात—(अ०) दर्दरियाहीमेदा ।

आमाशय विद्रधि—आमाशय का फोड़ा । (अ०) दुबैलतुल्मेदा, फलगमूनी मेदा । (अं०) फ्लेग्मोनस गैस्ट्रायटीज (Phlegmonous gastritis) सप्यूरेटिव्ह गैस्ट्रायटीज (Suppurative gastritis) ।

आमाशयशूल—आमाशय का शूल । (अ०) वज्उल्मेदा, अलमुल्मेदा, तशन्नुजी दर्दमेदा, असबी दर्दमेदा । (फा०) दर्दमेदा, दर्दशिकम । (अं०) गैस्ट्रैल्जिया (Gastralgia), गैस्ट्रोडीनिया (Gastrodynia), गैस्ट्रिक कोलिक (Gastric colic) ।

आमाशयातिसार—आमाशय की खराबी से होने वाला अतिसार । (अ०) इसहाल मेदी ।

आमाशयान्त्रजन्य शिरोरोग—(अ०) सुदाअ शिरकी या मिअवी ।

आमाशयान्त्रवृद्धि—(अ०) फत्क मेदी । (अं०) गॅस्ट्रिक हर्निया (Gastric hernia) ।

आमाशयिक अपस्मार—आमाशयजन्य मृगी । (अ०) सरअ मेदी । (अं०) गॉस्ट्रिक एपिलेप्सी (Gastric epilepsy) ।

आमाशयिक अर्बुद—आमाशयगत अर्बुद । (अ०) सरतान या सरतानुल्मेदा (हकीम तबरी) । खबीस जख्म मेदा । (अं०) कॅन्सर ऑफ दी स्टॅमक (Cancer of the stomach) ।

आमाशयिक जीर्ण शोथ—आमाशय का पुराना शोथ । (अ०) वरम मेदा मुज्मिन । (अं०) क्रॉनिक गॅस्ट्रायटीज (Chronic gastritis) ।

आमाशयिक विद्रधि—आमाशय का फोड़ा (विद्रधि) । (अ०) दुबैलतुल्मेदा । (अं०) सप्यूरेटिव्ह गॅस्ट्रायटीज (Suppurative gastritis) ।

आमाशयिक विस्तार—आमाशय का विस्तार, मेदे का ढीला होकर फैल जाना । (अं०) इस्तिरखाऽ अम्आऽ । (अं०) डिलेटेशन ऑफ दी स्टॅमक (Dilatation of the stomach) ।

आमाशयिक व्रण—आमाशय का व्रण । मेदे का जख्म । (अ०) करहा मेदिया, कुरूह मेदा । (अं०) गॅस्ट्रिक अल्सर (Gastric ulcer), पिप्टिक अल्सर (Peptic ulcer) ।

आमाशयिक शोथ—आमाशय शोथ, मेदे की सूजन । (अ०) इल्तिहाब (बुल्) मेदा । (अं०) गॅस्ट्रायटीज (Gastritis) ।

आमाशयाक्षेप—आमाशय का आक्षेप, मेदा की ऐंठन । (अ०) तशन्नुजुल्मेदा । (अं०) गॅस्ट्रोस्मैझम (Gastrospasm) ।

आमाशयोद्वेष्टन—आमाशय की ऐंठन वा मरोड़ । (अ०) तशन्नुज मेदा, मगस मेदी । (अ०) गॅस्ट्रिक क्रैम्प (Gastric cramp) । दे० 'आमाशयाक्षेप' ।

आमोत्पन्नानाह—आमजनित आनाह ।

आयामिक हृद्यन्त्र—हृदय के कोष्ठों की विस्तृति ।

आर्तवक्षय—दे० 'क्षीणार्तव' ।

आर्तवरोध—आर्तव बंद हो जाना । (अ०) एह्तिबास हैज (तम्स) ।

आर्तवादर्शन—अनार्तव ।

आर्तवाल्पता—आर्तवशोणित की कमी । (अ०) किल्लत तम्स । (अं०) वॉण्ट ऑफ मेन्स्ट्रुएशन (Want of menstruation) ।

आवी—गर्भाशय संकोच से प्रसव के समय पीठ के नीचे के हिस्से में होने वाली पीड़ा, प्रसव पूर्व गर्भनिःसारक वेदना, प्रसववेदना, जनने का दर्द। (अ०) मेखाज, दरूजा। (अं०) लेबर पेन्स (Labour pains)।

आवृतार्तव—आर्तवदर्शन का वह भेद जिसमें योग्य वय में आर्तवस्राव आरम्भ होता है; परन्तु बाहर आने का मार्ग अवरुद्ध होने के कारण आर्तवशोणित भीतर ही याने आवृत या प्रच्छन्न रहता है। (अं०) क्रिप्टोमेनोरिआ (Cryptomenorrhœa), ॲपेरंट अमेनोरिआ (Apparent amenorrhœa)।

आशयभ्रंश—उदरकोष्ठ का घात। (अ०) इस्तिरखाऽ अहशाऽ शिकम। (अं०) वाइसेरोप्टोसिस (Visceroptosis)।

आसेक्य—वह नपुंसक या क्लीब जो माता-पिता के निर्बल बीज से उत्पन्न होता है। यह शुक्र सेवन से ध्वजोच्छ्रायको पाता है। सु०। अष्टाङ्गसंग्रह में केवल माता या केवल पिता के क्षीणबलवीज से आसेक्य की उत्पत्ति बताई है। जब दोनों अल्प बीज वाले होते हैं, तब 'वक्रध्वज' नामक षण्ढ उत्पन्न होता है। चरक में आसेक्य को 'वक्री' कहा है। डल्हण ने 'मुखयोनि' इसका अपर पर्याय लिखा है।

आहारदोषज अतिसार—आहार दोष से होने वाला अतिसार। (अ०) इसहाल गिजाई। (अं०) क्रेप्यूलस डायरिया (Crapulous diarrhœa)।

आहिक ज्वर—एकाहिक ज्वर।

(इ)

इक्षुमेह—एक प्रकार का कफज प्रमेह। इक्षुमेह से पीड़ित ऊख के रस के समान मूत्रत्याग करता है। सु०; च०; वा०। इसमें मूत्र में शर्करा होती है। (अ०) बोल सुक्करी, बोल अस्की। (फा०) बोल शकरी। (अं०) ग्लायकोसूरिया (Glycosuria)। **वक्तव्य**—आयुर्वेद में शर्करायुक्त प्रमेह कफ और वात से पृथक्-पृथक् होते हैं। कफजन्य संतर्पण से और वातजन्य धातुक्षय से होता है—'इक्षुः प्रमेहं मधुरं सपिच्छं मधुपमं स्याद् द्विविधो विचारः। क्षीणेषु दोषेष्वनिलात्मकः स्यात् संतर्पणाद्वा कफसंभवः स्यात्'॥ (चरक, प्रमेहचिकित्सा)। इस संतर्पणजन्य (कफज) इक्षुमेह को अंग्रेजी में ॲलिमेन्टरी ग्लायकोसूरिआ (Alimentary glycosuria) और अरबी में 'जयाबीतुस मिअवी या गिजाई' कहते हैं। संतर्पण के अतिरिक्त अत्यधिक मानसिक और शारीरिक परिश्रम से, मस्तिष्काघात से

वृक्क की शर्करा-बन्धनमर्यादा (Renal thresh-hold) कम होने से भी इक्षुमेह होता है। वृक्क के कारण होने वाले इक्षुमेह (वृक्कज शर्करामेह) को डॉक्टरी में 'रेनल ग्लायकोसूरिआ (Glycosuria) और अरबी में 'जयाबीतुस कुलवी व मसाई' कहते हैं। यह शर्करायुक्त प्रमेह का सामान्य भेद है जिसमें केवल शर्करा जाती है। 'क्षौद्रमेह' या मधुमेह' इसका विशेष भेद है (दे० 'मधुमेह')। चरक में इक्षुमेह के अतिरिक्त 'शीतमेह' नामक दूसरा शर्करायुक्त मेह वर्णन किया है।

इतरथादग्ध—वैद्यक के सिवाय या रोगचिकित्सा के सिवाय अन्य प्रकार से जला हुआ। आकस्मिक दग्ध। सु०। प्रमाददग्ध। वा०। अग्निदग्ध।

इन्द्रलुप्त—बाल गिरना, बाल झड़ना, खालित्य, रुज्या (सु०), रूक्ष्या, चाच (अ० हृ०), रुह्या (मा० नि०), खल्ली (भोज)। (अ०) तसाकुत (तु) श्शार, सुकूत शार। (अं०) ॲलोपेशिआ (Alopecia)। **वक्तव्य**—अष्टाङ्गसंग्रह के अनुसार इन्द्रलुप्त में बाल सहसा गिरते हैं। माधव-निदान की टीका में श्रीकण्ठदत्त कार्तिक का मत देते हैं—कार्तिकस्त्वाह—"इन्द्रलुप्तं श्मश्रुणि भवति।" इन्द्रलुप्त में डाढ़ी और मूछ के बाल गिरते हैं।

इन्द्रविद्धा—क्षुद्ररोगों में वर्णित पिड़का विशेष। वा०। दे 'इन्द्रवृद्धा'।

इन्द्रवृद्धा—क्षुद्ररोगान्तर्गत वात और पित्त से उत्पन्न हुई वह पिड़का जो पद्मबीजकोष की तरह की (छोटी-छोटी) फुंसियों से व्याप्त होती है। सु०। विद्धा (वा०)।

इरिवेल्लिका—सिर (मतांतर से जत्रूर्ध्व) में पिड़का के रूप में होने वाला वह क्षुद्ररोग जिसमें पिडका गोल; उग्र पीड़ाकारी; उग्र ज्वरकारी, त्रिदोष जन्य और त्रिदोष के लक्षणों से युक्त होती है। मा० नि०।

(ई)

ईर्ष्यक—नपुंसक या क्लीब का वह भेद जिसमें वह दूसरों का मैथुन देखकर मैथुन में प्रवृत्त होता है। सु०। इसे 'दृग्योनि' भी कहते हैं—दृग्योनिरय-मीर्ष्यकापरपर्यायः (डल्हण)।

ईर्ष्यारति—वह मन्द हर्ष वाले स्त्री-पुरुष जो ईर्ष्या से अभिभूत होकर मैथुन में प्रवृत्त होते हैं। च०। मा० नि०। यह सुश्रुतोक्त 'ईर्ष्यक' है। ईर्ष्याभिरति। च०।

(उ)

उच्छ्वासावरोधन—साँस लेने में रुकावट होना।

उण्डुकशोथ—उण्डुक नामक अन्त्र (कानी आँत) का शोथ। (अ०) वरम अअ्वर, इल्तहाब अअ्वर। (अं०) टिफिलायटीज (Typhilitis)।

उत्कोठ—एक क्षुद्ररोग जिसमें वमन के मिथ्यायोग तथा आयोग से बाहर निकलते हुए पित्त, श्लेष्मा एवं अन्न के रोकने से मण्डल हो जाते हैं और उनमें खाज होती है। ये संख्या में अधिक और लालिमायुक्त होते हैं। (इनमें से) उत्कोठ अनुबन्धयुक्त होता है (इसकी अनुबन्धता फिर-फिर होने से होती है) और कोठ अनुबन्धरहित। वा०। मा०। नि०।

वक्तव्य—उत्कोठ अलर्गी (Allergy) नामक अवस्था का एक प्रकट लक्षण है। (हि०) छपाकी पित्ती। (अ०) शिरा, दलम। (अं०) अन्जोस न्युरोटिक इडीमा (Angeis neurotic œdema) दे० 'शीतपित्त'।

उत्क्लेश—(१) हृदयोत्क्लेश, हृदयोद्वेष्टन (सु०)। (हि०) कलेजा जलना। (अ०) हुर्कते मेदा, हुर्कतुल्मेदा, वज्उल्फुवाद। (अं०) हार्ट-बर्न (Heart-burn), कार्डिएल्जिया (Cardialgia)। (२) मिचली, हृल्लास। (अ०) गसी, गिसयान। (अं०) नॉसिआ (Nausea)। **समुद्रयात्राजन्य (सामुद्रिक) उत्क्लेश**—जहाज की मिचली। (अ०) गिस्यान बहरी। (अं०) सीसिक्नेस (Seasickness)। **वमन की चेष्टा**—ओकाई, उबकाई, उद्रेचन, जी मचलाना, सूखी कै, मेदा का वमन की चेष्टा करना, परन्तु उसमें कुछ न निकलना। (अ०) तहव्वुअ। (अं०) रेचिंग (Retching), ड्राई वॉमिटिंग (Dry vomiting)। दे० 'छर्दि'।

उत्तमा—शूकदोष। सु०।

उत्तान—चरक और अष्टाङ्गसंग्रह के मत से वातरक्त का वह भेद जो त्वचा और मांस को आश्रय करके और प्रथम होता है। आधुनिक पाश्चात्य परिभाषा में इसे अॅक्यूट (Acute) कह सकते हैं।

उत्तुण्डिता—(बालकों में) नाभिगत अन्त्रवृद्धि, नाभितुण्डि, सुण्डा, घुन्नक। (अ०) फत्क सुर्री (सुर्रती), नुतूउस्सुर्रा। (अं०) अम्बिलाइकल हर्निआ (Umbilical hernia), ऑम्फेलोसील (Omphelocele)।

वक्तव्य— इस विकार (नाडीकल्पनदोषजन्य नाभिगत आन्त्रवृद्धि–नाभितुण्डि)

के यह चार प्रकार चरक में लिखे हैं—(१) आयामव्यायामोत्तुण्डिता (का)—यह दीर्घपीनत्वयुत होती है। सुश्रुत में इसे 'तुण्डि' लिखा है। (२) 'विजृम्भिका' में नाभि हमेशा के लिए उभरी हुई नहीं होती, परन्तु जिस समय बालक रोता है या मलत्याग करता है, उस समय उदरगत भार बढ़ने के कारण फूलती है (मुहुर्मुहुर्वृद्धिमती)। बाकी तीनों प्रकारों विण्डलिका (परिमण्डलयुता), विनाभिका (अन्तोच्छूना मध्यनिम्ना) और आयामव्यायामोत्तुण्डिता में नाभि सदा के लिए फूली हुई रहती है।

उत्पात—कर्णपालीगत रोग (अ० हृ०)। कर्णपालीशोथ।

उत्पिष्ट—सन्धिमुक्त का वह भेद जिसमें अस्थि का चूर्ण या पेषण होता है। सु०। (अं०) फ्रॅक्चर डिस्लोकेशन (Fracture dislocation)।

उत्फुल्लिका—बालश्वसनक ज्वर, डब्बा, पसली चलना (सि० भे० मणिमाला)। (अ०) डब्बा अत्फाल, जातुरिया शोअबिया। (अं०) ब्रॉङ्को न्युमोनिया इन्फण्टाइल् (Broncho pneumonia infantile)।

उत्सङ्गपिड़का—नेत्रवर्त्मगत रोग। उत्सङ्गिनी। बिलनी।

उत्सङ्गिनी—उत्सङ्गपिड़का।

उत्सन्न (उन्नत) मोल—मसा, मस्सा। दे० 'मशक'।

उदकमेह—एक प्रकार का श्लेष्म-प्रमेह जिसमें रोगी (वर्ण और गुरुता में) जल के समान स्वच्छ (श्वेत) किसी प्रकार की पीड़ा न होकर मूत्र का त्याग करता है। च०; सु०; वा०; मा० नि०। बहुमूत्रमेह जिसमें पेशाब बहुत होता है, किन्तु पेशाब के साथ शर्करा नहीं आती है। (अ०) कसरते (-तुल्)-बौल, बुवाल, अब्वाल, बौल अब्यज (साफी)। (अं०) पॉलीयूरिआ (Polyuria)। इसके अस्थायी और स्थायी यह दो भेद हैं। इनमें अस्थायी का वर्णन ऊपर किया गया है और दूसरा स्थायी भेद मूत्रतृष्णाधिक्ययुक्त उदकमेह है जो पिच्युटरी ग्रन्थि की विकृति से होता है। इसके पर्याय—(अ०) जयाबीतुस काजिब, जयाबीतुस साजिज (सादा), जयाबीतुस बारिद, दौलाब। (अं०) डायबेटीज इन्सीपीडस (Diabetes Insipidus)।

उदकोदर—दे० 'जलोदर'।

उदर—सोत्सेध उदरस्थ रोग; फूला हुआ पेट का रोग, उदररोग (सु०)।

(अ०) अमराज अज्मुल्बत्न आम्मा । (अं०) जेनरलाइज्ड ॲब्डोमिनल एन्लार्जमेंट्स (Generalised abdominal enlargements) । भेद—वातोदर, पित्तोदर, कफोदर, सन्निपातोदर, प्लीहोदर (यकृद्दाल्यूदर), बद्धगुदोदर और आगन्तुक (क्षतोदर) ।

उदरक्षय—उदर का क्षयरोग । (अ०) सिल बत्नी, सिल मासारीकी । (अं०) टेबीज मेसेन्टेरिका (Tebes Mesenterica) ।

उदररोग—दे० 'उदर' ।

उदरवृद्धि—उदर बढ़ना ।

उदरभ्रंश—पेट के भीतरी अंगों का ढीला होकर लटक जाना, नारा उखड़ना । (अ०) इस्तिरखाउशिकमी (अह्शाउशिकम) । (अं०) ॲब्डोमिनल टोसिस (Abdominal tosis), वाइसेरोप्टोसिस (Visceroptosis) ।

उदरव्रण—उदरक्षत । (अ०) जराहत बत्न । (अं०) ॲब्डोमिनल वुंड (Abdominal wound) ।

उदरस्थ (औदरीय) अन्त्रवृद्धि—उदर की वह वृद्धि जिसमें अन्त्र उदर की पेशियों के मध्य आ जाती है । (अ०) फत्क मेराकुल्बत्न (मेराकी), फत्क बत्नी । (अं०) ॲब्डोमिनल हर्निया (Abdominal Hernia) ।

उदरार्बुद—दे० 'गुल्म' ।

उदरावरणगत रोग—उदरावरण (बारीतून या सिफाक) के रोग । (अ०) अमराज बारीतून (सिफाक) । (अं०) डिजीजेज ऑफ दी पेरीटोनिअम् (Diseases of the peritoneum) ।

उदरावरण शोथ—उदरावरण का शोथ । (अ०) इल्तिहाब बारीतून (सिफाक), वरम बारीतून (सिफाक, सिफाकी) । (अं०) पेरिटोनायटीज (Peritonites) ।

उदरावेष्ट—आभ्यन्तरीय कफज कृमि का एक भेद । शारीरकृमि भेद । वा०; शार्ङ्ग० । पेट के कीड़े, उदरकृमि । (अ०) दीदान शिकम, दूदुल्बत्न, (फा०) किर्म शिकम ।

उदरोत्सेध—पेट फूलना ।

उदर्द—शीत पित्त का एक भेद जिसमें (त्रिदोषजन्य होने पर भी कफ)

की अधिकता होती है अर्थात् यह क्षारीय, कफज एवं रात्रि में तथा शिशिर ऋतु में होता है। इसके चकत्तों के किनारे ऊँचे और मध्य में गहरे होते हैं जिनमें खुजली और लालिमा होती है। बलगमी पित्ती, छपा की। (अ०) नबातुल्लैल। (अं०) अर्टिकेरिया (Urticaria)। हाइव्ज़। (Hives)। दे० 'शीतपित्त'।

उदावर्त—(१) आन्त्राक्षेप (च०)। स्पैज़्म ऑफ दी स्फिक्टर एनाइ ऑर एन्टेरिस्पैज़्म। (२) आमाशय या अन्त्रस्थ आनाह। (अं०) फ्लैच्युलेंस इन् दी स्टमक ऑर इन्टेस्टाइन। (३) एक रोग जिसमें मल-मूत्र और वायु का अवरोध होता है तथा उदर में शूल होता है। उद्भूत वेगविधारण से वायु का आवृत होना, यह उदावर्त की निरुक्ति है। आहार का मुँह को आना। (अ०) कलस, तकह्कुर। (अं०) रीगर्जिटेशन (Regurgitation)। **भेद**—वातनिरोधज, पुरीषविघातज, मूत्रविग्रहज, जृम्भोपघातज, अश्रुनिग्रहज, क्षवथुविघातज, उद्गारनिग्रहज, छर्दिविघातज, शुक्रनिरोधज, क्षुद्विघातज, तृड्विघातज, निःश्वासनिग्रहज और निद्राभिघातज।

उदावर्तिनी—योनिरोग (च०), उदावृत्त (सु०), उदावृत्ता (वा०), उपप्लुता (शार्ङ्ग०)। दे० 'योनिव्यापत्'।

उदावृत्त—योनिरोग। सु०।

उदावृत्ता—योनिरोग। वा०।

उदुम्बर—(१) महाकुष्ठ का एक भेद। औदुम्बर कुष्ठ। (२) कुष्ठरोगजनक रक्तज कृमिभेद।

उद्गार—ऊर्ध्ववात, डकार। (अ०) ज (जु) शाऽ, जुशारा, कश्ब, तजस्सी, जुसाऽ, तजुश्शी। (फा०) आरोग। (अं०) इरक्टेशन (Eructation), बेल्च (Belch)।

उद्गारनिग्रहज उदावर्त—उद्गार का वेग रोकने से उत्पन्न हुआ उदावर्त रोग।

उद्बंधन—गला घोंटना। फाँस या फन्दा (पाश) लगाकर कण्ठपीड़न किया हुआ। दे० 'पाशबद्ध'।

उद्वेष्टन—(१) ऐंठनजन्य पीड़ा, पीड़ा, ऐंठन, बाँयटे। (अ०) एअ्तिकाल, तशन्नुज वजई। (अं०) क्रैमस (Cramps)। (२) मरोड़, ऐंठन। (अ०) मगस। (अं०) ग्राइप (Gripe)।

उन्मन्थक—गल्लिर (च०) । कण्डूयुक्त कर्णपालीशोथ ।

उन्माद—मनोविभ्रमरूप (मानसिक) व्याधि । पागलपन । (अ०) मानिया, जूनून । (फा०) दीवानगी । (अं०) इन्सेनिटी (Insanity), मैडनेस (Madness), मेनिया (Mania), मेंटल डिजीज (Mental disease) । **भेद**—वातिक; पैत्तिक. श्लैष्मिक, सान्निपातिक, शोकादिज । **भौतिक (भूतोत्थ उन्माद) भेद**—देवजुष्ट, असुरजुष्ट, गन्धर्वाविष्ट, यक्षावेशज, पित्रावेशज (पितृग्रह), नागावेशज (नागाविष्ट), राक्षसावेशज, पिशाचावेशज । **अन्यभेद**—स्मरोन्माद, भ्रमोन्माद, जड़ोन्माद, गर्भोन्माद, यौवनोन्माद, प्रसवोन्माद और महागद ।

उन्मादजन्य अङ्गघात—पागलों का अंगघात । (अ०) अबुबल्किया, फालिज मुफत्तिरुल् अक्ल । (अं०) पैरेलिसिस ऑफ दी इन्सेन (Paralysis of the insane) ।

उन्मादजन्य सर्वांगघात—(अ०) इस्तिरखाऽआम जुनूनी । अबुबल्कसयए जुनूनी । (अं०) जेनरल पैरेलिसिस ऑफ दी इन्सेन (General paralysis of the Insane) ।

उन्मार्गी भगन्दर—आगन्तुज भगंदर । सु० ।

उपकुश—पित्तरक्तजन्य दन्तवेष्टप्रकोप । दन्तमूलगतरोग ।

उपघातकार्बुद—रद्दी रसौली । (अ०) सलूआ रद्दिया । (अं०) सेमी-मेलिग्नन्ट ट्यूमर (Semi-malignant tumour) ।

उपजिह्विका—(१) जिह्वामूल के नीचे होने वाला प्रसेक, कण्डू और दाहयुक्त कफरक्तजन्य उत्सेध (सूजन), उपजिह्वा (सु०) । चरक के अनुसार उपजिह्विका केवल कफजन्य होती है। अधिजिह्विका (अ० सं० । च०) । (हिं०) जिह्वा के नीचे की रसौली, तुं (तें) दवा । (अ०) जिफदउल्लिसान, दाउल्जिफदअ । (अं०) रेन्यूला (Ranula) । (२) जिह्वा के ऊपर होने वाला शोथ । च० । वा० । दे० 'अधिजिह्वा' ।

उपत्वचाशोथ—उपत्वचा की सूजन । (अ०) इल्तिहाबुन्नस्जिलखुल्वी । (अं०) सेल्यूलायटीज (Cellulitis) ।

उपदंश—एक प्रकार का मैथुनजन्य व्याधि । सु० । ध्वजभंगकृत क्लैब्य । च० । मृदुव्रण । (हिं०) नरम आतशक । (अ०) आतशक मजाजी, कर्हा रिख्वा, कर्हा जोहरिय्या । (अं०) सॉफ्ट शंकर (Soft chancre), सॉफ्ट

सोर (Soft sore)। **भेद**—(१) दोषज–वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और रक्तज। (२) जीवाणुज—फिरंग (भा०) । (हिं०) गरमी, आतशक । दे० 'फिरंग' ।

उपद्रवरूप ज्वर—औपद्रविक ज्वर ।

उपद्रवरूप शिरोशूल—औपद्रविक (उपलाक्षणिक) शिरोशूल । (अ०) सुदाअ अरजी । (अं०) सिम्प्टोमटिक हेडेक (Symptomatic Headache) ।

उपनख—(१) चिप्प, क्षतरोग (सु०)। अंगुलिवेष्टक । इसमें नखमांस पकता है । (अं०) ओनीकिया पुरुलंटा (Onychia Purulenta) । दे० 'चिप्प' । (२) क्षतरोग (च०) । इसमें चर्मनखान्तर पकता है (चक्र०) । उपनख (नखसमीपवर्ती) प्रदेश का पाक । (हिं०) बिसगाँठ, बुसहरी, उंगलवेड़ा, नरकइहा । (अ०) दाखि(हि)स । (फा०) कज्दुमा । (अं०) पारोनीकिया (Paronychia), ह्विटलो (Whitlow) । दे० 'क्षतरोग' ।

उपनाह—नेत्रसंधिगत रोग जिसमें पाकरहित बहुत कण्डूवाली और नीरुज महान् ग्रंथि होती है । यह कफज, दृष्टिमण्डलसंधिगत, साध्य एवं भेद्य होती है । श्लेष्मोपनाह ।

उपपक्ष्म—एक वर्त्मगत रोग जिसमें पूर्वसिद्ध पक्ष्मपंक्ति के समान एक और अन्तर्मुखी पक्ष्मपंक्ति भी होती है । (अ० सं० । कल्याणविनिश्चयग्रंथ) । पक्ष्माधिक्य । बाल दो या अधिक अनियमित पंक्ति में होना । (अ०) शार जाइद । (अं०) डिस्टिकियासिस (Distichiasis) ।

उपप्लुता—योनिव्यापत् विशेष । शार्ङ्ग० । उदावर्तिनी ।

उपविष्टक गर्भ—बीच में कुछ काल तक बैठनेवाला गर्भ (अ०सं०शा० ४)।

उपशीर्षक—अधिकतर बालकों को होने वाला रोग जिसमें पार्श्व कपाल पर शोफ होता है । यह शोफ कपाल तथा त्वचा के नीचे रक्तस्राव होने से होता है । कभी-कभी यह रोग गर्भ में भी हो जाया करता है । अ० सं० । शार्ङ्ग० । कई विद्वानों के मत से उपशीर्षक महावद्य रोग ही है । (अं०) केफल हीमटोमा (Cephal hæmatoma) ।

उपशुष्कगर्भ—गर्भ का शुष्क होना, नागोदर । सु०; अ० सं० । उपशुष्कक (अ० सं०) । मांसगर्भ । (अं०) कार्नियस मोल (Carneous mole) ।

उपसर्ग—रोगी मनुष्य का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संसर्ग, छूत। (अ०) अदवा। (अं०) इन्फेक्शन (Infection)।

उपसर्गज तृष्णा—उपसर्ग से हुई तृष्णा। च० (दृढ०)। यह सुश्रुतोक्त 'यथादोषज' में अंतर्भूत है।

उपसर्गजन्यकामला—संसर्गज कामला। (अ०) यरकान मुतअद्दी (कबिदी), यरकान हुम्मी, मरज वैल। (अं०) इन्फेक्टिव्ह जॉंडिस (Infective jaundice)।

उपसर्गजन्य स्वरयन्त्रशोथ—औपसर्गिक स्वरयन्त्रशोथ। (अ०) इल्तिहाब (वरम) हंजरा मुतअद्दिया। (अं०) इन्फेक्टिव्ह लेरिंजायटीज (Infective laryngitis)।

उपसर्गज व्याधि—रोगी मनुष्य के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संसर्ग से उत्पन्न हुए रोग—उपसर्गजा ज्वरादि रोगपीड़ित जनसंपर्काद्भवति। (डल्हण)।

उपान्त्रशोथ—उण्डुकपुच्छशोथ, आन्त्रपुच्छशोथ, परिशिष्ट आन्त्रशोथ। (अ०) वरम (इल्तिहाब) जाइदा, बरम जाइदा अअवर, वरम दूदा। (अं०) अपेण्डिसायटीज (Appendicitis)।

भेद—सपूय उपान्त्र। (अ०) तकय्युह जाइचा अअ्वर। (अं०) सप्यूरेटिङ्ग अपेंडिक्स (Suppurating appendix)।

उपास्थि भग्न—भग्न (फ्राण्डभग्न) का वह भेद जिसमें आवरण बचता है और बीच की हड्डी टूटती है। (अं०) सब पेरिऑस्टिअल फ्रॅक्चर (Sub-periosteal fracture)।

उरस्ताप—श्वसनक ज्वर। न्युमोनिआ।

उरस्तोय—जलोरस, पार्श्वशूल। (अं०) जातुलजंब, खानिका। (अं०) प्ल्यूरिसी (Pleurisy)।

उरः क्षत—शोषरोग का एक भेद जिसमें उरःस्थल टूट जाता या क्षतयुक्त हो जाता है और कासने पर दुष्ट, श्यामवर्ण, दुर्गन्धित, पीतवर्ण और ग्रन्थिलसा रक्तयुक्त कफ बार-बार अधिक मात्रा में आता है। (अ०) सिल्ल, सिल्ल रियवी; कर्हा रिया। (अं०) थाइसिस (Pthisis)।

उल्बक—बालरोगविशेष। बालापस्मार (अ० सं०)। (अ०) सरअ अत्फाल,

उम्मुस्सिब्यान। (अं०) इन्फण्टाइल कन्वल्शन्ज (Infantile convulsions)। दे० 'बालग्रह' या 'बालापस्मार'।

उष्ट्रग्रीव—पित्तज भगन्दर विशेष। सु०। (उष्ट्रशिरोधर)।

उष्णताजन्य ज्वर—ग्रीष्मज ज्वर। गरमी का बुखार। (अ०) हुम्मा हरिय्या। (अं०) थर्मिक फोवर (Thermic fever)।

उष्णवात—बस्तिशोथ (सु० उ०)। यह सूजाक नहीं है। (अ०) वरमुल्मसाना। (अं०) सिस्टायटीज (Cystitis)।

उष्णवातातपदग्ध—अंशुघात, सूर्यातपदग्ध (सु०), सूर्यातपदग्धावस्था, उष्णवातातपदग्धावस्था, आतपमूर्च्छा। (हिं०) लू लगना। (अ०) जर्बतुश्शम्स, अजजुश्शम्स, तश्मीस, हुम्मा योम हरिया, सक्ता शम्सिय्या (हरिया)। (अं०) हीट-स्ट्रोक (Heat-stroke), हीट ॲपोप्लेक्सी (Heat apoplexy), थर्मिक फोवर (Thermic fever), इन्सोलेशन (Insolation)। दे० 'सूर्यातपदग्धावस्था'।

(ऊ)

ऊरुस्तम्भ—दोनों ऊरुओं (जंघाओं) का घात, आढ्यवात (वा०, च०); अधोशाखाघात, निचले (कमर से नीचे के) धड़ का घात। (अ०) इस्तिरखाउल्फल्ज, इस्तिरखाउ जिस्म अस्फल। दे० 'पङ्गु'।

ऊर्ध्वजत्रुगत रोग—नयन, कर्ण, मुख, नासा और शिर के रोग (सु०)।

ऊर्ध्ववात—कफ अथवा वायु से प्रतिहत (रोकी हुई वा प्रतिकूल की हुई) वह अधोवायु जो उद्गारबहुलता कर देती है। अत्यन्त डकार आना। मा० नि०। दे० 'उद्गार'।

ऊर्ध्वविरेचन—वमन, छर्दि, कै।

ऊर्ध्वश्वास—श्वास का वह भेद जिसमें रोगी बहुत देर तक ऊर्ध्वश्वास छोड़ता है, परन्तु (बहुत देर तक) नीचे श्वास नहीं खींचता। च०।

(ऋ, ॠ)

ऋजु भगन्दर—वातकफज भगन्दर। सु०।

ऋतुज रोग—कालस्वभाव के कारण प्रकुपित दोषों से उत्पन्न हुए रोग (विकार समुच्छ्रय—सु०)। प्राकृत रोग। च०।

ऋतुज्वर—फसली बुखार, मौसमी बुखार। (अ०) हुम्मा फसलिय्या

(अजामिया)। (फ़ा०) तपे मौसमी (मलेरिया)। (अं०) क्लाइमेटिक फीवर (Climatic fever), मलेरियल फीवर (Malarial fever)।

ऋतुशूल—कृच्छ्ररज, आर्तवशोणितका कष्ट से आना। (अ०) उस्रुत्तम्स। (अं०) डिसमेनोरिआ (Dysmenorrhoea)।

ऋष्यजिह्व—महाकुष्ठ भेद। सु०।

(ए, ऐ)

एककुष्ठ—क्षुद्रकुष्ठ का एक भेद जिसमें शरीर काला और लाल पड़ जाता है। सु०।

एकदेशोत्थित शोथ—शोफ, सूजन, मुरमुराहट। (अ०) ओजीमा, तहब्बुज, वरम रिख। (अं०) इडीमा (Oedema)।

सशोफ शोथ—(अ०) ओजीमा वरमिया, तहब्बुज इल्तिहाबी। (अं०) इन्फ्लमेटरी इडीमा (Inflammatory oedema)।

एकनाडीशोथ—(अ०) इल्तिहाबुल् असब मुकामी या महदूद। (अं०) लोकलाइज्ड न्यूरायटीज (Localised neuritis)।

एकवृन्द—कण्ठगतरोग विशेष। कफरक्तजन्य भारी गलशोथ। सु०।

एकाङ्गरोग—वह घात जो हस्तपादादि केवल एक ही अङ्ग में होता है। च०। इसमें एक हाथ या एक पैर या आधा चेहरा बेकाम होता है। एकाङ्गवध, एकांगवात, एकाङ्गघात। (अ०) इस्तिरखाउ उज्व। (अं०) मोनोप्लोजिया (Monoplegia)।

एकायाम—लकवा। अ० सं०। अर्दित। च०। सु०। दे० 'अर्दित'।

एकाह्निक ज्वर—आह्निक या ऐकाह्निक ज्वर, एक दिन का बुखार, हर दिन का बुखार। (अ०) हुम्मा यौम। (फा०) तपे यकरोजा। (अं०) एफीमरल फीवर (Ephemeral fever), फेब्रिक्यूला (Febricula)।

ऐन्थ्राक्स—(अं०) Anthrax। (अ०) जमरा खबीसा।

(ओ)

ओजोमेह—वह प्रमेह जिसमें मूत्र में ओज जाता है। (अ०) बौल जुलाली। (अं०) अल्ब्यूमिन्यूरिआ (Albuminuria)। दे० 'लालामेह' या 'शुक्रमेह'।

ओषधिगन्धजन्य आगन्तुक ज्वर—तृणपुष्प ज्वर। ओषधियों के गन्ध से होने वाला ज्वर।

ओष—दाह, जलन।

ओष्ठप्रकोप—ओष्ठरोगभेद। ओष्ठशोथ। सु०। (अ०) वरमुश्शफता। **भेद**—(१) वातज (मारुतज) ओष्ठप्रकोप—होंठ फटना। (अ०) तशक्कुक़ुश्शफता, तशक्कुक शफत। (अं०) क्रैक्ड या चैप्ड लिप्स (Cracked or Chapped lips)। (२, ३, ४) पित्तज, कफज और सन्निपातज ओष्ठप्रकोप (सु०)—होंठ की फुंसियाँ, जिसे ज्वर या बोखार का मूतना भी कहते हैं। (अ०) बुसूरुश्शफत, नमला शफत। (अं०) हर्पीज लेबिएलिस (Herpes Lablalis)। (५, ६, ७) सुश्रुतोक्त रक्तज और मांसज ओष्ठप्रकोप तथा वाग्भट (अष्टाङ्गसंग्रह) का अर्बुद। (अ०) बवासीरुश्शफत, बवासीर लब (होंठ की बवासीर), सरतानुश्शफता, होंठ का सरतान—कैन्सर)। (अं०) एपिथेलिओमा ऑफ दि लिप (Epithelioma of the lip), कैन्सर ऑफ दि लिप (Cancer of the lip)। (८) मेदोज ओष्ठप्रकोप—(अं०) मेक्रोचेलिया (Macrochelia)। (९) अभिघातज (क्षतज) ओष्ठप्रकोप।

ओष्ठरोग—होंठ का रोग। (अ०) अमराजुश्शफत। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी लिप्स (Diseases of the lips)। **वक्तव्य**—ओष्ठप्रकोप के आठ सुश्रुतोक्त ओष्ठरोगों का उल्लेख ओष्ठप्रकोप शब्द में किया गया है। उनके अतिरिक्त तीन ओष्ठरोग वाग्भट ने अधिक वर्णन किये हैं—(१) **खण्डौष्ठ**—यह सहज रोग है। (अ०) शफतुल् अर्नबिय्या। (अं०) हेयरलिप (harelip), लेबिअम् लेपोरिअम् (Labium Laporium)। (२) अर्बुद—ओष्ठप्रकोप में इसके पर्याय दिये गये हैं। (३) जलार्बुद—(अं०) म्यूकस सिस्ट (Mucous cyst)।

ओष्ठव्रण—होंठ का व्रण। (अ०) कुरूहुश्शफता।

ओष्ठस्फुरण—ओंठ फड़कना। (अ०) एख्तिलाजुश्शफत।

(औ)

औदरीय प्लेग—उदर का प्लेग। (अ०) ताऊन बत्नी (मासारीकी)। (अं०) मेसेंटरिक प्लेग (Mesenteric plague)।

औपद्रविक ज्वर—वह ज्वर जो दूसरे ज्वर (या रोग) में उपद्रवस्वरूप उत्पन्न हो जाय। उपद्रवरूप ज्वर। (अ०) हुम्मा अरजिय्या। (अं०) सिम्प्टोमॅटिक फीवर (Symptomatic fever or pyrexia)।

औपसर्गिक—उपसर्गजन्य, छूत का। (अ०) मुसरी, मोअदी, उफूनी। (अं०) इन्फेक्टिव्ह (Infective), इन्फेक्शस (Infectious)।

औपसर्गिक कर्णमूलिक शोथ—कर्णमूलिकग्रन्थिशोफ, कर्णफेर, कनफेड़, हप्पु। इसे आयुर्वेदोक्त पाषाणगर्दभ समझना भूल है। (अ०) इल्तिहाबुल्गुद्दतिन्नक्फिया, फूजिश्शा, बारीतूस। (अं०) एपिडेमिक पैरोटायटीज (Epidemic Parotitis), मम्प्स (Mumps)।

औपसर्गिक ज्वर—वह ज्वर जो एक से दूसरे को लगे। (अ०) हुम्मा मुतअद्दिया, हुम्मा मुअदिया। (अं०) इन्फेक्शस फीवर (Infectious fever)। कॉन्टेजिअस फीवर (Contagious fever)।

औपसर्गिक दद्रु—छूतदार दाद। (अ०) कूबाऽमुतअद्दिया। (अं०) इम्पेटिगो कॉन्टेजिओसा (Impetigo contagiosa)।

औपसर्गिक पूयमेह—सोजाक। (अ०) सैलान जोहरी, कर्हा मजरियुल्बौल। (फा०) सूजाक। (अं०) गोनोरिया (Gonorrhoea)।

वक्तव्य—इस रोग का वर्णन आयुर्वेद में नहीं है। कुछ लोग उष्णवात को गोनोरिया समझते हैं, परन्तु यह ठीक नहीं है। दे० 'उष्णवात'।

औपसर्गिक पूयमेहजन्य अभिष्यंद—सूजाक के कारण आई हुई आँख का रोग। (अ०) रमद तअ्कीबी, रमद सूजाकी। (अं०) गोनोरिअल् कंजंक्टिवायटीज (Gonorrhoeal conjunctivitis)।

औपसर्गिकमेह—सूजाक भेद।

औपसर्गिक रोग—उपसर्गज व्याधि, संक्रामकरोग, छूत की बीमारियाँ। सु०। (अ०) अम्राज मुतअद्दिया, अमराज मुसरिय्या, अमराज तारिय्या। (अं०) इन्फेक्शस डिजीज (Infectious disease), कॅन्टेजिअस डिजीज (Contagious disease)।

और्वी आन्त्रवृद्धि—वह आन्त्रवृद्धि जिसके द्वारा और्वी धमनी और सिरा उरु में आती हैं उस और्वी-सुरङ्ग (Femoral canal) से होकर अन्त्र उरु प्रदेश के ऊपरी भाग में आकर उत्सेध उत्पन्न करती है। यह आन्त्रवृद्धि स्त्रियों में अधिक हुआ करती है। (अ०) फत्क फख्जी (कोई-कोई इसे 'फत्कुल् उर्बिया'के नाम से ही अभिधानित करते हैं)। (अं०) फेमोरल हर्निया (Femoral

hernia), फेमोरोसील (Femorocele), क्रोसल हर्निया (Crosal hernia)।

(क)

ककेरुक—पुरीषज कृमि भेद।

कक्षा—क्षुद्ररोगान्तर्गत बाहु, पार्श्व, अंस और कक्षा इन (बगल के आस-पास के) स्थानों में पित्तप्रकोप से उत्पन्न हुई पीड़ायुक्त काली फुंसी। सु०। सुश्रुत के इस वर्णन से कक्षा में केवल एक ही फोड़ा होता है, यह सिद्ध होता है। अस्तु, कक्षा से कक्षालसिकाग्रन्थिशोथ (Acute lymphadenitis of the axillary glands) का बोध होता है। हिंदी में इसे 'कच्छरैली' कहते हैं। कक्षा को लसिकाग्रन्थि में शोथ होने से धीरे-धीरे वह शोथ पार्श्व, अंश और बाहु की ओर फैलता है। बहुत करके सुश्रुत की कक्षा वाग्भट और माधव की गंधनामा (गंधमाला) होगी। चरक और वाग्भट (अष्टाङ्गसंग्रह) की कक्षा वातपित्तजन्य तथा अनेक सूक्ष्म फुंसियों से युक्त होती है। इस कक्षा को हर्पिस ज़ोस्टर (Herpes zoster) कह सकते हैं। अरबी में इसे 'नमला मिन्तकिया' कहते हैं। इसमें सौषुम्न विशेष करके पशुकान्तरीय नाड़ियों (Intercostal nerves) के मार्ग पर कठिन छोटी-छोटी फुंसियाँ निकल आती हैं। देखो सुश्रुत निदानस्थान अध्याय १३ की टीका में कक्षा विषयक डॉक्टर भास्करगोविंद घाणेकर महाशय लिखित वक्तव्य। हर्पिस को अरबी में 'नमला' (च्यूँटी छोटे-छोटे पैत्तिक दाने वा फुंसियाँ) और 'साइया' कहते हैं। देश में इसे 'मकड़ी मलजाना' या 'मकड़ी मूतना' कहते हैं। हर्पिस सिंसिनेटस (Herpes circinatus) को अरबी में 'नमला हलिकया' कहते हैं। नमला मिन्तकिया और नमला हलिया उभय को 'नमला मुतकाल्ला' कहते हैं। इसका ज़ख्म गहरा होता है और यह त्वचा एवं मांस को नष्ट कर देता है।

कच्छप—तालुगतरोग (मांसकच्छप)। सु०। तालुका सार्कोमा (Sarcoma)। (अ०) फुत्रुल्हनक।

कच्छपिका, कच्छपी—क्षुद्ररोग। सु०। मा० नि०।

कच्छू—क्षुद्र कुष्ठान्तर्गत पामाभेद। सु०। (हिं०) खुजली, तर खुजली। (अ०) जरब। (फा०) खारिश। (अं०) स्केबीज (Scabies)। दे० 'पामा' और 'रकसा'।

कटिशूल—सक्थिशूल, कमर का दर्द। (अ०) वज्उल्कुत्न। (उ०) दर्द कमर। (अं०) लम्बेगो (Lumbago)।

कटिसंयोजक धातुगत तीव्रपाक—कटिकी संयोजक धातुओं में होने वाला तीव्र स्वरूप का पाक। (अं०) सप्यूरेटिव्ह पेल्विक सेल्यूलायटीज (Suppurative Pelvic cellulitis)।

कटीर ग्रन्थि—कटीर की ग्रन्थियाँ। बस्तिगह्वरस्थ ग्रंथियाँ। (अं०) ट्यूमर्स इन दी पेल्विस (Tumours in the pelvis)।

कटीर वैरूप्य—कटीर की विरूपता। डिफॉर्म्ड पेल्विस (Deformed pelvis)।

कटीर संताप—(अ०) इल्तिहाब मुजाविरातुरिह्म। (अं०) पेल्विक सेल्यूलायटीज (Pelvic cellulitis)।

कठिन (अश्मोपम) शोथ—अत्यंत कठिन (अश्मोपम) घातकार्बुद या मांसार्बुद। (अ०) तहज्जुर, तसल्लुब, वरमसलिब, सकीरूस, इस्कीरूस। (अं०) स्क्लीरोसिस (Sclerosis), स्कीर्हस (Scirrhus)। यूनानी मत से बलगमी या सोदावी वरम।

कणार्बुद—वह रसौली जो किसी घाव के भरने के बाद उत्पन्न हो जाती है। (अ०) सल्आ अरीका। (अं०) ग्रान्यूलोमा (Granuloma)।

कणार्बुद, गुह्यवंक्षणीय—दे० 'गुह्यवंक्षणीय कणार्बुद'।

कण्ठक्षत—गले का क्षत, गले का दर्द। (अ०) वज्उल्हलक। (फा०) दर्द गुलू। (अं०) सोर थ्रोट (Sore-throat)।

कण्ठगतरोग—कण्ठरोग, गले के रोग। (अ०) अम्राजुल्हलक, अमराज बुलउ(ऊ)म। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी फेरिंक्स (Diseases of the pharynx)।

कण्ठरोग संख्या—पाँच रोहिणी (१ वातज, २ पित्तज, ३ कफज, ४ सन्निपातज, ५ रक्तज), ६ कण्ठशालुक, ७ अधिजिह्वा, ८ वलय, ९ वलास, १० एकवृंद, ११ शतघ्नी, १२ गिलायु, १३ गलविद्रधि, १४ गलौघ, १५ स्वरघ्न, १६ मांसतान और १७ विदारी।

कण्ठमाला—एक प्रकार की अपची जिसमें केवल गले की ग्रंथियाँ फूलती हैं। दे० 'गण्डमाला'।

कण्ठशालूक—गले में होने वाली एक ग्रन्थि जो बड़े बेर की गुठली के बराबर, कफ से उत्पन्न हुई, काँटे या शूक के समान, खुरदरी, स्थिर (न जलदी बढ़ने वाली न स्थान बदलने वाली) और शस्त्रक्रिया-साध्य होती है। सु०। इससे नासामार्ग का अवरोध होता है। अ० सं०। इसलिये रोगी मुख से श्वास लेता है। सोते समय खुर्राटे के साथ साँस चलती है। च०। (अं०) एडीनॉइड्स (Adenoids)।

कण्ठशुण्डी—दे० 'गलशुण्डिका'।

कण्ठशोथ—गले की सूजन, प्रसनिका शोथ। (अ०) वरम हलक खुनाक। (अं०) फेरिंजायटीज (Pharyngitis), डिफ्थीरिया (Diphtheria)।

कण्डू—खुजली जिसमें दाने न हों। खाज (शुष्क)। (अ०) हिक्क। (फा०) खारिश खुश्क, सादा खारिश। (अं०) प्रूराइटीज (Pruritis), प्रूराइगो (Prurigo), इच (Itch)।

कदर—घटा, घट्टा। सु०। (उ०) अट्टन। (अ०) दूमाल, मिस्मार जिल्दी; अकफ, शगर, गिल्जुल्जिल्द, ऐनुस्समका। (अं०) कॉर्न (Corn), क्लेव्हस (Clavus)। (शर्कराकदर=वातकण्टक)।

कनीनिकाविस्फार—पुतली का फैल जाना। (अ०) इत्तेसाअ, इत्तेसाअ सुकबा। (अं०) डाइलेटेशन ऑफ दी प्यूपिल (Dilatation of the pupil)।

कपाल—महाकुष्ठ भेद। सु०।

कपालिका—दंतरोग विशेष। दंतशर्करा (Tartar) के साथ दाँतों के छिलके उतरना। सु०।

कपोलार्बुद—कपोल (गाल) का अर्बुद। (उ०) रुख्सार की रसौली। (अ०) सल्अः वज्निय्या। (अं०) मेलोंकस (Meloncus)।

कफकण्टक—जिह्वाकण्टक विशेष। (अ०) तकश्शुरुल्लिसान। (अं०) इक्थिऑसिस लिग्वी (Icthyosis linguae)। दे० 'जिह्वाकण्टक'।

कफज अतिसार—वह दस्त जिसमें आँव और कफ उत्सर्गित हो, कफातिसार। (अ०) इसहाल बल्गमी (मुखाती)। (अं०) म्यूकस डायरिया (Mucous diarrhoea)।

कफज अपस्मार—(अ०) सरअ बलगमी ।

कफज अभिष्यन्द—नेत्र सर्वमार्गगतरोगोक्त नेत्राभिष्यंद भेद । कफाभिष्यंद । (अ०) रमदे बलगमी । (अं०) सब-ॲक्यूट कन्जंक्टिवायटीज (Sub-acute conjunctivitis) ।

कफज अर्बुद—श्लेष्माबुंद । सु० । (उ०) मुखाती रसौली । (अ०) अर्दहालियत, आर्दहालिया (हरीरावत्), सल्आ मुखातिय्या । (अं०) म्यूकस ट्यूमर (Mucous tumour), मिक्सोमा (Myxoma) ।

कफज अर्श—कफजन्य अर्श, श्लेष्मार्श (च०; सु० वा०) । यह जन्मोत्तरकालज अर्श का एक भेद है ।

कफज अश्मरी—श्लेष्माश्मरी । (अं०) फॉस्फेटिक कल्क्यूलस (Phosphatic calculus) ।

कफज आर्द्रशोथ—श्लैष्मिक आर्द्र शोथ । (अ०) तहब्बुज मुखाती, औजीमाए मुखातिया । (अं०) मिक्सेडीमा (Myxœdema) ।

कफज उन्माद—श्लेष्मोन्माद । (अ०) मालिनखोलिया बलगमी ।

कफज ज्वर—श्लेष्म (श्लैष्मिक) ज्वर । कफ का बुखार । (उ०) बलगमी बुखार, लाजमी बलगमी बुखार । (अ०) हुम्मा बलगमिया, लिस्का ।

कफज प्रमेह—श्लेष्मप्रमेह, कफप्रमेह । च० । सु० । वा० । मा० नि० ।

वक्तव्य—सुश्रुत के अनुसार इसके यह भेद हैं—उदकमेह, इक्षुमेह, सुरामेह, सिकतामेह, शनैर्मेह, लवणमेह, पिष्टमेह, सान्द्रमेह, शुक्रमेह और फेनमेह । चरक में सुश्रुत के सुरामेह, पिष्टमेह, फेनमेह और लवणमेह ये चार नहीं हैं । इनके बदले सान्द्रप्रसादमेह, शुक्लमेह, शीतमेह और लालामेह मिलते हैं । इनमें सुश्रुत का सुरामेह चरक के सान्द्रप्रसादमेह के समान मालूम होता है । सुश्रुत का पिष्टमेह चरक के शुक्लमेह के समान मालूम पड़ता है । शेष दोनों में कोई समानता नहीं मालूम पड़ती । वाग्भट में लवणमेह और फेनमेह के बदले शीतमेह और लालामेह मिलते हैं ।

कफज प्रवाहिका—श्लैष्मिक प्रवाहिका । (अ०) जहीर बलगमी । (अं०) सब-ॲक्यूट डिसेंटरी (Sub-acute dysentery) ।

कफज शिरोरोग—श्लैष्मिक (श्लेष्मज) शिरोरोग । (फा०) दर्देसर बलगमी । (अ०) सुदाअ बलगमी । (अं०) फ्लेग्मॅटिक हेडेक (Phlegmatic headache) ।

कफज शूल--श्लैष्मिकशूल, कफशूल। (अ०) कुलंज बलगमी, मगस मुखाती। (अं०) मिक्सिह्व (म्यूकस) कॉलिक (Mixive (Mucous) colic)।

कफज शोथ--श्लैष्मिक शोथ। (अ०) ओबीमाए मुखातिया, तहब्बुज मुखाती। (अं०) माइक्सीडीमा (Myxoedema)।

कफज सन्यास--सन्यास का श्लेष्मज भेद। (अ०) सक्ता बलगमिय्या (बलगमी), सकता मस्लिय्या, सकता माई (माइय्या)। (अ०) सीरस ॲपोप्लेक्सी (Serous apoplexy)।

कफज सरसाम (सिरेसाम)--कफोल्वण, सन्निपात मस्तिष्क और उसकी झिल्लियों का कफज शोथ। (अ०) सरसाम बलगमी, लीसुर्गुस। (अं०) लिथार्गस (Lethargus)।

कफज शिरोरोग--श्लैष्मिक (श्लेष्मज) शिरोरोग। (अ०) दर्दसिर या सुदाअ बलगमी। (अं०) फ्लेग्मेटिक हेडेक (Phlegmatic headache)।

कफज सर्वसररोग--श्लैष्मिक मुखपाक। सु०। (अ०) कुलाअ बलगमी।

कफज स्थूलान्त्र शोथ--स्थूलान्त्र का श्लैष्मिक शोथ। (अ०) वरम कूलून बलगमी। (अं०) म्यूकस कोलायटीज (Mucous colitis)।

कफपित्तसंभव कफोल्वण निद्रानिद्रा रोग--यूनानी वैद्यक में सन्यास (सुबात) का एक भेद जिसमें जागर्ति से निद्रा की अवधि अधिक होती है। यह लीसुर्गुस (कफोल्बण सन्निपात) के लक्षण वाला होता है। (अ०) सुबात सहरी (अरकी)। (फा०) ख्वाब बेदारी। (अं०) कोमा विजिल (Coma vigil), सॉम्नम्बुलिज्म (Somnambulism)।

कफपित्तसंभव पित्तोल्बण निद्रानिद्रा रोग--यूनानी वैद्यक में सन्यास (सुबात) का एक भेद। वैकारिकी निद्रानिद्रा रोग। प्रजागरण निद्राविकार। यह करानोतुस लक्षणीय होता है। इसमें निद्रा से जाग्रत (प्रजागरण) की अवधि अधिक होती है। (अ०) सहर सुबाती। (अं०) ॲग्रिप्नोकोमा (Agrypnocoma)।

कफसंभव (कफोल्वण) निद्रा--निद्रारोग का एक भेद।

कफाजीर्ण--आमाजीर्ण। शक्तिहीनता के कारण हुआ पाचनविकार। (अ०) सूएहज्म ज़ोफी। (अं०) ॲटोनिक डिस्पेप्सिआ (Atonic dyspepsia)।

कफोदर–उदररोग का एक भेद। (अ०) इस्तिस्काऽ हबन। दे० 'वातोदर'।

कफोल्बण सन्निपात––(१) श्लेष्माधिक्य सन्निपात रोग का एक भेद। (२) कफज सरसाम। **वक्तव्य**––यूनानी वैद्यक के मत से मस्तिष्क और मस्तिष्कावरण का कफज शोथ। निद्रारोग (मर्जुन्नौम) का दूसरा नाम। (अ०) सरसाम बलगमी; लीतुर्गुस। (यू०) लीथार्गस (Lethargus)। यह और वातोल्बण सन्निपात दोनों शीतल (सरेसाम बारिद) हैं।

कम्पवात, कम्पवायु––वेपथुवात, कँपकपी। (सु०)। (अ०) राअ्शा, दाउर्रक्स, रुकास, रक्से जंजी, इर्तेआश। (फा०) लरजा। (अ०) कोरिआ (Chorea), सेंट वाइटस डान्स (St. Vitus dance)।

भेद––१. सर्वांग कम्पवात, २. शिरःकम्प, ३. वामवातिक, ४. वयस्क कुलज, ५. जराजन्य और ६. विद्युज्जन्य (वैद्युतिक)।

कम्पोन्माद––मद्यादि मादक द्रव्यों के अत्यधिक सेवन करने वालों तथा कमजोर रोगियों को होने वाला उन्माद (प्रलाप)। मदात्ययज उन्माद। (अ०) हजयान सुक्करी, हजयानुस्सुकारा, इर्तेआश हज्रयानी। (अं०) डेलीरिअम् ट्रीमेंस (Delerium tremens)।

कराल––दन्तगतरोग विशेष (अ० सं०)। माधवनिदान के अनुसार दाँतों में ठहरा हुआ वायु धीरे-धीरे दाँतों को कराल एवं विकट कर देता है। यह साध्य नहीं है। मा० नि० दन्तवेष्टगतरोग।

करोटिशूल––मस्तिष्कशूल, खोपड़ी का दर्द। (अ०) वज्उल्कहफ। (अं०) केफैलोडोनिआ (Cephalodynia)।

कर्कटक––काण्डभग्न का वह भेद जो विशेष करके दोनों तरफ से उठा हुआ, बीच में टूटा हुआ और गाँठ की भाँति उभरा हुआ होता है। सु०।

कर्कटार्बुद––घातकार्बुद का एक भेद जो बाह्य और श्लैष्मिक त्वचा में आम तौर से होता है। घातक मांसार्बुद। (उ०) सरतानी रसौली। (अ०) सरतान, सल्आसरतानिया। (अ०) कैन्सर (Cancer)। दे० 'कैन्सर'।

कर्णकण्डू––कान की खुजली; कान की फुंसियाँ। (अ०) हिक्कतुल् उज्न। (अं०) प्रूरायटीज ऑरियम् (ऑफ दी ईअर) (Pruritis aurium (of the ear)।

कर्णक्ष्वेड—दे० 'क्ष्वेड'।

कर्णगत पामा—कान की फुंसियाँ, कान का उकौता (पामा)। (अ०) कुलाउल् उज्न, बुसुरुल् उज्न। (अं०) एक्झेमा ऑरिस (Eczema oris), एक्झेमा ऑफ दी ईअर (Eczema of the ear)।

कर्णगत पिडका—कान की फुंसी। (अं०) फ्युरंक्युलोसिस (Furunculosis)।

कर्णनाद—दे० 'प्रणाद'।

कर्णपाक—कान पकना। (अ०) कर्हतुल् उज्न। (अं०) सप्यूरेशन इन दी ईयर (Suppuration in the ear)।

कर्णपाल्यामय—कर्णपाली के रोग। सु०। कर्णपाली उपद्रव।

कर्णप्रतिनाह—एक कर्णगत रोग। कर्णगूथकावस्था में आई हुई श्लेष्मा (वा कर्णवर्च) जब पुनः पिघलकर विलीन हो मुख तथा नासिका में आ जाती है तब कर्णप्रतिनाह नामक रोग को उपजाती है जिसमें आधे सिर में पीड़ा भी होने लगती है। कई आचार्य यहाँ आधे सिर में पीड़ा न मानकर सारे सिर में पीड़ा मानते हैं। संभवतः भावप्रकाशोक्त प्रतीनाह श्रुतिसुरंगा का तीव्र अवरोध (Acute Eustachian obstruction) या कर्णमूलिक विद्रधिका ग्रसनिका तथा नासाग्रसनिका में फूटना है।

कर्णमूलिक-ग्रन्थि-शोफ (शोथ)—कनफेड़। (अ०) वरम अस्सिल् उज्न, वरमुल् नक्फ, इल्तिहाब गुद्दये नक्फिया। (अं०) पॅरोटायटीज (Parotitis)। दे० 'औपसर्गिक कर्णमूलिक शोथ'।

कर्णमूलिक ज्वर—हप्पू, कनपेड, कनफेर (ड़)। (य 'पाष्पाणगर्दभ' नहीं है)। (अं०) मम्प्स फीवर (Mump's fever)।

कर्णमूलिक लालाग्रन्थ्यर्बुद—दे० 'पाषाणगर्दभ'।

कर्णरोग—कान के रोग। (अ०) अमराजुल् उज्न। (फा०) अमराजे-गोश। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी ईअर (Diseases of the ear)।

भेद-दोषानुसार—वातज, कफज और सन्निपातज। **लक्षणानुसार**—कर्णशूल, कर्णनाद (प्रणाद), बाधिर्य, कर्णक्ष्वेड, कर्णसंस्राव, कर्णकण्डू, कर्णवर्च (कर्णगूथक), कर्णप्रतिनाह, क्रिमिकर्णक (कृमिकर्ण), कर्णप्रविष्टपतङ्गकीटादि;

कर्णविद्रधि, कर्णपाक, पूतिकर्ण, कर्णशोथ (फ), कर्णार्बुद, कर्णार्श, परिपोटक, उत्पात या उन्मन्थक, दुःखवर्धन और परिलेहि ।

कर्णवर्च—कान की मैल वा खूँट, कर्णगूथ (क) । (अ०) सिम्लाख, सुम्लूख, वस्खुल् उज्न, सुद्दए वस्खी । (फा०) चिर्कगोश । (अं०) वैक्स इन दी ईअर (Wax in the ear) ।

कर्णविद्रधि—कान का विद्रधि ।

भेद-दोषज—वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज । **आगन्तुज**—क्षतज और अभिघातज ।

कर्णशल्य—कान में कुछ (किसी चीज का) पड़ जाना । (अ०) कजाउल् उज्न । (अं०) फॉरेन् बॉडी इन् दी ईअर (Foreign body in the ear) ।

कर्णशूल—कान का दर्द । (अ०) वज्उल् उज्न । (फा०) दर्दगोश । (अं०) ओटॅल्जिया (Otalgia), पेन इन् दी ईअर (Pain in the ear) ।

कर्णशोथ (फ)—कान की सूजन । (अ०) इल्तिहाबुल्उज्न, वरमुल् उज्न । (फा०) सोजिश गोश, वरम गोश । (अं०) ओटायटीज (Otitis), इन्फ्लमेशन ऑफ दी ईअर (Inflammation of the ear) । **भेद**—वातज, पित्तज, कफज और सान्निपातिक ।

कर्णस्राव, कर्णसंस्राव—कान बहना । (अ०) कहुंल् उज्न, सैलानुल् उज्न । (फा०) कर्हा गोश । (अं०) ओटोरिआ (Otorrhaea), डिस्चार्जेज फ्राम दी ईअर (Discharges from the ear) ।

कर्णार्बुद—कर्णगत अर्बुद ।

भेद—वातज, पित्तज, श्लेष्मज, रक्तज, मांसज, मेदोज और शालाक्योक्त सर्वात्मक अर्बुद ।

कर्णार्श—कान का बवासीर, श्रोतज अर्श । (अ०) बवासीरुल् उज्न । (फा०) बवासीर गोश ।

भेद—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और सान्निपातिक ।

कर्दम विसर्प—पित्तकफसंभव घोर विसर्प भेद । च० । अ० सं० । पित्तविसर्प । सु० । (अं०) सेल्यूलो-क्यूटेनिअस एरिसिपेलस (Cellulo-cutaneous erysipelas) ।

कर्मज व्याधि—कर्मदोष से उत्पन्न रोग ।

कलायखञ्ज—एक प्रकार का ऊरुस्तम्भ वा वातव्याधि जो कलाय के सेवन से उत्पन्न होती है। सु० । अधोशाखाविकार । (अं०) लेथिरिज्म (Lathyrism) ।

कष्टप्रसूति—कष्ट से बच्चा पैदा होना । कठिनाई से शिशु प्रसव होना । (अ०) उस्रुल् विलादत । (अं०) डिफिकल्ट या टीडिअस लेबर (Difficult or tedious Labour) ।

कष्टरज, कष्टार्तव—ऋतुशूल, रजःकृच्छ्र, कृच्छ्रार्तव । दे० 'कृच्छ्रार्तव' ।

काकणक—महाकुष्ठ भेद । सु० ।

काकवन्ध्यता—वह बन्ध्यता (बन्ध्यात्व) जिसमें दूसरी बार गर्भधारणा नहीं होती । (अं०) वन्-चाइल्ड स्टेरिलिटी (One-child sterility) ।

काकवन्ध्या—जिसको एक बार गर्भधारणा हुई है और पश्चात् जो बन्ध्या हो गई है । एक ही बार प्रसव करनेवाली । सकृत्प्रसवा । दे० 'बन्ध्यारोग' ।

काच—नेत्रदृष्टिभागगत रोग । तिमिर की उत्तरावस्था विशेष । तृतीय पटलगत दोषजन्य तिमिरकी द्वितीय अवस्था । रागयुक्त (रागप्राप्त) तिमिर । रागी तिमिर । तिमिर काच । **भेद**—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, रक्तज, सान्निपातिक और परिम्लायि काच (रागी परिम्लायि रोग) ।

काण्डभग्न—अस्थिकाण्डभग्न । वह भग्न जो हिलानेसे काँपता है । सु० । (अ०) कस्र । (अं०) फ्रैक्चर (Fracture) ।

कामच्छत्रोच्छ्राय—मदनातपत्रोच्छ्राय । दे० 'भगनासाप्रहर्षण' ।

कामजड़ता—कामेच्छाविपर्यय (अयोग और अतियोग) का वह भेद जिसमें मनुष्य की कामवासना बहुत कम रहती है या कभी-कभी उसका अभाव होता है ।

कामज्वर—कामोद्भव ज्वर, कामजागन्तु ज्वर । (अं०) लस्ट फीवर (Lust fever) ।

काम भय-शोक क्रोध ज्वर—कामादि मनोविकार के आवेग से होने वाले आगन्तु ज्वर । (अं०) पायरेक्सिया ऑफ इमोशन्स फीवर (Pyrexia of emotion's fever) ।

कामला—पाण्डु के बाद (अवस्थान्तर स्वरूप) होने वाला रक्ताल्पता

रोग। इसमें सम्पूर्ण शरीर पीला हो जाता है, कभी श्याव भी हो जाता है। (हिं०) काँवर, कँवल, कँवल बाव, पीलिया। (अ०) यरकान, अरकान, सुफार, यरकान अस्फर। (फा०) आजार तल्खा। (अं०) जॉण्डिस (Jaundice), इक्टेरस (Icterus)।

भेद—(आयुर्वेदीय) १ कोष्ठाश्रया और २ रक्तादि धात्वाश्रया। (यूनानी) रोगजनक दोषों और वर्ण के विचार से इसके यह दो प्रधान विभाग किये गये हैं—(१) यरकान अस्फर या जर्द यरकान और (२) यरकान अस्वद या स्याह यरकान। (पाश्चात्य वैद्यकीय) अवरोधजन्य कामला, पित्तवाहिन्यवरोधजन्य कामला (यकृतीय कामला), रक्तस्थ पित्तजन्य (रक्तजन्य) कामला, विषजन्य या उपसर्गजन्य कामला, घातक कामला, नवजात कामला, रक्तक्षयजन्य कामला, प्रतिश्यायजन्य और प्लीहोदरीय चिरज कामला।

कामशान्ति—कामवासना की कमी।

कामावसाय—मैथुनासामर्थ्य, कामावसाद। (अ०) जोफ बाह। (अं०) सेक्सुअल डेबिलिटी (Sexual debility)।

कामोत्कटता—पुरुष या स्त्री का कामवासना से उन्मत्त हो जाना। एरोटिसिज्म (Eroticism), सेटिरिआसिस (Satyriasis), निम्फोमेनिया (Nymphomania)।

कार्श्य—दौर्बल्य, क्षीणता, कृशता। (हिं०) दुबलापन। (अ०) हुजाल, जबूल, जूबान, लागरी। (अं०) ॲट्रोफी (Atrophy), इमेसिएशन (Emaciation), कञ्जम्प्शन (Conjumption), सिर्होसिस (Cirrhosis)। इसका उलटा 'स्थौल्य' है। दे० 'मेदरोग'।

कालकृत रोग—स्वभावबलप्रवृत्त का एक भेद। काल के प्रभाव से योग्य समय पर उत्पन्न होने वाले रोग। वास्तव में ये शरीर के स्वाभाविक धर्म हैं, रोग नहीं हैं। स्वास्थ्यानुवृत्तिकर यथाविधि आहार-विहार रखने से ये अपने समय पर उत्पन्न होते हैं। इसलिए लिखा है—'परिरक्षणकृताः कालकृताः'। परिरक्षणकृत रोग निष्प्रतिक्रिय होते हैं। पाश्चात्यवैद्यक में परिरक्षणकृत रोगों का समावेश कालकृत रोगों में नहीं किया गया है। इस तरह रोगों के कारणों में स्वभावबल अन्यथासिद्ध कारण है।

कालज्वर—काला आजार, कालाजार। दे० 'काला अजार'।

कालपूर्व प्रसव—विगुण प्रसव, विप्रसव, जात वा विप्रसूत, सातवाँ और आठवाँ महीना का प्रसव।

कालप्रसव—कालप्रसूति, समयप्रसव, नौवाँ और दसवाँ महीना का प्रसव, दसवें मासके अन्तिम दिनों में होने वाला प्रसव। (अं०) पार्टस् मेच्योरस या मेटर्नस् (Partus maturous or maturnus)।

कालबलप्रवृत्त व्याधि—वह व्याधि जो सर्दी, गरमी, वायु, वर्षा इत्यादि कारणों से होते हैं। शीतोष्णवर्षलक्षण षड्ऋतुक कालबल के कारण उत्पन्न हुए व्याधि। यह भी दो प्रकार के होते हैं—(१) विकृत ऋतुओं के कारण उत्पन्न हुए (व्यापन्नर्तुकृता) अर्थात् आयुर्वेद में ऋतुओं की जो अठारह व्यापत्तियाँ वर्णन की हैं उनके कारण उत्पन्न हुए रोग और (२) प्राकृत ऋतुओं के कारण उत्पन्न हुए (अव्यापन्नर्तुकृता) रोग अर्थात् ऋतुओं के चक्रनेमिक्रम के कारण शरीर में दोषों की जो घटाबढ़ी होती है इससे उत्पन्न हुए रोग। चरक में इन्हें 'प्राकृत' या 'ऋतुज' रोग लिखा है।

कालमेह—पित्तप्रमेह रोग का वह भेद जिसमें मूत्र मसीवर्ण (स्याही-मायल) होता है। च०। वा०। सुश्रुत में इसके बदले 'अम्लमेह' मिलता है, परन्तु दोनों में समानता नहीं है। (अं०) ब्राउन एण्ड ब्लैक यूरिन्स (Brown and black urins)।

कालमेह ज्वर—(अं०) ब्लॅक वाटर-फीवर (Black-water fever)।

काला अजार, काला आजार—काला बोखार, कालज्वर। (अ०) हुम्मा अस्वद, हुम्मा सौदाऽ (सौदाविय्या), हुम्मा आसामी, वरम तिहाल हुम्मा मुमालिक हारा। (अं०) काला आजार (Kala-azar), ब्लैक फीवर (Black fever)।

कालातीत प्रसव—वैकारिक प्रसव, विलम्बी प्रसव, ग्यारहवाँ और बारहवाँ महीना में होने वाला प्रसव।

कास—खाँसी। (अ०) आख, सुआल, इल्तिहाबुश्शोअ्ब, वरम शोअ्बी, नजला शोअ्बिय्या, सोआल शोअ्बी। (अं०) कफ (Cough), टस्सिस (Tussis) ब्रॉङ्काइटीज (Bronchitis)।

भेद आयुर्वेदीय—वातज, पित्तज, कफज, क्षतज और क्षयज। **अन्य भेद—तीव्र**—(अ०) वरम शोअबीहाद्। (अं०) अॅक्यूट ब्रॉङ्काइटीज

(Acute bronchitis) । **चिरज**—(अ०) वरम शोअ्बी मुज्मिन । (अं०) क्रॉनिक ब्रॉङ्कायटीज (Chronic bronchitis) ।

दुर्गन्धित—वरम शोअ्बी मुंतिन । (अं०) फीटिड ब्राङ्कायटीज (Foetid bronchitis) ।

शुष्क—(अ०) वरम शोअ्बी याबिस । (अं०) ड्राइ ब्रॉङ्कायटीज (Dry bronchitis) ।

शारदीय—शरदृत्तुज कास, शीत कफ। (अ०) सुआलेशतवी । (अं०) विंटर कफ (Winter Cough) ।

किटिभ—क्षुद्र कुष्ठ का एक भेद जो स्रावयुक्त, गोल, ठोस, अत्यंत कण्डयुक्तचिकना और काला हो । सु० । यह कुष्ठ श्याववर्ण तथा इसका व्रणस्थान खरस्पर्श वाला एवं परुष (कठोर वा रूक्ष) होता है । मा० नि० । काले दाग, चंबल । (अ०) बरस अस्वद, बरस स्याह, कश्फुल्जिल्द, कूबाये मुकश्शर अर्थात् छिलकेदार दाद (शैख), सद्फिय्यः, दाउस्सद्फ, समकिय्या । (अं०) सोरायसिस (Psoriasis) ।

किटिभ, मुखस्थ—मुँह का चंबल । (अ०) सदुफिय्या फम । (अं०) बक्कल सोरायसिस (Buccal Psoriasis), बाजिन्स डिजीज (Bazins disease) ।

किलास—क्षुद्रकुष्ठ (त्वग्दोष) का एक भेद (सु०), सफेद दाग, फुलबहरी, श्वित्र (च०), श्वेतकुष्ठ । (अ०) बरस, बरस अब्यज, जुजाम अब्यज । (अं०) ह्वाइट लेप्रसी (White Leprosy), ल्यूकोडर्मा (Leucoderma), ल्यूकोडर्मिया (Leucodermia), वाइटिलिगो (Vitiligo), अल्फॉस (Alphos) ।

भेद—दोषज और व्रणज । व्रणज के अवांतर भेद—अग्निदग्धोत्पन्न (अग्निदग्धज) किलास अर्थात् दग्धव्रण और अन्य व्रणज । यूनानी में संपूर्ण शरीर पर होने वाले को 'बरस मुन्तशिर' कहते हैं ।

कील, खील (फोड़े की)—(अ०) उम्मुल्कैह । (अं०) सोर बॉइल (Sore boil) ।

कुकूणक—क्षीरदोषजन्य बालवर्त्मगत रोग । मा० नि० । सुश्रुत, वाग्भट

और शार्ङ्गधर में भी इसका वर्णन आया है। (अं०) ऑफ्थैल्मिआ इन चिल्ड्रेन (Ophthalmia in chlildren)।

कुक्कुरकास—कुकुरखाँसी, काली खाँसी। (अ०) शहका, शहीका, सोआल दीकी। (फा०) सुर्फा स्याह। (अं०) हूपिंग कफ (Whooping cough), परटस्सिस (Pertussis)।

कुक्षिविद्रधि—कोख में होने वाला विद्रधि। (अं०) लोकलाइज्ड पेरिटोनायटीज इन दी लम्बार रीजन्स (Localised peritonitis in the lumbar regions)।

कुक्षिसंग—गर्भ का कुक्षि (कोख) में अटक जाना।

कुञ्चन—नेत्रवर्त्मगत रोगों में वह जिसमें वातादि दोष का पलकों (वर्त्मों) को संकुचित कर देने से मनुष्य देख नहीं सकता। यह त्रिदोषज होता है (मा० नि०), वर्त्मसंकोचजन्य अदर्शन। (अ०) इल्तिसाकुज्फन।

कुनख—वह नख जो चोट लग जाने से दूषित होकर रूखा, काला और खुरदरा हो जाता है। कुलीन। (अ०) इन्हिनाउल् अज्फार। (अं०) ओनिकोग्रिफोसिस (Onychogryphosis)। **भेद**—अभ्रकीय नख अर्थात् अबरक के समान नख का भुरभुरा हो जाना। (अ०) जुफ्रः तलकिय्यः। (अं०) ओनिकोमायकोसिस (Onychomycosis)।

कुब्ज—कुबड़ा। (फा०) कूज।

कुब्जत्व, कुब्जता—वक्रता, कौब्ज्य।

कुम्भकामला—कामला का ही बढ़ा हुआ रूप। बहुत काल व्यतीत हो जाने से वा अत्यर्थ रूक्षित सर्वधातुयुक्त अथवा कठोर हुई-कामला 'कुम्भकामला' कहलाती है। यह कृच्छ्रसाध्य होती है। अवस्थाभेद से कोष्ठगत कामला की ही कुम्भकामला यह संज्ञा है। इसमें शोथ की बहुलता उपलक्षण है। मा० नि०। (उ०) स्याह यरकान, मर्ज विकल। (अ०) यरकान अस्वद, यर्कान खबीस। (अ०) ब्लैक जॉन्डिस (Black jaundice), इक्टेरस मेलास (Icterus melas), इक्टेरस ग्रेविस (Icterus Gravis), विंकल्ज डिजीज (Winckel's Disease)।

वक्तव्य—यूनानी वैद्यक में यरकान अस्वद कामला का वह भेद है जिसमें शरीर का वर्ण स्याह हो जाता है।

कुम्भीक—नपुंसक (क्लीब) का वह भेद जिसमें पुरुष अब्रह्मचर्य के

कारण स्त्रियों में उनकी गुदा में पुरुष की तरह प्रवृत्त होता है। सु०। डल्हण के अनुसार चरकोक्त 'वक्री' कुम्भीक है। डल्हण ने इसका एक पर्याय 'गुदयोनि' लिखा है। काश्यप ने इसका 'कुम्भिल' नाम से उल्लेख किया है।

कुम्भिका—(१) नेत्रवर्त्मगत रोगविशेष। यह सन्निपातज होता है। (२) शूक दोष। सु०।

कुरण्ड प्रकोप—अण्डप्रकोप।

कुलज कामला—सहज कामला, खानदानी कामला। (अ०) यरकान मौरूसी (खानदानी)। (अं०) फेमिलिअल जॉन्डिस (Familial jaundice)।

कुलज पाण्डु—सहज पाण्डु। (अ०) यरकान फत्री मौरूसी (खानदानी)। (अं०) हेरीडिटरी अनीमिया (Heriditary anæmia (Icterus), फेमिलिअल अनीमिया (Familial anæmia (Jaundice)।

कुलज प्रवृत्ति—आदिबलप्रवृत्ति।

कुलज फिरंग—वह फिरंग जो शिशु को माता-पिता के कारण हो जाता है, सहज फिरंग। (अ०) अफरंजी वरासी, आतशक मौरूसी, आतशक मौलूदी। (अं०) कन्जेनिटल सिफिलिस (Congenital Syphilis), हेरिडिटरी सिफिलिस (Heriditary Syphilis)।

कुलज रक्तक्षयजन्य कामला—रक्तक्षयजन्य पाण्डु का एक भेद। (अ०) यरकान फत्री मौरूसी (खानदानी)। (अं०) हेरीडिटरी हीमोलायटिक इक्टेरस (Heridltary haemolytic Icterus), फेमिलिअल हीमोलायटिक जॉन्डिस (Familial Hæmolytic Jaundice)।

कुलज रक्तस्रावी पाण्डु—सहज रक्तक्षयज पाण्डु। (अ०) फत्रुद्दम जिरयानी, रिक्त खून। (अं०) हीमोफायलिया (Haemophilia)।

कुलीन—दे० 'कुनख'।

कुष्ठ—(१) त्वग्दोष (तु०), त्वग्विकार, त्वचा के सर्वरोग, कुष्ठों। (अ०) अमराजुल्जिल्द। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी स्किन (Diseases of the Skin)। दे० 'क्षुद्रकुष्ठ'। (२) कोढ़, महाकुष्ठ : इसका निर्देश प्रायः केवल 'कुष्ठ' शब्द से किया जाता है। दे० 'महाकुष्ठ'।

कुस्वप्न—वह रोग में जिसमें रोगी भयावने स्वप्न देखता है, नींद में घुटना, भयानक स्वप्न। (अ०) काबूस, जागूत, खानूक, खयानक, खानिक, नैदुलान।

(यू०) इन्कूबूस (Incubus)। (अं०) इन्क्यूबस (Incubus), नाइट मेयर (Nightmare), एफीअल्टीज (Apbialtes)। **भेद्**—यूनानी मत से सौदावी, पित्तज, कफज, रक्तज, बाह्यशीतज, मस्तिष्कदौर्बल्यजन्य और अपचन दोषज।

कृच्छ्रमूत्रता—मूत्र कष्ट से आना।

कृच्छ्रश्वास—साँस लेने (श्वास-प्रश्वास) में कठिनाई, श्वासकृच्छ्र; कृच्छ्रोच्छवासता। (उ०) साँस की तंगी। (अ०) बुह्र, रबू, जीक नफस; जीकुन्नफस, उस्रुन्नफस। (अं०) डिस्प्नीआ (Dyspnoea)।

कृच्छ्रार्तव—आर्तवशोणित का कष्ट से आना, रजःकृच्छ्र, उदावर्ता योनि। (अ०) उस्रुत्तम्स। (अं०) डिसमेनोरिआ (Dysmenorrhoea)।

कृत्रिम विद्युद्दग्ध—कृत्रिम विद्युत् से जला हुआ। इलेक्ट्रिसिटी स्ट्रोक (Electricity Stroke)।

कृमि—दे० 'क्रिमि'।

कृमिजन्य—कृमियों से होने वाला। सु०। आधुनिक परिभाषा में 'जीवाणुजन्य'।

कृमिदन्त (क)—दाँतों में कीड़े लगना। सु०। (फा०) दर्दे दंदाँ क्रिरमी, किरमें दंदाँ। (अ०) दूदुस्सिन्न, दीदानुल्लिसान, वज्उल् अस्नान दूदी। (अं०) डेन्टल केरीज (Dental Caries), केरीज ऑफ टीथ (Caries of teeth)।

केन्द्रिक ज्वर—श्वसनक ज्वर।

केशाद्—रक्तज (कुष्ठरोगजनक) कृमि विशेष। दे० 'क्रिमिरोग'।

कैन्सर—एक प्रकार का घातकार्बुद, दुष्टमांसार्बुद, कर्कटार्बुद। यह बाह्य और श्लैष्मिक त्वचा में सामान्यतया होता है। होंठ, जिह्वा, मुख, अन्न-प्रणाली, जठर, अन्त्र; मलाशय, स्त्रियों में गर्भाशय और स्तन, पुरुषों में अष्ठीला-ग्रंथि (Prostate) और शिश्न इसके प्रधान स्थान हैं। (अ०) सरतान; सल्आ सरतानिया। (फा०) सरतानी रसौली, सरतान गुर्दा। (अं०) कैन्सर (Cancer), कार्सिनोमा (Carcinoma)।

भेद्—पाश्चात्यवैद्यक के मत से—(१) **आमाशयगत**—(अ०) सरतानुल्मेदा। (अं०) कैन्सर ऑफ स्टमक (Cancer of Stomach)। (२) **गर्भाशयगत**—(अ०) सरतानुर्रिहम। (अं०) कैन्सर ऑफ यूटरस

(Cancer of Uterus) । (३) **तारकागत**—(अ०) सरतानुल् कर्निय्या । (अं०) कैन्सर ऑफ कॉर्निआ (Cancer of Cornea) । (४) **नासागत**—(अ०) सरतानुल्अन्फ । (अं०) कैन्सर ऑफ दी नोज (Cancer of the Nose), कैन्सर नेजाइ (Cancer nasi) । (५) इसका एक प्रकार अत्यन्त कठिन (अश्मोपम) होता है, जिसे **स्कीर्हस** (Scirrhus) कहते हैं ।

कोठ—पित्तकफज और दिन में होने वाली पित्ती । वा० । मा० नि० । यह अनुबन्धरहित होता है अर्थात् जिसकी क्षण में उत्पत्ति तथा क्षण में नाश होता है । दे० 'उत्कोठ' या 'शीतपित्त' ।

कोथ—(१) सड़ने की क्रिया, सड़ना-गलना । (अ०) अफन, तअफ्फुन, नतानत । (अं०) प्यूट्रिफैक्शन (Putrifaction), प्यूट्रिसेन्स (Putriscence) । (२) अंग का मृत हो जाना, मरण, नाश । (अ०) गान्गराना (-या), उत्बा । (अं०) गैंग्रीन (Gangrene) । यूनानी मत से यह 'शफाकलूस' का पूर्ववर्ती लक्षण (मुकद्दमा) है । इसमें कुछ स्पर्शज्ञान शेष रहता है । (३) जख्म की गली हुई धातु । (अ०) वसख, त्राक्कुल । (अं०) स्लफ (Slough), स्लफिंग (Sloughing) ।

भेद—(१) **अन्तः शल्यजन्य कोथ**—(अ०) गान्गरानाए सुद्दिया । (अं०) एम्बोलिक गैंग्रीन (Embolic gangrene) । (२) **अप्रत्यक्ष कोथ**—(अ०) गान्गरानाए गैरबासिला । (अं०) इन्डायरेक्ट गैंग्रीन (Indirect gangrene) । (३) **अभिघातज (क्षतज) कोथ**—(अ०) गान्गरानाए जरहिया । (अं०) ट्रॉमैटिक गैंग्रीन (Traumatic gangrene) । (४) **अभिघातज प्रसरणशील कोथ**—(अ०) गान्गरानाए जरहिया मुन्तशिरा । (अ०) ट्रॉमैटिक स्प्रेडिंग गैंग्रीन (Traumatic spreading gangrene) । (५) **अर्गटजन्य कोथ**—(अ०) गान्गरानाए शैलमिय्या । (अं०) अर्गट गैंग्रीन (Ergot-gangrene) । (६) **आतुरालयजनित कोथ**—(अ०) गान्गरानाए बीमारिस्तान (मुस्तशफा) । (अं०) हॉस्पिटल गैंग्रीन (Hospital gangrene) । (७) **आर्द्रकोथ**—(अ०) गान्गरानाए रतूबिया । (अं०) मॉइस्ट गैंग्रीन (Moist gangrene) । (८) **उपद्रवजन्य कोथ**—(अ०) गान्गरानाए अरजिया । (९) **जराजन्य कोथ**—(अ०) गान्गरानाए शैखूखत । (अं०) सेनाइल गैंग्रीन (Senile gangrene) ।

(१०) **दुर्गन्धित आर्द्र कोथ**—(अ०) गान्गरानाए रतूबिया अफूनिया । (अं०) प्यूट्रिड् मॉइस्ट गैंग्रीन (Putrid moist gangrene) । (११) **दूषित आर्द्र कोथ**—(अं०) सेप्टिक मॉइस्ट गैंग्रीन (Septic moist gangrene) । (१२) **धमनीस्थ रक्तस्कन्दनज कोथ**—(अ०) गान्गरानाए तखस्सुर शरयानी । (अं०) आर्टीरियल थ्रॉम्बोसिक गैंग्रीन (Arterial thrombosic gangrene) । (१३) **निर्दूषित आर्द्र कोथ**—(अ०) गान्गारानाए रतूबिया गैर अफूनिया । (अं०) असेप्टिक मॉइस्ट गैंग्रीन (Aseptic moist gangrene) । (१४) **प्रसरणशील (परिसर्पी, विसर्पी) कोथ**—(अ०) गान्गरानाए साइया । (अं०) स्प्रेडिंग गैंग्रीन (Spreading gangrene) । (१५) **भगोष्ठका दुष्टव्रण**—(अ०) गान्गरानाए शफर, आकिलए शफर । (अं०) नोमा (Noma) । (१६) **महाशौषिर**—(अ०) गान्गरानाए फप, आकिलतुल्फम, कुलाअ गान्गरानी । (अं०) नोमा (Noma), गैंग्रीनस स्टोमॅटायटीज (Gangrenous stomatitis) । (१७) **शुष्क कोथ**—(अ०) गान्गरानाएयाबिसा । (अं०) ड्राई गैंग्रीन (Dry gangrene) । (१८) **सवात कोथ**—(अ०) गान्गरानाए रीहिया । (अं०) एम्फायसेमेटिक गैंग्रीन (Emphysematic gangrene) । (१९) **सशोथ कोथ**—(अ०) गान्गरानाए इल्तिहाबिय्या (वरय्या) । (अं०) इन्फ्लमेटरी गैंग्रीन (Inflammatory gangrene) ।

कोथजनक व्रण—मांस को दूषित करने वाला व्रण, गलाने-सड़ाने वाला व्रण, खा जाने वाला जख्म । (अ०) तकर्रुह अक्काल, कर्हा आकिल: (अक्काल:) । (फा०) गोश्तखोर: । (अं०) फैजीडीनिक अल्सर (Phagedenic ulcer), रूडंट अल्सर (Rudent ulcer), करोंडिंग अल्सर (Corroding ulcer) ।

कोद्रवी शीतला—एक प्रकार की शीतला जिसके दाने कोदों के दाने के बराबर होते हैं । पक्का ।

कोमलार्बुद—नरम रसौली । (अ०) सल्मा लय्यिना, असलिया । (अं०) फाइब्रोसेल्यूलर ट्यूमर (Fibrocellular tumour), सॉफ्ट फाइब्रोमा (Soft fibroma) ।

कोशप्राप्त वृद्धि—वह वृद्धि जिसमें बहिर्वंक्षणी छिद्र में से होकर अण्डग्रन्थि के ऊपर तक अन्त्र पहुँच जाय । कोशयुक्त वृद्धि । सु० । आधुनिक

परिभाषा में इसको 'पूर्ण (वंक्षणी) आन्त्रवृद्धि' कहते हैं। (अ०) फत्क कीसी, फत्कुल उरबियः कामिल। (अं०) एन्सिस्टेड हर्निआ (Encysted hernia), कॅम्प्लीट हर्निआ (Complete hernia)।

कौब्ज्य—कुब्जता, वक्रता, टेढ़ापन।

क्रमिक दृष्टिह्रास—धीरे-धीरे दृष्टि कम होना, आंध्य। (अ०) कुम्नः जुज्इया। (अं०) ॲम्ब्लीओपिआ (Amblyopia)।

क्रिमि—शरीर में उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के रोगजनक बाह्य और आभ्यन्तर सूक्ष्म जीव (क्रिमि)। कृमि। (फा०) किर्म। (अ०) दूद, दूदः (बहुव० दीदान)। (अं०) वर्म्स (Worms)।

भेद—बाह्य और आभ्यन्तर (देश) भेद से क्रिमि दो प्रकार के होते हैं। बहिर्मलज, कफज, रक्तज और विड्ज, ये जन्म भेद (कारण) से चार प्रकार के होते हैं और नाम भेद से वे क्रिमि बीस प्रकार के होते हैं। इनमें बाह्य क्रिमि स्वेदादि रूप मल से होते हैं और आभ्यन्तर कृमि आमाशयादि में होते हैं। **बाह्यमलजकृमि भेद**—१ यूका और २ लिक्षा।

आभ्यन्तर कृमि भेद—(१) **कफजकृमि**—(आकृति एवं वर्णभेद से) १ पृथुब्रध्ननिभा (ब्रध्नाकार क्रिमि), २ गण्डूपदोपम (गण्डूपद क्रिमि), ३ रूढ़धान्याङ्कुराकार (अङ्कुशमुख कृमि), ४ छोटे (लम्बाई में), ५ ह्रस्व और अतीव सूक्ष्म, ६ श्वेत और ७ ताम्रवर्ण (वाग्भट)।

सुश्रुतोक्त कफज क्रिमिभेद—१ दर्भपुष्पा, २ महापुष्पा, ३ प्रलून, ४ चिपिट, ५ पिपीलिका और ६ दारुण। **नाम भेद से**—१ अन्त्राद, २ उदरावेष्ठ, ३ हृदयाद, ४ महागुद, ५ चुरव, ६ दर्भकुसुम और ७ सुगंध (वाग्भट)।

(२) **रक्तज क्रिमि**—१ केशाद, २ रोमविध्वंस, ३ रोमद्वीप, ४ उदुम्बर, ५ सौरस और ६ (जन्तु) मातर (वाग्भट)। सुश्रुतोक्त रक्तज क्रिमि—"केशरोमनखादाश्च दन्तादाः किक्किशास्तथा। कुष्ठजा सपरिसर्पा ज्ञेयाः शोणितसम्भवाः॥" ये रक्तवाहिनी सिराओं में होते हैं।

(३) **पुरीषज कृमि**—१ ककेरुक, २ मकेरुक, ३ सौसुराद, ४ सशूल और ५ लेलिह (वाग्भट)। सुश्रुतोक्त पुरीषज क्रिमि—१ अजवा (अयवा), २ विजवा (वियवा), ३ किप्या, ४ चिप्या, ५ गण्डूपद, ६ चुरव और द्विमुख। ये पक्वाशय में होते हैं।

क्रिमिकर्ण—कर्णरोग विशेष, कान के कीड़े, कृमिकर्ण (क)। (फा०)

दीदान गोश । (अ०) दीदानुल् उज्न । (अं०) वर्म्स इन् दी इअर (Worms in the ear) ।

क्रिमिग्रन्थि—पलक (वर्त्म) तथा शुक्लभाग की संधि में होने वाला नेत्ररोग, कृमिग्रन्थि । सु० । पॅरासाइट्स ऑन सप्यूरेटेड ग्लैण्ड्स (Parasites on suppurated glands) ।

क्रिमिज अतिसार—कृमियों से होने वाला अतिसार । (फा०) किरमी दस्त । (अ०) इस्हालदूदी । (अं०) डायरिया वर्मिनोसा (Diarrhœa verminosa) ।

क्रिमिजन्य छर्दि—कृमियों से होने वाला वमन । दे० 'छर्दि' ।

क्रिमिजन्य मूर्च्छा—मूर्च्छारोग का कृमिजन्य भेद । दे० 'मूर्च्छा' ।

क्रिमिजन्य यकृच्छूल—कृमियों से होने वाला यकृत्शूल । दे० 'यकृच्छूल' ।

क्रिमिजन्य शिरोरोग—क्रिमियों के सिर में बैठकर अन्दर की ओर सिर को खाते रहने से होने वाला शिरोरोग । क्रिमिज शिरोशूल । (फा०) दर्दे सिर किरमी । (अ०) सुदाअदूदी ।

क्रिमिजन्यशूल—कीड़ों का शूल । (अ०) कुलंजदूदी (दीदानी) । (अं०) वर्मिनस या वर्मकॉलिक (Worminus or Worm colic) ।

क्रिमिजन्य हृदयशूल—कृमियों से होने वाला हृच्छूल ।

क्रोष्टुकशीर्ष-क्रिमिदन्तक—दे० 'क्रिमिदन्त' ।

एक वातव्याधि—जिसमें वात और रक्त से उत्पन्न हुआ, अत्यन्त पीड़ा देने वाला, शृगाल-मस्तक के समान मोटा शोथ जानुसंधि में उत्पन्न होता है । सु० । (अ०) वरम रुकबः, इल्तिहाबुर्रुकबः । (अं०) इन्फ्लेम्ड-नी (Inflammed knee), अर्थ्राइटीज ऑफ दी नी-जॉइण्ट (Arthritis of the knee-Joint) ।

क्लम—अनायास थकावट । (फा०) नाताकती । (अ०) जोफ । (अं०) अॅस्थीनिया (Asthenia) ।

क्लिष्ट वर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग । इसमें कोमल, अल्प वेदना वाला, ताम्रवर्ण का वर्त्मयुगल एक ही समय में अकस्मात् रक्त हो जाता है । यह रोग रक्तज, साध्य एवं लेख्य है । सु० ।

क्लीब—वह मनुष्य जो मैथुन करने में असमर्थ हो, नपुंसक, षण्ढ, षण्ढ ।

(फा०) नामर्द। (अ०) अजीज, इन्नीन, मानून, मुखन्नस, लली। (अं०) इम्पोटेंट (Impotent)।

भेद—बीजोपघातज, ध्वजभंग (वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, रक्तज, सान्निपातिक), जरासंभव (जराज), शुक्रक्षयज, लिङ्गछेदनज (वृषणोत्पाटनज), बीजदोषाद्गर्भज, आसेक्य, सौगंधिक, कुंभीक, ईर्ष्यक, षण्ड (जनाना, नरचेष्टिता), द्विरेत (स्त्रीपुंसलिङ्गी), पवनेन्द्रिय, संस्कारवाही, मंदबीज (अल्पबीज वाले), अवल (अहर्षवाले) वक्री, ईर्ष्यारति और वातिक षण्ड।

क्लैब्य—(१) क्लीब का भाव, नपुंसकता, नपुंसकत्व, क्लीबता, क्लीबत्व, षण्ढता, अप्रहर्षण, म्लानशिश्नता। (फा०) नामर्दी। (अ०) इनानत, इनत। (अं०) इम्पोटेंस (Impotence), इम्पोटेंसी (Impotency) ॲनॲफ्रोडिजिआ (Anaphrodisia)। (२) मैथुनासामर्थ्य, मैथुन शक्ति की कमजोरी, कामावसाय। (अ०) जोफ बाह। (अं०) सेक्शुअल् डेबिलिटी (Sexual debility)। (३) बीज (शुक्राणु Sperm या आर्तव Ovum) का अभाव होना। षण्ढता। क्लैब्य स्त्री और पुरुष दोनों में भी होता है। इसको चरक में 'नरनारिषण्ढ' (शा० अ० २) कहा है। इसकी टीका में चक्रपाणिदत्त लिखते हैं—एतौ त्वबीजावेव ज्ञेयौ। यदुक्तं सुश्रुते—'अशुक्रस्त्वेव षण्ढकः' (शा० अ० २)। अँग्रेजी में इसको 'स्टेरिलिटि Sterility' कहते हैं। इसमें ध्वजोच्छ्राय हो सकता है, मैथुन भी होता है; परंतु संतान नहीं होती। "दे० बन्ध्य (२)"।

क्लोमरोग—क्लोम के रोग।

वक्तव्य—क्लोम एक कोष्ठस्थ अंग है। परन्तु इसके अर्थ के संबंध में बहुत मतभिन्नता पाई जाती है। कुछ लोग इसको ग्रसनिका (Pharynx), कुछ अग्न्याशय (Pancreas), कुछ श्वासनलिकाएँ (Bronchi); कुछ रसप्रपा (Cysterna Chyli), कुछ कण्ठनाडी (Trachea) और कुछ पित्ताशय समझते हैं। परन्तु कई कारणों से क्लोम का अर्थ पित्ताशय करना अधिक उचित मालूम होता है। अस्तु, क्लोम रोग से यद्यपि उपर्युक्त प्रत्येक अंगगत रोग का ग्रहण हो सकता है, तथापि इससे 'पित्ताशय के रोग' यह अर्थ करना अधिक उचित जान पड़ता है। (डॉ० मा० गो० घाणेकर)।

क्लोमविद्रधि—क्लोम एक कोष्ठस्थ अंग है। अस्तु; क्लोमविद्रधि अन्तर्विद्रधि का एक उदाहरण है। क्लोम से क्लोमरोगान्तर्गत वक्तव्य में दिये

हुए अंगों का अर्थ ग्रहण किया जाता है। अस्तु क्लोमविद्रधि से तत्तद् अंगों में होने वाले विद्रधियों का अर्थ ग्रहण किया जा सकता है।

क्षत—(१) वह अभिघात जिसमें बाह्य त्वचा में खुला घाव बन गया हो—स्रुत रक्तस्य छिन्नभिन्नादेः ॥ (मधुकोष व्याख्या)। मांस का वह जख्म जिसमें पीप न पड़ी हो, व्रणमात्र, क्षणतु (नु)। (हिं०) घाव, जख्म। (उ०) जख्म बेपीप। (फा०) रीश (बहुव० रीशहा)। (अ०) जुर्ह (बहुव० जुरूह), जराहत। (अं०) वुंड या ऊंड (Wound), सोर (Sore)। दे० 'सद्योव्रण'। (२) क्षतव्रण। (अ०) जुरूह रजिया। (अं०) कन्ट्यूज्ड ऊंड (Contused wound), ब्रूज्ड ऊंड (Bruised wound)।

क्षतकास—पाँच प्रकार के कास रोग में से एक।

क्षतक्षीण—उरःक्षत रोग। मा० नि०।

क्षतज अर्म—नेत्रश्वेतभागगत रोगों में से अर्म रोग का एक भेद।

क्षतजकास—कासरोग का एक भेद। रीशादार सिल। (अ०) सिल लीफी। (अं०) फाइब्रॉइड थाइसिस (Fibroid Pthisis)।

क्षतज तृष्णा—तृष्णा रोग का एक भेद। अभिघातजन्य तृष्णा। दृढबलने इसके स्थान मे क्षयज तृष्णा का उल्लेख किया है। दे० 'तृष्णा'।

क्षतज विसर्प—एक प्रकार का विसर्प। अभिघातज विसर्प। शस्त्रादि के आघात से अर्थात् क्षत से होने वाला विसर्प। (अ०) हुमरा जर्बी। (अं०) ट्रॉमैटिक इरीसिपेलस (Traumatic erysipelas)। दे० 'विसर्प'।

क्षतज व्रण—अभिघातजव्रण, सद्योव्रण, आगन्तुव्रण। (अं०) ट्रॉमैटिक ऊंड (Traumatic wound)।

क्षतरोग—(१) एक क्षुद्ररोग जिसमें चर्मनखांतर पकता है, उपनख (च०)। दे० 'उपनख २'। (२) चिप्प। सु०।

क्षत (ज) विद्रधि—(१) आगन्तु विद्रधि, अभिघातज विद्रधि; बाह्य विद्रधि। इसमें बाह्य त्वचा में खुला घाव बन गया होता है। वाग्भट में क्षत-विद्रधि के बदले क्षतविसर्प दिया है। (अ०) दुबैल: जरबी। (२) स्तनरोग भेद।

क्षतविसर्प—दे० 'क्षतज विसर्प'।

क्षतव्रण—आघातजन्य व्रण।

क्षतशुक्र—नेत्ररोग भेद।

क्षतोदर—उदररोग का एक भेद। छिद्रोदर। दे० 'परिस्राव्युदर'।

क्षय—(१) राजयक्ष्मा। (२) शरीर या उसके किसी अंगोपांग का दौर्बल्य (दुबलापन)। (उ०) लागरी। (अ०) हुजाल। (अं०) ॲट्रोफी (Atrophy)।

क्षयज अंगघात—क्षय के कारण हुआ अंगघात। (अ०) फालिज (इस्तिरखाऽ) जबूली। (अं०) वेस्टिंग पाल्सी (Wasting palsy)।

क्षयज कास—कासभेद। क्षयजन्य कास। दे० 'कास'।

क्षयज शिरोरोग—शिरोगत वातादिकों के क्षय से होने वाला शिरोशूल। (उ०) दर्देसिरजोफी। (अ०) सुदाअ जोफा, सुदाअ जोफ दिमागी। (अं०) अनीमिक हेडेक (Anæmic Headache)।

क्षतज स्वरभेद—एक प्रकार का स्वरभेद।

क्षवथु—छिक्का, छींक।

क्षवथुविघातक उदावर्त—छींक का वेग रोकने से हुआ उदावर्त रोग। दे० 'उदावर्त'।

क्षामता—शरीर का कार्श्य। अ० हृ०।

क्षारदग्ध—क्षार द्वारा जला।

क्षारमेह—वह पित्तप्रमेह जिसमें क्षारजल की तरह (क्षारप्रतिम वा क्षारीय) मूत्र आता है। सु०। जिस प्रमेह में मूत्र वर्ण–रस–गंध और स्पर्श में क्षारोदक के समान आता है। अ० हृ०। (अं०) ॲल्केलाइन यूरिन (Alkaline urine)।

क्षीणता—कार्श्य।

क्षीणरक्त, क्षीरशोणित—जिसके शरीर से रक्त का काफी नाश (रक्तस्राव से या रोग से) हो गया हो। (अं०) अनीमिक (Anæmic)।

क्षीणार्तव—क्षीणरक्त। सु०। (अं०) ऑलिगोमेनोऱ्हिया (Oligomenorrhœa)।

क्षीरालसक—दूध की खराबी से होने वाला बच्चों का अतिसार, बच्चों का दस्त (अ० हृ०)। (अ०) इस्हाल सिब्यान, इस्हालुल् अत्फाल। (अं०) इन्फन्टाइल डायरीआ (Infantile diarrhœa)।

वक्तव्य—शार्ङ्गधर ने क्षीरालस नाम से इसका उल्लेख बालरोगों में किया है। क्षीरालस के वातज, पित्तज और कफज यह तीन भेद उसमें लिखे हैं।

क्षुड्विघातज उदावर्त—क्षुधाभिघातज उदावर्त । भूख रोकने से उत्पन्न हुआ उदावर्त रोग । दे० 'उदावर्त' ।

क्षुत—(१) प्रतिश्याय रोग । रा० नि० । (२) छिक्का, छींक ।

क्षुता—छिक्का, छींक ।

क्षुत्—(१) प्रतिश्याय रोग । रा० नि० । (२) छिक्का, छींक ।

क्षुद्रकुष्ठ—कुष्ठ का एक भेद, अनेक त्वग्रोग, कुष्ठों । इसमें त्वचा के अन्य रोगों का समावेश किया गया है । इनका निर्देश प्रायः उनके स्वतंत्र नाम से किया जाता है । त्वग्रोग असंख्येय हैं । दे० "कुष्ठ (१)" । **भेद**—(सुश्रुतोक्त), १ स्थूलारुष्क, २ महाकुष्ठ, ३ एककुष्ठ, ४ चर्मदल, ५ विसर्प, ६ परिसर्प, ७ सिध्म, ८ विचर्चिका, ९ किटिभ, १० पामा और ११ रकसा । **वक्तव्य**—चरक में सिध्म के बदले 'दद्रु' क्षुद्रकुष्ठों में लिखा है । सुश्रुतोक्त स्थूलारुष्क, महाकुष्ठ, विसर्प, परिसर्प और रकसा ये पाँच क्षुद्रकुष्ठ चरक में नहीं मिलते, उनके बदले अलसक, शतारु, विपादिका, चर्म और विस्फोटक ये पाँच कुष्ठ मिलते हैं । वाग्भट के क्षुद्रकुष्ठ चरकमतानुसार हैं, केवल दद्रु महाकुष्ठ में दिया है और सिध्म लघुकुष्ठ में समाविष्ट किया है ।

क्षुद्ररोग—(१) विशेष वर्गीकरण के अनुसार जिनका कहीं भी समावेश नहीं हुआ है, ऐसे रोग । (२) दोष दूष्यादि के अनुसार विस्तृत रूप से वर्णन न करके संक्षेप में वर्णन किये हुए रोग । (३) जिनकी हेतु-लक्षण-चिकित्सा बहुत साधारण होती है, ऐसे रोग । (४) क्षुद्ररोग के नाम से वर्णन किये हुए रोग, पारिभाषिक संज्ञा । **क्षुद्ररोग संख्या और नाम**—**सुश्रुत** के मतानुसार संक्षेप से चौवालीस क्षुद्ररोग इस प्रकार हैं—१ अजगल्लिका, २ यवप्रख्या, ३ अन्धालजी, ४ विवृता, ५ कच्छपिका, ६ वल्मीक, ७ इन्द्रवृद्धा, ८ पनसिका, ९ पाषाणगर्दभ, १० जालगर्दभ, ११ कक्षा, १२ विस्फोटक, १३ अग्निरोहिणी, १४ चिप्प, १५ कुनख, १६ अलशयी, १७ विदारिका, १८ शर्करार्बुद, १९ पामा, २० विचर्चिका, २१ रकसा, २२ पाददारिका, २३ कदर, २४ अलस, २५ इन्द्रलुप्त, २६ दारुणक, २७ अरुंषिका, २८ पलित, २९ मसूरिका, ३० यौवन-पिड़का, ३१ पद्मिनीकण्टक, ३२ जतुमणि, ३३ मशक, ३४ चर्मकील, ३५ तिल-कालक, ३६ न्यच्छ, ३७ व्यंग, ३८ परिवर्तिका, ३९ अवपाटिका, ४० निरुद्ध-प्रकश, ४१ सन्निरुद्धगुद, ४२ अहिपूतन, ४३ वृषणकच्छु और ४४ गुदभ्रंश ।

वाग्भट ने छत्तीस और **माधव** ने तैंतालीस क्षुद्ररोग वर्णन किये हैं। वाग्भट ने इन्द्रविद्धा विद्धाकरके, अंधालजी अलजी करके, मशक मांष करके और न्यच्छ लाञ्छन करके वर्णन किया है। पामा और विचर्चिका सुश्रुत के अनुसार कुष्ठ में वर्णन किये हैं। इन्द्रलुप्त, पलित, दारुणक और अरुंषिका शिरोरोगाध्याय में वर्णन किये हैं। परिवर्तिका, अवपाटिका और निरुद्धप्रकश गुह्यरोग में वर्णन किये हैं। अहिपूतन करके बालामयप्रतिषेध (उत्तरतन्त्र) में वर्णन किया है। अनुशयी, रकसा, पाददारिका, वृषणकच्छु और गुदभ्रंश इनका वर्णन वाग्भट में नहीं मिलता। निम्न क्षुद्ररोग वाग्भट में अधिक होते हैं—१ गर्दभी, २ गन्धनामा, ३ राजिका, ४ प्रसुप्ति, ५ इरिवेल्लिका, ६–७ उत्कोठ और कोठ। माधवनिदान में रकसा का वर्णन नहीं है। मसूरिका और विस्फोटका का स्वतन्त्र विस्तृत वर्णन किया है। चर्मकील का अर्श में वर्णन किया है। गर्दभिका, इरिवेल्लिका, गन्धमाला, नीलिका और वराहदंष्ट्र ये क्षुद्ररोग अधिक वर्णन किये हैं। इनमें से पहले तीनों का वर्णन ऊपर आया है।

क्षुद्रश्वास—वातज श्वास। (हिं०) हाँफा लगना, साँस फूलना, साँस चढ़ना। (अ०) बुहूर। (अं०) ब्रेथ्लेस्नेस् (Breathlessness)। दे० 'श्वास'।

क्षुद्रा (क्षुद्रिक)—एक प्रकार की हिक्का। सु०। दे० 'हिक्का'।

क्षुधा—बुभुक्षा, क्षुध् (घ्)। (हिं०) भूख। (फा०) गुर्सनमी। (अ०) जूअ, इश्तेहा, गरस। (अं०) हंगर (Hunger), अॅपेटाइट (Apetite)।

क्षोभ—प्रकोप, संक्षोभ। (हिं०) रगड़। (फा०) सोजिश, खराश। (अं०) इरिटेशन (Irritation)।

क्षौद्रमेह—एक प्रकार का वातज प्रमेह जिसमें मधु के रस और वर्ण का मूत्र आता है। सु०। मधुमेह। च०। दे० 'मधुमेह'।

क्ष्वेड—एक प्रकार का कर्णगत रोग जिसमें कान में वेणु के शब्द की तरह शब्द (वेणुघोष) सुनाई देता है। मा० नि०। (अ०) अफीर (सीटी की आवाज)। (अं०) ह्विस्परिंग (Whisperlng)।

(ख)

खञ्ज—एक वातव्याधि जिसमें अधोशाखा में विकार होता है, विकलगति, एकसक्थिघात। सु०। (हिं०) लंगड़ा। (अं०) मोनोप्लीजिया क्रूरालिस (Monoplegia cruralis)।

खटिक (सुधा) विकार—किसी अंग के संगठन में सुधा (चूर्ण) धातु का उत्पन्न हो जाना। (अ०) फसाद कलसी। (अं०) कॅल्केरियस डीजनरेशन (Calcareous Degeneration)।

खण्डीय फुफ्फुस शोथ—वह फुफ्फुसशोथ जो फेफड़े के बड़े-बड़े खण्डों (Lobes) में हो। (अ०) जातुर्रिया फसी। (अं०) लोबर न्युमोनिया (Lobar pneumonia)।

वक्तव्य—छोटे छोटे खंडों (फसीसात-लोथड़ों) में होने वाले को अंगरेजी में 'लोब्यूलर न्युमोनिया (Lobular pneumonia)' और अरबी में 'जातुर्रिया फसीसी' कहते हैं। इसके यह पाँच भेद हैं-१ साधारण, २ उत्क्रामक, ३ केन्द्रिक, ४ बृहत् और ५ फुफ्फुसावरणशोथ।

खण्डौष्ठ—ओष्ठरोग का एक भेद। दे० 'ओष्ठरोग'।

खल (लि) वर्धन—दन्तमूलगतरोग, अधिदन्त। अ० सं०। वर्धन। सु०। अधिक दाँत निकलना। दे० 'अधिकदन्त'।

खल्ली—(१) सकम्पार्धाङ्गवायु। पाँव, जंघा, ऊरु और हाथ इनके मूल का अवमोटन (ऐंठन वा परिवर्तन) करने वाली 'खल्ली' कहलाती है। च०। (उ०) फालिज मैराअशा। (अ०) इस्तिरखाए इर्तेआशी, फालिज मुर्तजिफ। (अं०) शैकिंग पाल्सी (Shaking palsy), पैरालिसिस ऍजिटन्स (Paralysis Agitans)। (२) रुह्या (भोज)। दे० 'इन्द्रलुप्त'।

खालित्य—बाल गिरना व झड़ना। अष्टाङ्गसंग्रह (वाग्भट) के अनुसार इसमें बाल धीरे-धीरे गिरते हैं। इन्द्रलुप्त। रुज्या। सु०। (अ०) स (सु) ल्अ, सलअ, इन्तिशारुश्शार। (अं०) बाल्डनेस (Baldness), टायलोसिस (Ptilosis)। दे० 'इन्द्रलुप्त'।

वक्तव्य—माधवनिदान की टीका में श्रीकण्ठदत्त कार्तिक का मत देते हैं—खालित्यं शिरस्यैव ॥ खालित्य में सिर के बाल गिरते हैं। चँदिया पर के बाल उड़ जाना। चँदला।

खुड—वातरक्त। अ० सं०।

खुण्डरुक्—वातबलास। वातरक्त।

(ग)

गण्ड—मुखगत रोग का एक भेद।

गण्डगात्र—कण्ठमाला । च० ।

गण्डमाला—एक प्रकार की अपची जिसमें केवल गले की ग्रंथियाँ फूलती हैं । कण्ठमाला । च० । सु० । अ० सं० । (अ०) ख़नाजीर । (अं०) स्क्रोफ्यूला (Scrofula) ।

गण्डूपदकृमि, गण्डूपदोपमकृमि—गण्डूपद (गण्डोयों) की तरह के कृमि, गोल कृमि, केंचवा, केंचुए । (अ०) दीदान तवील, दीदान मुस्तदीर:, हय्यात, हय्यात उमूमिया । (अं०) राउण्ड वर्म्ज (Round worms) । (ले०) ॲस्कॅरिस लम्ब्रिकॉयडीज (Ascaris Lumbricoides) । दे० 'क्रिमि' ।

गण्डूपदकृमिरोग—अन्त्र में केंचुवे के उपसर्ग से होने वाला रोग । केंचुए की बीमारी । (अं०) ऐस्कारियासिस (Ascariasis) ।

गतिशीलवृक्क—चलवृक्क ।

गदोद्वेग—बिना किसी रोग के व्याधि का भ्रम (वहम), अपदार्थगद, महागद । दे० 'महागद' । **वक्तव्य**—प्राचीन यूनानी हकीमों ने मस्तिष्क (शिरो) रोगों या चित्तोद्वेग (मालिनखोलियाए मराकी) के अन्तर्भूत इसका उल्लेख किया है ।

गद्गद्वाक्यता—जबान भारी होना और आवाज का अच्छी तरह अदा न होना, शब्दोच्चारण में रुकावट, गदगदत्व, हकलाना, हकलापन । (अ०) लुक्नत, तम्तम:, तलज्लुज, लजलज: । (अं०) डिफिकल्टी ऑफ स्पीच (Difficulty of Speech), स्टैमरिंग (Stammering), होरीनेस ऑफ दी टंग (Hoariness of the tongue) ।

गन्धज जनपदोद्ध्वंसन—ओषधि पुष्पगन्ध से दूषित वायु द्वारा होने वाला जनपदोद्ध्वंसक रोग । सु० । च० ।

गन्धनाम्ना—क्षुद्ररोग । वा० । गन्धमाला । मा० नि० । सुश्रुतीय कक्षा अर्थात् कक्षालसिकाग्रन्थिशोथ । दे० 'कक्षा' ।

गन्धपिड़का—क्षुद्ररोग (ब्रह्मदेव) ।

गन्धमाला—क्षुद्ररोग । मा० नि० ।

गन्धहीन तीव्र नासास्राव—(अ०) सैलानुल्अन्फ हाद् । (अं०) ॲक्यूट रिहिनोरिआ (Acute Rhinorrhoea) ।

गन्धाज्ञान—गंध का ज्ञान न हो सकना; गन्धज्ञान का अभाव, घ्राणाज्ञान,

घ्राणनाश । (अ०) खशम, बुतलानुश्शम, फक्दुश्शम । (अं०) अनॉस्मिया (Anosmia) ।

गम्भीर विद्रधि—आभ्यन्तर विद्रधि, औंधा फोड़ा, गहरा फोड़ा । (अ०) दुबैला मन्कूसा ।

गम्भीरिका—नेत्रदृष्टिभागगतरोग ।

गम्भीरा—हिक्का विशेष ।

गर्दभिका—क्षुद्ररोगविशेष । मा० नि० ।

गर्दभी—क्षुद्ररोग । वा० । गर्दभिका । मा० नि० ।

गर्भ, उपशुष्क—दे० 'उपशुष्क गर्भ' ।

गर्भकोषपरासंग—गर्भाशय की अत्यन्त संकोचहीनावस्था (सुस्ती), गर्भाशय का परासंग (क्रियाहीनता) । सु० । (अं०) यूटेराइन इनर्शिआ (Uterine inertia) ।

गर्भच्युति—अकाल में गर्भ गिरना । दे० 'गर्भविच्युति' ।

गर्भपात—गर्भविच्युति का एक भेद जिसमें गर्भस्रावकालोपरान्त अर्थात् पाँचवें और छठें महीने में घनशरीर हुए गर्भ का पात होता है । गर्भगिरना, गर्भप्रपात । (अ०) इस्कात हमल जनीनी, इजहाज, इस्कात । (अं०) मिसकैरेज (Miscarriage), अबीटस वेंटर (Abaetus venter) ।

भेद—(१) **अपरिहार्य**—प्रस्रंसमान गर्भ । (अं०) इनएव्हिटेबल अॅबॉर्शन (Inevitable abortion) । (२) **परिहार्य गर्भपात**—उपविष्टक गर्भ (सु०) । (अं०) थ्रेटेन्ड अॅबॉर्शन (Threatened abortion) । (३) **अपूर्ण गर्भपात**—(अं०) इन्कम्प्लीट अॅबॉर्शन (Incomplete abortion) । (४) **पूर्ण गर्भपात**—(अं०) कम्प्लीट अबॉर्शन (Complete abortion) । (५) **प्रायिक गर्भपात**—बार-बार होने वाला गर्भपात । (अ०) कसरत इस्कात हमल । (अं०) फ्रीक्वेंट अबॉर्शन (Frequent abortion) । (६) **बहिर्गर्भाशय गर्भपात**—(अं०) रैप्चर्ड एक्स्ट्रा यूटेराइन प्रेग्नेन्सी (Ruptured extra-uterine pregnancy) ।

गर्भपातनिमित्तज अपतानक—गर्भपातनिमित्तापतानक । दे० 'गर्भापतानक' ।

गर्भ, मिथ्या—शिशु (गर्भ) के स्थान में अन्य वस्तु का गर्भाशय में उत्पन्न हो जाना, मिथ्या गर्भ । (अ०) हमल काजिब । (अं०) फाल्स प्रेग्नेन्सी (False pregnancy) ।

गर्भ, लीन—लीन गर्भ । (अं०) मिस्ड अॅबॉर्शन (Missed abortion) ।

गर्भविच्युति—अकाल में गर्भ गिरना, गर्भच्युति, गर्भप्रपात । (अ०) इस्कात हमल, इज्हाज । (अं०) अॅबॉर्शन (Abortion), मिसकैरेज (Miscarriage) । **वक्तव्य**—इसके यह दो भेद हैं—(१) गर्भस्राव और (२) गर्भपात ।

गर्भाशय्यान्तः शोथ—गर्भाशयान्तः शोथ ।

गर्भसंग—गर्भ का बाहर न निकलना । गर्भाशयसंग ।

गर्भस्राव—गर्भाधान से चौथे महीने तक गर्भविच्युति स्रवती है यानि गर्भस्राव के रूप में गिरता है । भोज के मत से गर्भस्राव का काल प्रथम तीन महीने तक है । गर्भस्रवना । (अ०) इस्कात हमलमशीमी । (अं०) अबॉर्शन (Abortion) ।

गर्भस्रावी वन्ध्यता—वह वन्ध्यात्व जिसमें (स्त्रीको) गर्भधारणा होती है, परंतु तीन-चार महीने में गर्भ का स्राव या पात प्रत्येक समय होता है ।

गर्भाक्षेपक—गर्भपातनिमित्तापतानक, गर्भापस्मार । (अं०) एक्लम्प्सिया (Eclampsia) । दे० 'गर्भापतानक' ।

गर्भापतानक—गर्भपातनिमित्तापतानक, गर्भाक्षेपक, गर्भापस्मार, गर्भिणी का आक्षेप । (अं०) एक्लम्प्सिया (Eclampsia) ।

गर्भाशयगत अर्बुद—गर्भाशय में होने वाला अबुंद । (अ०) सरतानु-रहम । (अं०) कैन्सर ऑफ यूटरस (Cancer of uterus) ।

गर्भाशय (जरायु) गत कण्डू—बच्चादानी की खुजली । (अ०) हिक्कुर्रहम् । (अं०) यूटेराइन प्रूरायटीज (Uterine pruritis), इचिंग ऑफ यूटरस (Itching of uterus) ।

गर्भाशयग्रीवा छिद्राभाव—गर्भाशय की ग्रीवा में छिद्र न होना । (अं०) इम्पर्फोरेट सर्विक्स (Imperforate cervix) ।

गर्भाशयग्रीवान्तः शोथ—गर्भाशय की ग्रीवा के भीतरी परत का शोथ । (अ०) वरम बताने इनकुर्रिहम् । (अं०) सर्विकल एण्डोमेट्रायटीज (Cervical endometritis) ।

गर्भाशयग्रीवा विदार—गर्भाशय की ग्रीवा का विदीर्ण होना । (अं०) लेसरेशन ऑफ सर्विक्स यूटराई (Laceration of cervix uteri) ।

गर्भाशयग्रीवा विस्तृति—गर्भाशय की ग्रीवा का फैल जाना । (अ०)

इम्बिसात इनकुर्रहम । (अं०) डायलेटेशन ऑफ दी सर्विक्स (Dilatation of the cervix) ।

गर्भाशयग्रीवासंकोच—गर्भाशय की ग्रीवा का संकुचित हो जाना । (अ०) जीक इनकुर्रहम । (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ दी सर्विक्स (Stricture of the Cervix) ।

गर्भाशयग्रीवाशोथ—गर्भाशय की ग्रीवा की सूजन । (अ०) वरम इनकुरिहम । (अं०) सर्वाइकल मेट्रायटीज (Cervical metritis) ।

गर्भाशयघात—(अ०) इस्तिरखाउर्रिहम ।

गर्भाशय नवीन वा पुरातन (जीर्ण) शोथ (प्रकोप)—गर्भाशय की नवीन या पुरानी सूजन । गर्भाशयान्तःशोथ ।

गर्भाशयपश्चाद् रक्तग्रंथि—गर्भाशय के पश्चाद्भाग की खूनी रसौली । (अ०) सल्आदम्बिय्यः रहमिय्यः मुवल्लरा । (अं०) रिट्रो-यूटेराइन हीमाटोसील (Retro-uterine Haematocele) ।

गर्भाशयभ्रंश—गर्भाशय का फिसल कर नीचे लटक जाना । (अ०) इन्जलाकुर्रिहम, नुतूउर्रिहम । (अं०) प्रोलॅप्सयूटेराई (Prolapse uteri) ।

गर्भाशयमुखविस्तृति—योनिमुखविस्तृति । गर्भाशयग्रीवामुखविस्तृति । (अ०) इम्बिसात फम्मुर्रहम । (अं०) डायलेटेशन ऑफ दी ऑस (Dilatation of the os) ।

गर्भाशयमुखशोथ—गर्भाशय के मुँह की सूजन । (अ०) वरम फम रहम । (अं०) इन्फ्लमेशन ऑफ दी सर्विक्स (Inflammation of the cervix) ।

गर्भाशय विच्युति—गर्भाशय का अपने स्थान से आगे या पीछे की ओर हट जाना, गर्भाशयस्थानापवृत्ति, योनिस्थानापवृत्ति । (अ०) मैलानुर्रह्म, एअविजाजुर्रह्म । (अं०) डिस्प्लेसमेंट ऑफ दी यूटरश (Displacement of the uterus), यूटेराइन डिस्प्लेसमेंट (Uterine displacement) ।

गर्भाशयविद्रधि—गर्भाशय का विद्रधि । (अ०) दुबैलतुर्रह्म । (अं०) यूटेराइन ॲब्सेस (Uterine abscess) ।

गर्भाशयशोथ—बच्चादानी की सूजन, जरायुशोथ । (अ०) वरम र(रि)ह्म (खास), वरमुर्रिहम । (अं०) मेट्रायटीज (Metritis) ।

भेद—(आयुर्वेदीय मतानुसार) रक्तज, पित्तज, कफज और वातज ।

यूनानी में इन्हें क्रमशः वरमदम्वी, वरम सफरावी, वरम बलगमी या वरम रिख्व और वरम सौदावी या वरम सलिब कहते हैं। इनमें से प्रथम दो को यूनानी में 'वरम हार्र' (उष्ण शोथ) और डॉक्टरी में 'अक्यूट इन्फ्लमेशन ऑफ दी यूटरस' तथा अंतिम दो को यूनानी में 'वरम बारिद' (शीत शोथ) और डॉक्टरी में 'क्रॉनिक इन्फ्लमेशन ऑफ दी यूटरस' कहते हैं।

गर्भाशयभ्रांति—गर्भाशय का थक जाना, गर्भाशय की सुस्ती। (अं०) यूटराइन इनर्शिआ (Uterine inertia)।

गर्भाशयस्थानापसरण—गर्भाशयविच्युति।

गर्भाशयस्थानापवृत्ति—गर्भाशय का स्थानापसरण, गर्भाशय का अपने स्थान से हट जाना, योनिस्थानापवृत्ति। दे० 'गर्भाशय विच्युति'।

गर्भाशय स्फटन—गर्भाशय का फटना। (अ०) शु (अश्शु-)काकुर्रिहम। (अं०) रैप्चर ऑफ दी यूटरस (Rupture of the uterus)।

गर्भाशय स्वसंवृत्ति—गर्भाशय में धीरे-धीरे परिवर्तन होकर उसका यथापूर्व हो जाना (पूर्वस्थिति को प्राप्त कर लेना)। (अं०) इन्वॉल्यूशन ऑफ दी यूटरस (Involution of the uterus)।

गर्भाशयाध्मान—गर्भाशयगत आध्मान। (अ०) रीहुर्रहम।

गर्भाशयान्तःशोथ—गर्भाशय का अन्तःशोथ। गर्भाशय के अन्तः स्तर के बिकार, गर्भाशय के भीतरी पर्दे की सूजन, गर्भाशय का नवीन या पुराना प्रकोप। (अ०) वरम बताने रिहम, वरम गिसाइर्रहम, इल्तिहाब बातिनिर्रहम। (अं०) एण्डोमेट्रयटोज (Endometritis)।

गर्भाशयापसंवृति—गर्भ निकल जाने के पश्चात् उसकी संवृत्ति ठीक प्रकार से न होना। (अं०) सब इन्वाल्युशन ऑफ दी यूटरस (Subinvolution of the Uterus)।

गर्भाशयापसारण, गर्भाशयापसर्पण—गर्भाशय का अपने स्थान से हट जाना, गर्भाशय की स्थानापवृत्ति, गर्भाशय स्थानभ्रष्टता, योनिभ्रंश। (अ०) हुबूतुर्रिहम, सुकूतुर्रहम, नुतूउर्रिहम, अफल। (अं०) प्रोलॅप्स यूटराई (Prolapse uteri), प्रॉसिडेन्शिआ यूटराई (Procidentia uteri), मेट्रोप्टोसिस (Metroptosis)।

गर्भाशयार्बुद—गर्भाशय की रसौली। (अ०) सल्आ रहम। (अं०) यूटराइन ट्यूमर (Uterine tumour)।

गर्भाशयावरणशोथ—गर्भाशय की झिल्ली की सूजन। (अ०) वरम सिफाक रहमी। (अं०) पेरिमेट्रायटीज (Perimetritis)।

गर्भाशयासंग—गर्भाशय की संकोचहीनावस्था। (अं०) यूटराइन इनर्शिया (Uterine inertia)।

गर्भाशयिक अर्श—गर्भाशय का बवासीर। (अ०) बवासीर रिहम। (अं०) पॉलिपस यूटराई (Polypus uteri)।

गर्भाशयिक क्षय—गर्भाशय का छोटा हो जाना। (अ०) सिग्रुर्रिहम। (अं०) ॲटोफी ऑफ दी यूटरस (Atrophy of the uterus)।

गर्भाशयिक प्रतिश्याय—गर्भाशय का नजला। (अ०) नजला रहमिय्या। (अं०) यूटराइन कॅटार्‌ह (Uterine catarrh)।

गर्भाशयिक रक्तस्राव—गर्भाशय से रक्त स्रावित होना। (अ०) नजीफ रहमी। (अं०) यूटराइन होमोरेज (Uterine haemorrhage)।

गर्भाशयिक विद्रधि—गर्भाशय का फोड़ा। (अ०) दुबैलतुर्रिहम। (अं०) यूटराइन अब्सेस (Uterine abscess)।

गर्भाशयिक व्रण—गर्भाशय की फुंसियाँ। (अ०) बुसूर्रिहम। (अं०) अल्सर ऑफ दी यूटरस (Ulcer of the Uterus)।

गर्भाशयिक शूल—गर्भाशय का शूल। (अं०) आफ्टर पेन्स (After pains)।

गर्भोन्माद—एक प्रकार का उन्माद रोग।

गलगण्ड—साधारण गलगण्ड जिसमें एक गण्ड होता है, गला फूलना, गलग्रंथि। (हिं०) घेघा। (पं०) गिल्लढ़, गिल्हड़। (अ०) सल्‌आ दरकिया, गर्र गो (गू) तर, जिखामतुल्‌गुद्दतिल् दरकिय्या, जह्‌श, कील: हल्कूमिया। (अं०) गॉयटर (Goitre), सिम्पल गॉयटर (Simple goitre), ब्रॉङ्कोसील (Bronchocele), डर्बी शायर-नेक (Derby shire-neck)।

भेद—(आयुर्वेदिक) वातज, कफज, मेदोज, (अन्य) बहिर्नेत्र गलगण्ड।

गलविद्रधि—समस्त गले में फैलकर उत्पन्न हुआ त्रिदोषजन्य विद्रधि। सु०। **गलशुण्डिका**—कण्ठशुण्डी नामक तालुगत रोग। सु०। अ० सं०। घाटी बढ़ना, कौवा गिरना, कौवे का लटक जाना या ढीला पड़ जाना, घुंडी पड़ना। (अ०) इस्तिरखाउल्लहात, सुकूतुल्लहात। (अं०) इलाँगेटेड युव्हुला

Ilongated uvula), इलॉगेशन ऑफ दी युव्हू युला (Ilongation of the uvula) ।

गलशुण्डी शोथ—कौवे (घाटी) की सूजन । (अ०) वरमुल्लहात, इल्तिहाबुल्लहात । (अं०) युव्हू युलायटीज (Uvulitis) ।

गलाक्षेप—गले का आक्षेप (ऐंठन) । (अ०) तशन्नुजुल्बुल्‌ऊम । (अं०) फेरिंजोस्पैझम (Pharyngospasm) ।

गलान्तर्ग्रन्थिव्रण—गलान्तर्ग्रन्थि (Tonsil) का व्रण । (अ०) कुरूह लौजिया । (अं०) क्विन्सी (Quinsy) ।

गलान्तर्ग्रन्थिशोथ—कण्ठशालूक, टॉन्सिल शोथ, गले पड़ना । (अ०) वरम लोजतैन । (अं०) टान्सिलायटीज (Tonsillitis) ।

गलायु—कण्ठगतरोग । मा० नि० । दे० 'गिलायु' ।

गलौघ—अन्न और जल का अवरोधक, तीव्रज्वरयुक्त, (उदान) वायु का अवरोधक, रक्तयुक्त कफजन्य बृहत् गलशोथ । सु० ।

गल्लिर—दुःखवर्धन । अ० हृ० ।

गवीनीगत अश्मरी—गवीनीस्थित शर्करा । (अ०) हसातुल् हालिब, रम्लुल् कुलया । (अं०) सैन्ड इन् यूरेटर (Sand in ureter) ।

गवीनीमुखशोथ—गवीनी के मुख की सूजन । (अ०) इल्तिहाबु रू होजिल कुलया । (अ०) पायलायटीज (Pyelitis) ।

गवीनीशूल—गवीनी का शूल । (फा०) दर्द हालिब । (अ०) अलमुल्-हालिब । (अं०) यूरेटर-अल्जिया (Ureteralgia) ।

गवीनीशोथ—गवीनी की सूजन । (अ०) इल्तिहाबुल् हालिब, वरम हालिब । (अं०) यूरेटरायटीज (Ureteritis) ।

गवीनी शोथ, चिरज—वृक्कप्रणालियों (गवीनी) का चिरज शोथ । (अ०) वरम मुज्मिन मजारी कुलया । (अं०) क्रॉनिक ट्युब्युलर नेफरायटीज (Chronic Tubular nephritis) ।

गवीनीस्थित शर्करा—दे० 'गवीनीगत अश्मरी' ।

गात्रशोथ—(१) बालरोग विशेष जिसमें मुख कांतिवाला रहता है और दूसरे गात्र सूख जाते हैं । शाङ्ग० । कई इसे 'मुखमण्डिका' में लेते हैं । (हिं०) सूखना या मसान, सूखा, सुखण्डी । (अ०) नहूकत, दिक्कुल् अत्फाल, जोफ शदीद ।

(अं०) मैरास्मस (Marasmus), हाइपर अस्थीनिया (Hyperasthenia), वेस्टिंग (Wasting) । (२) बालशोष । दे० 'फक्क' ।

गॉशरव्याधि—गॉशर का रोग । (अ०) मर्ज गॉशर । (अं०) गॉशर्स डिजीज (Gaucher's disease) ।

गिलायु—एक प्रकार का कण्ठरोग जिसमें गले में कफ और रक्त से आँवले की गुठली के बराबर, स्थिर, अल्प पीड़ा करने वाली एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है जिसमें भोजन अटका हुआ-सा मालूम पड़ता है । यह शस्त्रसाध्य होती है । सु० । गलायु । मा० नि० ।

गुदकण्डू—गुदा की खुजली । (अ०) हिक्कतुल् मकअद । (अं०) प्रूरायटोज एनाई (Pruritis ani) ।

गुदकुन्द—बालरोग विशेष, गुदपाक (सु०), गुदकुट्टक, गुदकुन्द (अ० सं०, अ० हृ०) । दे० 'गुदपाक' या 'अहिपूतन' ।

गुदकैंसर—गुदा का कैन्सर । (अ०) सरतानुल् मकअद । (अं०) एनल कैन्सर (Anal cancer) ।

गुदकौकुन्दरविद्रधि—(अ०) दुबैलतुल् वरिकिल मकअद, खुराज वरकी मुस्तकीमी । (अं०) इस्किओ-रेक्टल अब्सेस (Ischio-rectal abscess) पेल्विक-रेक्टल अब्सेस (Pelvic-rectal abscess) ।

गुदघात—(अ०) इस्तिरखाउल् मकअद । (अं०) पैरेलिसिस ऑफ दी एनस (Paralysis of the anus) ।

गुदचोर—(अ०) शिकाकुल् मकअद, अश्शकाकुल् मकअद । (अं०) एनल फिशर (Anal fissure), फिशर ऑफ दी एनस (Fissure of the anus (rectum) ।

गुदनिरोध—सन्निरुद्धगुद, गुदसन्निरोध । (अ०) जीक मकअद । (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ दी एनस (Stricture of the anus) ।

गुदपरिकर्तन—गुदा में कैंची से कतरने की-सी पीड़ा ।

गुदपाक—बालरोग विशेष । सु०, शार्ङ्ग० । अहिपूतन, गुदकुट्टक, गुदकुन्द । अ० हृ०; अ० सं० । माधवनिदान में इसका 'अहिपूतना' में अन्तर्भाव किया है, परन्तु यह पित्त प्रधान है । दे० 'अहिपूतना' ।

गुदबद्ध—रुद्धगुद । (अं०) एनल स्ट्रिक्चर (Anal Stricture) ।

गुदभ्रंश—काँच निकलना। सु०। (अ०) खुरूजुल् मकअद। (अं०) प्रोलॅप्सस रेक्टि (एनी) Prolapsus recti (ani)।

गुदमैथुन—(अ०) उब्नः, इल्लत उब्नः, इल्लतुल् मसाएख। (अं०) पैसिव्ह सोडोमी (Passive sodomy)।

गुदयोनिक्लीब—दे० "कुम्भीक"।

गुदविद्रधि—गुदागत फोड़ा। (अ०) खुराज मकअद, दुबैलतुल् मकअद। (अं०) एनल ॲब्सेस (Anal abscess)।

गुदशैथिल्य—गुदा का ढीला हो जाना। (अ०) इस्तिरखाउस्शरज। (अ०) लूजनेस ऑफ दी स्फिंक्टर एनी (Looseness of the sp hincter ani)।

गुदशोथ—गुदा को सूजन। (अ०) वरम इस्त, इल्तिहाबुल् मुस्तकीम, वरम रोदए मुस्तकीम। (फा०) सोजिश कूज। (अं०) रेक्टायटीज (Rectitis)।

गुदसन्निरोध—दे० 'सन्निरुद्ध गुद'।

गुदार्ति—गुदशूल।

गुदार्श—गुदागत अर्श वा अर्श।

गुदावरोध—गुदा का बन्द हो जाना, बद्धगुद। (अ०) इन्सदाद मक्अद। (अं०) अट्रेसिया एनी (Atresia ani)।

गुदाश्रित वात—वातज अर्श। (उ०) रीही बवासीर।

गुम्मिया—गिलटियाँ, गमा, गुम्हा। (अ०) औराम समगिया। (अं०) गम्मेटा (Gummata)। दे० 'ब्रण'।

गुल्म—उदर विभाग में वायु से बना हुआ अर्बुद जो पाकरहित होता है। सु०। (अं०) गैस्ट्यूमर इन दी ॲब्डोमिनल केव्हिटी (Gastumour in the abdominal cavity), ॲब्डोमिनल ट्यूमर (Abdominal tumour)।

भेद—(आयुर्वेदीय) वातिक (Gaseous tumour), पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक, रक्तज और द्वन्द्वज। चरकीय गुल्म जो पाक को प्राप्त होता है (पाकी गुल्म) गुल्मविद्रधि के बराबर है। अपाकी गुल्म को 'वातगुल्म' कहते हैं।

गुह्यवंक्षणीय कणार्बुद—एक मैथुनजन्य व्याधि, लिङ्गार्श। सु०। अ० सं०। दे० 'लिङ्गार्श'।

गुह्यांगवृद्धि—गुह्याङ्गस्थ आन्त्रवृद्धि। वह अन्त्रवृद्धि जिसका उभार गुह्यांगमें

दृष्टिगत होता है। गुह्यांग की ओर आँत का उतरना। (अ०) फत्क इस्तिहियाई, फत्क तनासली। (अं०) प्यूडेंडल हर्निया (Pudendal hernia)।

गृध्रसी—एक प्रकार का वातरोग। सु०। च०। (हि०) लंगडी का दर्द, रींग (घ) न वायु। (अ०) इर्कुन्नसाऽ। (अं०) स्याटिका (Sciatica)।

गोमसूरिका—गोशीतला। (फा०) चेचक गाव। (अ०) जुदरी बकरी। (अं०) काऊ पॉक्स (Cow-pox)।

ग्रथित—शूकदोष। सु०।

ग्रन्थि—एक छोटी गोल परिमित आकार की द्रवगर्भ गाँठ जिसके चारों ओर कोश (Capsule) भी होता है। च०। सु०। मा० नि०। (अ०) कीस (वह रसौली जिसमें थैली हो), कीसः। (अं०) सिस्ट (Cyst)।

भेद—वात, पित्त, कफ, मेदो (ज), सिराज (सु०), मांस (च०; अ० सं०), रक्त, अस्थि और व्रण (अ० सं०) प्रभृति ग्रन्थि।

ग्रन्थिअर्बुद—सिस्टायटीज (Cystitis)।

ग्रन्थिक कुष्ठ—महाकुष्ठ भेद, आयुर्वेद में पित्तकफज कुष्ठ, गिरहदार (गुठलीदार) कोढ़। (अ०) जुजाम इक्दी, जुजाम दरनी। (अं०) नोड्यूलर लेप्रसी (Nodular leprosy), ट्यूबरक्युलर लेप्रसी (Tubercular leprosy)।

ग्रन्थिक ज्वर—ज्वर विशेष, मौषिक जनपदोद्ध्वंसन (सु०, कल्प०)। (अ०) ताऊन। (अं०) प्लेग (Plague), पेस्टिस, (Pestis)।

भेद—१ ग्रंथिक, २ जीवाणुमय (कीटशोणित), ३ फुफ्फुस प्रदाहिक (श्लेष्मप्रदाहिक), ४ अग्रन्थिक, ५ मिथ्याग्रन्थिक, ६ ओदरीय, ७ रक्तस्रावी, ८ वातिक, ९ क्षुद्र और १० बृहत् आदि।

ग्रन्थिक प्लेग—गाँठदार ताऊन। (अ०) ताऊन गुददी। (अं०) ब्यूबोनिक प्लेग (Bubonic plague), ब्यूबोनिक फीवर (Bubonic fever)।

ग्रन्थिक वृक्क—(अं०) सिस्टिक किड्नी (Cystic kidney)।

ग्रन्थि विसर्प—वह कफवातज विसर्प जिसमें शरीर पर बहुत-सी गाँठें निकलती हैं। च० ; अ० सं०।

ग्रन्थ्यर्बुद—पाषाणगर्दभः। (अ०) सल्आ गुददिय्यः, सल्आ गुद्दियः,

गुदद आकद। (उ०) गुद्दी (गुददी) रसौलियाँ। (अं०) ॲडीनोमा (Adenoma), अडीनोमेटा (Adenomata), ग्लॅण्ड्यूलर ट्यूमर (Glandular tumour)।

ग्रसनिका शोथ—दे० 'कण्ठशोथ'।

ग्रहजुष्ट बालरोग—ग्रहों के नाम से उक्त लक्षणयुक्त भिन्न-भिन्न रोग। सु०। मा० नि०।

भेद—१ स्कन्दग्रहग्रहीत, २ स्कन्दापस्मारजुष्ट (-गृहीत)-स्कन्दापस्मारी, ३ शकुनीगृहीत, ४ रेवती गृहीत, ५ पूतना, ६ अन्धपूतना-स्त्रीग्रह (सु०। वा०। मा० नि०), ७ शीतपूतना-स्त्रीग्रह, ८ मुखमण्डिका-स्त्रीग्रह, ९ नैगमेय (मा० नि०), नैगमेष (सु०), मेष या नैगमेष (वा०) और १० सम्पूर्ण लक्षणों वाला असाध्य ग्रह।

ग्रहणी—पुराना अतिसार। इसमें पक्व वा अपक्व पुरीष दुर्गन्धयुक्त मल (वात से) बार-बार घन (गाढ़ा) और (पित्त) से बार-बार तरल रूप में पीड़ा करता हुआ आता है। मा० नि०। (हिं०) संग्रहणी। (अ०) इसहाल मुज्मिन। (अं०) क्रॉनिक डायरिया (Chronic diarrhoea)।

भेद—(दोषानुसार) वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, त्रिदोषज; (अन्य) संग्रह-ग्रहणी तथा घटोयन्त्र ग्रहणी।

ग्रहोपसर्ग—ग्रह का उपसर्ग (उपद्रव)।

ग्रीष्मज अतिसार—गरमाई दस्त। (अ०) इसहाल सैफी। (अं०) समर डायरिया (Summer diarrhoea)।

ग्लानि—एक प्रकार की कमजोरी। (अं०) डिप्रेशन (Depression); लैंगर (Langour)।

(घ)

घटीयन्त्रग्रहणी—वह ग्रहणी रोग जिसमें सोने पर दोनों पार्श्वों में शूल और गिरते हुए जलपूर्ण घटी की-सी ध्वनि होती है और जो असाध्य है। मा० नि०।

घनगर्भ वृद्धि—वह वृद्धि जो कड़ी होती है।

भेद—मेदोज, प्रकोपज और अर्बुदज।

घनशोथ—कड़ी सूजन। (अ०) वरम सलिब। (अं०) सॉलिड एडीमा (Solid œdema), मीक्सेडीमा (Myxoedema)।

घर्षणज शब्द—रगड़ का शब्द, कुरकुराहट। (अ०) फर्क़आ। (अं०) क्रेपिटेशन (Crepitation)।

घात—किसी अंग का गति करने से रह जाना अर्थात् निकम्मा और संवेदनारहित हो जाना, झूला मारना, वध, अंगघात। (अ०) इस्तिरखा, शलल, शल्ल, फालिज। (अं०) पैरेलिसिस (Paralysis), पैरेसिस (Paresis), पाल्सी (Palsy)। **भेद**—एकांगरोग (एकांगवध), सर्वांगरोग (सर्वांगघात), पक्षाघात (अर्धांग), पङ्गु (दोनों पैर बेकाम होना), ऊरुस्तम्भ, खञ्ज, अदित आदि। **अन्य भेद**—आन्त्रघात, आशयभ्रंश (उदर कोष्ठघात), उदरभ्रंश, उन्मादजन्य अंगघात, उन्मादजन्य सर्वांगघात, क्षयज अंगघात, गर्भाशयघात (गर्भाशयापसंवृत्ति), गलशुण्डिका, गुदघात, नागहेतुज (नागविषजन्य) घात, फलकोषघात, बस्तिघात, योनिघात, लेखकीय अंगघात, वर्त्मघात, शीताद (सु०), शैशवीय अंगघात, सकम्पांगघात, स्तनघात और स्वस्तिकघात (व्यत्यस्त अंगघात)।

घातक कामला—दुष्ट कामला। (अ०) यर्क़ान खबीस या शदीद। (अं०) मॅलिग्नन्ट जॉण्डिस (Malignant jaundice), ॲक्यूट येलो अट्रोफी ऑफ दी लिव्वर (Acute yellow atrophy of the liver)।

घातक पाण्डु—दुष्ट पाण्डु। (अ०) नुक़्सुद्दम मुहलिक, फक़्रुद्दम मुहलिक (खबीस), किल्लतुद्दम मुहलिक। (उ०) खबीस बुहुस, मुहलिक कमी खून। (अं०) पर्निशस अनीमिया (Pernicious anæmia), एडीसोनिअन अनीमिया (Addisonian anæmia)।

घातक पिड़का—पिड़का का घातक प्रकार। (अ०) जमूर: खबीसः, बुसरा खबीसा। (अं०) मॅलिग्नन्ट पस्च्यूल (Malignant Pustule)।

घातक विषमज्वर—विषम ज्वर का घातक प्रकार। (उ०) मुहलिक (मूजी) मलेरिया। (अं०) पर्निशस मलेरिया (Pernicious malaria)।

घातक सकोच—(सरलान्त्रीय)—(अ०) जीक खबीस या सरतानी (अम्आऽमुस्तकीम)। (अ०) मलिग्नन्ट स्ट्रिक्चर (Malignant Stricture)।

घातकार्बुद—वह अर्बुद जिनसे मृत्यु होती है। यह त्वचा, अस्थि और मज्जा आदि में होते हैं और तेजी से बढ़ते (आशुवृद्धि) हैं। आत्ययिक अर्बुद,

दुष्टार्बुद, घातक रसौली। (अ०) सल्आ खबीसा, सलआ मुहलिक। (अं०) मॅलिग्नन्ट ट्यूमर (Malignant tumour)।

घातित—(नाडियाँ) वातग्रस्त। (अ०) मुस्तरखी। (अं०) पॅरेलाइज्ड (Paralysed)।

घृष्ट—सद्योव्रण का एक भेद। (अ०) खदश (नवीन), सहज् (छीलना वा खराश-पुरातन) सल्ख (पूरा चमड़ा उतर जाना)। (अ०) एक्सकोरिएटेड (Excoriated), अबरेशन (Abrasion)।

घ्राणनाश, घ्राणाज्ञान—घ्राणशक्ति का न रहना, गंध का ज्ञान न हो सकना, गंधाज्ञान। (अ०) खशम, बुत्लानुश्शम, फक्दुश्शम। (अं०) ॲनॉस्मिआ (Anosmia), लॉस ऑफ स्मेल (Loss of smell)।

घ्राणार्बुद—नासास्थित अर्बुद, नासार्बुद। दे० 'नासार्बुद'।

घ्राणार्श—नासास्थित अर्श। दे० 'नासार्श'।

(च)

चतुर्थक ज्वर—बारी का वह ज्वर जिसकी बारी चौथे दिन हो, चौथिया बुखार। (अ०) हुम्मा रिबा, हुम्मा रिबा दाइरा, हुम्मा रुबाइय्या। (फा०) तपे चहारम्। (अ०) क्वार्टन फीवर (Quartan fever)।

भेद—श्लैष्मिक और वातिक।

चतुर्थक विपर्यय—चतुर्थक ज्वर का वह भेद जो मध्य में दो दिन आकर आदि और अन्त दिन छोड़ता है। दोहरा चौथिया। (अ०) हुम्मा रिबा मुजाअफा। (अं०) डबल क्वार्टन फीवर (Double quartan fever)।

भेद—१ द्वन्द्वज चतुर्थक ज्वर—दोहरा चौथिया बुखार। (अ०) हुम्मा रिबा मुज्दविजा, हुम्मा रिबा मुसन्ना। (अं०) डुप्लिकेटेड क्वार्टन फीवर (Duplicated quartan fever)। (२) तेहरा चौथिया बुखार—(अ०) हुम्मा रिबा मुसल्लेसा, हुम्मा रिबा लाजिम (लाजिमा)। (अं०) ट्रिपल क्वार्टन फीवर (Tripple quartan fever)।

चर्मकच्छू—एक प्रकार का कच्छु (खुजली) रोग।

चर्मकील—प्रक्षुब्ध व्यानवायु कफ को ग्रहण करके बाह्य त्वचा पर स्थिर (जो जल्दी बढ़ते नहीं ऐसे) कील के समान मस्से उत्पन्न करती है; वे चर्मकील अर्श (त्वग्गतार्श) कहलाते हैं। सु.। मा. नि.। वाग्भटाचार्य के मतानुसार चर्मकील

मषक का ही एक अधिक उन्नत प्रकार है—मशैभ्यस्तून्नततरान् चर्मकीलान् सितासितान्। (अ० सं०)। दे० 'मशक'।

भेद—वातज, पित्तज, कफज और रक्तज।

चर्मकुष्ठ—एक प्रकार का क्षुद्रकुष्ठ (त्वग्रोग)। च०। परिसर्प। सु०। (अ०) तकश्शुरुल्जिल्द, अस्समकिया (त्वचा परसे भूसी या छिलके उतरना)। (अं०) फिश-स्किन डिजीज (Fish-skin disease), जीरोडर्मा (Xeroderma)। (अ०) तसम्मूक, समकिया (रूक्षता के कारण त्वचा से मछलीके से छिलके-सेहरा उतरना)। (अं०) इक्थियोसिस (Icthyosis)।

चर्मजा मसूरिका—मसूरिका (चेचक) का एक भेद।

चर्मदल कुष्ठ—एक प्रकार का क्षुद्रकुष्ठ। सु०।

चलदन्त—दन्तरोग विशेष, दाँत हिलना। (अ०) तहर्रुकुल् अस्नान, तजअ्जोअ् अस्नान, कल्कुस्सिन। (अं०) ओडोण्टोसायसिस (Odontoseisis), लूस टीथ (Loose teeh)।

चलनासामर्थ्य—चलने की असामर्थ्य। (अं०) इनएबिलिटी टु-वॉक (Inability to walk)।

चलवृक्क—गतिशील वृक्क। (उ०) मुतहर्रिक गुर्दा। (अ०) कुलया मुतहर्रिका। (अं०) नेफ्रोप्टोसिस (Nephroptosis) मूव्हेबल किडनी (Movable kidney)।

चाच—रज्या। वा०। दे० 'इन्द्रलुप्त'।

चाल—वाग्भटोक्तदन्तरोग विशेष—'चालश्चलद्भिर्दंशनैर्भक्षणादधिकव्यथैः।' (अ० सं०)।

चित्तोद्वेग—दे० "मद (२)"।

चिप्प—एक क्षुद्ररोग जिसमें नखमांस का आश्रय करके वात और पित्त वेदना, दाह और पाक उत्पन्न करते हैं। क्षतरोग, उपनख। सु०। अंगुलिवेष्टक। इसमें नखमांस (Nail Matrix) पकता है। (अं०) ओनीकिया पुरुलंटा (Onychia Purulenta)। दे० 'क्षतरोग' या 'उपनख'।

चिरकालीन—चिरकालानुबंधी, चिरकारी, चिरज। (अ०) मुज्मिन, मर्ज देरीना। (अं०) क्रॉनिक (Chronic)।

चिरकालीन गंधहीनतीव्र नासास्राव—(अ०) सैलानुल्अन्फमुज्मिना। (अं०) क्रॉनिक रिहनोरिआ (Chranic Rhinorrhoea)।

चिरकालीन मध्यकर्ण शोथ-(अ०) इल्तिहाब वस्तिल्उज्न मुज्मिना। (अं०) क्रॉनिक ओटायटीज मीडिआ (Chronic Ottitis Media)।

चिरकालीन शोथ—चिरकारी शोथ। (अ०) इल्तिहाब मुज्मिन, वरम मुज्मिन। (अं०) क्रानिक इन्फ्लमेशन (Chronic Inflammation)।

चिरज अपचन—(अ०) सूएहज्म मुज्मिन, वरममेदा मुज्मिन। (अं०) क्रॉनिक डिस्पेप्सिया (Chronic Dyspepsia)।

चिरज प्रतिश्याय—पुराना जुकाम।

चिरज शोथ—दे० 'चिरकालीन शोथ'।

चिरज सुषुम्नावरणशोथ—सुषुम्नावरण का पुराना शोथ। (अ०) वरम मुज्मिन अग्शियानुलाअ्। (अं०) क्रॉनिक स्पाइनल मेनिन्जायटीज (Chronic Spinal meningitis)।

चिरज स्वरयन्त्रशोथ—स्वरयन्त्र का पुराना शोथ। (अ०) वरम हलक मुज्मिन। (अं०) क्रॉनिक फेरिन्जायटीज (Chronic Pharyngitis)।

चुरव—आभ्यन्तर कफज कृमिभेद, तंतुकृमि (च०) सूत के तागे के समान श्वेतवर्णकृमि (सूत्रकृमि), सूती कीड़े, चुरने, चुनूने, चुनचुने। (अ०) दूदुलखल, दीदान खुलया, दीदान सिगार, दूद: खैतिया। (अं०) थ्रेडवर्म (Thread-worm) (ले०) ऑक्सियूरिस (एन्टेरोबियस) वर्मिक्यूलॅरिस (Oxyuris (Enterobius) Vermicularis)।

चुल्लिका ग्रन्थिरोग—चुल्लिका ग्रन्थि के रोग। (अ०) अम्राज गुद्दए दरकिया (तुसिय्या)। (अं०) डिजीजेज ऑफ थाईरॉइड ग्लैण्ड (Diseases of Thyrid gland)।

भेद—१ रसवृद्धिनिमित्तज, यथा--बहिर्नेत्र गलगण्ड। २ रसहानि निमित्तज--इसके भी यह तीन अवांतर भेद हैं—(क) श्लैष्मिक आर्द्रशोथ, (ख) वामनत्व और (ग) गलगण्ड।

चूचकास्फोट--चूचकों का चपटापन।

चूर्णित भग्न--भग्नका वह भेद जिसमें हड्डी के छोटे-छोटे टुकड़े हो जाते हैं। छूने पर शब्द करनेवाला भग्न। सु०। विचूर्णित भग्न। मा० नि०। (अ०)

कस्र मुतअद्द, कस्र मुफत्तित । (अं०) कॉम्मिन्यूटेड फ्रॅक्चर (Comminuted fracture) ।

चेष्टास्तम्भ—इच्छानुसार कार्य करने की असमर्थता । (अ०) फक्दुल् हर्कत । (अं०) इन्-एबिलिटी टु-वर्क (Inability to work), अॅकिनेसिया (Akinesia) अॅकिनेसिस (Akinesis) ।

(छ)

छत्रकार्बुद—पादार्बुद । (उ०) खुमी की रसौली । (अ०) सल्आ फुतरिय्या । (अं०) माइसीटोमा (Mycetoma) ।

छर्दन—छर्दि ।

छर्दि—वमन, वमि, ऊर्ध्वविरेचन । (हिं०) कै, उलटी । (अ०) कै । (अं०) वॉमिटिंग (Vomiting) । दे० "उत्क्लेश" ।

भेद—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, त्रिदोषज, आगन्तुज और क्रिमिज । यूनानी में वातिक के स्थानमें सौदावी, सफरावी और बलगमी यह तीन भेद लिखे हैं । इनमें सौदावी और श्लैष्मिक सर्द व तर तथा सफरावी गरम है ।

अन्य भेद—रक्तवमन, श्याववमन और पूयवमन ।

छिक्का—क्षवथु । (हिं०) छींक, छींक आना । (अ०) उतास, अत्सा, शनूसा । (अं०) स्नीजिंग (Sneezing) । दे० 'नासागत रोग' ।

भेद—दोषज और आगन्तुज ।

छिद्रोदर—क्षतोदर, परिस्राव्युदर । दे० 'परिस्राव्युदर' ।

छिन्न—(१) सद्योव्रण भेद । (अं०) स्लैश्ड ऊंड (Slashed wound) । (२) काण्डभग्न का एक भेद जिसमें वह (अस्थि) एक तरफ से शैष रहे (और एक तरफसे कट जाय) । सु० । यह एक प्रकार का अपूर्ण भग्न है जिसमें हड्डी का कुछ भाग टूट जाता है । (अं०) इन्कम्प्लीट फ्रॅक्चर (Incomplete fracture) ।

छिन्न श्वास—कफवातज श्वासरोग । (अं०) चेन-स्टोक्स ब्रीदिंग (Cheyne-Stokes Breathing) ।

छिन्नोच्छ्वास—श्वास-प्रश्वासकी क्रिया बीचबीचमें खण्डित यानि कुछ काल तक बंद रहना । श्वास-प्रश्वासकी क्रिया टूटी हुई होना । (अं०) पीरिऑडिक ब्रीदिंग (Periodic breathing) । दे० "छिन्न श्वास" ।

(ज)

जङ्गम विष—चरक सुश्रुतोक्त अकृत्रिम सर्पादिसंभव विष।

जड़ता, जड़त्व, जाड्य—स्तंभ। (अ०) जुमूद।

जड़ोन्माद—एक प्रकार का उन्माद रोग। दे० 'उन्माद'।

जतुमणि—एक प्रकार का क्षुद्ररोग। सहज तिल (तिलकालक) या मसा (मषक)। यह गोलाकार, कफरक्तजनित और किंचित् रक्तवर्ण होता है। सु०। (अं०) कन्जेनिटल मोल (Congenital mole)।

जनपदोद्ध्वंसक ज्वर—जनपदों का विध्वंस करनेवाला ज्वर। (अ०) हुम्मा वबाइय्या। (अं०) एपिडेमिक फीवर (Epidemic fever)।

जनपदोद्ध्वंसक रोग—जनपदों का विध्वंस करने वाला अर्थात् किसी प्रांत के अधिकसंख्य लोगों का नाश करनेवाला रोग। च०। देशनाशक रोग, मरक (सु०)। (हि०) महामारी। (अ०) अम्राज वबाइय्या, मर्ज वबाई। (अं०) पँडेमिक (Pandemic), एपिडेमिक (Epidemic)।

जन्तुमातर—रक्तज कृमि।

जन्म (प्रसव) कालीन आघातोपसर्गजात व्याधि—जन्म अर्थात् प्रसव के समय आघात या उपसर्ग से उत्पन्न हुई व्याधियाँ। इनका समावेश भी जन्मबलप्रवृत्त व्याधियों में होता है। (अं०) नेटल या पार्टूरिअल (Natal or Parturial)।

जन्मज—जन्मजात, सहज। (उ०) पैदायशी। (अ०) मौलूदी, खिल्की। (अं०) कान्जेनिटल (Congenital)।

जन्मज मूर्खता—सहज बुद्धिभ्रंश। (अ०) हुमक खिलकी। (अं०) इडिओसी (Idiocy)।

जन्मबलप्रवृत्त—गर्भाविक्रान्तिके समय उत्पन्न हुई व्याधियाँ। (अं०) कॉन्जेनिटल् (Congenital)।

जन्मोत्तर—जन्म अर्थात् प्रसव के पश्चात् उत्पन्न हुआ, स्वकृत। (अं०) कसबी। (अं०) अॅक्वायर्ड (Aquired), पोस्ट नेटल (Post-natal)।

जन्मोत्तर बुद्धिभ्रंश—(अ०) इख्तेलातुल् अक्ल्, खब्त अक्ल। (अं०) इम्बेसिलिटि (Imbecility)।

जन्मोत्तर रक्तनाशजन्य (पीत) पाण्डु—रक्तक्षयजन्य पाण्डु का एक

भेद। (अ०) फकरुद्म यरकानी इक्तेसाबी। (अं०) अँक्वायर्ड हीमोलायटिक अनीमिया (Aquired hæmolytic anæmia)।

जरा—वृद्धावस्था, वार्धक्य। (हिं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई। (फा०) पीरानासाली, उम्रे पीरी। (अ०) सिन्न शैखूखत, सिनजबूल। (अं०) सेनाइलिटी (Senility), ओल्ड एज (Old age), डिक्रेपिट एज (Decrepit age)।

जराजन्य अस्थिमृदुता—लीनुल्इजाम शैखूखी। (अं०) सेनाइल ऑस्टियोमलेशिया (Senile Osteomalacia)।

जराजन्य क्लैब्य—जरासंभव नपुंसकत्व, जराजक्लैब्य। (अ०) इनानत शैखूखी। (अं०) इम्पोटेंसी ड्यू टु ओल्ड एज (Impotency due to old age)।

जराजन्य दृष्टि—बुढ़ापे की दृष्टि जिसमें समीप की वस्तुओं का देखना कठिन होता है। (अ०) बस्रु शैयूख। (अं०) प्रेसबायोपिया (Presbyop a)।

जराजन्य बुद्धिभ्रंश—बुढ़ापे से बुद्धि में विकार आ जाना, सठिया जाना। (अ०) बलाहत शैखूखत, बलाहत अय्याम यास, हरकिय्यत। (अं०) क्लाइमॅक्टेरिक डिमेंशिआ (Climacteric dementia)।

जरायुकाठिन्य—गर्भाशय का कठिन हो जाना। (अ०) सुलाबतुर्रिहम। (अं०) हार्डेनिंग ऑफ यूटरस (Hardening of uterus)।

जरायु कण्डू—गर्भाशयगत कण्डू (खाज), गर्भाशय की खुजली। (अ०) हिक्कतुर्रिहम्। (अ०) इचिंग ऑफ यूटरस (Itching of uterus)।

जरायुभ्रंश—(अ०) सुकूतुर्रिहम, हुबूतुर्रिहम, अफल, इज़्लाकुर्रिहम। (अं०) प्रोलॅप्सस यूटराई (Prolapsus uteri), प्रोसिडेन्शिआ यूटरिया (Procidentia uteria), मेट्रोप्टोसिस (Metroptosis)।

जरायुशोथ—गर्भाशय शोथ। (अ०) वरम रिहम खास। (अं०) मेट्रायटीज (Metritis)।

जरायवर्बुद—गर्भाशय की रसौली। (अ०) सल्आर्रिहम, सरतानुर्रिहम। (अं०) यूटराइन ट्यूमर (Uterine tumour), कैन्सर ऑफ दी यूटरस (Cancer of the uterus)।

जरारोग—बूढ़ा होना, बुढ़ापा, वार्धक्य। (फा०) पीरी। (अ०) अशमा, मुशीब। (अं०) सेनाइलिटी (Senility)।

जलंधर—दे० 'जलोदर'।

जलंधरी—दे० 'जलोदरी'।

जलगर्भ—गर्भकी बाहरी झिल्लीमें जल संचित होना। (अ०) इस्तिस्काए मशीमा। (अं०) हाइड्रैम्निओस (Hydramnios), ड्रॉप्सी ऑफ दी अम्निऑन (Dropsy of the amnian)।

जलगर्भग्रन्थि—जलपूर्ण रसौली। (उ०) आबी रसौली। (अ०) सल्आ माइय्या। (अं०) हाइड्रोसिस्ट (Hydrocyst)।

जलगर्भाशय—गर्भाशयमें पानी भर जाना, जलनाभि। (अ०) इज्तिमाउल्माऽ फिरिहम, इस्तिस्काउरिहम। (अं०) हाइड्रोमेट्रा (Hydrometra)।

जलत्रास—जलसंत्रास, जलातङ्क। दे० 'जलसंत्रास'।

जलनाभि—दे० 'जलगर्भाशय'।

जलनेत्र—आँख का जलंधर। (अ०) इस्तिस्काउल्ऐन। (अं०) हाइड्रोफ्थैल्मिया (Hydrophthalmia)।

जलमस्तिष्क—मस्तिष्क (खोपड़ी) के अंदर जल संचित हो जाना, मस्तिष्क का जलंधर, जलशीर्ष। (अ०) माउर्रास, इस्तिकाउद्दिमाग़, इस्तिस्काउर्रास, इज्तिमाउल्माऽफिर्रास। (अं०) हाइड्रोकेफेलस (Hydrocephalas)।

जलमृत—जल में डूबने से मरा हुआ।

जलरक्तता—रक्तमें लाल कणों की कमी और जल की अधिकता। (अं०) हाइड्रोमिया (Hydromia)।

जलबस्ति—उदकमेह, बस्ति का जलंधर। (अ०) इस्तिस्काऽ अम्मस, इस्तिस्काऽमसाना, मर्ज जयाबीतुस। (अं०) डायबेटीज (Diabetes)। दे० 'उदकमेह'।

जलवृक्क—वृक्क (गुर्दा) का जलंधर, वृक्क के भीतर जल या मूत्र का बन्द हो जाना। (अ०) इस्तिस्काउल् कुल्या, इस्तिकाऽ कुल्वी। (अं०) हाइड्रोनेफ्रोसिस (Hydronephrosis)।

जलवृषण—वृषणकोष के भीतर पानी भर जाना, वृषणकोष (फोतों) का जलन्धर, मूत्रजवृद्धि। (अ०) इस्तिस्काउल्खुस्या, कीला माइय्या, उद्रतुल्माई, फत्कमाई। (अं०) हाइड्रोसील (Hydrocele)।

जलशीर्ष—दे० 'जलमस्तिष्क'।

जलसंत्रास—पागल कुत्ता आदि के काटने से उत्पन्न हुआ जलसंत्रास रूप उन्माद रोग। जलत्रास, जलातङ्क, हलकाव। (अ०) फज्उल्माऽ, दाउल्-कल्ब (दाउलकल्ब मालिन्खोलिया वर्गीय एक अन्य रोग भी है), कलब, कलबुल्-हैवानात। (अं०) हाइड्रोफोबिया (Hydrophobia)।

(पशु) जलसंत्रास रोग—(सं०) अलर्क। जानवरों का हलकाव उदाहरणतः कुत्ते का पागल हो जाना। (अ०) कल्बुल् हैवानात। (अं०) रेबीज (Rabies)।

जलसुषुम्ना—सुषुम्ना का जलन्धर। (अ०) इस्तिस्काउन्नुखाअ, इज्तिमाउल्माऽ फिन्नुखाअ। (अं०) हाइड्रोरेकिस (Hydrorachis)। हाइड्रोमायलिया (Hydromyelia)।

जलहृदयावरण—हृदयावरण के भीतर पानी भर जाना (जल संचित हो जाना)। (अ०) इस्तिस्काउल्कल्ब, इस्तिस्काऽ गिलाफुल्कल्ब, इम्तिलाऽ-गिलाफुल्कल्ब, इस्तिस्काउत्तामूर, इस्तिस्काऽ हिजाबुल् कल्ब, इह्तिवाउर्तूबत अललकल्ब। (अं०) हाइड्रोपेरिकार्डिअम् (Hydropericardium)।

जलातङ्क—दे० 'जलसंत्रास'।

जलार्बुद—वाग्भट्ट के अनुसार एक प्रकार का ओष्ठरोग—'जलबुद्बुद-वद्वातकफादोष्ठे जलार्बुदम्।' यह जलार्बुद बहुधा म्यूकस सिस्ट (Mucous cyst) होगा।

जलोदर—एक उदररोग जिसमें उदरावरणगुहा में जल इकट्ठा होता है। यह शोथ का ही एक स्थान-विशिष्ट स्वरूप है।

वक्तव्य—वातादि चार उदर वास्तविक जलोदर के ही प्रारम्भिक रूप हैं; इसलिए उनमें भी जल उत्पन्न हो सकता है। (उत्सेधलिंग) शोथ का प्रधान कारण स्रोतों की अत्यधिक स्रवणक्षमता अर्थात् पर्याय से स्रोतोदुष्टि है। इसके अतिरिक्त रक्तभाराधिक्य भी शोथोत्पत्ति में सहायता करता है। शोथ जब त्वचा या यकृतादि अंगों में होता है तब शोथ ही कहा जाता है; जब किसी अवकाश-युक्त स्थान में होता है तब उस स्थान के साथ जल शब्द का उपयोग किया जाता है। जैसे—उदर में जलोदर इत्यादि। पेट में पानी पड़ जाना, दकोदर (सु०) उदकोदर। (अ०) इस्तिस्काऽ, इस्तिस्काऽ जिक्की, इस्तिस्काउल्

बारीतून ! (अं०) ॲसाइटिज (Ascites), पेरिटोनिअल ड्रॉप्सी (Peritoneal dropsy), ॲब्डोमिनल ड्रॉप्सी (Abdominal dropsy)।

भेद—१ प्रतिहारिणीसिरावरोधजन्य, २ हृद्विकारजन्य, ३ वृक्कविकारजन्य, ४ उदरावरणशोथजन्य और ५ रक्तदोषजन्य।

जलोदर, सार्वदैहिक—सम्पूर्ण शरीर का जलन्धर। (अ०) इस्तिस्काऽ कुल्ली, इस्तिस्काऽ आम्मा। (अं०) जेनरल ड्राप्सी (General dropsy)।

जलोदरी—जलोदर का रोगी, जलन्धरी। (अ०) मरीज इस्तिस्काऽ, मुस्तस्की। (अं०) हाइड्रोटिक (Hydrotic), ड्रॉप्सिकल (Dropsical), असाइटिक (Ascitic)।

जलोरस्—छाती (सीना) के अन्दर जल इकट्ठा हो जाना, सीने (छाती) का जलन्धर। (अ०) इस्तिस्काऽ सद्र (सद्री), इस्तिस्काउस्सदर, इज्तिमाउल्माऽ फिस्सदर। (अं०) हाइड्रोथोरॅक्स (Hydrothorax)।

जातघ्नी—एक प्रकार का योनिव्यापत्। वा०। शार्ङ्ग०। पुत्रघ्नी योनि। च०। सु०। दे० 'योनिव्यापत्'।

जातिफलवर्ण यकृत्—जायफल के रंग का यकृत् (जिगर)। (अ०) कबिद जौजी। (अं०) नट्मेग लिव्हर (Nut-meg Liver)।

जानपदिकज्वर—(फा०) तपे ख़बाई। (अ०) हुम्मा वबाइय्या। (अं०) एपिडेमिक फीवर (Epidemic fever)।

जानपदिक रोग—वह रोग जो देश के किसी विशेष प्रान्त में होता है। (अ०) अम्राज बलदिय्या, अम्राज वाफिजा, मर्ज बलदी, मर्ज मोजई। (अं०) एन्डेमिक डिजीज (Endemic disease)।

जानपदिक व्रण—स्थानिक व्रण। (अ०) कर्हा मुकामिय्या, कर्हा वतिनया। (अं०) एन्डेमिक अल्सर (Endemic Ulcer)।

जानपदिक शूल—(अ०) कुलंज वबाई। (अं०) एपिडेमिक कॉलिक (Epidemic Colic)।

जालगर्दभ—एक प्रकारका क्षुद्ररोग जिसमें विसर्प के समान फैलने वाला, दाह और ज्वर करने वाला, ईषत् पाकयुक्त, पित्तयुक्त (प्रबल दोषों) से उत्पन्न हुआ हलका-सा शोथ होता है। सु०। च०। भोज इसको विसर्प कहते हैं। इसको

'अग्निवात' भी कहते हैं। (अ०) नमूला साजिजा, नमूला बसीत। (अं०) हर्पिस सिम्प्लेक्स (Herpes Simplex)।

जिह्वाकण्टक—जिह्वागत रोग विशेष। (अ०) इल्तिहाबुल्लेसान। (फा०) वरम जबान। (अं०) क्रॉनिक सुपरफिशिअल ग्लोसायटीज (Chronic Superficial Glossitis)।

वक्तव्य—सुश्रुत के अनुसार तीनों दोषों से तीन प्रकार के कण्टक (वातादि दोषों से जिह्वाकण्टक की तीन अवस्थाएँ) रोग होते हैं। यथा—(१) वातप्रकोपज (वातकण्टक)—वातप्रकोप से जीभ विदारयुक्त, रसज्ञान विरहित और शाकपत्र के समान (खुरदरी) होती है। सु०। (उ०) जबान फटना। (अ०) शुकाकुल्लिसान। (अं०) क्रैक्ड या फिशर्ड टंग (Cracked or Fissured tongue), फिसर ऑफ दी टंग (Fissure of the tongue)। (२) **पित्तकण्टक**—पित्त से पीली, दाहयुक्त और रक्तयुक्त अंकुरों से व्याप्त होती है। सु०। (अं०) रेड् ग्लेज्ड टंग (Red-glazed tongue)। (३) **कफकण्टक**—कफ से भारी, स्थूल और शाल्मलिकण्टक के समान मांसांकुरों से व्याप्त होती है। सु०। (अ०) तकश्शुरुल्लिसान। (अं०) इक्थिओसिस लिंग्वी (Ecthyosis linguæ)।

जिह्वागत कण्डू—जिह्वा की खुजली। (अ०) हिक्कतुल्लिसान।

जिह्वागत दाह—जिह्वा का दाह। (अ०) हुर्कतुल्लिसान।

जिह्वागत रोग—जिह्वा के रोग। (अ०) अमराजुल्लिसान।

भेद—तीनों दोषों से तीन प्रकार के कण्टक (दे० 'जिह्वाकण्टक'), अलास और उपजिह्विका ये पाँच जिह्वागत रोग हैं।

जिह्वार्बुद—जिह्वागत अर्बुद। (अ०) सरतानुल्लिसान। (फा०) सरताने जबान। (अं०) कैन्सर ऑफ दी टंग (Cancer of the tongue)।

जिह्वावृद्धि—जीभ का बड़ा हो जाना। (अ०) इद्देलाउल्लिसान, इजमुल्लिसान। (अं०) ग्लोसोसील (Glossocele), मैक्रोग्लोसिआ (Macroglossia), मेग्लिओग्लोसा (Megliogloss a)।

जिह्वाशोथ—जीभ की सूजन। (फा०) सोजिश (वरम) जबान। (अ० ग्लोसायटीज (Glossitis)।

वक्तव्य—यूनानी में गरम और सर्द इसके यह दो भेद हैं। इनमें गरम रक्त और पित्तजन्य तथा सर्द कफ एवं सौदाजन्य होता है।

जिह्वाशोष—जीभ की रूक्षता। (अ०) जफाफुल्लिसान। (अं०) इक्थिओसिस लिंग्वी (Icthyosis linguæ)।

जिह्वाशौक्ल्य—जीभ का सफेद होना, जीभ की सफेदी। (अ०) बयाजुल्लिसान। (ले०) ल्यूकोप्लॅकिया लिंग्वैलिस (Leukoplakia lingualis)।

जिह्वास्तम्भ—एक वातव्याधि। (अ०) इस्तिरखाउल्लिसान, शलुल्लिसान। (अ०) पैरेलिसिस ऑफ दी टंग (Paralysis of the tongue), ग्लोसल पाल्सी (Glossal palsy)।

जीर्ण औपसर्गिक पूयमेह—पुराना सूजाक। (फा०) सूजाक कोहना। (अं०) ग्लीट (Gleet)।

जीर्णज्वर—पुराना बोखार। (फा०) तपे कोहना। (अ०) हुम्मा मुज्मिना। (अं०) क्रॉनिक फीवर (Chronic fever)।

जीर्ण विड्विबन्ध—पुराना कब्ज। सु०। (अ०) कब्ज मुज्मिन।

जीर्णविड्विबंधज शूल—मलावष्टम्भ (विबन्ध) जन्य शूल, मलसंचयजन्य बद्धगुद, बद्धगुद। (अ०) कुलंज सुफली। (अं०) स्टरकोरल कॉलिक (Stercoral Colic)।

जीर्ण विषमज्वर—पुराना विषमज्वर। (अं०) क्रॉनिक मलेरियल फीवर (Chronic malarial fever)।

जीवाणुजन्य रोग—जीवाणुओं से होने वाले रोग। इसका समावेश आयुर्वेद में 'दैवबलप्रवृत्त' रोगों में होता है। (अं०) पैरासिटिक डिजीज (*Parasitic disease*)।

जीवाणुज फिरंग—फिरंग (मा०), गरमी, आतशक। दे० 'फिरङ्ग'।

जीवाणुमय (कीट शोणित) प्लेग—ग्रन्थिक प्लेग का एक भेद। ताऊन अफूनी (अफूनती, अफ्नी)। (अं०) सेप्टिसीमिक प्लेग (Septicæmic Plague)।

जीवाणुमयता—रक्त में जीवाणुओं का फैल जाना, जीवाणुमयावस्था। (अ०) तअफ्फुनदम। (अं०) सेप्टिसीमिया (Septicæmia)।

जृम्भण, जृम्भा—जँमाई, उबासी। (फा०) दहन दरा, फाजा। (अ०) तसाउब। (अं०) यॉनिंग (Yawning)।

वक्तव्य—उद्वेष्टनके साथ मुख फैलाया हुआ (मनुष्य) वायुके एक उच्छ्वास

को लेकर आँखों से पानी के साथ जो (निःश्वास) बाहर फेंकता है वह 'जृम्भा' कहलाता है। सु० शा० ४ अ०। संक्षेप में यह स्वाभाविक अनैच्छिक और गंभीर प्रश्वसन का एक प्रकार है जिसमें साँस मुख द्वारा ग्रहण की जाती है।

जृम्भावरोधज उदावर्त—यह उदावर्त रोग जो जँमाई रोकने से उत्पन्न होता है। जृम्भोपघातज उदावर्त। दे० 'उदावर्त'।

ज्वर—एक रोग जिसमें शरीर का तापक्रम (संताप) प्रकृत अवस्था से अधिक बढ़ जाता है। पसीना नहीं आता, शरीर बहुत गर्म होता है और सारे शरीर में दर्द या जकड़न-सी होती है। (हिं०) जर, बुखार, ताप। (फा०) बुखार, तप, ताप। (अ०) हुम्मा (बहुव० हुम्मयात)। (अं०) फीवर (Fever), पायरेक्सिआ (Pyrexia)। **भेद**—(१) अविसर्गी या संतत, (२) अर्धविसर्गी और (३) विसर्गी। दोषादि के विचार से इसके निम्न भेद होते हैं—१. निज या दोषज, २. आगन्तु, ३. विषम आदि। दोषज के १. साधारण या स्वतंत्र—(फा०) तपे खिल्ती मुफरद; (अ०) हुम्माखिल्ती बसीता लाजिमा, हुम्मा साजिजा दायमा; (अं०) सिम्पल् कन्टिन्यूड (Simple Continued)। २. द्वन्द्वज और ३ त्रिदोषज (सन्निपातज) ये तीन भेद होते हैं। निज या दोषज ज्वर (अविसर्गी और अर्धविसर्गी) के **भेद**—वात, पित्त, श्लेष्म; (द्विदोषज या द्वंद्वज) वातपित्त, वातकफ, कफपित्त; (त्रिदोषज) सन्निपात या सान्निपातिक। सन्निपात के भेद—चरक के अनुसार ७ दोषों की उल्वणता के विचार से और दोषों की हीनता, मध्यता और अधिकता के विचार से—कुल तेरह प्रकार के सन्निपात ज्वर होते हैं। अन्य आचार्यों के मत से इसके भेद—१ सन्धिक, २ अन्तक, ३ रुग्दाह, ४ चित्तविभ्रम, ५ शीतांग, ६ तन्द्रिक, ७ कण्ठकुब्ज, ८ कर्णक, ९ मुग्ननेत्र, १० रक्तष्ठीवी, ११ प्रलापक, १२ जिह्वक और १३ अभिन्यास। ये ज्वर निज वा दोषज होते हैं। **आगन्तु ज्वर भेद**—१ विषज, २ भेषजगन्धोत्थ (ओषधिगंधज) ज्वर—तृणपुष्पज्वर (सु०), ३ काम-भय-शोक, क्रोधादि (पित्त) ज्वर, ४ अभिचार, अभिशाप-जन्य, ५ भूताभिषंग (ज) ज्वर और ६ अभिघातज। **विसर्गी ज्वर के भेद**—विषमज्वर, इसके भेद—१ सन्तत, २ सतत, ३ अन्येद्युः, ४ तृतीयक और चातुर्थिक तथा प्रलेपकज्वर, इत्यादि इत्यादि। अन्य आधुनिक ज्वर वर्णक्रमानुसार दिये हुए उन-उन शब्दों में देखें। ज्वरातिसार—ज्वर और अतिसार दोनों एक

साथ होना। वह ज्वर जिसमें अतिसार भी हो। (अं०) फीवर विथ डायरिया (Fever with Diarrhœa)।

(त)

तत्कालमृत्यु—(अ०) अजल आरजी, अजल इख्तिरामी। (अं०) सडेन डेथ (Sudden death)।

तन्त्वर्बुद—तन्तुमय रसौली। (अ०) सल्आलीफिय्या। (उ०) रेशादार रसौली। (अं०) फाइब्रोमा (Fibroma), फाइब्रोमेटा (Fibromata), फाइब्रॉइड ट्यूमर (Fibroid tumour)।

तन्द्रा—(१) सामान्य अर्थ—निद्रार्तता, सुस्ती, ऊँघ, आलस। (फा०) गुनूदगी। (अ०) नुआस, खुमूल। (अं०) ड्राउजीनेस (Drowsiness) स्लीपीनेस (Sleepiness)। दे० 'निद्रा'। (२) विशेष अर्थ—वैकारिक संज्ञानाश की अवस्था। यह सन्यास या तामसी निद्रा का हलका स्वरूप है और उन्हीं विकारों में मिलता है जिनमें सन्यास पैदा होता है। (अ० सं०)। इन्द्रियमोह, मनोमोह, गहरी नींद, अस्वाभाविक निद्रा। (अ०) सुबात, खुमूल। (अं०) स्टूपर (Stupor), लिथार्जी (Lethargy), ट्रान्स (Trance)।

तन्द्रिक मस्तिष्क शोथ—(अं०) एन्केफॅलायटीज लिथार्जिका (Encephalitis lethargica)।

तमक श्वास—कफाधिक श्वासरोग। (अ०) जीकुन्नफस। (हिं०, उ०) दमा। (अं०) अस्थमा (Asthama)। इसके **भेद**—संतमक और प्रतमक। दे० 'श्वास'।

तमोदर्शन—अंधेरी आना।

तमोभवानिद्रा—निद्राविशेष। च०। वा०।

तरुणास्थ्यर्बुद—कुर्री की रसौली। (अ०) सल्आ गुजरूफिय्या। (अं०) क्रॉन्ड्रोमा (Chondroma), कार्टिलेजिनस ट्यूमर (Cartilagenons Tumour)।

तामसी निद्रा—यह निद्रा न होकर मृत्युपूर्वकालीन गंभीर संज्ञानाश की स्थिति है। सु०। सन्यास। च०। (उ०) बेहोशी की नींद, गफलत की नींद। (फा०) ख्वाबे गफलत (-गिरां)। (अ०) सुबात, कूमा। (अं०) कोमा (Coma), कोमा लिथार्जी (Coma lethargy)। **भेद**—१ **मद्यज**—मद्य की

बेहोशी। (अ०) कूमा सेकारा। (अं०) अलकोहोलिक कोमा (Alcoholic Coma)। २ **मधुमेहजन्य सन्यास**—(अ०) सुबात जयाबीतुसी। (अ०) डायबेटिक कोमा (Diabetic Coma)।

तारकागत अर्बुद—(अ०) सरतानुल्कर्निय्या। (अं०) कैन्सर ऑफ कॉर्निया (Cancer of Cornea)।

तारकादाह—तारामण्डलशोथ, दृष्टियवनिकाशोथ। (अ०) वरम कर्निया (इनबिय्या)। (अं०) आइराइटीज (*Iritis*)

तारकापिधानस्थ क्षत—*तारकापिधान के क्षत। (अ०) जख्म कर्निया।*

तारकाभ्रंश—कनीनिका के फट जाने से नेत्र के अंगूरी पर्दे का च्यूंटी के सिर के बराबर बाहर निकल आना। (अ०) मोरसर्ज, सुकूतुल्कर्जहिय्यः। (अ०) प्रोलप्स्ड आयरिस (Prolapsed Iris), प्रोलॅप्स ऑफ दी आयरिस (Prolapse of the Iris), आयरिडोप्टोसिस (Iridoptosis)।

तारकीय संपूर्ण स्तंभ—तारका का संपूर्ण स्तम्भ। (अं०) ॲब्सोल्यूट आइरीडोप्लीजिआ (Absolute Iridoplegia)।

तालवैषम्य—हृदय की गति की विषमता। दे० 'हृत्तालवैषम्य'।

तालुकण्टक—(१) एक बालरोग। अ० सं०। मा० नि०। यह एक प्रकार का मुखपाक (Stomatitis) है। बालकों की दृष्टि से इसको थ्रस (Thrush) कह सकते हैं। थ्रस में मुख के क्षत सफेद हो जाते हैं। निनावा। (अ०) कुलाअ अब्यज। (२) तालुपात। दे० 'तालुपात'।

तालुगत रोग—तालु में होने वाले रोग। (अ०) अमराजुलहुनुक। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी पैलेट (Diseases of the palate)।

तालुपाक—एक तालुगत रोग जिसमें पित्त तालु में तीव्र पाक उत्पन्न करता है। सु०। (अ०) कुरूह हनक। (अं०) अल्सरेशन ऑफ दी पॅलेट (Ulceration of the palate)।

तालुपात—एक बालरोग जिसमें बालक के तालुमांस में क्रुद्ध हुआ कफ तालुकण्टक नामक रोग को कर देता है। इसमें तालु का पात (तालु का नीचे की ओर खिसक जाना—तालु की निम्नता) आदि लक्षण होते हैं। मस्तिष्क-जलक्षय। मस्तुलुंगजलक्षय। दे० 'तालुकण्टक'।

तालुपुप्पुट—एक तालुगत रोग जिसमें पीड़ारहित, स्थिर, बेर के समान, भेदयुक्त कफ से तालुप्रदेश में उत्पन्न हुआ पुप्पुट होता है। सु०। (अं०) इप्यूलिस ऑफ दी पॅलेट (Epulis of the palate)।

तालुप्रकोप—तालुशोथ। दे० 'अध्रुष'।

तालुशोष—एक तालुगत रोग जिसमें पित्तयुक्त वात के कारण अत्यंत खुश्की होती है, तालु विदीर्ण होता है और श्वास होता है। सु०।

तालुार्बुद—रक्तार्बुद लक्षणयुक्त रक्तज तालुगत शोथ, अर्बुद (सु०), तालु का कैन्सर। (अ०) सरतानुल् हुनक। (अं०) पॅलेटल कैन्सर (Palatal Cancer)।

तिमिर—नेत्रदृष्टिभागगत रोग। तृतीय पटलस्थ दोष की प्रथम अवस्था। अरागी तिमिर। दृष्टिगत द्वितीय पटल में दोष उत्पन्न होने के कारण पैदा हुआ दृष्टिमांद्य। (अं०) अमॉरोसिस (Amaurosis)।

भेद—१ वातिक, २ पैत्तिक, ३ श्लैष्मिक, ४ रक्तज, ५ सान्निपातिक और ६ परिम्लायि (संज्ञक) तिमिर (अरागी परिम्लायि रोग)।

तिमिर काच—रागी तिमिर। काच। दे० 'काच'।

तिरश्चीनजनन—असंगति या तिर्यग्गति, तिर्यक् दर्शन। सु० मूढगर्भ०। (अं०) शोल्डर या ट्रान्सवर्स प्रेजेन्टेशन (Shoulder or Transverse Presentation)।

तिर्यक् क्षिप्त—संधिमुक्त का वह भेद जिसमें संधि टेढ़ा हो गया है अर्थात् जिसमें पूर्ण विश्लेषण हुआ है। सु०। (अ०) खला कामिल। (अं०) कॉम्प्लीट डिस्लोकेशन (Complete Dislocation)।

तिर्यक् दृष्टि—तिर्छी नजर। तिर्छे देखना।

तिर्यक् भग्न—काण्डभग्न (पूर्ण भग्न) का एक भेद जिसमें हड्डी टेढ़ी होकर टूटती है। जैसे—अश्वकर्ण। (अ०) कस्र मुवर्रब, कस्र वराबी। (अं०) ऑब्लीक फ्रक्चर (Oblique fracture)।

तिलकालक—(१) एक क्षुद्र रोग जिसमें वात, पित्त और कफ के उद्रेक से त्वचा पर काले, तिलप्रमाण, पीड़ारहित और सम या अनुन्नत चिह्न होते हैं। सु०। तिल। (अ०) खाल (बहुव० खैलान), कुंजदक। (अं०) नॉन एलीव्हेटेड मोल (Non-Elevated mole)। दे० 'मषक'। (२) शुक्रदोष। सु०।

तीक्ष्णाग्नि—एक प्रकार का पाचकाग्नि जो पित्तजन्य होता है और मात्रा से अधिक सेवन किये हुए अन्न को शीघ्र पचाता है। सु०। अत्यग्नि जिसे 'भस्मक' भी कहते हैं, इसी का बढ़ा हुआ रूप है। (अ०) कसरतुल् अक्ल (अधिक खाना)। (अं०) इन्क्रीज्ड अपेटाइट (Increased appetite)।

तीव्र अपचन—तीव्र पचन विकार वा अजीर्ण। (अ०) सूए हज्म हाद्। (अं०) ॲक्यूट डिस्पेप्सिया (Acute dyspepsia), गॅस्ट्रायटीज (Gastritis)।

तीव्र गवीनी शोथ—वृक्क की मूत्र प्रणालियों (गवीनी) का तीव्र शोथ। (अ०) वरम हाद् मजारी। (अं०) ॲक्यूट ट्यूब्यूलर नेफ्रायटीज (Acute Tubular Nephritis)।

तीव्र ज्वर—तेज बोखार। (अ०) हुम्मा हाद्दा। (अं०) हाइपर पाइरेक्सिअल् फीवर (Hyperpyrexial fever)।

तीव्रमध्यकर्णशोथ-मध्यकर्ण का तीव्र शोथ। (अ०) इल्तिहाबुल् वस्तिल् उज्न हाद्। (अं०) अक्यूट ओटायटीज मीडिआ (Acute ottitis media)।

तीव्र यकृत्पीतत्व क्षय—यकृत् का दुर्बल एवं पीला होना। (अ०) हुजाल अस्फर हाद्। (अं०) ॲक्यूट येलो ॲट्रोफी ऑफ दी लिव्वर (Acute yellow atrophy of the liver)।

तीव्रशोथ—तीव्र सूजन। (अ०) वरम हाद्। (अं०) ॲक्यूट इन्फ्लमेशन (Acute Inflammation)।

तीव्र शोथजन्य ज्वर—(अ०) हुम्मा जरमिया कविय्या, हुम्मा इल्तिहाबिया कविय्या। (अं०) अस्थेनिक इन्फ्लमेटरी फीवर (Asthenic inflammatroy fever)।

तीव्र सुषुम्नावरण शोथ—सुषुम्नावरण का तीव्र शोथ। (अ०) वरम हाद् अग्शिया नुखाअ। (अं०) ॲक्यूट स्पाइनल मेनिन्जायटीज (Acute Spinal meningitis)।

तुण्ड—नासितुण्ड (सु०), सुंडा, घुग्रल। दे० 'उत्तुण्डिता'।

तुण्डिकेरी—एक तालुगत रोग जिसमें कफ और रक्त से उत्पन्न हुआ, पीड़ा, दाह और पाक करने वाला दीर्घ शोथ होता है। सु०। वाग्भटाचार्य

(अष्टाङ्गसंग्रहकार) इसका समावेश कण्ठरोग में करते हैं। यह बहुधा एन्लार्ज्ड टॉन्सिल्ज (Enlarged Tonsils) होगा। (अ०) इजमुल्लौजतैन।

तूनी—शूल रोग (Colic) का वह भेद जिसमें शूल पक्वाशय या मूत्राशय या दोनों से नीचे की ओर गुदा या उपस्थ या दोनों में चला जाता है; जैसे कि वृक्कशूल (Renal Colic) में होता है। सु०।

तृड्विघातज उदावर्त—तृषावरोधज उदावर्त। दे० 'उदावर्त'।

तृणपुष्पाख्यज्वर—निर्विष ओषधियों के पुष्प-पराग सूँघने से उत्पन्न हुआ ज्वर। प्रातिश्याय ज्वर। (अं०) हे फीवर (Hay fever)।

तृतीयकज्वर—तीसरे दिन का बोखार, तिजारी, तथ्या ज्वर, अँतरा बोखार, बारीका बोखार। (फा०) रोज अफगन। (अ०) गिब्ब दाइरा, हुम्मा मुसल्लसा, हुम्मा सलासिया। (अं०) (बेनाइन) टर्शिअन फीवर (Benign) Tertian fever)।

तृतीयक विपर्ययज्वर—दोहरा तिजारी बोखार। (अ०) गिब्ब मुजाअफ। (अं०) डबल टर्शिअन फीवर (Double Tertian fever)।

घातक तृतीयकज्वर—(अ०) अब्तरीताऊस, शत्रुलगिब्ब। (अं०) मैलिग्नन्ट टर्शिअन फीवर (Malignant Tertian fever)।

तृषा—प्यास। दे० 'तृष्णा'।

तृषावरोधज उदावर्त—प्यास का वेग रोकने से उत्पन्न हुआ उदावर्त रोग। दे० 'उदावर्त'।

तृष्णा—तर्ष, तृषा, तृट्। (हिं०) प्यास, पिपासा। (फा०) तिश्नगी। (अ०) अतश, उताश। (अं०) थर्स्ट (Thirst)। **भेद**—१ वातिक (दृढ़बल), २ पैत्तिक (दृढ़बल), ३ श्लैष्मिक, ४ क्षतज (क्षयज-दृढ़बल), ५ त्रिदोषज (सु०) वा सन्निपातज, ६ आमज (दृढ़बल), मुक्तोत्थित (मुक्तज-सु०), ८ उपसर्गज (चरक, दृढ़बल-सुश्रुतोक्त यथादोषज में अंतर्भूत), ९ मद्यज। (मदात्यय में-सु०)=वातपित्तजा।

तृष्णाधिक्य—प्यास की अधिकता, अत्यधिक प्यास लगना। (फा०) तिश्नगी शदीद। (अ०) अत्श मुफरात (मुफ्रित), शिद्दतु अत्श, अतश शदीद। (अं०) पॉलीडिप्सिआ (Polydipsia)।

तृष्णानिरोधज दाह—तृष्णा का वेग रोकनेसे उत्पन्न हुआ दाह। दे० 'दाह'।

तोद—चुभनेवाला दर्द । पूर्णनदीशम्बूकावर्तवत् उठनेवाली वेदना विशेष । यह सान्निपातिक और क्षतज असाध्य है । (अ०) वजानाखिस । (अं०) बोरिंग पेन (Boring Pain) ।

त्रयाहिक (त्रयाह्निक) ज्वर—तीन दिनका ज्वर । (अ०) हुम्मा सलासिया । (अं०) थ्रीडेज फीवर (Three-days fever) ।

त्रिकवेदना—त्रिकस्थानकी पीड़ा, कूल्हेका दर्द जो यूनानी मतसे गृध्रसीका पूर्वरूप है । (अ०) वज्उल्त्रिक, दाउल् खज्कफा, दर्दमफसिल सुरीन । (अं०) कोक्सैल्जिया (Coxalgia) ।

त्रिदोष—मिले हुए दोषत्रय (वात, पित्त और कफ) । सन्निपात ।

त्रिदोषज अर्श—सन्निपातजन्य अर्श (सु०) । जन्मोत्तरकालज (अ० सं०) अर्शका एक भेद ।

त्रिदोषज उदररोग—सन्निपातोदर (दूषीविषोत्पन्न), दूष्योदर, दूष्युदर—दूषीविषोत्पन्न (दूषीविषजन्य) उदर (भेल०) । दे० 'उदर' ।

त्रिदोषजकर्णार्बुद—सर्वात्मक कर्णार्बुद (शालाक्यतन्त्रे) । दे० 'कर्णरोग' ।

त्रिदोषज कुष्ठ—सान्निपातिक कुष्ठ, मिश्र कुष्ठ । (अं०) मिक्स्ड लेप्रसी (Mixed leprosy) ।

त्रिदोषज मुखपाक—सन्निपातज मुखपाक । शार्ङ्ग० । (अ०) कुलाअ मुःक्कब । दे० 'मुखरोग' ।

त्वक्परिपुटन—त्वचाके छिलके उतरना (निकलना) या उसमें व्रण उत्पन्न होना । (अ०) तकश्शुरुल्जिल्द ।

त्वक्पाक—शूकदोष । सु० ।

त्वक्स्फुटन—त्वग्दोष विशेष ।

त्वगङ्कुरार्बुद—स्तनाग्रोपम रसौली, भुटनी रसौली (बड़ीमें गोभीके फूलके समान उभार होते हैं) । (अ०) सल्आ हुल्मय्या । (अं०) पेपिलोमा (Papiloma) ।

त्वगधःस्थ रक्तस्राव—त्वचा के नीचे रक्त बहना । (अ०) नज्फ तहतल् जिल्द । (अं०) एक्किमोसिस (Ecchymosis) ।

त्वग्जन्य क्षय—त्वचाका क्षय रोग । (अथर्व०) । (अ०) सिल्लुल्जिल्द । (अं०) ट्यूबरक्यूलोसिस ऑफ स्किन (Tuberculosis of skin) ।

त्वग्दौर्गन्ध्य—त्वचाके क्षुद्ररोग ।

त्वग्राग—त्वचाका रक्तवर्ण हो जाना, त्वग्दाह, त्वगारक्तता, त्वचागत विसर्प । (उ०) जिल्द (त्वचा) की सुर्खी । (अ०) इह्मरार, इह्मरारुल्-जिल्द, हुम्रतुल्जिल्द, इतिफाउल्जिल्द । (अं०) इरीथीमा (Erythyma) ।

त्वग्दोष—त्वचाके विकार । त्वग्रोग ।

त्वग्रोग—त्वचागत रोग । (अ०) अम्राजुल्जिल्द । (अं०) स्किन डिजीजेज (Skin diseases) ।

त्वग्रौक्ष्य—त्वचाके क्षुद्ररोग, त्वचा की रूक्षता ।

त्वचागत विसर्प—त्वचाका रक्तवर्ण हो जाना । दे० 'त्वग्रोग' ।

(थ)

थाइमस ग्रन्थिरोग—(अ०) अम्राज गुद्दएतैसिय्या । (अं०) डिजीजेज ऑफ थाइमस ग्लैण्ड (Diseases of Thymus gland) ।

थाइमस ग्रन्थि-वृद्धि—थाइमस ग्रंथिका बढ़ जाना । (अ०) इजम गुद्दए तैमूसिया । (अं०) हाइपरट्रॉफी ऑफ दी थाइमस (Hypertrophy of theThymus) ।

थॉयरायड ग्रन्थिरोग—चुल्लिका ग्रंथिज रोग ।

(द)

दकोदर—जलोदर ।

दक्षिणवंक्षण विद्रधि—(अं०) ऍपेन्डिक्यूलर अब्सेस (Appendicular abscess)

दग्ध—अग्निकर्म या उसके सिवाय (वैद्य या रोगचिकित्साके सिवाय) अन्य प्रकारसे (आकस्मिक या इतरथा या प्रमाददग्ध) जला हुआ । भेद-१ अग्निकर्म या क्षारदग्ध और २ इतरथादग्ध (अग्निदग्ध) । अग्निदग्ध या इतरथादग्ध के भेद—१ रूक्ष और स्निग्ध । इसके यह चार प्रकार—प्लुष्ट (तुत्थ), दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध और अतिदग्ध । आतप तेजादिजनित इसके अन्य प्रकार-१ उष्णवातातप दग्ध, २ शीतवातातप दग्ध, ३ अतितेजसादग्ध (आकाशविद्युद्दग्ध) और ४ कृत्रिमविद्युद्दग्ध ।

दण्डकज्वर—एक प्रकारका ज्वर, सप्ताहक ज्वर, अस्थिमज्जन ज्वर । (हिं०) डेंगू ज्वर, लँगड़ीका बुखार, हड्डीतोड़ बुखार, लाल बुखार । (अ०) हुम्मा

शम्सिय्या, हुम्मद्‌दन्ज, दन्ज, अबुरंकब। (अं०) डंग्यूफीवर (Dangue fever), ब्रेकबोन फीवर (Breakbone fever)।

दण्डापतानक—अपतानक वातव्याधिका एक भेद जिसमें कफसंयुक्त वात शरीरको डंडेके समान स्तंभित (सीधा और सख्त) करता है। इसमें शरीर अकड़कर बिल्कुल सीधा हो जाता है। (अ०) कुजाज, कुजाज मुस्तकीम। (अं०) ऑर्थोटोनोस (Orthotonos)।

दद्रु—क्षुद्रकुष्ठका एक भेद। (हिं०) दाद, दिनाय। (अ०) कूबाऽ। (अं०) रिंगवर्म (Ringworm) (ले०) टिनिया टॉनसुरंश (Tinea Tonsurans)।

दन्तकिट्ट—दाँतोंकी मैल। (अ०) वसखुल् अस्नान। (अं०) सॉर्डीज ऑफ दी टीथ (Sordes of the teeth)।

दन्तगत रोग—दाँतके रोग, दन्तरोग। (अ०) अम्राजे दंदाँ, अमराजुल् अस्नान। **भेद**—(सुश्रुतीय) १ दालन, २ कृमिदन्तक, ३ दन्तहर्ष, ४ भञ्जनक, ५ दन्तशर्करा, ६ कपालिका, ७ श्यावदन्तक और ८ हनुमोक्ष। अष्टाङ्गसंग्रह में ये अधिक हैं—९ कराल, १० चाल और ११ दन्तभेद।

दन्तघात—शाङ्र्गधरके अनुसार बालरोगका एक भेद। इसमें दांत टूट जाते हैं। इसे 'भञ्जनक' (मा० नि० मु० रोग) भी माना जाता है (दे० 'भञ्जनक')। शाङ्र्गधर के अनुसार इसके आवस्थिक और आगन्तुज यह दो भेद होते हैं। (हिं०) दाँत गिरना। (अ०) सकूत अस्नान।

दन्तनाड़ी—दन्तमूलगतरोग। मसूड़ोंका नासूर। मसूढ़ोंके बहुत पुराने पीबदार जख्म (कुरूह)। दाँतोंकी जड़में वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और शल्यज ये पांच प्रकार की नाड़ियाँ (पञ्चनाड़ियाँ) होती हैं। (अ०) नासूर लिस्सा, तकय्युह अवारी। (अं०) सायनस इन् दी गम्स (Sinus in the gums), रिग्स डिजीज (Rigg's disease)।

दन्तपुप्पुटक—कफरक्तज दन्तमूलगतरोग। सु०। यह दन्तविद्रधिसे छोटा और परिमित होता है और बहुधा मसूड़े को छेद करके फूटता है। (अ०) दुम्मल लिस्सा। (अं०) गम बॉइल (Gum boil)।

दन्तभेद—दन्तगत रोगका एक भेद—"दन्तभेदे द्विजास्तोदभेदरुक्स्फुटनान्वित:" (अ० सं०)। (अ०) शक्कुल् अस्नान।

दन्तमूलगतरोग—दन्तवेष्टगत (मसूढ़ों) के रोग। (अ०) अमराज लिस्सा। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी गम्स (Diseases of the Gums)।

भेद—(सुश्रुतीय) १ शीताद, २ दन्तपुप्पुटक, ३ दन्तवेष्टक, ४ शोषिर, ५ महाशोषिर, ६ परिदर, ७ उपकुश, ८ दन्तवैदर्भ, ९ वर्धन, १० अधिमांस, ११-१५ तथा पाँच नाड़ियाँ (दन्तनाडियाँ) मिलकर पन्द्रह होते हैं। वाग्भट (अष्टाङ्गसंग्रह) में इनमें से 'दन्तवेष्टक' और 'परिदर' वर्णन नहीं किये हैं। 'वर्धन' दन्तरोगों में दिया है। 'दन्तविद्रधि' अधिक है। 'कराल' माधव ने अधिक वर्णन किया है। अष्टाङ्गसंग्रह में इसका उल्लेख दन्तरोगों में किया है।

दन्तवेष्ट—एक दन्तमूलगतरोग जिसमें दाँत पीव और खून स्रवते हैं तथा हिलनेवाले होते हैं। यह दुष्ट रक्तजन्य होता है। सु०। वाग्भट में इसका उल्लेख नहीं मिलता। (हि०) मसूढ़ों से पीप आना, मसूढ़ों के पुराने पोपदार जख्म। (अ०) कुरूहुल्लिस्सा, तकय्युहुल्लिस्सा। (अं०) पायोरिआ ऍल्विओलॅरिस (Pyorrhoea Alveolaris), सप्यूरेटिङ्ग जिन्जिवाइटिस (Suppurative Gingivitis)।

दन्तविद्रधि—अष्टाङ्गसंग्रहोक्त दन्तमूलगत रोग। दन्तपुप्पुटकी अपेक्षा यह अधिक गहराई तक फैलता है और कभी-कभी हनुका नाश (Necrosis of the jaw) भी करता है। प्रायः इसलिए यह त्रिदोषज माना गया है। सुश्रुतमें इसका उल्लेख नहीं है। (अं०) एल्विओलर एब्सेस (Alveolar Abscess)।

दन्तवेष्टप्रकोप—मसूढ़ों की सूजन। (अ०) वरमुल्लिस्सा। (अं०) जिंजिवाइटिस (Gingivitis)। **वक्तव्य**—यूनानी वैद्यकमें इसके रक्तज (दमवी), पित्तज (सफरावी) और कफज (बलगमी) यह तीन भेद होते हैं।

दन्तवैदर्भ—एक दन्तमूलगत रोग जिसमें दाँतों की जड़ोंमें रगड़नेसे शोथ और लाली उत्पन्न होती है तथा दाँत हिलने लगते हैं। यह अभिघातजन्य होता है। सु०।

दन्तशब्द—शार्ङ्गधरोक्त बालरोग विशेष, दाँत कड़कड़ाना, नींद या सोते में दाँत पीसना या दाँत चबाना। (अ०) सरीरुल् (जर्मुल्) अस्नान फिन्नोम। (अं०) ओडोन्टोप्रायसिस (Odontoprisis), ग्राइंडिंग आफ टीथ (Grinding of Teeth)।

दन्तशर्करा—दाँतमें शर्करा (पथरी) के समान मल स्थिर होना, दाँतों की

मैल। सु०। (अ०) हफ्र, कलह, तिरतीरुल् अस्नान। (अं०) टार्टर (Tartar)।

दन्तशूल—दाँत का दर्द, दालन (सु०), शीतदन्त, शीताख्य (अ० स०)। (अ०) अलमुस्सिन, अलमुल् अस्नान, वजउल् अस्नान, वजउस्सिन। (फा०) दर्दे दंदाँ। (अं०) टूथ एक (Tooth ache), ओडंटोडायनिया (Odontodynia), ओडोंटएल्जिया (Odontalgia)।

दन्तहर्ष—एक दन्तरोग जिसमें रोगी के दाँत शीतल, गरम तथा स्पर्श सहन नहीं कर सकते। यह व्याधि वातजन्य (माधव के अनुसार पित्त और वात के प्रकोप से) होती है। सु०। दाँत कुंद या खट्टे हो जाना, दाँत कोट होना। (अ०) जरसुल्अस्नान, जहाबोमाएल्अस्नान। (अं०) ओडंटोट्रिप्सिस (Odontotrlpsis) इरिटेशन इन् टीथ (Irritation in teeth)। कोई-कोई इसको ओडन्टायटीज (Odontitis) लिखते हैं। ओडंटायटीज को अरबी में 'इल्तिहाबुल्अस्नान' या 'वरम दंदाँ' कहते हैं।

दन्तार्बुद—दाँत का अर्बुद, अधिदन्त (सु०)। (अं०) ओडोन्टोमा (Odontoma)।

दन्तोद्भेद—बालरोग विशेष। दाँत निकलना, दन्तोद्भेदन। (अ०) नबात इस्नान, तस्नीन। (अं०) डेन्टिशन (Dentition), टीदिंग (Teething)।

दर्भकुसुम—आभ्यन्तर कृमि भेद। दे० 'क्रिमि'।

दर्शननाश—दृष्टि का न्यूनाधिक नाश।

दारुणक—सुश्रुत के मत से एक क्षुद्ररोग। अष्टाङ्गसंग्रहकार के मत से एक शिरोरोग। उभय संहिताओं में दिये हुए लक्षणों का विचार करने से यह मालूम होता है कि दारुणक सिबोरिया केपिटिस (Seborrhœa capitis) या पिटिरिआसिस केपिटिस (Pityriasis capitis) होगा। अरबी में इसे 'सिब्रिया', 'अ (इ) ब्रिय्या', 'हिबरिया', 'ह (हु) जाज (भूसी उतरना)', 'कश्रर्रास' या 'बफा' (सिर से भूसी छिड़ना) कहते हैं।

दालन—दंतशूल। सु०। दे० 'दन्तशूल'।

दाह—(१) गरमी, तपिश, हरारत। (अं०) हीट (Heat)। (२) रोग विशेष। जलन। (फा०) सोजिश। (अ०) हुर्क़त, हराकत। (अं०) इरिटेशन (Irritation)। **भेद**—१ मद्यज, २ रक्तज, ३ पित्तज,

४ तृष्णा निरोधज, ५ शस्त्रप्रहारप्रस्तुत रक्तपूर्ण कोष्ठज, ६ धातुक्षयज और ७ मर्माभिघातज। मा० नि०।

दिनज्वर—दिन का बुखार। (अ०) हुम्मा नहारिय्या।

दिवान्ध्य—नेत्रदृष्टिभागगत रोग। पित्तविदग्ध दृष्टि की एक अवस्था विशेष। दिन के प्रकाश में सुझाई न देना। दिनौंधी। नक्तान्ध का उलटा। (फा०) रोजकोरी। (अ०) जहर। (अं०) डे ब्लाइंडनेस (Day blindness), हेमीरल ओपिआ (Hemeralopia), डैजल (Dazzle)।

दीप्त—नासागत रोग, नासादाह, नाक की सूजन। (अ०) इल्तिहाबुल् अन्फ (हाद्द), वरम अन्फ। (अं०) ॲक्यूट र्‌हीनायटीज (Acute Rhinitis)।

दुःखवर्धन—कर्णपालीगत रोगविशेष। गल्लिर (अ० हू०)। दे० 'उन्मन्थक'।

दुःस्वास्थ्य—विप्रकृति। (अ०) सूए मिजाज, सूए मिजाज मुस्तवी। (अं०) ककेक्शिया (Cachexia)।

भेद—१ विषमज्वरजन्य—(अ०) सूए मिजाज अजामी। (अं०) मलेरियल ककेक्सिआ (Malarial cachexia)। २ राजयक्ष्माजन्य—(अ०) सूए मिजाज सिल्ली (दरनी)। (अं०) ट्यूबर-क्यूलर ककेक्शिया (Tubercular cachexia)।

दुग्धजन्य ज्वर—दूध का बुखार, स्तन्य ज्वर। (अ०) हुम्मा लब्निय्या, हुम्मल्लब्न। (अं०) मिल्क फीवर (Milk fever)।

दुग्धावरोध—(अ०) एह्‌तिबासुल्लब्न। (अं०) रिटेंशन ऑफ मिल्क (Retention of Milk)।

दुर्गन्ध ज्वर—(अ०) हुम्मा अफूनिया (अफिना), हुम्माउ फूनिया। (अं०) प्यूट्रिड् फीवर (Putrid fever), सेप्टिक फीवर (Septic fever)।

दुर्गन्धित स्वेद—दुर्गन्धयुक्त पसीना आना, बदबूदार पसीना, दुर्गन्ध-स्वेदता, स्वेददौर्गन्ध्य। (अ०) अरक मुत्अफ्फन, अरकुत्तअफ्फुन अरकमुत्-अफ्फन। (अं०) ब्रोमिड्रोसिस (Bromidrosis)।

दुर्नाम—अर्श।

दुष्ट कर्णार्बुद—(अ०) वरम अरीकी खबीस। (अं०) हॉजकिन्स डीजीज (Hodgkin's disease), मॅलिग्नन्ट ग्रान्यूलोमा (Malignant granuloma)।

दुष्ट पाण्डु—घातक पाण्डुरोग; मुस। (अ०) फक्रुद्दम मुह्लिक या खबीस, फक्रुद्दम एडीसोनिबाई। (अं०) पर्निशस अनीमिया (Pernicious anæmia), एडीसोनियन अनीमिया (Addisonian anæemia)। दे० 'पाण्डु'।

दुष्ट प्रतिश्याय—(१) सन्निपातज प्रतिश्याय, पीनस। (२) एनफ्ल्यूएंजा। (Influenza)।

दुष्ट व्रण—(अ०) कर्हा खबीस। (अं०) ल्यूपिया (Lupia), ल्यूपॉइड (Lupoid) अल्सर (Ulcer)।

दुष्टस्तन्यजन्य बालरोग—दोषदूषित स्तन्यपानजनित बालरोग।

दूरदृष्टि—नेत्रदृष्टिगत रोग विशेष। समीपवर्ती पदार्थ न दीखना। (अ०) तूलुल्बसर्, बईदनजरी। (अं०) हाइपरमैट्रोपिया (Hypermatropia)।

दूषित ज्वर—दे० 'दुर्गन्धज्वर'।

दूषीविषोत्पन्न सन्निपातोदर—दूष्युदर, सन्निपातोदर। सु०। चरक और वाग्भट में दोनों (दूषीविषोत्पन्न उदर और सन्निपातोदर) का मेल एक में ही किया है। (अ० सं०)। भेल में दो सन्निपातोदर पृथक् किये हैं।

दूषीविषोत्पन्न उदर—दूष्योदर (भेलसंहिता में सान्निपातिक उदर से भिन्नस्वतंत्र उल्लेख किया है)।

दूष्युदर, दूष्योदर—दूषीविषजन्य उदर। सन्निपातोदर। सु०।

दृष्टिकार्श्य, दृष्टिकृशता—(१) आँखों का शीघ्र थक जाना, दृष्टि की कमजोरी, दृष्टिदौर्बल्य। (अ०) जोफ बीनाई (बसर), अमश, जोफुल्बसर, जोफ बसारत, कुम्ना। (अं०) अस्थीनोपीया (Asthenopia)। (२) आँख से हमेशा आँसू बहना। नेत्रस्राव।

दृष्टिदौर्बल्य—दे० 'दृष्टिकार्श्य'।

दृष्टिनाश—दृष्टि वा दर्शनशक्ति (लिङ्ग) का नाश, आँख से दिखाई न देना, आंध्य (तिमिर), दर्शननाश (दृष्टिमांद्य)। (अ०) अदमुल्बसर, फकदुन्नजर, बुत्लान बसर, फकदुल्बसर, जहाब बसर, कुम्ना। (अं०) ॲब्लेप्सिया (Ablepsia), अमॉरोसिस (Amaurosis), गुल्लासेरीन (Gulla serena)।

दृष्टिमांद्य—दृष्टि की कमी (मन्दता)। दर्शननाश। दे० 'दृष्टिनाश'।

दृष्टियवनिकाशोथ—तारकादाह। (अं०) आइराइटिस (Iritis)। दे० 'तारकादाह'।

दैवकृता बन्ध्या—बन्ध्यारोग का एक भेद।

दैवबलप्रवृत्त—दैविक शक्ति के कारण उत्पन्न हुए रोग। देव, गुरु, विप्र इत्यादि का अभिद्रोह (अवमानना) करने के कारण उनके अभिशाप से उत्पन्न हुए, अथर्ववेद के अभिचारक (मारणात्मक) मन्त्रों का प्रयोग करने से उत्पन्न हुए और उपसर्गज (धूमकेतु, सतत उल्कापात, ग्रहनक्षत्रवैकृत इत्यादि अशुभ-सूचक आन्तरिक्ष तथा दिव्य औत्पातिक दर्शन (उपसर्ग) के समय उत्पन्न हुए) जो रोग हैं वे दैवबलप्रवृत्त कहलाते हैं। सु०। आधुनिक परिभाषा के अनुसार इसमें जीवाणुजन्य रोगों का समावेश होता है। जीवाणुजन्य रोगों को पॅरासिटिक (Parasitic) कहते हैं। वे भी दो प्रकार के हैं-विद्युत् और उल्कापात से हुए तथा पिशाचादिसे हुए। फिर भी दो प्रकारके होते हैं-संसर्गज और आकस्मिक।

दोषबल प्रवृत्त—वातादि शरीर दोषों के कारण तथा रज और तम इन मानसिक दोषों के कारण उत्पन्न हुए विकार। च०। (अं०) केमिकल (Chemical)।

दौर्गन्ध्य—दुष्टि। (अ०) उफूनत। (अं०) सेप्सिस (Sepsis)।

दौर्बल्य—(१) बालरोग विशेष। शार्ङ्ग०। (२) कमजोरी।

दौर्बल्यजनक ज्वर—दुर्बलताकारक बुखार। (अ०) हुम्मा जोफिय्या। (अं०) अस्थेनिक फीवर (Asthenic fever), एडायनेमिक फीवर (Adynamic fever)।

दौहृदापचारकृता—वह व्याधियाँ जो गर्भ के भीतरी जीवन का असर होने से माता के मन में जो विविध कामनाएँ और श्रद्धाएँ उत्पन्न होती हैं, उनका विघात होने से उत्पन्न होती हैं। अर्थात् दौहृदापचार में श्रद्धाविघात तथा अन्य प्रकार के मानसिक आघात के कारण उत्पन्न होने वाली सब व्याधियाँ समाविष्ट होती हैं।

द्रवगर्भवृद्धि—वह वृद्धि जिसके भीतर जल भरा हो। जलपूर्णवृद्धि।

द्रवगर्भ शोथ—वह शोथ जिसके भीतर जल हो।

द्वन्द्वज चतुर्थक ज्वर—दोहरा चौथिया बोखार। (अ०) हुम्मा रिबा मुज्दोजा। (अं०) डुप्लिकेटेड क्वार्टन फीवर (Duplicated quartan fever)।

द्वन्द्वज शारीर (या दोषज) व्रण—व्रण भेद। इडिओपैथिक अल्सर (Idiopathic ulcer)। दे० 'व्रण'।

द्वादशाङ्गुलान्त्रशोथ—पक्वाशयशोथ। (अ०) इल्तिहाब इसना-अशरी, वरम इसना अशरी। (अं०) ड्यूडेनायटीज (Duodenitis)।

द्वितीयक पाण्डु—रक्त की कमी। (अ०) फक्रुद्दम (किल्लतुद्दम) सानवी। (अं०) सेकंडरी अनीमिया (Secondary anæmia)।

द्विधादर्शन—एक का दो दीखना, प्रतिमा का दोहरा दर्शन। (अ०) अज्दवाजुल्बसर, बसर सनाई। (अं०) डिप्लोपिया (Diplopia)।

द्विधादृष्टि—एक-एक पदार्थ को दो-दो दीखना। आँख के ढेले का फिर जाना। भैंगापन। (अ०) हबल। (अं०) स्क्विंट (Squint), स्ट्राबिस्मस (Strabismus)।

द्विधाभूत या विदीर्ण भग्न—माधवनिदानोक्त भग्न के भेद। सुश्रुत में इसे 'पाटित' या 'स्फुटित' कहते हैं। दे० 'पाटित' या 'स्फुटित'।

द्विपत्रक-द्वार-संकोच (हृदय)—(अ०) जीक ताजी। (अं०) माइट्रल स्टिनोसिस (Mitral stenosis)।

द्विमुखी भगन्दर—पाश्चात्य शल्यशास्त्रोक्त भगन्दर का एक भेद जिसका एक मुख मलाशय के भीतर और दूसरा गुदोष्ठ के पास बाहर होता है।

द्विरर्बुद—एक समय में या आगे-पीछे दो उत्पन्न हुए अर्बुद। (अं०) सेकंडरी डिपॉजिट्स (Secondary deposits)।

द्विरेत—समांश में उपतप्त शुक्रशोणित के कारण होने वाला (द्विरेत नामक) क्लीब जो स्त्रीपुंसलिङ्गी होता है। च०। दे० 'नपुंसक (३)'।

द्विलिङ्गी—एक प्रकार का क्लीब जो स्त्री और पुरुष दोनों की ओर आकर्षित होता है। इसलिये द्विलिङ्गी (Bisexual) कहलाता है। स्त्रीपुंसलिङ्गी। दे० 'नपुंसक (३)'।

द्विविभक्त दृष्टि—एक ही वस्तु को दो हिस्सों में विभक्त देखना। एक को दो दीखना। दे० ('द्विधादर्शन')।

(ध)

धनुर्वात, धनुस्तम्भ—वह अपतानक जो शरीर को धनुष की भाँति टेढ़ा करता है। सु०। जब एक भाग की पेशियों का तनाव दूसरे भाग की

पेशियों के तनाव से बलवत्तर होता है तब शरीर धनुष की भाँति टेढ़ा होता है। इसलिए इसको 'धनुर्वात' या 'धनुस्तम्भ' कहते हैं। दे० 'अपतानक'।

धमनिज ग्रन्थि—शिरयानी रसौली। दे० 'धमनी ग्रंथि'।

धमनिसिराज ग्रंथि—(अं०) आर्टीरिओ-वेनस सिस्ट (Arterio-Venous cyst)।

धमनीकाठिन्य—धमनी की दीवारों का कठिन हो जाना, धमनीदार्ढ्य। (अ०) तसल्लुब शराईन। (अं०) आर्टीरियो स्कलीरोसिस (Arterio-Sclerosis)।

धमनी ग्रन्थि—धमनी की दीवालों का फैलकर थैली बन जाना (थैली की तरह हो जाना)। धमनि(ज)ग्रंथि, धमनीविस्फार। (अं०) आर्टीरियल् सिस्ट (Arterial cyst)। दे० 'सिराज ग्रन्थि'।

धमनी प्रफुल्लनम्—दे० 'धमनी ग्रन्थि'।

धमनी प्राचीर रोग—वह वरम (सूजन) या रसौली जिसके अन्दर सरेश (हुलाम) जैसा पदार्थ हो। (अ०) सल्आ हुलामिया, वरम हुलामी। (अं०) अॅथीरोमा (Atheroma)।

धमनी विकार—धमनी की रचना का विकृत हो जाना। (अ०) फसाद तरकीब शिरयानी। (अं०) आर्टीरिअल डीजेनरेशन (Arterial degeneration)।

धमन्यर्बुद—रक्तार्बुद। (उ०) दमवी रसौली। (अं०) अन्यूरिस (Aneuris)।

धूमदर्शिन—पैत्तिक एवं साध्य नेत्रदृष्टिगत रोग भेद, धुंधला दिखाई देने का रोग, धूम्रदर्शी। इसका रोगी सभी पदार्थों को धूम्रयुक्त (धुएँ के समान) देखता है।

धूम्रोद्गार—उद्गार भेद। धुऐनी, धुयेंदार डकार। (अ०) जुशाऽ दुखानी।

ध्वजभङ्गकृत क्लैब्य—एक प्रकार का मैथुनजन्य व्याधि। च०। उपदंश। सु०। दे० 'उपदंश'।

(न)

नकुलान्ध्य—नेत्रदृष्टिगत रोग का एक भेद, जिसमें रोगी दिन में विचित्र (सर्वदोषवर्ण) रूपों को देखता है। यह असाध्य है। नकुलान्धता।

नक्तान्ध्य—यह श्लेष्मविदग्ध दृष्टि (श्वेतदर्शन) की एक अवस्था विशेष है। नक्तान्ध। (हिं०) रात में दिखाई न देना, रतौंधी। (फा०) शबकोरी। (अ०) अशा, अशवा, अमी लैली। (अं०) नाइट ब्लाइण्डनेस (Night blindness), निक्टालोपिया (Nyctalopia)।

नखक्षय—नाखून का पतला पड़ जाना। (अ०) हुजालुल् अज्फार। (अं०) ओनिक-अट्रोफी (Onych-atrophy)।

नखपाक—दे० 'नखशोथ'।

नखभेद—(अ०) शक्कुल् अज्फार। (अं०) ओनिकिया (Onychia)।

नखरोग—नाखून के रोग। (अ०) अम्राज जुफ्र। (फा०) मर्ज नाखून। (अं०) ओनिकोपैथी (Onychopathy), ओनिकोनोसस (Onychonosus)।

नखरोग विशेष—नाखून का अभ्रक के समान सफेद और चमकदार होना। (अ०) जुफरा तलकिय्या। (अं०) ओनिकोमायकोसिस (Onycho-mycosis)।

नखशोथ—नाखून की सूजन। (फा०) सोजिश नाखून। (अ०) इल्तिहाबुज्जुफर। (अं०) ओनिकायटीज (Onychitis)। दे० 'उपनख'।

नखस्थौल्य—नाखून का मोटा हो जाना। (अ०) गिल्जुलअज्फार। (अं०) ओनिकॉक्सिस (Onychauxis)।

नपुंसक—(१) क्लीब। दे० 'क्लीब (१)'। (२) वह पुरुष जिसके, वृषण बचपन में निकाल देने के कारण, जिसका पुरुषत्व नष्ट हो गया होता है। हिजड़ा। (अ०) खोजा, ख्वाजा, ख्वाजासरा। (अं०) इयूनख (Eunuch) कॅस्ट्रेट (Castrate)। **वक्तव्य**—इन दोनों प्रकारों में पुरुषत्व की कमी होती है, परंतु उसमें स्त्रीत्व का अंश नहीं होता है। (३) जिसमें दोनों के चिह्न मिलते हैं, ऐसे व्यक्ति। जिसमें दोनों के व्यामिश्र लक्षण हों, ऐसे (व्यामिश्र-लिङ्गी) व्यक्ति। संक्षेप में स्त्री और पुरुष दोनों के लक्षण उपस्थित होने से जिसको न पुरुष न स्त्री (न पुमान् न स्त्री) कह सकते हैं, ऐसा व्यक्ति, यह नपुंसक का अर्थ है। द्विलिङ्गी, द्विरेत (ता), स्त्रीपुंसलिंगी (च०)। (अ०) मुखन्नस। (अं०) हर्माफ्रोडाइट (Hermaphrodite)।

नपुंसकत्व—मैथुनका असामर्थ्य, नपुंसकता, क्लीबता। दे० 'क्लैब्य(१)'।

नरचेष्टिता—पुरुषकी तरह चेष्टा करनेवाली स्त्री। नारीषण्ढ। दे० 'क्लैब्य'।

नरषण्ड—गर्भविकारजन्य पुरुष भेद। मन्द तथा अल्पबीज और अल्पबल एवं अहर्ष दोनों विकार से होने वाला क्लीब। च० शा० २ अ०। वह पुरुष जो (अपनी) स्त्री में ऋतुकाल में मोहवश स्त्री की तरह प्रवृत्त होता है तब स्त्री के समान हावभाव करने वाला (स्त्रीचेष्टिता) और आकार का षण्ड नामक (पुत्र) उत्पन्न होता है। षण्ड, षण्डक। सु०। पुंनपुंसक। षण्ढ। जनाना।

नवजात अपतानक—बच्चों का अपतानक, जमुआ, जमूगा। (अ०) कुनाज अत्फाल, कुजाज सिबयानी। (अं०) टेटॅनस निओनटोरम् (Tetanus neonatorum)।

नवजात कामला—बाल कामला (काश्यप)। (अ०) यरकान मौलूदी, यरकानुल् अत्फाल। (अं०) जॉन्डिस ऑफ दी न्यू बॉर्न (Jaundice of the new-born), इक्टेरस निओनटोरम् (Icterus neonatorum)।

नवजात नेत्राभिष्यंद—बालनेत्राभिष्यंद। (अ०) रमद सिब्यानी, रमद खिलकी। (उ०) पैदायशी आशोवचश्म। (अं०) ऑफ्थल्मिआ निओनटोरम् (Ophthalmia neonatorum)।

नवजात श्वासावरोध—(अ०) इख्तिनाक सिब्यानी। (अं०) अस्फिक्सिया निओनटोरम् (Asphyxia neonatorum)।

भेद—१ श्वेत—(अं०) अस्फिक्सिया पॅलिडा (Asphyxia pallida) और २ नील—(अं०) अ० लिविडा (A. livida)।

नवजात सन्यास—नवजात शिशु का सन्यास। (अ०) सकता मौलूदिय्या। (अं०) निओनिटल अॅपोप्लेक्सी (Neonital apoplexy)।

नवनवा—मस्तिष्कार्बुद। अथर्व०। (अं०) ब्रेन ट्यूमर (Brain tumour)।

नष्टचेतन—मुर्दा (सा)।

नष्टार्तवा—(अजननी, शुष्का) बन्ध्यायोनि। सु०। अरजस्का (च०)। लोहितक्षया (वा०), शार्ङ्ग०। (Amenorrhœa) दे० 'योनिव्यापत्'।

नागविषजन्य घात—दे० ('घात')।

नागहेतुज घात—दे० 'घात'।

नागाविष्ट (नागावेष्टज) उन्माद—उन्माद रोग का एक भेद। नागजुष्ट उन्माद। दे० 'उन्माद'।

नागोदर—उपशुष्कक गर्भ (गर्भ का शुष्क होना) । (अं०) कार्निअस मोल (Carneous mole) ।

नाडी—नलिका की तरह पूय का लंबा मार्ग, गति, नाडीव्रण । (हिं०, उ०) नासूर । (अ०) नासूर (बहु० नवासीर) । (अं०) सायनस (Sinus), फिस्च्युला (Fistula) । **तात्पर्य**—पाश्चात्य परिभाषा दोनों (सायनस और फिस्च्युला) में भी कुछ भेद करती है । जिस नाडी का एक मुख बाह्य त्वचा पर खुलता है और दूसरा मुख पाकस्थान से संबंध रखता है, वह नाडी 'सायनस' कहलाती है । दो पाकस्थानों को मिलाने वाली नाडी को भी 'सायनस' ही कहते हैं । दो आशयों को या आशय और बाह्य त्वचा को मिलाने वाली सहज या जन्मोत्तर (Congenital or acquired) नाडी को 'फिस्च्युला' कहते हैं । जैसे—अनदर (Fistula in-ano), बस्तियोनिनाडी (Vesico-vaginal Fistula), बस्ति-मलाशय नाडी (Recto-vesical Fistula), इत्यादि । फिस्च्युला को अरबी में 'नासूरनाफिज' और 'मजरा' कहते हैं । **भेद**—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, त्रिदोषज (सन्निपातज), शल्यज (शल्यनाडी), ६-८ द्वंद्वज (संसर्गजन्य)-वातकफज, वातपित्तज, पित्तकफज ।

नाडीकुष्ठ—महाकुष्ठभेद । आयुर्वेद में इसे वातिक कुष्ठ कहते हैं । (अं०) नर्व्हलेप्रसी (Nerveleprosy) ।

नाडीदौर्बल्य—गदोद्वेग । (उ०) असबी कमजोरी, वहम । (अ०) जोफ असबी (आसाब), जवाल कुव्वत असबानी । (अं०) न्यूरस्थीनिया (Neurasthenia) ।

नाडीशोथ—वातनाडीशोथ । (फा०) सोजिश आसाब । (अ०) इल्तिहाबुल् असब, वरम असबी । (अं०) न्युराइटीज (Neuritis) ।

भेद—**१ नाडीशोथ**—(अ०) इल्तिहाबुल् असब मुकामी या महदूद । (अं०) लोकलाइज्ड न्यूरायटीज (Localised neuritis) । **२ बहुनाडीशोथ**—(अ०) इल्तिहाबुल्असब आम (मुतअदद) । (अं०) मल्टिपल न्यूरायटीज (Multiple neuritis) । इत्यादि ।

नाड्यर्बुद—नाडी की रसौली । (उ०) असबी रसौली । (अ०) सलअ असबिय्या । (अं०) न्यूरोमा (Neuroma) ।

नाभिगत आन्त्रवृद्धि—नाभितुण्डि । दे० 'उत्तुण्डिता' ।

नाभिगत रक्तस्राव—(अ०) नजीफ सुर्रा । (अ०) ओम्फॅलोरेजिया (Omphalorrhagia) ।

नाभिगत स्राव—(अं०) ओम्फॅलोरिया (Omphalorrhœa) ।

नाभितुण्डि—तुण्डि (सं०) । आयामव्यायामोत्तुण्डिका (च०), तुण्डी, सुंडल, घुग्रल । दे० 'उत्तुण्डिता' ।

नाभिपाक—बालरोग विशेष, नाभिशोथ । च०, अ० सं० । (फा०) सोजिश नाफ । (अ०) इल्तिहाबुस्सुर्रा । (अं०) ओम्फलायटीज (Omphalitis) ।

नाभिवस्त्युदर शूल—मिथ्यावी । (अ०) खवालिफ काजिब । (अं०) फाल्स आफ्टर पेन्स (False after pains) ।

नाभिविद्रधि—(अं०) लोकलाइज्ड पेरिटोनायटीज इन दी अम्बाइलिकल रीजन्स (Localised peritonitis in the umbilical regions) ।

नाभ्यर्श—नाभिगत अर्श ।

नारीषण्ड—यदि स्त्री ऋतु समय में (मोहवश) पुरुष की तरह प्रवृत्त हो, तो यदि कन्या उत्पन्न होगी तो वह पुरुष के समान चेष्टा करने वाली (नरचेष्टिता) होगी । सु० । च० । स्त्री नपुंसक । (अं०) फीमेल होमोसेक्सुअल (Female homosexual) ।

नालदर्शन, नालभ्रंश—(अं) प्रोलैप्स ऑफ दी फ्यूनिस (Prolapse of the Funis) ।

नासाकण्डू—नाक की खुजली । (अ०) हिक्कतुल् अन्फ ।

नासाकृमि—नाक के कीड़े । (फा०) किर्मबीनी । (अ०) दोदानुल् अन्फ । (अं०) वर्मीज नेजाइ (Vermes Nasi) ।

नासागत अर्बुद—नाक की रसौली ।

नासागत कैन्सर—नाक के भीतर होने वाला कैंसर । (अ०) सरतानुल् अन्फ । (अं०) कैन्सर नेजाइ (Cancer Nasi), कैन्सर ऑफ दी नोज (Cancer of the Nose) ।

नासागत पिडका—नाक की फुंसियाँ और जख्म । (अ०) बुसूर (कुरूह) अन्फ । (अं०) पस्च्यूल इन् दी नोज (Pustule in the Nose), अल्सर ऑफ दी नोज (Ulcer of the nose), फ्यूरंक्यूलोसिस (Furunculosis) ।

नासागत रक्तपित्त—एक प्रकार का नासारोग। शोणितपित्त, नकसीर फूटना, नाक से खून आना। (अ०) रुआफ, नजीफुल् अन्फ। (अं०) एपिस-टॅक्सिस (Epistaxis)।

नासागत शल्य—नाक में कुछ अटक जाना। (अ०) एह्तिबासुश्शै-फिल्अन्फ। (अं०) फॉरेन बॉडी इन दी नोज (Foreign body in the nose)।

नासादाह—नासारोग भेद। दे० 'दीस'।

नासानाह—नासाप्रतिनाह। (अ०) सुद्दतुल् अन्फ। (अं०) नेजल ऑब्सट्रक्शन (Nasal obstruction)।

नासापरिस्राव—नासारोग भेद। नासास्राव। (अ०) सैलानुल् अन्फ। (अं०) रिनोरिआ (Rhinorhœa)।

नासापाक—नासारोग विशेष। नाक का जख्म। (अ०) कुरुहुल् अन्फ। (अ०) अल्सरेशन ऑफ दी नोज (Ulceration of the nose), सप्यूरेटिव्ह रिहनायटीज (Suppurative Rhinitis)।

नासाप्रति(ती)नाह—दे० 'नासानाह'।

नासारोग—नाक के रोग। (अ०) अमराजुल्अन्फ। (फा०) अमराज बीनी। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी नोज (Diseases of the nose)।

नासार्बुद—नाक की रसौली। नासागत अर्बुद।

नासार्श—नासागत अर्श, नाक की बवासीर। (अ०) बवासीरुल् अन्फ। (अं०) पॉलिपस नेजाइ (Polypus nasi)।

नासाशोथ—नाक की सूजन। (अ०) वरमुल् अन्फ। (अं०) राइनाइटिस (Rhinitis)।

नासाशोष—नासा परिशोष। (अ०) जफाफुल् अन्फ। (अं०) ड्रायनेस ऑफ नोज (Dryness of nose)।

निकटदृष्टि—नेत्रदृष्टिगत रोग का एक भेद जिसमें दूरवर्ती पदार्थ नहीं दीखता। दूरादर्शन, दूरान्ध्य, दूरदर्शनासामर्थ्य। (उ०) करीब नजरी। (फा०) कोताहनजरी। (अ०) कस्रुल् बसर। (अं०) मायोपिया (Myopia)।

निज अपतानक—अभिघातके बिना उत्पन्न हुआ अपतानक। अनभिघातज अपतानक, दोषज अपतानक। (अ०) कुजाज जाती (मर्जी)। (अं०) इडिओपॅथिक टेटनस (Idiopathic tetenus)।

निजरोग—शारीरिक रोग विशेष। अन्नपानादि से वात, पित्त, कफ और रक्त इनमें से एक या अनेक की विषमता होने के कारण यह रोग होते हैं। (अ०) मर्ज असली या जाती। (अं०) प्राइमरी डिजीज (Primary disease), इडिओपॅथिक डिजीज (Idiopathic disease), प्रोटोपॅथिक डिजीज (Protopathic disease)।

निद्रा—शरीर का एक स्वाभाविक धर्म। नींद। (फा०) ख्वाब। (अ०) नोम। (अं०) स्लीप (Sleep)। **भेद**—१ अधूरी या कच्ची नींद। दे० 'अरतिमान स्वप्न'। २ पूर्ण निद्रा। ३ वैकारिकी निद्रा। दे० 'अनिद्रा'। ४ वैकारिक प्रजागरण। ५ वैकारिकी निद्रा—प्रजागरण निद्रा विकार। ६ तन्द्रा। ७ तामसी निद्रा।

निद्रातियोग—निद्राधिक्य। दे० 'अतिनिद्रा'।

निद्रानाश—निद्रा का नाश। दे० 'अनिद्रा'।

निद्राभंग—नींद टूट जाना।

निद्राभिघातज उदावर्त—निद्रा के अभिघात से उत्पन्न हुआ उदावर्त-रोग। दे० 'उदावर्त'।

निद्रारोग—नींद की बीमारी। (अ०) मर्जुन्नौम (सुबात, लीसुर्गुस)। (अं०) स्लीपिंग सिकनेस (Sleeping Sickness)।

निद्रार्तता—सुस्ती, आलस, तन्द्रा। दे० 'तन्द्रा (१)'।

निद्राल्पता—नींद कम आना, नींद की कमी।

निमिष, निमेष—नेत्रवर्त्मगतरोग। (अं०) ब्लीफेरोस्पैझम् (Blepharospasm)?।

नियत कालिकज्वर—नियत समय पर आनेवाला बुखार, बारीका बुखार। (अ०) हुम्मा नाइबा। (अं०) पीरिऑडिकल फीवर (Periodical fever)।

नियतकालिक रोग—बारी के रोग। (अ०) अमराज नाइबा। (अं०) पीरिऑडिकल डिजीजेज (Periodical diseases)।

नियन्त्रण संस्थानास्थैर्य—चलने के प्रारम्भ में काँपना, चलते समय लड़खड़ाना। इस रोग में रोगी चलने फिरने से लाचार हो जाता है और लड़खड़ाकर चलता है। (अ०) इख्तिलाजुल्हर्कात्, इतिआश इन्तिकाली, तशव्वुशे हर्कत। (अं०) लोकोमोटर अॅटॅक्सिया (Locomotor ataxia) या टेबीज डॉर्सॅलिस

(Tabes dorsalis) अर्थात् मस्तिष्कगत क्षय । (अ०) हुजालुन्नुखाअ, सिल्ल जहरी ।

निरुद्धप्रकश—एक रोग जिसमें शिश्नचर्म लंबा और संकुचित हो जाता है । शिश्नचर्म का द्वार या छेद अत्यन्त छोटा होना । शिश्नचर्मसंकोच । घूँघट की तंगी । सु० । निरुद्धमणि (वा०) । (अ०) जीक गल्फा (कुल्फा) । (अं०) फायमोसिस (Phimosis) । **भेद**—सहज और जन्मोत्तर ।

निर्दोष दिनपाकी—अजीर्णभेद ।

निर्दोष पाकविधि—वह पाकविधि जिसके साथ दुर्गन्ध न हो । (अ०) तकय्युह गैरउफूनी । (अं०) ॲसेप्टिक सप्प्यूरेशन (Aseptic suppuration) ।

निर्बलताकारक ज्वर—कमजोर कर देने वाला बोखार । (अ०) हुम्मा मुज्इफा । (अं०) ॲस्थेनिक फीवर (Asthenic fever) ।

निर्विष द्रव्यसंयोगजन्य कृत्रिमविष—दे० 'विषरोग' ।

नीलमेह—पित्तज प्रमेहभेद । इससे पीड़ित मनुष्य झागदार, स्वच्छ, नीलवर्ण मूत्रत्याग करता है । सु० । (अं०) इन्डिकन्यूरिआ (Indicanuria) ।

नीलरक्तता—रक्तपित्त रोग का एक भेद । इस रोग में त्वचा के नीचे खूनी धब्बे या नील पड़ जाते हैं । धब्बे जो त्वचा के नीचे खून बहने से (या रक्त जम जाने से) पड़ जाते हैं । श्यावरक्तता । (अ०) अर्जवानिया, कुह्बत, फफूँरा, फफूँरिया । (अं०) पप्यूँरा (Purpura) । **भेद**—१ **साधारण**—(अ०) कुह्बत बसीता (सादिजा), अर्जवानिया बसीता, फफूँरा बसीत । (अं०) पप्यूँरा सिम्प्लेक्स (Purpura Simplex) । २. **रक्तस्रावी**—(अ०) कुहबत नज्फिया (नजीफिया) । अर्जवानिया नज्फिया (नजीफिया) । (अ०) पप्यूँरा हीमोरेजिका (Purpura Hæmorrhagica), हीमोरेजिक इन्फार्क्ट (Hæmorrhagic infarct) । ३. **आमवातिक**—(अ०) फफूँरा वज्उल्मफासिली, अर्जवानिया हिदारिया, कुह्बत वज्उल् मफासिल । (अं०) पप्यूँरा रह्युमॅटिका (Purpura rheumatica), शॉन्लिन्स् डिजीज (Schonlin's disease) । ४. **हीनकी**—(अ०) फफूँरा हीनकी, अर्ज (गं०)-वानिया असबिया । (अं०) हीनॉक्स पप्यूँरा (Henoch's purpura) ।

नीलवर्णादर्शन—एक नेत्रदृष्टिगत रोग जिसमें नीला रंग दिखाई नहीं देता। (अ०) अमीउज्जुर्कत। (अं०) अस्यानोप्सिया (Acyanopsia), अस्यानोब्लेप्सिया (Acyanoblepsia)।

नीलिका—(१) मुख के अतिरिक्त अन्य स्थानों का व्यंग—श्यामलं मण्डल व्यङ्गं वक्त्रादन्यत्र नीलिका (अष्टाङ्गसंग्रह)। कृष्णमेवंगुणं गात्रे नीलिकां तां विनिर्दिशेत्। (भोज)। दे० 'व्यङ्ग'। (हिं०) छयावक, मेछेना, छाहीं। (उ०) स्याह छीप। (अ०) बहक अस्वद, नुखालिया। (अं०) पिटिरिआसिस नाइग्रा (Pityriasis nigra)। दे० 'सिध्म'। (२) नेत्रदृष्टिगत रोग, नीलिकाकाच, लिङ्गनाश। दे० 'लिङ्गनाश'।

नीलिका काच—नेत्रदृष्टिगतरोग। नीलिका। दे० 'लिङ्गनाश'।

नेत्रकण्डू—नेत्र के कोये की खुजली। (अ०) हिक्कतुल्अमाक।

नेत्रकृष्णभागगत रोग—नेत्र के काले भाग (कृष्णमंडल) में होने वाले रोग। **रोगसंख्या और नाम**—१ सवणशुक्र (शुक्ल), २ अव्रणशुक्र (शुक्ल), ३ अक्षिपाकात्यय और ४ अजकाजात।

नेत्रच्छद दाह—पलक का शोथ। (अ०) इल्तिहाबुज्जफन।

नेत्रच्छदपात—(अ०) इस्तिरखाउज्जफन, सुकूतुज्जफन। (अं०) टोसिस (Ptosis)।

नेत्रच्छदीयसांघातिकवृद्धि-(अं०) एपिथेलिओमा (Epithelioma)।

नेत्रच्छदीय न्यच्छ-कोशिनीकी सिराग्रन्थी। (अं०) नीव्हस (Nævus)।

नेत्रदृष्टिभागगत रोग—नेत्र के दृष्टिभाग में होने वाले रोग। **रोगसंख्या और नाम**—१-६ तिमिर, काच, लिङ्गनाश-१ वातिक, २ पैत्तिक, ३ श्लैष्मिक, ४ रक्तज, ५ सान्निपातिक, और ६ परिम्लायिसंज्ञक (तिमिर, काच, लिङ्गनाश), ७ पित्तविदग्ध दृष्टि (पीत दर्शन)—इसकी अवस्थाविशेष दिवान्ध, ८ श्लेष्मविदग्धदृष्टि (श्वेतदर्शन) इसकी अवस्था विशेष नक्तान्ध्य, ९ धूमदर्शिन (धूम्रदर्शी), १० ह्रस्वजाड्य, ११ नकुलान्ध्य और १२ गम्भीरिका (गम्भीर)।

नेत्रनाड़ी—अश्रुकोष का नासूर (नाडीव्रण), आँख के कोये का नासूर। (फा०) नासूर चश्म; नासूर गोशए चश्म। (अ०) गरब, उफीलूस। (अं०) फिस्च्यूला लॅक्रिमॅलिस (Fistula lachrymalis)।

नेत्रपश्चात् शोथ—आँख के पिछले हिस्से की सूजन। (अ०) वरम मुवख्खर ऐन। (अ०) रेट्रोऑक्यूलर इन्फ्लमेशन (Retro-ocular inflammation)।

नेत्रपाक—नेत्रशोथ, आँख का पक जाना। (फा०) वरमे चश्म। (अ०) इल्तिहाबुल् ऐन। (अं०) ऑफ्थल्मिया (Ophthalmia), ऑफ्थलमयटीज (Ophthalmitis)। *भेद*—*१ सशोथनेत्रपाक और २ अशोथनेत्रपाक।*

नेत्ररोग—नेत्रगत रोग, आँख के रोग। (फा०) अमराजेचश्म। (अ०) अमराजुल् ऐन। (अ०) डिजीजेज ऑफ आइज (Diseases of Eyes)।

नेत्रवर्त्मगतरोग—वर्त्मसंश्रयरोग, पलक में होनेवाले रोग।

रोग नाम और संख्या—१ उत्सङ्गिनी (उत्सङ्गपिड़का), २ कुम्भीका, ३ पोथकी, ४ वर्त्मशर्करा, ५ अर्शोवर्त्म, ६ शुष्कार्श, ७ अक्लिननामिका, ८ बहल (बहल या बहुलवर्त्म), ९ वर्त्मावबन्धक, १० क्लिष्टवर्त्म, ११ वर्त्मकर्दम, १२ श्याववर्त्म, १३ परिक्लिन्नवर्त्म, १४ अपरिक्लिन्नवर्त्म (पिल्ल), १५ वातहतवर्त्म, १६ वर्त्मार्बुद, १७ निमि (मे) ष, १८ शोणितार्श, १९ लगण, २० बिसवर्त्म, और २१ पक्ष्मकोप। यह सुश्रुतोक्त संख्या है। इनके अतिरिक्त सुश्रुत ने 'कुकूणक' नामक एक और रोग का उल्लेख किया है। माधवकरने इनके अतिरिक्त 'कुञ्चन' और 'पक्ष्मशात' ये दो रोग अधिक लिखे हैं।

नेत्रवर्त्मस्फुरण—पलक फड़कना। (अ०) इख्तिलाजुल् ऐन, इख्तिलाजुजफन। (अं०) निक्टिटेशन (Nictitation)।

नेत्रव्रण—आँखों का जख्म। (अ०) कुरूहुल् ऐन। (अं०) अल्सर ऑफ दी कॉर्निआ (Ulcer of the Cornea), कॉर्नियल अलसर (Corneal ulcer)।

नेत्रशल्य—आँख के भीतर कोई चीज पड़ जाना, आँख में कुछ पड़ना, आँख की खटक। (अ०) कजा, कजाउल् ऐन। (अं०) फॉरेन बॉडी इन् दी आई (Foreign body in the Eye)।

नेत्रशूल—नेत्र (के ढेले) का दर्द। (अं०) न्यूरल्जिया ऑफ दी आई (Neuralgia of the Eye)। दे० 'अक्षिशूल'।

नेत्रश्वेतभागगत रोग—नेत्रके सफेद (शुक्ल) हिस्सेमें होनेवाले रोग।

रोगनाम और संख्या—(अर्म) १ प्रस्तारि अर्म, २ शुक्लार्म, ३ रक्तार्म

(सुश्रुत में इसका उल्लेख नहीं है), ४ अधिमांसार्म, ५ स्नाय्वर्म, ६ शुक्तिका, ७ क्षतज अर्म, ८ अर्जुन, ९ पिष्टक, १० सिराजाल, ११ सिराज पिड़का और १२ बलासग्रथित ।

नेत्रसंधिभागगत रोग—नेत्र के संधिभाग में होने वाले रोग। **रोग नाम और संख्या**—१ पूयालस, २ उपनाह, ३ पूयस्राव, ४ पैत्तिकस्राव, ५ श्लैष्मिकस्राव, ६ रक्तजस्राव, ७ पर्वणिका, ८ अलजी और ९ क्रिमिग्रन्थि ।

नेत्रसर्वभागगत रोग—नेत्र के सर्व भाग में होनेवाले रोग। **रोगनाम और संख्या**—(स्यंद-अभिष्यंद) १ वाताभिष्यंद, २ कफाभिष्यंद, ३ पित्ताभिष्यंद, ४ रक्ताभिष्यंद, अभिष्यंद की उत्तरावस्था अर्थात् अभिष्यन्दजन्य अधिमन्थ—५ पैत्तिक अधिमन्थ, ६ श्लैष्मिक अधिमन्थ, ७ वाताधिमन्थ, ८ रक्तजाधिमन्थ, ९ हताधिमन्थ, १० सशोथनेत्रपाक, ११ अशोथनेत्रपाक, १२ अनिलपर्यय (वातपर्यय), १३ शुष्काक्षिपाक, १४ अन्यतोवात, १५ अम्लाभ्युषित दृष्टि, १६ सिरोत्पात, और सिराग्रहर्ष ।

नेत्रस्राव—आँख से आँसू बहना, आँख से पानी आना, आँख का आँसू से तर रहना, ढलका, अश्रुकोष का अश्रुपात, नेत्रनाडी (सु०) । मा० नि० । (उ०) ढलका चश्म । (अ०) दम्आ, तद्मअ, बवालतैन (आँखों से थोड़ी-थोड़ी देर पर पानी आते रहना) । (अं०) एपिफोरा (Epiphora), लॅक्रिमेशन (Lachrimation)। **भेद**—१ पूयस्राव, २ पैत्तिकस्राव, ३ श्लैष्मिकस्राव और ४ रक्तजस्राव ।

नेत्राभिघात—आँख पर चोट लगना । नेत्रक्षत । (अ०) जरबुल् ऐन । (अं०) कॅन्टयूजन ऑफ दी आई (Contusion of the Eye) ।

नेत्राभिष्यन्द—दे० 'अभिष्यन्द' ।

नेत्रार्श—आँख का अर्श, नेत्रगत अर्श ।

नैगमेय—ग्रहजुष्ट बालरोग विशेष । मा० नि० । दे० 'नैगमेष' ।

नैगमेष—ग्रहजुष्ट बालरोग विशेष । सु० । मेष । नैगमेष (वा०) ।

न्यच्छ—एक क्षुद्र रोग । शरीर पर छोटा या बड़ा कृष्णवर्ण या श्यामवर्ण, पीड़ारहित, जन्मसे हुआ मण्डल (चकत्ता) । सु० । वाग्भटाचार्य न्यच्छका वर्णन लाञ्छन शब्दसे करते हैं—'न्यच्छं लाञ्छनमुच्यते ।' व्यङ्ग, न्यच्छ और नीलिका

वास्तव में एक विकृति के ही नाम हैं। अंगरेजी में इनको कैपिलरी एन्जियोमाटा या नीवी (Capillary angiomata or Nævi) कहते हैं। लाञ्छन या न्यच्छ को हिन्दी में लच्छन (लक्षण) या लहसुन कहते हैं। अरबी में इसे खाले मुतलव्वन (रंगीन मस्से), नमश मौलूदी और वहमा कहते हैं। अंगरेजी में इसे मदर्समार्क (Mother's mark), नीवस (Nævus) और नोवस मेटर्नस (Nævus maternus) कहते हैं।

(प)

पक्तिदोषज शूल—पक्तिशूल, परिणामशूल।

पक्तिशूल—परिणामशूल।

पक्व पीनस—पीनस रोग का एक भेद जिसमें शिरोगौरव आदि आम के लक्षणों से युक्त श्लेष्मा घन (गाढ़ा) होकर नासिका के छिद्रों में विलीन हो जाता है तथा स्वर शुद्ध एवं वर्ण ठीक हो जाता है। मा० नि०।

पक्वशोफ—पका शोथ। पकी सूजन।

पक्वातिसार—पक्व मल के दस्त। निरामातिसार।

पक्वाशयगत वात—(अ०) रियाही कुलंज।

पक्वाशयज पुरीषजन्य आनाह—पक्वाशयोत्थित आनाह।

पक्षघात, पक्षवध, पक्षाघात—एक वातव्याधि जिसमें पूरा आधा शरीर निकम्मा और संवेदनारहित हो जाता है। सु०। संपूर्ण एक पक्ष याने आधे शरीर का घात। अर्धांगवायु, अधरंग। (अं०) हेमीप्लीजिया (Hemiplegia)। **वक्तव्य**—इसमें आधे धड़ का घात होता है अर्थात् रोगी अपनी इच्छानुसार अर्ध शरीर की पेशियों का संकोच नहीं कर सकता, चेहरा काम नहीं करता, बोलने में हरकत होती है तथा संवेदना में भी फर्क आ जाता है—कुर्वाच्चेष्टानिवृत्तिं हि रुजं वाक्स्तम्भमेव च ॥ (चरक)। आयुर्वेद के मत से अर्दित पक्षाघात में होता है। इसलिये पक्षाघात को 'अर्दित सह पक्षाघात' या 'मुखार्धघातयुक्त पक्षाघात' कहते हैं। चरकसंहिता में दृढ़बल अर्दित का अर्थ 'मुखार्धघातयुक्त पक्षाघात या मुखार्धघात' करते हैं—अर्धे तस्मिन् मुखार्धे वा केवले स्यात्तदर्दितम् ॥ (च० चि० वा० व्याधि) यूनानी वैद्यक में इसका समीचीन पर्याय फालिज मैउल्लकवा या खलअ है। फालिज, फालिज निस्फी, और शलल निस्फी आदि अरबी संज्ञाओं का व्यवहार उक्त वैद्यक में उस

अर्धांगघात के लिये होता है जिसमें चेहरा वा सिर सुरक्षित रहता है, सिर को छोड़कर शरीर के दायें या बायें भाग लम्बाई के रुख निकम्मा हो जाते हैं। अस्तु, इनका प्रयोग पक्षाघात के अर्थ में नहीं होना चाहिये। **भेद**—१ आगन्तु-निमित्तज (आगन्तुज) और २ दोषनिमित्तज (दोषज वातव्याधिवर्णित)। **आगन्तुज भेद**—पारदजन्य (पारदनिमित्तज) या पारदज।

पक्ष्मकोप—(१) नेत्रवर्त्मगतरोगविशेष। इसमें बाल अन्तर्वलित और उनकी पंक्ति अनियमित होती है। सु०। मा० नि०। उपपक्ष्ममाला, परिवाल, परवाल, पड़वाल। (अ०) शार मुन्कलिब। (अं०) ट्रिकियासिस (Trichiasis)। (२) उपपक्ष्म।

पक्ष्मशात—नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष। पलक के बाल झड़ना। मा० नि०। इसमें पपोटों के किनारे मोटे और सुर्ख हो जाते हैं और पलकों के बाल झड़ जाते हैं। इसका वर्णन सुश्रुत में नहीं है। (अ०) अंवुसीमा, सुलाक, रमद जफनी, वरम अज्फान। (अं०) ब्लीफॅरायटीज (Blepharitis)।

पक्ष्मस्थ कृमि—पलक का कृमि।

पक्ष्माधिक्य—दे० 'उपपक्ष्म'।

पङ्गु—दोनों पैर का घात (बेकाम होना), उभय सक्थिघात, निम्नाङ्ग (अधोशाखा) घात, लूलापन, पङ्गुत्व, पङ्गुता, निचले धड़ का फालिज। (अ०) फालिज अतराफी, फालिज अस्फल, इस्तिरखाऽ अस्फल। (अं०) पैराप्लीजिया (Paraplegia)।

पक्ष्यमान ज्वर—पञ्चाह्निक (पञ्चाहिक) ज्वर—पाँच दिन का ज्वर, मक्खी का बोखार। (अ०) हुम्मा खमासिया, हुम्मा जुबाबिया। (अं०) फाइव डेज फीवर (Five-days fever)।

पद्मिनी कण्टक—एक क्षुद्ररोग जिसमें कमलिनी की काँटों की भाँति अंकुरों से व्याप्त, उभरा हुआ, कण्डुयुक्त, श्वेतवर्ण कफवातजन्य मण्डल होता है। सु०। यह पेपिलोमा ऑफ दि स्किन (Papilloma of the skin) है। इसमें उपत्वचा के अंकुरों की वृद्धि होती है। यह एक प्रकार का त्वचा का सौम्य अर्बुद है। श्लेष्मल त्वचा पर भी होता है। (अ०) सल्आ हुल्मिया जिल्दिया।

पनसिका—एक क्षुद्ररोग जिसमें कान के ऊपर (श्री कण्ठदत्त के अनुसार

कान के भीतर) आसपास या पीठ पर तीव्र पीड़ायुक्त कमलकन्द के समान (कठिन, अष्टाङ्गसंग्रह के अनुसार कमलकन्द के समान कठिन तथा उसके आकार की) पिड़का उत्पन्न होती है । सु० ।

परमद—दुरुपयुक्त मद्य जनित विकार का एक भेद । मा० नि० ।

परावर्तित शिरोशूल—(अ०) सुदाअ शिरकी । (अं०) रिफ्लेक्स हेडेक (Reflex he dache) ।

परिक्षय हृद्यन्त्र—क्षयज कोष्ठीय पेशी की क्षीणता । हृद्यन्त्ररोग ।

परिक्षेपी भगन्दर—वातपित्तज भगन्दर । अ० सं० । (अं०) हॉर्सशू फिस्चुला (Horse-shoe fistula) ।

परिगर्भाशय शोथ—गर्भाशय के इर्द-गिर्द (बाह्य परत) की सूजन । (अ०) वरम नवाही रहम । (अं०) पैरामेट्रायटीज (Parametritis) ।

परिणति शूल—एक प्रकार का शूल रोग । परिणामशूल ।

परिणाम शूल—एक प्रकार का शूल रोग जो खाये हुए भोजन के पच जाने पर होता है । यह केवल भोजन की पच्यमानावस्था (जीर्णमाणावस्था) में ही होता है । साथ ही यह त्रिदोषज है । यह भोजन के तत्काल बाद अथवा वमन के बाद एवं अन्न के जीर्ण हो जाने के अनन्तर शान्त हो जाता है । अन्नद्रव शूल । पक्तिशूल । अन्नविदाहज शूल । परिणति शूल । (अं०) गेस्ट्रलगोकेनोसिस (Gastral gokenosis), हंगर पेन (Hunger pain) । (अ०) वजासूएहज्म, वज्उल्मेदाइम्तिलाई । **भेद**—१ वातिक (वज्उल्मेदा असबी), २ पैत्तिक, ३ श्लैष्मिक, ४ द्वन्द्वज और ५ सान्निपातिक ।

परिदर—एक दन्तमूलगतरोग जिसमें मसूढ़े गलते हैं, रोगी बार-बार रक्त थूकता है, वह पित्तकफरक्तजन्य 'परिदर' नामक व्याधि है । सु० । यह दन्तवेष्ट-प्रकोप (Gingivitis) का ही एक प्रकार है । वाग्भट में इसका उल्लेख नहीं है ।

परिधमनी शोथ—धमनी के बाहरी परत का शोथ । धमनीबाह्यशोथ । (अ०) वरम शिरयानी जाहिर । (अं०) पेरिआर्टरायटीज (Peri arteritis) ।

परिधूमायन—जलन करने वाले डकार ।

परिपोटक—कर्णपालीगत रोग । वातजन्य कर्णपाली शोथ । मा० नि० । परिपोट रोग । सु० ।

परिप्लुता योनि—योनिव्यापत् विशेष। सु०। च०। वा०। शार्ङ्ग०।

परिम्लायिकाच—रागी परिम्लायि रोग। काच रोग का एक भेद। जिसमें पुतली का रंग हरा होता है। हरा मोतियाबिंद। (अ०) खुजरतुल् ऐन, नुजूलुल् माएल् अख्जर, अग्लूकूमा, माऽ अख्जर, अल्अमियुर्रीही। (अं०) ग्लॉकूमा (Glaucoma), ग्लॉकोमेटस कॅटरॅक्ट (Glaucomatus Cataract)। दे० "काच"।

परिम्लायि तिमिर—अरागी परिम्लायि रोग। तिमिर रोग का एक भेद। दे० 'तिमिर'।

परिम्लायि लिङ्गनाश—कुछ दर्शननाशक परिम्लायि रोग। सु०। लिङ्गनाश का एक भेद। हरित्मोतियाबिंद। समलवायु। (अं०) ग्लॉकोमा (Glaucoma)। दे० 'लिङ्गनाश'।

परिलेहि—कर्णपालीगतरोग। कर्णपाली का मांसरहित हो जाना। सु०। अ० हृ०। मा० नि०। (अं०) रोडंट अल्सर ऑफ दि एक्सटर्नल ईअर (Rodent Ulcer of the external ear)।

परिवर्तकज्वर—बार बार लौटने वाला ज्वर। (अ०) हुम्मा नुक्सिय्या (नाकिसा), हुम्मा कह्तिय्या।

परिवर्तिका—एक प्रकार का क्षुद्ररोग (वा गुह्य रोग)। शिश्नचर्म (घूँघट) का शिश्नमणि (सुपारी) के ऊपर चढ़कर फँस जाना। सु०। (अ०) इख्तिनाकुल् गुल्फा, इख्तिनाकुल् कुल्फा, बाराफीमूसिस। (अं०) पैराफायमोसिस (Paraphimosis)। दे० "निरुद्ध प्रकश" और "अवपाटिका"।

परिविस्तृत धमनी शोथ—धमनी का फैला हुआ शोथ। (अ०) वरम शिरयानी मुन्तशिर। (अं०) डिफ्यूज्ड आर्टरायटीज (Diffused arteritis)।

परिवृक्क विद्रधि—वृक्क के इर्द-गिर्द का शोथ। (अ०) खुराज नवाही गुर्दा। (अं०) पेरिनेफ्रायटिक ॲब्सेस (Perinephritic Abscess)।

परिसर्प—(१) क्षुद्र कुष्ठ का एक भेद। सु०। चर्मकुष्ठ। च०। (२) विसर्प भेद। च०। दे० 'विसर्प'।

परिसर्पी उपत्वचा शोथ—(अ०) इल्तिहाबखुल्वीमुन्तशिर, वरमफलगमूनी मुन्तशिर। (अं०) स्प्रेडिंग सेल्यूलायटीज (Spreading cellulitis), स्प्रेडिंग फ्लेग्मून (Spreading phlegmon)।

परिसर्पी व्रण—फैलने वाला व्रण । (अ०) कर्हा सअ्बानिय्या । (अं०) सिर्पिजिनस अल्सर (Sirpiginous ulcer), क्रीपिंग अल्सर (Creeping ulcer) ।

परिसर्पी शोथ—फैलने वाली सूजन । (अ०) इल्तिहाब मुन्तशिर, वरम साई । (अं०) स्प्रेडिंग इन्फ्लमेशन (Spreading Inflammation) ।

परिसर्पी स्थानिक शोथ—फैलने वाली स्थानिक सूजन । (अ०) ओजीमा मोजइय्या साइय्या । (अं०) लोकल स्प्रेडिंग एडीमा (Local Spreading œdema) ।

परिस्रावी अर्श—अर्शरोग का एक भेद । रक्तपित्तोल्वण अर्श । (च०) । स्रावी अर्श (अ० हृ०) । रक्तार्श । आर्द्र अर्श । अ (आ) भ्यंतरीय अर्श । (अ०) बवासीर दामी (दामिया), बवासीर सय्याल । (उ०) खूनी बवासीर । (अं०) इन्टर्नल या ब्लीडिंग पाइल्ज (Internal or Bleeding piles) ।

परिस्रावी भगन्दर—भगन्दर रोगका एक भेद । कफज भगंदर । सु० ।

परिस्राव्युदर—उदररोग का एक भेद । जलोदर की अपेक्षा इसमें जल जल्दी पैदा होता है । सु० । च० । छिद्रोदर । क्षतोदर । अ० सं० । आधुनिक परिभाषा में इसको आन्त्रच्छेदजन्य उदरावरणशोथ (Peritonitis due to perforation of the bowel) कह सकते हैं । क्षतान्त्रोदर । छिद्रान्त्रोदर ।

परिहर्ष—झिनझिनिका । सरसराहट । (अं०) टिंजलिंग (Tingling) ।

परिहार्य गर्भपात—उपविष्टक गर्भ । सु० । (अं०) थ्रेटेन्ड अॅबॉर्शन (Threatened abortion) ।

पर्युण्डुक शोथ—उण्डुक के आसपास होने वाली सूजन । (अ०) वरम हवाली अअवर । (अं०) पेरिटिफिलायटीज (Perityphilitis) ।

पर्वणिका—दे० "पर्वणी" ।

पर्वणी—रक्त के कारण कृष्ण और शुक्ल की संधि में होने वाली ताम्रवर्ण की आकृति में छोटी, दाहयुक्त, शूलान्वित, वर्तुल एवं शोथवाली वा गोल पिड़का विशेष । यह रोग असाध्य है । सु० । यह अलजी से सूक्ष्म होती है । (विदेह) । (अ०) वद्का, रमद बुसरी, रमद वदकी, रमद नफ्फाती । (अं०) फिलक्टिन्यूलर कन्जंक्टिवायटीज (Phlyctenular Conjunctivitis) ।

पर्शुकान्तरीय वेदना—पसलियों के मध्य की वातवेदना। (अ०) वजा असबी बैनुल् अजलाअ्। (अं०) एण्टरकॉष्टल न्यूरल्जिया (Entercostal neuralgia)।

पलित—बाल सफेद होना। सफेद बाल आना। बुढ़ाना। बालों की सफेदी। सु०। च०। (अ०) शैब, शैबुश्शार, शैब गैर तबई। (अं०) होरीनेस (Hoariness), कैन्शीज (Canties), केनायटीज (Canities)। **भेद**—१. अकाल (ज) पलित वा वैकृत पलित, २. कालज (वृद्धावस्थाज) पलित, स्वाभाविक जरापलित (बुढ़ापे में होने वाला पलित)।

पवनेन्द्रिय—वायु द्वारा गर्भस्थ मनुष्य के शुक्राशय को नष्ट कर बनाया हुआ क्लीब। च०।

पाचकाग्नि—अन्न का पकाने वाला अग्नि (जठराग्नि)। इसके विकार (पचनव्यापार के बिगाड़) को न्यूरोसिस (Nourosis) कहते हैं।

भेद—दोषानुसार:—१ कफ से **मन्द**—यह यथाविधि सेवन किये हुए अल्प भोजन को भी पेट और सिर में भारीपन, खाँसी, श्वास, हृल्लास, वमन और अंगों में थकान इत्यादि विकार उत्पन्न करके बहुत देर मे पचाती है। सु०। २. पित्त से **तीक्ष्ण**—यह मात्रा से अधिक सेवन किये हुए अन्न को शीघ्र पचाती है। वही अधिक बढ़ जाने से 'अत्यग्नि' कहलाती है। सु०। तन्त्रान्तर (वृन्दमाधव और योगरत्नाकर आदि) में इसी को ही **'भस्मकाग्नि'** कहते हैं। दे० "भस्मक"। ३. वात से **विषम** और ४. दोषसाम्य से **सम** (दोषानभिपन्न) होता है।

पाचन-संस्थान-रोग—पाचनसंस्थान के रोग। (अ०) अमराज़ निजाम इन्हजाम। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी डायजेष्टिव्ह सिस्टम् (Diseases of the digestive System)।

पाटित भग्न—पूर्ण भग्न का एक विकार। इसमें हड्डी टूटती नहीं, अपितु उसमें दरारें पड़ जाती हैं। इसमें हड्डी लम्बाई में फट या चिर जाती है। सुश्रुत के अनुसार छोटे-छोटे और अनेक दरारयुक्त तथा वेदनायुक्त भग्न 'पाटित' है। द्विधाभूत या विदीर्ण। मा० नि०। (अ०) कस्र इन्शिकाकी, कस्र सादेअ। (अं०) फिशर्ड फ्रैक्चर (Fissured fracture)। दे० "स्फुटित"।

पाणीसहा शीतला—शीतला रोग का एक भेद। दे० "शीतला"।

पाण्डु—त्वचा का पाण्डु (पीले) वर्ण का हो जाना। (च, सु०)। रक्ताल्पता, पीलिया, खून की कमी। (फा०) कमी खून। (अ०) नुक्सुद्दम, फकरुद्दम, किल्लत दम, सुउल्किन्या (रासुल्माल अर्थात् पूंजी की कमी)। यूनानी वैद्यक के मत से यह सर्वांगशोफ वा शोथ (इस्तिस्काऽलहमी) का पूर्वरूप (मुकद्दमा) है। (अं०) अनीमिआ (Anæmia)। **भेद**—१. वातज, २. पित्तज, ३. कफज, ४. सन्निपातज और ५. मृद्भक्षणज (मृद्भक्षणोत्थ, मृज, मृत्तिकाजन्य)। पाण्डु, अर्थात् मिट्टी खाने से हुआ पाण्डुरोग। **अन्य भेद**—दुष्ट (वा घातक) पाण्डुरोग और प्लैहिक पाण्डुरोग। कामला पाण्डु का ही बढ़ा हुआ रूप है। दे० "कामला"।

पाण्डुमय व्रण—वह व्रण (जख्म) जिसके साथ रक्ताल्पता अर्थात् पाण्डु भी हो। (अ०) तर्करुह फकरी। (अं०) अनीमिक अल्सरेशन (Anæmic Ulceration)।

पाददारिका—एक क्षुद्ररोग (सु०)। दे० "पाददारी"।

पाददारी—एक क्षुद्ररोग जिसमें पावों में तलुओं के आश्रित पीडायुक्त दरार होती है। सु०। इसमें पैर में दरार (बिवाई) फटती है, इसलिये इसे 'पाददारी' कहते हैं। (अ०) शुकाकुल् अतराफ। (अं०) हॅगेड्स (Rhagades), क्रैक्स इन दी सोल (Cracks in the sole), चैप्ड हैंड (Chapped hand)। **वक्तव्य**—यह विपादिका नामक कुष्ठ से भिन्न है। विपादिका कुष्ठ में पिड़का होती है और इसमें पैर फटते हैं। विपादिका कुष्ठ से इसका भेद दोष-दूष्यों से महत्ता तथा स्वल्पता से भी है। (मधुकोष०)। दे० "विपादिका"।

पाददाह—एक वातव्याधि जिसमें पित्तरक्त संसृष्टवात से पाँवों (वा हाथों) मे विशेषकर चलते समय जलन पैदा होती है। सु०। इससे हस्तदाह का भी बोध होता है। (अं०) हॉट ऑर इचिंग हैंड्स एण्ड फीट (Hot or itching hands and feet)।

पादशूल—पैर का दर्द।

पादशोथ (फ)—पैर की सूजन। पादश्वयथु (च०)। (अं०) एडीमा ऑफ दी फीट (Oedema of the feet)।

पादहर्ष—एक वातव्याधि जिसमें कफवात के प्रकोप से दोनों पाँव हर्षयुक्त

और सुन्न होते हैं। सु०। (इससे हस्तहर्ष का भी बोध होता है)। पैरों का झनझनाहट या सोना। (अ०) खदरपा। (अं०) पॅरास्थेसिया ऑफ दी हैंड्स एण्ड फीट (Paræsthesia of the hands and feet), नमनेस ऑफ फीट (Numbness of feet)।

पादार्बुद—एक प्रकार का अर्बुद। छत्रकार्बुद। खुमीरसौली। (अ०) सलआ फितरिया। (अं०) माइसीटोमा (Mycetoma)।

पानविभ्रम—दुरुपयुक्तमद्यजनित विकार का एक भेद। सु०।

पानाजीर्ण—दुरुपयुक्त मद्यजनित एक विकार जिसमें उग्र आध्मान, वमनों और उद्गारों का आना और अन्न का विदाह ये लक्षण मद्य के जीर्ण न होने पर अर्थात् पानाजीर्ण में होते हैं।

पानात्यय—निष्प्रमाण मद्यपान। मदात्यय। दे० "मदात्यय"।

पामा—एक क्षुद्रकुष्ठ जिसमें स्राव, खाज व जलन इनसे युक्त छोटी-छोटी फुंसियाँ होती हैं। (सु०)। छाजन, उकवत, जलनदार फुंसियाँ। (अ०) जमरा, अज्जीमा (अरबीकृत)। (फा०) नार फारसी। (अं०) एक्झीमा (Eczema)।

पायरिया—दे० "दन्तवेष्ट"।

पारद (जन्य), पारदनिमित्तज पक्षाघात—पारद सेवन से उत्पन्न हुआ पक्षाघात। (अ०) फालिज जैबकी।

पारदजन्य मुखपाक—पारद सेवन से उत्पन्न हुआ मुखपाक। (अ०) कुलाअ सीमाबी। दे० "मुखपाक"।

पारदजन्य रोग—पारा खाने से हुआ रोग।

पारिगर्भिक—अष्टाङ्गसंग्रह के अनुसार गर्भिणी का दूध पीने से बालक में उत्पन्न हुआ शरीरक्षीणता रोग; अ० सं०। शार्ङ्ग०। परिभव। मा० नि०। यह कोई खास रोग नहीं है। अपर्याप्त और हीनगुण दूध मिलने से उत्पन्न हुई शरीरक्षीणता की अवस्था है। अहिण्डी। (अ०) नहूकत। (अं०) वेस्टिंग (Wasting) या मॅराज्मस (Marasmus)। दे० "गात्रशोष"।

पार्श्वपीडा—पहलू का दर्द, पार्श्वशूल, पार्श्ववेदना (सु०)। (अ०) वजउल्जनब, हिदारुज्जनब। (अं०) प्ल्यूरोडीनिया (Pleurodynia)।

पार्श्ववर्ती पदार्थादर्शन—एक दृष्टिगत रोग जिसमें पार्श्ववर्ती पदार्थ नहीं दीखता।

पार्श्वशूल—पसलियों की भीतरी झिल्ली और फेफड़े की झिल्ली की सूजन। ड्राई प्ल्यूरिसी (Dry Pleurisy) या न्यूमोनिया (Pneumonia) की प्रारम्भिक अवस्था।

पार्श्वसृत नेत्र—नेत्रगोलकक्षय।

पार्श्वायाम—एक प्रकार का अपतानक जिसमें क्वचित् एक पार्श्व की पेशियों में अधिक तनाव उत्पन्न होकर शरीर एक पार्श्व की ओर टेढ़ा हो जाता है। इसका उल्लेख आयुर्वेद में नहीं है। (अ०) कुजाज जानिबी। (अ०) प्ल्यूरोथोटोनोस (Pleurothotonos)।

पार्श्वारुण—(१) शार्ङ्गधरोक्त बालरोग विशेष।

पाल्युपद्रव—पाली (कर्ण) के उपद्रव। सु०। पाली के उपद्रव ये हैं—उत्पाटक, उत्पुटक, श्याव, कण्डूयुत, अवमंथ, सकण्डूक, ग्रन्थिक, जम्बुल, स्रावी और दाहवान्। (सु० सू० १६ अ० ३३-३४ श्लो०)।

पाशबद्ध—फाँस (फन्दा) अर्थात् पाश लगाकर कण्ठपीड़न किया हुआ। उद्बधन। **भेद**—इसके यह तीन भेद सुश्रुत (सू० २७ अ० १७ श्लो०) में इस प्रकार दिये हैं—बाहुरज्जुलता पाशः। बाहुपाश, *रज्जुपाश और लतापाश।* बाहुपाश (हाथ) से जो कण्ठपीड़न किया जाता है उसे अँगरेजी में *'थ्रोट्लिंग'* (Throttling) कहते हैं। रज्जु (डोरी) या लता का पाश लगाकर जो कण्ठ का पीड़न होता है या किया जाता है, उसे *स्ट्रँग्युलेशन (Strangulation)* कहते हैं। जो रज्जु या लता का पाश लगाकर मनुष्य स्वयं टाँग लेता है या उसे टाँग देते हैं तो उसको "हैंगिंग" (Hanging) कहते हैं। तीनों अवस्थाओं में कण्ठ का पीड़न होने (कण्ठ घुट जाने) के कारण संज्ञानाशादि लक्षण उत्पन्न होते हैं। अरबी में हैंगिंग को 'शनक' या 'तअ्लीक' या 'खनक बिलवहक' (लटकाना, फाँसी देना) और स्ट्रँग्युलेशन को 'खनक' या 'इख्तिनाक' (गला घोंटना) कहते हैं।

पाषाणगर्दभ—एक क्षुद्ररोग जिसमें हनुसंधिमें वातकफजन्य, अल्पपीड़ायुक्त और स्थिर शोफ उत्पन्न होता है। सु०। इसका शोथ स्थिर अर्थात् कठिन

(पाषाणवत् काठिन्यात् पाषाणगर्दभः । मधुकोश) और चिरज है। इसे औपसर्गिक कर्णमूलिक शोथ या कर्णफेर अर्थात् हप्पु (Epidemic parotitis या Mumps) लिखना ठीक नहीं। यह बहुत करके कर्णमूलिक लालाग्रन्थि (Parotid gland) का कोई साधीरण अर्बुद (यथा Adenoma, Adenomata or Glandular tumour, Fibroma, Endothelioma) होगा। मा० गो० घाणेकर। (अ०) सल्आ गुदंदिय्या, सलआ गुद्दिया, सल्आ लीफिय्या, गुदद व उकद। (उ०) गुद्दो (गुदद़ी) रसोली।

पिच्चत—सद्योव्रण का एक भेद। (अं०) क्रश्ड ऊंड (Crushed wound)।

पिच्चित भग्न—पूर्ण भग्न का एक प्रकार जिसमें रक्तवाहिनियों, नाड़ियों और पेशियों को हानि होती है। यह चौड़ा हुआ और अधिक शोथयुक्त होता है। सु०। (अं०) कॉम्प्लीकेटेड फ्रॅक्चर (Complicated fracture)।

पिच्युटरी ग्रन्थि रोग—(अ०) अम्राज गुद्दए नुखामिया। (अं०) डिजीजेज ऑफ पिच्युटरी ग्लंड (Diseases of pituitary gland)।

पिड़का—(१) फोडा, बालतोड़। (अ०) दुम्मल। (अं०) फ्यूरंक्यूलोसिस (Furunculosis)। (२) प्रमेह पिड़का। सु०।

पिण्डलिका (नाभिरोग)—नाभिगत रोग। नाभिगत आन्त्रवृद्धि वा तुण्डिरोग का एक भेद। इसमें नाभि सदा के लिए फूली हुई रहती है। च०।

पिण्डिकोद्वेष्टन—ऐंठनजन्य पीड़ा। उद्वेष्टन ऐंठन। (अ०) इअ्तिकाल, मगस, तशन्नुज। (अ०) क्रॅम्प्स (Cramps)।

पित्तकफज कुष्ठ—दे० "ग्रन्थिक कुष्ठ"।

पित्तज अतिसार—अतिसार का एक भेद। पित्तातिसार। पैत्तिक अतिसार। (उ०) सफरावी दस्त, पित्त के दस्त। (अ०) इसहाल सफरावी। (अं०) बिलिअस (या बिलिअरी) डायरिया (Bilious or biliary Diarrhœa)।

पित्तज अपस्मार—अपस्मार का एक भेद। पैत्तिक अपस्मार। (अ०) सरअ सफरावी।

पित्तज अभिष्यन्द—अभिष्यन्द रोग का एक भेद। पित्ताभिष्यन्द। (अ०) रमद सफरावी। (अं०) अॅक्यूट कॅटारहल कञ्जक्टिवायटीज (Acute catarrhal conjunctivitis)।

पित्तज अर्बुद—एक प्रकार का अर्बुद। पीली रसौली या सूजन। पित्तार्बुद। (अ०) सलआ सफरा, वरम अस्फर। (अं०) जैन्थोमा (Xanthoma)।

पित्तज अर्श—जन्मोत्तरकालज अर्श का एक भेद। पित्तजन्य अर्श। पित्तार्श। च०। सु०। वा०।

पित्तज अश्मरी—अश्मरी का एक भेद। पित्ताश्मरी। पैत्तिक अश्मरी। (अ०) हसात सफराविय्या। (अं०) यूरिक एसिड कॅल्क्यूलस (Uric Acid calculus)। बिलिअरी कॅल्क्यूलाई (Billary Calculi)।

पित्तज कुस्वप्न—कुस्वप्न रोग का एक भेद। (अ०) काबूस सफरावी। दे० "कुस्वप्न"।

पित्तज छर्दि—वमन रोग का एक भेद। (अ०) कै सफरावी।

पित्तज ज्वर—ज्वर का एक भेद। पित्त ज्वर। पैत्तिक ज्वर। (अ०) हुम्मा सफराविया।

पित्तज परिणामशूल—परिणामशूल का एक भेद। पैत्तिक परिणामशूल। (अ०) वजा सूएहज्म (इम्तिलाई)।

पित्तज प्रमेह—प्रमेह का एक भेद। पित्तप्रमेह। (सु०)। पित्तप्रमेह के भेद—१. नीलमेह, २. हारिद्रमेह (हरिद्रामेह), ३. मञ्जिष्ठामेह (मञ्जिष्ठोदकसंकाशमूत्र), ४. अम्लमेह, ५. क्षारमेह और ६. रक्तमेह (शोणितमेह)।

वक्तव्य—चरक और वाग्भट में अम्लमेह के बदले 'कालमेह' मिलता है, परन्तु दोनों में समानता नहीं है। कालमेह में मूत्र मसीवर्ण अर्थात् स्याहीमायल होता है। अंगरेजी में जालमेह को ब्राउन एण्ड ब्लैक यूरिन (Brown and Black Urins) कहते हैं। पाश्चात्य वैद्यकीय ग्रन्थों में वर्णित इन्डिकन्यूरिआ (Indicanuria), मेलन्यूरिआ (Melanuria), अल्कप्टन्यूरिआ (Alkaptonuria) और कार्बोल्यूरिया (Carboluria) प्रभृति प्रमेह इसी कालमेह के भेद कहे जा सकते हैं।

पित्तज प्रवाहिका—प्रवाहिका का एक भेद। पैत्तिक प्रवाहिका। (अ०) जहीर सफरावी। (उ०) सफरावी। पेचिश। (अं०) ॲक्यूट अमीबिक डिसेंटरी (Acute amœbic Dysentery)। दे० 'प्रवाहिका'।

पित्तज मूर्च्छा—मूर्च्छा का एक भेद। पैत्तिक मूर्च्छा। (Syncope due to cirrhosis of the liver)।

पित्तज विसर्प—दोषज विसर्प का एक भेद। (अ०) हुमरा फलग्मूनी, हुमरा, हुमरा खालिस। (अं०) एरिसिपेलस फलेग्मोनस (Erysipelas phlegmonous)।

पित्तज शिरोरोग—शिरोरोग का एक भेद। पैत्तिक (पित्तोल्वण, पित्तजन्य, पित्तात्मक) शिरोरोग। (उ०) दर्दसिर सफरावी। (अ०) सुदाअ सफरावी। (अं०) बिलिअस हेडेक (Bilious headache)।

पित्तदुष्टस्तन्यज (जनित) बालरोग—पित्तज क्षीरालस। शार्ङ्ग०।

पित्तप्रणाली (नलिका) शोथ—पित्त की नाली की सूजन। (अ०) वरम मजराय मरारा। (अं०) कोलनजाइटिस (Kholangeitis)।

पित्तवाहिनी मुखशोथ—पित्तवाहिनी के मुख की सूजन।

पित्तवाहिन्यवरोधजन्य कामला—यकृतीय कामला। (अ०) यरकान सुद्दी कबिदी, यरकान कबिदी। (अ०) हिपेटोजीनस जॉण्डिस (Hepatogenous Jaundice)।

पित्तविदग्ध दृष्टि—नेत्रदृष्टिगत रोग। पीतदर्शन। दिवान्ध्य इसकी एक अवस्था विशेष है।

पित्तविषमयता—कोलीमिया (Cholæmia)।

पित्ताजीर्ण—विदग्धाजीर्ण। (अ०) सूएहज्म सोजशी, सूएहज्म सफरावी। (अं०) एसिड या बिलिआटिक डिस्पेप्सिया (Acid or Biliatic Dyspepsia), इरिटेबल डिस्पेप्सिया (Irritable Dyspepsia)। दे० 'अजीर्ण'।

पित्ताभाव—अपित्तत्व। पित्त कम पैदा होना। (अ०) अदमुस्सफरा। (अं०) अकोलिया (Acholia)।

पित्तार्बुद—पित्तज अर्बुद।

पित्ताशय रोग—पित्ताशय के रोग। (अ०) अमराज मरारा।

पित्ताशयस्थ अश्मरी—पित्ताशयगत पथरी। (फा०) संग मरारा। (अ०) हसात मरारा, हसात सफ्राविय्या। (अं०) गॉल स्टोन (Gall-stone), कोललिथिएसिस (Cholelithiasis)।

पित्ताशयिक शोथ—पित्ताशय की सूजन, पित्ताशय शोथ। (फा०) सोजिश मरारा। (अ०) वरम मरारा, इल्तिहाबुल् मरारा। (अं०) कोलसिस्टायटोज (Cholecystitis)। **भेद**—तीव्र और चिरज।

पित्ताश्मरी—दे० "पित्तज अश्मरी"।

पित्ताश्मरीशूल—पित्ताश्मरीजन्य शूल।

पित्तोदर—उदररोग का एक भेद। पित्तज उदर रोग। सु०। च०।

पित्तोल्वण रक्तपित्तज विसर्प—पित्त विसर्प। (अ०) हुम्रा फल्गमूनी। दे० 'पित्तज विसर्प'।

पित्तोल्वण सन्निपात—दोषजन्य सन्निपात का एक भेद। (अ०) सरसाम सफ्रावी, करानीतुस (फ्रानीतुस) खालिस, सरसाम हारं, वरम हारं।

पिल्ल—अपरिक्लिन्नवर्त्म।

पिशाचावेशज—भौतिक (भूतोत्थ) उन्मादका एक भेद। दे० 'उन्माद'।

पिष्टक—नेत्रशुक्लभागगत रोग। सु०। मा० नि०। पिष्टशुक्ल तथा सलिलवत् शुक्ल नेत्रश्वेतभागगत नेत्ररोग। सु०।

पिष्टमेह—कफप्रमेह का एक भेद। इसमें रोगी शरीर रोमांच खड़े होकर पिष्टयुक्त जल के समान (पिष्टमिश्रोदकतुल्य) मूत्र का त्याग करता है। सु० दुधिया पेशाब। (अ०) बौल कैलूसी। (अं०) काइल्यूरिया (Chyluria)।

वक्तव्य—चरक में पिष्टमेह का उल्लेख नहीं मिलता। सुश्रुत का पिष्टमेह चरक के शुक्लमेह के समान मालूम पड़ता है—शुक्लं पिष्टनिभं मूत्रमभीक्ष्णं या प्रमेहति। पुरुषां कफकोपेन तमाहुः शुक्लमेहिनम्॥ (चरक)।

पीड़नाक्षमता—शरीरगत वह रुजा जो छूने पर प्रगट होती है, स्पर्श करने पर पीड़ा होने की अवस्था। स्पर्श सहन न कर सकना, स्पर्शनाक्षमता, स्पर्शनासहिष्णुता, पीड़नासहिष्णुता। (अ०) टेन्डरनेस (Tenderness)। दे० "स्पर्शासहिष्णुता"।

पीतज्वर—पीला बुखार। (फा०) तपे जर्द। (अ०) हुम्मा अस्फर, मुह्रिका यरकानी। (अं०) येलो फीवर (Yellow fever)।

पीनस—अपीनस रोग। इसके आमपीनस और पक्वपीनस यह दो भेद होते हैं। दे० 'अपीनस'।

पीनियल ग्रन्थि रोग—पीनियल ग्रन्थि के रोग। (अ०) अमराज गुद्दए सनोबरिय्या। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी पीनियल ग्लैण्ड (Diseases of the Pineal gland)।

पीनियल ग्रन्थ्यर्बुद—पीनियल ग्रन्थि का अर्बुद । (अ०) सल्आत गुदद सनोबरिया । (अ०) ट्यूमर ऑफ दी पीनियल ग्लैण्ड (Tumour of the Pineal gland) ।

पुण्डरीक—महाकुष्ठ भेद । सु० । दे० "महाकुष्ठ" ।

पुत्रघ्नी योनि—योनिव्यापत् विशेष । सु० । च० । जातघ्नी । वा०; शार्ङ्ग० । दे० 'योनिव्यापत्' ।

पुरःसृत नेत्रगोलक—आँख के ढेले का बाहर को उभर आना । (अ०) जुहूज, जुहूजुल्ऐन । (अं०) एक्सॉफ्थैल्मॉस (Exophthalmos), प्रॉप्टोसिस (Proptosis) । दे० 'बहिर्नेत्र गलगण्ड' ।

पुरीष(ज)कृच्छ्र—मल की कृच्छ्रता । थोड़ा-थोड़ा मल आना ।

पुरीषक्षय—मल की क्षीणता (कमी) । सु० ।

पुरीषज कृमि—क्रिमिभेद । दे० 'क्रिमि' ।

पुरीषजन्य शूल—मलसंचयजनित शूल । (उ०) वुराजो कुलज । (अ०) कुलञ्ज सुफ्ली । (अं०) स्टरकोरल कॉलिक (Stercoral colic) ।

पुरीषविघातज उदावर्त—दे० 'पुरीषावरोधज उदावर्त' ।

पुरीष वृद्धि—मल की अति वृद्धि । सु० ।

पुरीषावरोधज उदावर्त—मल का वेग रोकने से उत्पन्न हुआ उदावर्त रोग । दे० 'उदावर्त' ।

पुष्करिका—शूकदोष । सु० ।

पूतना—ग्रहजुष्ट बालरोग ।

पूतिकर्ण—कान की दुर्गन्ध, पूतिकर्णक । (अ०) वरमुल् उज्न मुज्मिना । (अं०) फीटिड डिस्चार्जेज फ्रॉम दि इअर (Fœtid discharges from the ear), क्रॉनिक ओटायटीज मीडिया (Chronic Ot itis Media) ।

पूतिगन्धि चिरकालीन नासास्राव—पूतिनस्य । दे० 'पूतिनस्य' ।

पूतिनस्य—मुख और नाक से दुर्गन्ध (बदबू) आना । पूतिनास । सु । (सं०) पूतिगन्धि चिरकालीन नासास्राव । (अ०) बख़रुल् अन्फ, फोनस (पीनस का अरबीकृत) । (अं०) ओज़ीना (Ozæna) ।

पूतिविष—सड़े-गले पदार्थों के विष । (Ptomain Poisons) ।

पूय—पीप । (अ०) रीम, कैह, मिद्दा । (अं०) पस (Pus) ।

भेद—१. तीक्ष्ण-तेज पीप। (अ०) मिद्दा हिर्रीफा। (अं०) इकोरस पस (Ichorous Pus) और २. नील-(अ०) मिद्दा जरक़ा। (अं०) ब्ल्यू पस (Blue Pus)।

पूयजन्य ज्वर—(अ०) हुम्मा सदीदिय्या। (अं०) पुरुलंट फीवर (Purulent fever)।

पूयदन्त—दे० 'दन्तवेष्टक'।

पूयभवन—पाक। पाकविधि। किसी स्थान में पीप बनना। (अ०) तकय्युह। (अं०) सप्प्यूरेशन ((Suppuration)।

पूयभवन, सार्वदिक—सदा (अविराम) पीप बनना। (अ०) तकय्युह दाइम। (अं०) पर्सिस्टेंट सप्प्यूरेशन ((Persistent Suppuration)।

पूयमय फुप्फुसशोथ—दूषित फुप्फुस शोथ। (अ०) वरम शुश अफ़नी, जातुरिया अफ़ूनिया। (अं०) सेप्टिक न्युमोनिया (Septic Pneumonia)।

पूयमयता—खून का पीपदार होना, रक्त में पूय का प्रविष्ट हो जाना, पूयसंचार पूयमयावस्था। (अ०) तकय्युहुद्दम। (अं०) पाईमिया (Pyaemia)।

पूयमय वृक्क—(अं०) पायोनेफ्रोसिस (Pyonephrosis)।

पूयमेह—(१) औपसर्गिक पूयमेह, सूजाक। अ०) क़हां मजरलबोल, तअकीबा। दे० 'औपसर्गिक पूयमेह'। (२) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र में पूय उपस्थित होता है। (अं०) पायूरिआ (Pyuria)।

पूयरक्त--दे० "पूयशोणित"।

पूयवमन—पीप की कै (वमन)। वमन में पीप आना। (अ०) क़ैउल् मिद्दा। (अं०) पस वॉमिट (Pus Vomit)।

पूयशुक्रता—पूय के समान शुक्र निकलना। (अं०) पायोस्पर्मिया (Pyospermia)।

पूयशोणित—नासागतरोग जिसमें नाक से रक्तमिश्रित पूय स्रवता है। पूयरक्त। सु०। दोषज और आगन्तुज (अभिघातज) भेद से यह दो प्रकार का होता है।

पूयष्ठीवन—पीप थूकना। सु० (अ०) नफ्युल् मिद्दा। (अं०) पायोप्टिसिस (Pyoptysis)।

पूयस्राव—नेत्रसंधिगतरोगों में से नेत्रस्राव रोग का एक भेद। यह कनीनिकासंधिगत, त्रिदोषज एवं असाध्य है। सु०। मा० नि०। पूयास्राव।

पूयालस—एक नेत्र (कनीनिका) संधिगत तोदान्वित पक्वशोथ जो दुर्गन्धित पूय को बहाता (स्रवित करता) है। मा०। नि०।

पूयोरस—छाती (वक्ष) के भीतर पूय संचित हो जाना। पूयवक्ष। (अ०) तकय्युह सदर, इह्तिकानुल्मिद्दा फिस्सद्र। (अं०) एम्पायइमा (Empyema)।

पूर्ण अंधता—पूरा अंधापन। (अं०) अमॉरोसिस (Amaurosis)।

पूर्ण (वंक्षणी) आन्त्रवृद्धि—(अ०) फतकुल् उंबिय्या कामिल। (अं०) कम्प्लीट हर्निया (Complete hernia)।

पूर्ण गर्भपात—गर्भपातका एक भेद। दे० 'गर्भपात'।

पूर्ण निद्रा—गहरी निद्रा। नौम फाजिल।

पूर्ण भग्न—अस्थिभग्न का एक भेद जिसमें पूरी हड्डी टूट जाती है। जैसे—अतिपातित। (अ०) कस्र कामिल। (अं०) कॅम्प्लीट फ्रॅक्चर (Complete fracture)।

पूर्णभग्न प्रकार—पूर्णभग्न के भेद (प्रकार)—१. व्यत्यस्त, २. तिर्यक्, ३. अनुदैर्घ्य, ४. चूर्णित, ५. मज्जानुगत, ६. पिच्चित और ७. बहुभग्न।

पूर्णभग्न विकार—पूर्णभग्न के विकार। १. वक्र, २. अवनत, ३. पाटित और स्फुटित (द्विधाभूत या विदीर्ण) और ४. उपास्थि भग्न।

पूर्वी व्रण—लाहौरी फोड़ा। आलमगीरी फोड़ा। (अ०) बल्ख्य्या, कुरूह शर्किय्या, बुसूर शर्किय्या, दमामील शर्किय्या। (अं०) ओरिएण्टल सोर (Oriental sore)। (ले०) फ्यूरंक्यूलोसिस ओरिएण्टलिस (Furunculosis Orientalis)।

पृथुक हृद्यन्त्र व्याधि—हृत्पेशीकी स्थूलता। दे० "हृद्यन्त्ररोग"।

पेश्यर्बुद—मांसार्बुद। (अं०) मायोमा (Myoma)।

पैत्तिक रक्तस्राव—वह अवस्था जिसमें मनुष्यकी रक्तवाहिनियों से सहज ही रक्तस्राव जारी हो जाता है। रक्तपित्त रोग का एक भेद। (अ०) इस्तेदाद नज्फ। (अं०) हीमोफायलिआ (Haemophilia)।

पैत्तिकशूल—शूलरोगका एक भेद। यकृदश्मरी और पित्ताशयस्थ अश्मरीके

कारण यकृत् आदि में होने वाला शूल। (अ०) कलंज सफरावी। बिलियस वा बिलिअरी कॉलिक (Bilious or Biliary Colic)।

पोथकी—एक वर्त्मगतरोग जिसमें पलक के भीतर स्रावयुक्त, कण्डूयुक्त, गौरवान्वित रक्तसर्षप के समान और पीड़ावाली पिड़काएँ होती हैं। मा० नि०। (हिं०) कुकरे, कुकुरो (घोबा), रोहे, कुथुआ। (चीनी) लिआनशेंग फेंगलिने (नेत्रच्छद के रेती के कण)। (अ०) जबुंल्ऐन, हिक्कुल्ऐन, रमद हुबैबी, जबुंल् अज्फान। (अं०) ट्रैकोमा (Trachoma), ब्लेयर आईज (Blare eyes), ग्रेन्यूलर लिड्स (Granular lids), ग्रेन्यूलेशन (Granulation = पपोटों के कुकरे या रोहे), ग्रेन्यूलर कञ्जङ्क्टिवायटीज (Granular Conjunctivitis)।

पोषणदोष—शरीर पोषण विकार। (अ०) सूए तग्जिया। (अं०) माल न्यूट्रिशन (Mal nutrition)।

प्रकाश त्रास—प्रकाशसे डरना। प्रकाशासहिष्णुता। (अ०) खौफुन्नूर। (अं०) फोटोफोबिया (Photophobia)।

प्रकृतिवैशिष्ट्यजन्य मूर्च्छा—प्रकृति की विशेषता के कारण उत्पन्न हुई मूर्च्छा।

प्रकोप—संक्षोभ, प्रक्षोभ, क्षोभ। (अ०) हैजान, तहय्युज, लज्अ। (फा०) शोजिश, खराश। (अं०) इरिटेशन (Irritation)।

प्रकोपज वृद्धि—घनवृद्धि का एक भेद। जैसे—कुरण्ड प्रकोप।

प्रक्लिन्नवर्त्म—नेत्रवर्त्मगतरोग विशेष। यह अक्लिन्नवर्त्म की दूसरी अवस्था है। इसमें मनुष्य का वर्त्म (पलक) अल्पपीड़ावाला, बाहर से शोथयुक्त और भीतर से अत्यन्त आर्द्र होता है। मा० नि०।

प्रगतिशीलमांसक्षय—(अ०) हुजाल अजली मुतकद्दम। (अं०) प्रोग्रेसिव्ह मस्क्युलर अट्रोफी (Progressive muscular atrophy)।

प्रजागरण विकार—वैकारिक प्रजागरण। अनिद्रा रोगका एक प्रकार। (फा०) बेख्वाबी। (अ०) मर्ज बेदारी। (अं०) विजिलंस (Vigilance), पर विजलियम (Per Viglium)।

प्रणाद—एक प्रकार का कर्णरोग। कर्णनाद। कान में तरह-तरह के शब्द

सुनाई देना। कान बजना। मा० नि०। (अ०) तनीन, तनीनुल् उज्नैन, दवी, दविय्युर्रीह् (हवा की सनसनाहट)। (अं०) टिन्नायटिस (Tinnitus), टिन्नायटिस ऑरियम् (Tinnitis Aurium), नॉयजेज इन दि इअर (Noises in the ear)।

प्रणालीय प्रतिश्याय—प्रतिश्याय का एक भेद। (अ०) नज्ला शोअ़-बिय्या, सुआल शदीद। (अं०) ब्रॉकोरिया (Bronchorrhœa), ब्रॉकियल कॅटार (Bronchial catarrh), ॲक्यूट ब्रॉकाइटिस (Acute Bronchitis)। दे० 'प्रतिश्याय'।

प्रणालीय फुफ्फुस शोथ—पसली चलना। डब्बा। (अ०) जातुर्रिया शोअ़बिय्या। (अं०) ब्रॉकोन्यूमोनिया (Broncho-pneumonia)। इसके मुख्य और गौण यह दो भेद हैं।

प्रतमक—तमक श्वासभेद का एक प्रकार।

प्रतिजरायुज रक्तग्रन्थि—गर्भाशय के पिछले हिस्से की रसोली। (अ०) सल्अ़ा दम्मिय्या रहमिया मुवख्खरा। (अं०) रिट्रोयूटराइन हीमाटोसील (Retrouterine Hæmatocele)।

प्रतितूनी—संचरण-दिशा के अनुसार किये हुए शूलरोग का वह भेद जिसका रूख ऊपर को होता है, जैसा कि कभी-कभी आन्त्रशूल में देखा जाता है। सुश्रुत के अनुसार गुद और उपस्थ (भग और शिश्न) से उठी हुई वही वेदना जब उलटी (ऊपर को) गमन करती हुई वेगों से पक्वाशय (और मूत्राशय) में पहुँचती है, तब उसे प्रतितूनी कहते हैं। (सु० नि० अ० १)। दे० "तूनी"। कोई-कोई इसे हेपैटिक कॉलिक (Hepatic Colic) या बिलिअरी कॉलिक (Biliary Colic) लिखते हैं।

प्रतिनाह—एक प्रकार का कर्णरोग। (अ०) सुद्दतुल् उज्न।

प्रतिलोम क्षय—क्षय का वह भेद जिसमें अति मैथुन करने वाले मनुष्य के शुक्र क्षीण हो जाने के अनन्तर पूर्ववर्ती सभी धातुएँ क्षीण हो जाती हैं, तदनु मनुष्य शोष (राजयक्ष्मा) रोग से ग्रस्त हो जाता है।

प्रतिशीतता—बार-बार सर्दी लगना। (अं०) रिपीटेड राइगर्स (Repeated Rigors)।

प्रतिश्याय—नासागत रोग विशेष। सु०। च०। सरदी लगना। ठंढ

लगना। (अ०) जुकाम। (फा०) चाइश, चाईदगी, हवाअदगी। (अं०) कोल्ड (Cold), कोल्ड इन दि हेड या नोज (Cold in the head or nose), कोराइज़ा (Coryza), रेना (Rhena)।

वक्तव्य—मस्तिष्कगत (शिरोगत) मलों के कण्ठ या सीने की तरफ उतरने को यूनानी वैद्यक में नजला। (अ०) या रेजिश (फा०) कहते हैं। अँगरेजी में इसे कॅटार (Catarrh) कहते हैं। मस्तिष्कगत मलों का नाक की ओर गिरने (नाक की राह श्लेष्मल द्रवों के बहने) को यूनानी वैद्यक में जुकाम और आयुर्वेद में प्रतिश्याय कहते हैं। आयुर्वेद में यूनानी जुकाम और नजला दोनों के लिये प्रतिश्याय शब्द का सामान्यतया व्यवहार होता है। कोई-कोई नजला के लिए 'प्रसेक' शब्द का व्यवहार भी करते हैं। **भेद**—वातज, कफज, पित्तज, रक्तज, सन्निपातज और दुष्टप्रतिश्याय (बिगड़ा हुआ प्रतिश्याय। प्रतिश्यायों की अवस्था विशेष) तथा कृमियुक्त प्रतिश्याय (क्रिमिज शिरोरोग के लक्षणयुक्त)।

प्रतिश्याय जन्य अतिसार—प्रतिश्याय (नजला) से होने वाला अतिसार। (अ०) इसहाल नजलावी (नज्ली)। (अ०) कॅटारल डायरिया (Catarrhal diarrhœa)।

प्रतिश्यायजन्य कामला—प्रतिश्याय से उत्पन्न हुआ कामला रोग। (अ०) यरकान नज्लावी। (अं०) कॅटार्हल जॉण्डिस (Catarrhal jaundice)।

प्रतिश्यायजन्य शिरोशूल—प्रतिश्यायके कारण उत्पन्न हुआ शिरोशूल। (अ०) सुदाअ नज्ली। (अं०) कॅटारहल हेडेक (Catarrhal headache)।

प्रतिश्याय ज्वर—(१) नजला का बुखार। (अ०) हुम्मा नजलिय्या। (फा०) तप नजली। (अं०) कॅटार्हल फीवर (Catarrhal fever)। (२) तृणपुष्पाख्य ज्वर।

प्रतिहारिणी सिरागत पूय—प्रतिहारिणी सिरा में पीप पड़ जाना। (अ०) तकय्युह बाबुल्कबिद। (अं०) पोर्टल पायमिया (Portal Pyæmia)।

प्रतिहारिणी सिरागत रक्तस्कंदन—प्रतिहारिणी सिरा में रक्त जम जाना। (अ०) सुद्दए बाबुल्कबिद। (अं०) पोर्टल थ्रॉम्बोसिस (Portal thrombosis)।

प्रतिहारिणी सिरावरोधजन्य जलोदर—प्रतिहारिणी सिरा में अवरोध होने के कारण उत्पन्न हुआ जलोदर रोग।

प्रतिहारिणी-सिरा-शोथ—प्रतिहारिणी सिरा की सूजन। (अ०) इल्तिहाब बाबुल् कबिद, वरम बाबुल् कबिद। (अं०) इन्फ्लमेशन ऑफ दि पोर्टल वेन (Inflammation of the Portal vein), पायलेफ्लेबायटिस (Pylephlebitis)।

प्रतोदकृमि—चाबुक या कोड़े की तरह का कृमि। (अं०) ह्विप वर्म (Whip worm)। (ले०) ट्रिकोकेफॅलस डिस्पार (Tricocephalus dispar), ट्रिच्यूरिस ट्रिच्यूरा (Trichuris Trichura)।

प्रतोद कृमिरोग—प्रतोदकृमि का उपसर्ग आन्त्र में होने से उत्पन्न हुआ विकार। (अ०) ह्विपवर्म डिजीज (Whipworm disease), ट्रिच्यूरिआसिस (Trichuriasis)।

प्रत्यक्ष आघात—(अ०) जर्ब वासिल, जराहत वासिला। (अं०) डायरेक्ट इंजरी (Direct Injury)।

प्रत्यक्षहृद्भेद—(अं०) डायरेक्ट हार्ट फेल्योर (Direct heartfailure)।

प्रत्यष्ठीला—एक प्रकार की वात व्याधि। पेट में तिरछी उठी हुई, अधोवायु मल और मूत्र को रोकने वाली (और विशेष करके) पीड़ा देने वाली वाताष्ठीला ग्रन्थि को 'प्रत्यष्ठीला' कहते हैं। (सु० नि० अ० १)। वाताष्ठीला में वेदना उत्पन्न होने पर उसे 'प्रत्यष्ठीला' कहते हैं (दे० "वाताष्ठीला")। चरक और वाग्भट में इसका उल्लेख नहीं मिलता। यह गुदनालिका या प्रोस्टेट का अर्बुद (Cancer of the rectum or Prostate) हो सकता है।

प्रत्याध्मान—आमाशय से उठी हुई और कफावृत वातजन्य वह आध्मान-व्याधि जिसमें छाती के दोनों पार्श्व और हृदयविभाग पीड़ा से विरहित होते हैं। सु०। यह आमाशय में वायु (Gas) संचय होने से होता है। इसे गॅस्ट्रोटिम्पाना-इटोज (Gastro-tympanites) कहते हैं। दे० 'आध्मान'।

प्रत्यपरा रक्तसंचय—(अं०) रेट्रो-प्लेसेंटल होमाटोमा (Retro-placental hæmatoma)।

प्रत्यावर्तनजनित क्रियाजन्य हृद्भेद—मर्मस्थान पर आघात होने से

सांवेदनिक नाडीसूत्रों के द्वारा उसका परिणाम मस्तिष्कगत हृदय (Cardiac centre) के ऊपर होकर उसके द्वारा हृदय का कार्य बन्द हो जाना। प्रत्यावर्तनजन्य हृद्भेद। (अं०) रिफलेक्स इन्हिबिशन ऑफ दि हार्ट (Reflex inhibition of the heart)।

प्रत्यावर्तन क्रियाजन्य हृदयकार्यावरोध—स्तब्धता। दे० 'स्तब्धता'।

प्रदर—वह आर्तव जो (पूर्वोक्त आर्तव) रक्त लक्षण से भिन्न, अत्यधिक मात्रा में (और) ऋतुकाल से अतिरिक्त काल में प्रवृत्त होता है। सु०। रक्तप्रदर। असृग्दर। दे० "असृग्दर"।

प्रमाददग्ध—दे० 'इतराथादग्ध'।

प्रमेह—एक रोग जिसमें प्रभूत अर्थात् अधिक राशि में और प्रदुष्ट अर्थात् असाधारण पदार्थयुक्त मूत्र (मेहन) जिसमें मनुष्य त्याग करता है। मैला और अधिक मूत्र होना सब प्रमेहों का सामान्य लक्षण है—सामान्य लक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता। (अष्टाङ्गहृदय)। सु०। च०। वा०। (अ०) अमूराज बौल। (अ०) अनोमॅलीज ऑफ यूरिनरी सिक्रीशन (Anomalies of urinary secretion)। **भेद और संख्या**—मूत्रस्थित पदार्थ और उसके वर्ण के अनुसार उसके प्रकार किये गये हैं। प्रमेह के मुख्य यह तीन भेद हैं—१. कफप्रमेह, २. पित्तप्रमेह और ३. वातप्रमेह। वि० दे० 'पित्तज प्रमेह' और 'वातज प्रमेह'।

प्रमेहपिड़का—मधुमेह या इक्षुमेह और वसामेह के कारण उत्पन्न हुई पिड़का। इसमे जालसदृश कई सूक्ष्म छेद होते हैं; क्योंकि एक पिड़का कई सूक्ष्म फुन्सियों से बनती है। यह पिड़का प्रायः ग्रीवापश्चाद्भाग, पीठ, अंस, चूतड़, होंठ या चेहरे पर होती है। इसमें दाह, पीड़ा, रक्तिमा बहुत होती है और जल्दी फैलती है। पिड़का (सु०)। (हि०) राजफोड़ा। अदीठ। (फा०) शबे चिराग, हजार चश्मा, जहाक। (अ०) बुसूर कफा, याकूत अह्मर, हमरा याकूतिया। (अं०) कार्बंकल (Carbuncle)। **भेद**—लक्षणों के अनुसार सुश्रुत ने इसके यह दस भेद किये हैं—१ शराविका, २ सर्षपिका, ३ कच्छपिका, ४ जालिनी, ५ विनता, ६ पुत्रिणी, ७ मसूरिका, ८ अलजी, ९ विदारिका और १० विद्रधिका। परन्तु चरक में इसके केवल सात भेद वर्णन किये हैं और भोजने नौ भेद वर्णन किये हैं। इसके इससे भी अधिक प्रकार हो सकते हैं। वास्तव में प्रमेहपिड़का एक विकार है परन्तु लक्षणों के अनुसार इसके उपर्युक्त

भेद और दोषों के अनुसार वातपिड़का, पित्तपिड़का और कफपिड़का प्रभृति भेद हो सकते हैं।

प्रलय—उत्तरोत्तर क्षीणता। (Progressive failure of the body functions)।

प्रलाप—असम्बद्ध भाषण, बकवास करना, बकना, बहकना, बर्राना। (उ०) ऊल-फूल (All fool) बकना। (अ०) हजयान, हजी। (अं०) डेलीरियम (Delerium)।

प्रलापक ज्वर—एक प्रकार का ज्वर। (अं०) हुम्मा, तैफूसिया, हुम्मा मुअस्कर, हुम्मा मुत्बिका मुतजाइदा, हुम्मा हजयानिया, मुह्रिका दिमागी। (अं०) टायफस फीवर (Typhus fever)।

प्रलापक ज्वर, कामलाजन्य—कामलाजन्य प्रलापक ज्वर। (अ०) हुम्मा हजयानिया यर्कानिया। (अं०) टायफस इक्टेरॉइडीस (Typhus Icteroides)।

प्रलापमय उन्माद—वह उन्माद जिसमें रोगी अंट-संट बकता है। (अ०) जनून हजियानी, सबारा। (अं०) डेलीरिअस मेनिया (Delirious mania)।

प्रलेपक ज्वर—एक प्रकार का ज्वर जो सदा रहता, फिर भी विषम कहाता और शोष रोगियों को होता है। (अ०) हुम्मा दिक, हुम्मा उज्जिय्या। (फा०) तपे दिक, तपे कुह्ना। (अं०) हेक्टिक फीवर (Hectic Fever)।

प्रवाहण—(१) विशेष जोर लगाकर कुंथना, मलमूत्रत्याग में बलप्रयोग (कुंथन) करना, कुंथन, वेगोदीरण। (हिं०) कूँथना। काँखना। (अ०) जहोर। (अं०) स्ट्रेनिंग (Straining), बेयरिंग डाउन (Bearing down)। (२) गर्भनिष्कासन के लिए उत्पन्न हुई प्रसववेदना के समय प्रवाहण या निकुंथन (Bearing-down efforts)।

प्रवाहिका—अतिसार का एक रोग जिसमें प्रकुपित वायु प्रवाहण से अहितभोजी मनुष्य में संचित विष्टायुक्त कफ को गुदमार्ग से बार-बार थोड़ा-थोड़ा निकालता है। वा प्रकुपित वायु प्रवाहणशील अहिताशी मनुष्य में संचित मलयुक्त कफ को गुदमार्ग से थोड़ा थोड़ा करके बहुत बार निकालता है। मा० नि०। इसमें दस्त पतला होता ही नहीं और केवल कफ ही सरता है। विस्रंसी (भोजादि)। अन्तर्ग्रन्थि (पराशर)। निर्झार का (हारीत)। (अ०) जहीर,

जूसन्तारिया। (फा०) कनाक। (उ०) मरोड़, पेचिस। (अं०) डिसेंटरी (Dysentery)।

भेद—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और रक्तज।

प्रसवकालीन उपद्रव—प्रसूति के समय के उपद्रव। प्रसूति के पूर्व और पश्चात् होने वाले उपद्रव। सूतिका रोग।

प्रसवजन्य अत्यधिक रक्तस्राव—प्रसवोत्तर रक्तस्रावाधिक्य। (अ०) कसरते नफास, नज्फ नफासी। (अं०) प्योरपेरल हीमोरेज (Puerperal Hæmorrhage)।

प्रसवजन्य अधिक पीड़ा—प्रसव के कारण होने वाली अधिक वेदना।

प्रसवजात वातरोग—आमवात। गठिया।

प्रसवपूर्व गर्भनिःसारक वेदना—दे० 'प्रसव वेदना'।

प्रसवपूर्व रक्तस्राव—प्रसव से पूर्व होने वाला रक्तस्राव।

प्रसव वेदना—प्रसवपूर्व गर्भनिःसारक वेदना, आवी, प्रसवपीड़ा, जनने का दर्द। (अ०) मुखास। (अं०) लेबर पेन्स (Labour pains)।

प्रसव वेदना, मिथ्या—दे० 'मिथ्यावी'।

प्रसवशोणितस्राव—प्रसवोत्तर दोषशोणितस्राव।

प्रसवोत्तर गर्भदोषनिःसारक वेदना—प्रसवोत्तर वेदना। मक्कल। (अं०) आफ्टर पेनस (After-pains)।

प्रसवोत्तर रक्तस्राव—प्रसव के बाद होने वाला रक्तस्राव। (अ०) नज्फ बाद बिलादत, नज्फुद्म बाद बिलादत, कसरत नफास, नज्फ नफासी। (अं०) पोस्ट-पार्टम् हीमरेज (Post Partum-hæmorrhage)।

प्रसवोत्तर वेदना—प्रसवोत्तर गर्भदोषनिःसारक वेदना। मक्कल (सु०)। मर्कल (अ० सं०)। (अ०) खवालिफ, आलाम बाद विलादत। (अं०) आफ्टर पेन्स (After-pains)।

प्रसवोत्तर वेदना, मिथ्या—दे० 'मिथ्या प्रसवोत्तर वेदना'।

प्रसवोन्माद—प्रसूता स्त्रियों में उपसर्ग के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ उन्माद, परसूत का उन्माद, सूतिकोन्माद। (अ०) जनून नेफासी। (अं०) प्योरपरल इन्सेनिटी (मेनिया) (Puerperal insanity) (Mania)।

प्रसुप्तता, प्रसुप्ति—स्वाप । सुन्नता । दे० 'सुन्नता' ।

प्रसूतज विद्रधि—दे० 'मक्कलविद्रधि' ।

प्रसूतज बुद्धिभ्रंश—(अं०) हुमक नेफासी । (अं०) प्योरपरल डिमेंशिया (Puerperal dementia) ।

प्रसूतजापतानक—सूतिकाक्षेप ।

प्रसूतयोनिदोषज ज्वर—(संप्राप्तिदर्शक नाम) दे० 'सूतिका ज्वर' ।

प्रसूतस्त्रीजात (मक्कल संज्ञक) रक्तज विद्रधि—(अं०) प्योरपरल एण्डो मेट्रायटीज (Puerperal endometritis), प्यूट्रिड एण्डोमेट्रायटीज (Putrid endometritis) ।

प्रसूतजोन्माद—दे० 'प्रसवोन्माद' ।

प्रसूति ज्वर—दे० 'सूतिका ज्वर' ।

प्रसेकजन्य नेत्राभिष्यंद—श्लेष्मप्रसेकी नेत्राभिष्यंद, प्रातिश्यायिक नेत्राभिष्यंद । (अ०) रमद नजली । (अं०) कॅटार्हल ऑफ्थॅल्मिआ (Catarrhal ophthalmia) ।

प्रसेक—नजला । (सु०) । (अ०) नजला । (फा०) रेजिश । (अं०) कॅटारहल कन्डिशन्स (Catarrhal Conditions), कटार (Catarrh)।

प्रसेकजन्य नेत्राभिष्यंद—प्रातिश्यायिक नेत्राभिष्यंद ।

प्रसेक, श्लेष्म—दे० 'श्लेष्म प्रसेक' ।

प्रस्तारि अर्म—नेत्रश्वेतमागगत रोग का एक भेद । एक प्रकार का अर्म (नीलिमा लिये हुए रक्तवर्ण का मांस-प्रचय) जो पतला, विस्तृत, त्रिदोषजन्य, साध्य एवं छेद्य है ।

प्रस्रंसमान गर्भ—अपरिहार्य गर्भ । दे० 'गर्भपात' ।

प्रस्रंसिनी योनि—योनिभ्रंश, योनिपरिसर्पण (सु०) । योनिव्यापत् विशेष ।

प्रकृत अजीर्ण—प्रति दिन होने वाला अजीर्ण ।

प्राकृत ज्वर—एक प्रकार का ज्वर । च० ।

प्राक्चरणा—योनिव्यापत् विशेष । सु० । वा० ।

प्रातिश्यायिक नेत्राभिष्यंद—श्लेष्मप्रसेकी नेत्राभिष्यंद । प्रसेकजन्य

नेत्राभिष्यंद । (अ०) रमद नजली । (अं०) कॅटारल ऑफ्थल्मिआ (Catarrhal ophthalmia) ।

प्रोष्टग्रन्थिवृद्धि—अष्ठीला । अष्ठीलावृद्धि । दे० 'अष्ठीला' ।

प्रोष्टग्रन्थिशोथ—दे० 'अष्ठीलाशोथ' ।

प्रोष्ठभेद—होंठ फटना । (अ०) शक्कुश्शफतैन । (अं०) क्रॅक्स ऑफ लिप्स (Cracks of lips) ।

प्लीहजन्य श्वेतरक्त—प्लीहाविकार के कारण रक्त में श्वेत कणों का बढ़ जाना । (अ०) दम अब्यज तिहाली, अब्याज दम तिहाली । (अं०) स्प्लीनिक ल्यूकीमिया (Splenic Leukæmia), लाइएनलिस ल्यूकीमिया (Lienalis Leukæmia) ।

प्लीह (-हा) मज्जानुग (-गत) श्वेतरक्त—(अ०) दमे अब्यज मुख्खी तिह्ली । (अं०) ल्यूकीमिया स्प्लीनो-मेडुलरी (Leukæmia Spleno-medullary), लाइएनो-मेडुलरी ल्यूकीमिया (Lieno-medullary Leukæmia) ।

प्लीह विद्रधि—प्लीहागत विद्रधि । (अ०) दुबैलतुत्तिहाल । (अं०) स्प्लीनिक ॲबसेस (Splenic abscess) ।

प्लीहारोग—तिल्ली के रोग (बीमारियाँ) । (अ०) अम्राज तिहाल । (अं०) डिजीजेज ऑफ दि स्प्लीन (Diseases of the spleen) ।

प्लीहाक्षय—तिल्ली का छोटा हो जाना । (अ०) सिगर तिहाल । (अं०) अट्रोफी ऑफ दि स्प्लीन (Atrophy of the spleen) ।

प्लीहा दौर्बल्य—तिल्ली का कमजोर हो जाना । (अ०) जोफ तिहाल । (अं०) डल्नेस आफ दि स्प्लीन (Dullness of the spleen) ।

प्लीहाभिवृद्धि, प्लीहावृद्धि—केवल प्लीहा की वृद्धि, तिल्ली का बड़ा होना । (अ०) इजम तिहाल । (अं०) एनलार्जमेंट ऑफ दि स्प्लीन (Enlargement of the spleen), एनलार्जड स्प्लीन (Enalrged spleen) ।

प्लीहार्बुद—तिल्ली की रसौली । (अ०) सलअ तिहालिय्या । (अं०) स्प्लीनोमा (Splenoma) ।

प्लीहाशोथ—तिल्ली की सूजन, उदरोत्सेध । (फा०) सोजिश सपुर्ज,

आमास सपुर्ज। (अ०) इल्तिहाब तिहाल, वरमतिहाल (वरमुत्तिहाल)। (अं०) स्प्लीनाइटिस (Splenitis)।

प्लीहोदर—धीरे-धीरे क्रम से प्लीहा का आकार बढ़ना, पुरातन प्लीहा-वृद्धि। सु०। प्लीहजठर। च०। इसमें यकृद्दाल्युदर का समावेश होता है (दे० यकृद्दाल्युदर)। (अ०) इज्म तिहाल (इजमुत्तिहाल) मुज़्मिन। (अं०) क्रॉनिक एन्लार्जमेंट ऑफ दि स्प्लीन (Chronic enlargement of the spleen), स्प्लीनोमिगैली (Splenomegaly)।

प्लीहोदरीय विरज कामला—रक्तक्षयजन्य कामला की एक अवस्था। (अ०) यरकान मुज़्मिन तिहाली। (अं०) स्प्लीनो मेगॅलिक हीमोलाइटिक जॉन्डिस (Spleenomegalic Hæmolytic Jaundice), अकोल्यूरिक जॉन्डिस (Acholuric Jaundice)।

प्लुष्ट—अग्निदग्ध का एक प्रकार जिसमें त्वचा का वर्ण पलट जाता और झुलस-सा जाता है। सु०। इसी को ही वाग्भट में 'तुत्थ' कहा है। पाश्चात्य शल्यशास्त्र में वर्णित दग्ध की छः अवस्थाओं में प्रथम अवस्था से इसका सादृश्य है।

प्लेग—दे० 'ग्रन्थिक ज्वर'।

प्लैहिक पाण्डुरोग—प्लैहिक रक्तक्षय। (अ०) फ़क़ुद्दम तिहाली, फसादे खून तिहाली। (अं०) स्प्लीनिक अनीमिया (Splenic Anæmia)। दे० 'प्लीहोदर'।

(फ)

फक्क—बच्चों का एक रोग। (काश्यपसंहिता)। अस्थिवक्रता। कोई-कोई सूखा और मसान (गात्रशोष वा पारिगर्भिक) तथा इस (फक्क) को पर्याय समझते हैं। (अ०) कुसाह, दाउल् कुसाह; इअ्विजाजुल इजाम, रियाहुल् अफ्रिसा। (अं०) रीकेट्स (Rickets), रेकायटिस (Rachitis)।

फरीसमूस—एक रोग जिसमें हर समय शिश्नोच्छ्राय होता है; परंतु सहवासेच्छा नहीं होती। (अ०) फरीसमूस, फरयाफीसमूस, तवत्तुर कज़ीब, इन्तिशार दायमी। (अं०) प्रायापिज़्म (Priapism)।

फलकोषघात—वृषणकोषघात। (अ०) इस्तिरखाउस्सफन। (अं०) रिलैक्सेशन ऑफ स्क्रोटम् (Ralaxation of scrotum)।

फालिज—(१) अंगघात । वध । दे० 'घात" । (२) सिर वा चेहरा को छोड़कर शेष आधे अंग का घात । शरीर का दाहिना या बायाँ हिस्सा लम्बाई में सिर को छोड़कर ढीला हो जाना, चेहरे के सिवाय आधे शरीर का घात (फालिज) । दे० 'पक्षघात" ।

फिरङ्ग—गरमी । आतशक । भा० । जीवाणुजन्य उपदंश । (फा०) आतशक, आबलए फिरंग, बादफिरंग, कोफ्त । (अ०) अफरंजी, दाउल् अफरंजी, आतशक हकीकी, अल्खजाल, दाउज्जुहरी, करहा, करहां सुल्बा । (अं०) सिफिलिस (Syphilis), हार्ड शंकर (Hard chancre) । कालस अल्सर (Callous Ulcer) ।

फिरङ्गजन्य मस्तिष्क विकृति—मस्तिष्कगत फिरंग, जैसे टेबीज डॉर्सेलिस ।

फिरङ्गजन्य मुखपाक—*(अ०) कुलाअ आतशकी ।*

फिरङ्गव्रण—फिरङ्गजन्य व्रण, आतशकी जख्म, गरमी का फोड़ा (घाव) । (अ०) कर्हा अफ्रंजिया, कर्हा जुहरिय्या । (अं०) शङ्करॉइड अल्सर (Chanroid ulcer), सिफिलिटिक अल्सर (Syphilitic ulcer) ।

फिरङ्गी कणार्बुद—(अ०) आतशकी सलआ दरनी । (अं०) सिफिलिटिक ग्रान्यूलोमा (Syphilitic granuloma) ।

फिरङ्गी मस्तिष्कविकृति—फिरङ्गजन्य मस्तिष्कविकृति ।

फिरङ्गीय सरलान्त्र संकोच—(अ०) जीक अफरंजी । (अं०) सिफिलिटिक स्ट्रक्चर (Syphilitic Stricture) ।

फिरङ्गीयाभिष्यन्द—फिरङ्गजन्य अभिष्यन्द । (फा०) आशोब चश्म आतशकी । (अ०) रमद अफरंजी । (अं०) सिफिलिटिक कनजङ्क्टिवायटीज (Syphilitic Conjunctivitis) ।

फुफ्फुसगत रक्तस्राव—रक्तष्ठीवन । दे० "रक्तष्ठीवन" ।

फुफ्फुसगत रोग—फेफड़े के रोग । (अ०) अम्राजुस्सद्र, अम्राज रियतैन । (अं०) डिजीजेज ऑफ दि लङ्ग्ज (Diseases of the Lunges) ।

फुफ्फुस विद्रधि—(अ०) दुबैलतुरिया । (अं०) लंग ॲब्सेस (Lung Abscess) ।

फुफ्फुस शोथ—दे० 'श्वसनक ज्वर' ।

फुफ्फुसशोथ ग्रन्थिक ज्वर—फुफ्फुसप्रदाहिक (श्लेष्म प्रदाहिक)

ग्रन्थिक ज्वर (प्लेग) । (अ०) ताऊन रियवी, ताऊन जातुरियवी । (अं०) न्यूमोनिक प्लेग (Pneumonic Plague) ।

फुफ्फुस सिरागतार्बुद—(अं०) पल्मोनरी एम्बोलिज्म (Pulmonary Embolism) ।

फुफ्फुसाभिवृद्धि—फेफड़ों में तन्तुओं का उत्पन्न हो जाना । (अ०) तलय्युफ़ुरिय्या । (अं०) सिरोसिस ऑफ दि लंग्ज (Cirrhosis of the Lungs) ।

फुफ्फुसावरण शोथ—फेफड़े की झिल्ली की सूजन, पार्श्वशूल, पसली का दर्द, पहलू का दर्द । (अ०) जातुज्जनब, वरम गिशाऊरिया । (अं०) प्ल्यूराइटिस (Pleuritis) । **भेद**—१ **शुष्क**—(अं०) ड्राइ प्ल्यूरिसी (Dry pleurisy) । एक दम शुष्क—Fibrinous Pleurisy । २ **आर्द्र** (तरल)—उरस्तोय । (अ०) खानिका, जातुज्जन्ब । (अं०) प्ल्यूरिसी (Pleurisy) । ३ **पूयमय** और ४ **रक्तमय** ।

फुफ्फुसीय अवसाद—(अ०) बरूदुस्सद्र । (अं०) पल्मोनरी कोलप्स (Pulmonary collapse)' ।

फुफ्फुसीय पार्श्वशूल—(अ०) जातुल्जनबरियवी । (अं०) प्ल्यूरिसी (Pleurisy) ।

फुफ्फुसीय यक्ष्मा—(अ०) सिल रियवी । (अं०) पल्मोनरी थाइसिस (Pulmonary Pthisis) (ट्यूबरक्यूलोसिस) ।

फुफ्फुसीय सन्यास—(अ०) जुमूदुस्सद्र, सकता रियविय्या । (अं०) पल्मोनरी अपोप्लेक्सी (Pulmonary apoplexy) ।

फेनमेह—एक प्रकार का कफज प्रमेह । सु० । झागदार मूत्र । चरक और वाग्भट में इसका उल्लेख नहीं मिलता । (अं०) न्यूमाट्यूरिआ (Pneumaturia) ।

(ब)

बद्—एक मैथुनजन्य व्याधि जिसमें धीरे-धीरे एक तरफ की जंघासे की ग्रन्थियाँ निकल आती हैं । ब्रण (तन्त्रान्तरे) । (हिं०) जंघासा और बगल की सूजी हुई ग्रन्थियाँ (गिल्टियाँ), कक्षा, वंक्षण और कर्णपश्चात् शोथ, बाधी, वघ,

कजराली, लखियारी, मुंडा। (उ०) लिम्फावी दरनी (हबूबी) रसोली। (अ०) वरम मगाबिन, खंरजील, खैरजल, फक्रुद्दम लिम्फावी। (फा०) बागरा, खयाजक। (अं०) क्लाइमेटिक ब्युबो (ब्युबोन) (Climatic Bubo (Bubon), लिम्फेटिक ग्रेन्युलोमा (Lymphatic granuloma) ।

बद्धगुद—गुदावरोध। च०। (अ०) तजीकुल् मक्अद। (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ दि रेक्टम ऑर एनस (Stricture of the rectum or anus)।

बद्धगुदयुक्त—बद्धगुदी।

बद्धगुदी—बद्धगुदरोगी। बद्धगुदयुक्त।

बद्धगुदोदर—एक उदररोग जिसमें मल के समय गंध की उलटी होती है। मलसंचयजन्य उदर। च०। सु०। अ० हृ०। आन्त्रपरिवर्तनज शूल। (Pelvi-rectal constipation or dyschezia)। दे० 'आन्त्रपरिवर्तनज शूल'।

बध—दे० 'घात'।

बधिरमूकता—बहरा और गूँगा होना। (अ०) समम व खरस, समम् व बुकासत, फकदुस्समअ् वत्तकल्लुम। (अं०) डेफडमनेस (Deafdumbness), डेफम्युटिज्म (Deafmutism), सर्डो-म्यूटिटस (Surdo-mutitus)।

बलक्षय—बल का नाश होना। (अ०) जोफ कुव्वा।

बलाजर—रद्दी या खुरदरी त्वचा। (अं०) पेलागरा (Pellagra द्र०)।

बलास—(१) एक कण्ठगत रोग जिसमें कफ-वातजन्य, श्वास और पीड़ायुक्त, मर्मघाती मलशोथ होता है। सु०। (२) बलासग्रथित नामक नेत्रश्वेतभागगत रोग। नेत्र के श्वेत भाग में कांसी के समान आभा (कांति) वाला कठिन और जलबिंदु के समान (उभरा हुआ) रोग। सु०। बलासग्रन्थि (विदेह)। (अ०) तूसा।

बलासग्रथित—नेत्रश्वेतभागगत रोग। सु०। दे० 'बलास (२)'।

बलासग्रन्थि—नेत्रश्वेतभागगत रोग (विदेह)। दे० 'बलास (२)'।

बसन्त रोग—दे० 'मसूरिका'।

बस्तिगत (-स्थ) अश्मरी—मूत्राशयस्थ पथरी। (अ०) हसातुल् मसाना। (अं०) वेसिकल कल्क्यूलस (Vesical calculus), सिस्टोलिथ (Cystolith), स्टोन इन दि ब्लैडर (Stone in the bladder)।

बस्तिवात—(अ०) इस्तिरखाउल् मसाना। (अं०) वेसिकल परालिसिस (Vesical Paralysis)।

बस्तिदोष—मूत्ररोग। मूत्रपिण्ड या वृक्क के विकार। सु०। (Kidney or Urinary disorders)।

बस्ति विद्रधि—(अं०) सिस्टाइटिस (Cystitis), प्रॉस्टेटिक ॲब्सेस (Prostatic abscess)।

बस्तिशोथ—मूत्राशय को सूजन। (फा०) सोजिश मसाना। (अ०) वरमुल् मसाना। (अं०) सिस्टाइटिस (Cystitis)।

बहल वर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग जिसमें रोगी का वर्त्म भाग चारों ओर से त्वचा के समान वर्णवाली एवं स्थिर पिडकाओं से उपचित (व्याप्त) हो जाता है। बहल। बहुलवर्त्म।

बहिरायाम—एक प्रकार का अपतानक जिसमें शरीर पीछे की तरफ अकड़ जाता है। सु०। अन्तरायाम की विपरीत अवस्था में शरीर पीठ की ओर टेढ़ा होता है और उसे **बाह्यायाम** कहते हैं। सं०। कुब्ज। (अ०) कुजाज खल्फी। (अं०) ऑपिस्थोटोनोस (Opisthotonos)।

बहिर्गर्भाशय गर्भपात—वह गर्भपात जिसमें रक्तस्राव कम होता है या नहीं होता तथा वेदना अत्यधिक होती है। दे० 'गर्भपात'।

बहिर्नेत्र गलगण्ड—एक प्रकार का गलगण्ड जिसमें गलग्रन्थि बढ़ती है; आँखें बाहर को निकल आती हैं; पलक बन्द करना मुश्किल होता है; नीचे देखते समय ऊपर के पलक आँखों के साथ नीचे नहीं आते। वह घेघा जिसमें आँख का ढेला उभर आता है। आँखें उभारनेवाला घेघा। पुरःसृतनेत्रीय गलगण्ड। बहिर्नेत्रपूर्वक गलगण्ड। (हि०) ढेंढर निकलना। (अ०) गोतरुल् जुहूज, गोतर जुहूजी, कीला हल्क़ूमिया जुहूजिया। (अं०) एक्सॉफ्थल्मिक गायटर (Exophthalmic Goitre)।

बहिर्मुखी भगन्दर—पाश्चात्य शल्यशास्त्रोक्त भगन्दर का एक भेद। बहिर्मुख भगन्दर जिसका मुख बाहर गुदौष्ठ के पास खुलता है। सु०। (अ०) नवासीर जाहिरी। (अ०) एक्सटर्नल फिस्च्युला (External fistula)।

बहिर्वलित नेत्रच्छद्—(अ०) शत्रा खारजिय्या, इन्कलाबुज्फ्नेल अस्फल। (अं०) एक्ट्रोपियान (Ectropion)।

बहिर्वेग ज्वर—(अ०) हुम्मा इन्फियालूस हुम्मा लैफूरिया ।

बहिःकर्ण विचर्चिका—बाहरी कान में होनेवाली विचर्चिका । (अं०) एक्झेमा ऑफ दी एक्स्टर्नल ईअर (Eczema of the external ear) ।

बहिःपुष्पनिवृत्ति—दे० 'रजोनिवृत्ति' ।

बहुनाडीशोथ—(अ०) इल्तिहाबुल् असब आम या मुतअदद । (अं०) मल्टिपल न्युराइटिस (Multple neuritis) ।

बहुभग्न—काण्डभग्न (पूर्ण भग्न) का एक प्रकार जिसमें हड्डी अनेक स्थानों पर टूट जाती है । (अ०) कस्र मुजाअफ । (अं०) मल्टिपल फ्रैक्चर (Multiple fracture) ।

बहुमूत्र, बहुमूत्रमेह, बहुमेह—मूत्रातिसार । दे० 'उदकमेह' ।

बहुमैथुन—मैथुन की अधिकता, अतिमैथुन । (अ०) कसरत जिमाअ । (अं०) एक्सेसिव्ह कायशन (Excessive coition) ।

बाघी—दे० "बद" ।

बाधिर्य—एक कर्णरोग । बहरापन । सु० । बधिरता, बधिरत्व (अ० ह्०) । अश्रुति / (अ०) बकर, करीगोश, तरश । (अं०) डेफ्नेस (Deafness), लोगोफोसिस (Logophosis) । **भेद**—१ सहज बाधिर्य—पैदायशी (खल्की) बहरापन । (अ०) समम्, बुत्लान समाअत । (अं०) कॉन्जेनिटल डेफ्नेस (Congenital deafness), कोफोसिस (Kophosis) । २ जन्मोत्तर—(अ०) इल्तिसाबी । ३ बिल्कुल बहरापन—(अ०) बकर, करीगोश । (अं०) सरडिटी (Sardity) । ४ ऊँचा सुनना—(फा०) गिरानी गोश । (अ०) सिक्लसमाअत (समअ), नुक्सान समाअत, तर्श । (अं०) पराकुसिस (Paracusis) ।

बाल अङ्गघात—बच्चों की फालिज । (अ०) शललुल् अत्फाल । (अं०) इन्फण्टाइल पारालिसिस (Infantll paralysis) ।

बाल कामला—बालकों का कामला रोग । (काश्यप) । (अ०) यर्कानुल् अत्फाल । (अं०) इन्फण्टाइल् जाँडिस (Infantile Jaundice) ।

बालग्रह—बच्चों का आक्षेप । सु० । उल्बक (अ० सं०) । (हिं०) जमूगा । (अ०) तशन्नुज अत्फाल, कुजाज अत्फाल । (अं०) इन्फण्टाइल

कन्वल्शन्ज (Infantile convulsions), टेटनस इन्फण्टाइल (Tetanus Infantile) ।

बालरोग—बालकों के रोग । (अ०) अम्राजुल् अत्फाल । (अं०) चिल्ड्रेन डिजीजेज (Children diseases) । **भेद**—तालुपात (सु०), महापद्मक, कुकूणक, तुण्डि (सु०), गुदपाक, अहिपूतन (अहिपूतना), अजगल्लिका, पारिगर्भिक, दन्तोद्भेद, तालुकण्टक, नाभितुण्डी, नाभिपाक, नाभिग आन्त्रवृद्धि । **दुष्टस्तन्यजन्य बालरोग**—वातदुष्ट, पित्तदुष्ट, कफदुष्ट, द्वंद्वादिदोषदुष्ट, त्रिदोषदुष्ट । **ग्रहजुष्ट बालरोग** (ग्रहों के नाम से उक्त लक्षणयुक्त भिन्न-भिन्न रोग)—स्कंदग्रहगृहीत, स्कंदापस्मारजुष्ट (गृहीत), शकुनीगृहीत, रेवतीग्रह, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका नैगमेय (ष), संपूर्ण लक्षणों वाला असाध्य ग्रह । शार्ङ्गधरोक्त बालरोग—वातज क्षीरालस (वातदुष्टस्तन्यज), पित्तज, कफज, दन्तोद्भेद, दन्तपात, दन्तशब्द, अकालदन्त, अहिपूतना, मुखपाक, मुखस्राव, गुदपाक, उपशीर्षक, पार्श्वरुग्, तालुकण्टक, विच्छिन्न, पारिगर्भिक, दौर्बल्य, गात्रशोष (बालशोष), शय्यामूत्र, कुकूणक, रोदन, अजगल्लो, क्षीरालसक, शूल (काश्यप), उल्वक (अ० सं०) और कामला (काश्यप) ।

बालशोष—बालकों का सूखा रोग । गात्रशोष ।

बालसन्निपात—बालकों का सन्निपात । (अ०) उताश अत्फाल, वरम अग्शिया दिमाग तिफ्लान । (अं०) इन्फैण्टाइल मेनिन्जाईटिस (Infantile meningitis) ।

बालातिसार—बालकों का अतिसार रोग । (अ०) इसहाल अत्फाल । (अं०) इन्फण्टाइल डायरिया (Infantile Diarrhœa) ।

बालापस्मार—बालरोग विशेष । (सु०) । उल्वक (अ० सं०) । बालग्रह । (हिं०) बच्चों का आक्षेप या मृगी, जमूगा, जमुआ, कुमरा । (अ०) उम्मुस्सिब्यान, उम्मुश्शयातीन, सरउल् अत्फाल, रीहुस्सिब्यान । (अं०) इन्फण्टाइल एपिलेप्सी (Infantile Epilepsy) । दे० 'उल्वक' तथा 'बालग्रह' ।

बालुमाक्षिकज्वर—माक्षिका-दंश-ज्वर । (अ०) हुम्मा जुबाबिया । (अं०) सैण्ड-फ्लाई फीवर (Sand-fly fever) ।

बाहुशोष—एक वातव्याधि । ऍट्रॉफिक पॅरालिसिश (Atrophic paralysis) ।

बाह्यज नेत्र रोग—नेत्र के बाहरी भाग में होने वाले रोग ।

बाह्य विद्रधि—शाखाओं में तथा उक्त गुहात्रय को प्राचीरों में होने वाला विद्रधि ।

बाह्यायाम—दे० "बहिरायाम" ।

बाह्यार्श—दे० 'शुष्कार्श" ।

बिसर्प—दे० "विसर्प" ।

बिसवर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष ।

बीजकोशग्रन्थि—(अं०) ओह्वेरिअन सिस्ट (Ovarian cyst) ।

बीजकोषार्बुद—बीजकोष के अर्बुद । (अ०) सल्आ मबैजी (खु-यर्तुरहम) । (अं०) ओह्वेरिअन ट्यूमर (Ovarian tumour) ।

बीजग्रन्थि-भ्रंश—बीजग्रन्थि (Ovary) का लटक आना । (अ०) सक़ूत खुसयतुरिहम । (अं०) ओह्वेरियन् प्रोलॅप्सिस (Ovarian prolapsis) ।

बीजग्रन्थि शोथ—बीजग्रन्थि की सूजन । (अ०) इल्तिहाब (वरम) खुसयतुरिहम । (अं०) ओह्वेराइटिस (Ovaritis), ऊफोराइटिस (Oophoritis)।

बीजदोषाद्गर्भज क्लैब्य—एक प्रकार का क्लैब्य (नपुंसकत्व) रोग ।

बीजवाहकस्रोतावरोध—बीजवाहिनी नाली का बन्द हो जाना । (अ०) इन्सदाद काजिफ । (अं०) अट्रेसिया ऑफ दि फैलोपियन ट्यूब (Atresia of the Fallopian Tube) ।

बीजवाहिनी शोथ—बीजवाहिनी की सूजन । (अ०) इल्तिहाब काजिफ । (अं०) सॅल्पिनजाइटिस (Salpingitis) ।

बीजोपघातज क्लैब्य—क्लीबरोग विशेष (हृढ०) ।

बुद्धिभ्रंश—बुद्धिविभ्रम । (अ०) इख्तिलात अक्ल (जेहन), खब्त । (फा०) बदहवासी । (अं०) इम्बिसिलिटी (Imbicility) ।

बृषणवृद्धि—दे० "वृषणवृद्धि" ।

बृषणशूल—दे० "वृषण शूल" ।

बेरी-बेरी—वातबलासक नामक रोग । (अं०) (Beri-Beri) ।

बौद्धिक उन्माद—(अ०) जनून अक्ली, मानिया अक्ली । (अं०) इण्टेलेक्चुअल मेनिया (Intellectual mania) ।

ब्रध्न—(१) वृद्धि (वृषणवृद्धि)। च० । दे० "वृद्धि" । (२) एक मैथुनजन्य व्याधि । बद । दे० "बद" ।

ब्रध्नाकार कृमि—कफजकृमि का एक भेद । पृथुब्रध्ननिभा कृमि । (वा०) । स्फीत कृमि । चपटे कृमि । कद्दूदाना । पृथुब्रध्न संस्थाना (च०) । ये चपटे, लम्बे और पर्वयुक्त होते हैं । (अ०) हब्बुल्कर्अ । (अं०) टेपवर्म (Tape worm) । (ले०) टीनिया (Tœnia) ।

ब्रध्नाकारकृमिरोग—स्फीतकृमि रोग । स्फीतकृमियों के आन्त्र में निवास करने से होनेवाले रोग । (अं०) टीनिआसिस (Tœniasis) ।

ब्राइट व्याधि—ब्राइट का रोग । (अ०) वरम गुर्दा पाही । (अं०) ब्राइट्स डिजीज (Bright's disease) ।

(भ)

भक्तद्वेष—अन्नाभिनन्दन । अरोचक रोग भेद ।

भगकण्डू—गुह्यांग की खुजली । (अ०) हिक्कतुल्फर्ज । (अं०) वूल्वर प्रूराइटिस (Vulver Pruritis) ।

भगविदार—गुह्यांग का विदार (शिगाफ) । (अ०) शुकाकुलफर्ज । (अं०) लेशरेशन ऑफ दि वूल्वा (Laceration of the vulva) ।

भगनासा प्रहर्षण, भगनासोच्छ्राय—एक रोग जिसमें स्त्रियों की भगशिश्निका पुरुषों के फरीसमूल व्याधि के तुल्य सदैव उच्छ्राययुक्त रहती है । कामच्छत्रोच्छ्राय, मदनातपत्रोच्छ्राय, भगशिश्निकोत्थापन । (अ०) नुऊज वज्र, (अं०) इरेक्शन ऑफ दि क्लिटोरिस (Erection of the clitoris) ।

भगन्दर—भग, गुदा और बस्तिप्रदेश का नासूर । इन तीनो स्थानों में होने वाले विकार को भगन्दर ही कहते हैं । (अ०) नवासीर, नवासीर मकअद, नासूर मकअद । (अं०) एनल फिस्चुला (Anal fistula), फिस्चुला इन एनो (Fistula-In-ano) । **भेद**—सुश्रुत में इसके निम्न पाँच भेद स्वीकार किये हैं—१. वात से **शतपोनक**, २. पित्त से **उष्ट्रग्रीव**, ३. कफ से **परिस्रावी**, ४. सन्निपात से **शम्बूक** और ५. आगन्तु से **उन्मार्गी** । वाग्भट (अष्टाङ्ग संग्रह) में इनके अतिरिक्त निम्न तीन भेद अधिक माने हैं—६. **परिक्षेपी** (वातपित्तज), ७. **ऋजु** (वातकफज) और ८. **अर्शोभगन्दर** (वकफपित्तज) । पाश्चात्य शल्य-

शास्त्र में द्विमुखी, अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी भगन्दर के यह तीन भेद किये हैं। अन्तर्मुख और बहिर्मुख भेद सुश्रुत में भी आगे भगन्दर-चिकित्सा के समय बतलाये गये हैं।

भगन्दर पिडका—वह पिडका जो गुदा से दो अङ्गुल दूरी पर हो, गहरी हो, पीड़ा और ज्वर से युक्त हो वह उपर्युक्त (सादी पिडका के) लक्षणों से विपरीत होने के कारण भगन्दरपिडका समझनी चाहिये। यह जब तक अपक्व है तब तक 'पिडका' और पकने (से 'फूट जाने') पर भगन्दर कहे जाते हैं। सु.।

भगन्दरेतर पिडका—वह पिडका जो गुदा के अन्तिम प्रदेश में अल्प पीडा शोथ से युक्त होती है और शीघ्र शान्त हो (बैठ) जाती है वह भगन्दर से अन्य (प्रकार की अर्थात् सादी) फुन्सी समझनी चाहिये। सु.।

भगशोथ—भग की सूजन। (फा०) वरम शर्मगाह। (अ०) वरमुल् (वरम) फर्ज। (अं०) वुल्वाइटिस (Vulvitis)।

भगस्थ लिङ्गार्श—गुह्यांगार्बुद। एक प्रकार की भगस्थ रसौली। (अ०) सल्आ लुकमिया इस्तहयाइय्या। (अं०) प्युडेंडल कॉंडिलोमा (Pudendal Condyloma)। "दे० लिङ्गार्श"।

भग्न—हड्डी टूटना। भङ्ग। अस्थिभग्न (भङ्ग)। (अ०) कस्र। (अ०) फ्क्चर (Fracture)।

भेद—प्रधान २ भेद—(१) सन्धिमुक्त (सन्धिविश्लेष) और (२) काण्ड भग्न (अस्थिकाण्डभग्न)।

संधिमुक्त भेद—१. उत्पिष्ट, २. विश्लिष्ट, ३. निर्वर्तित, ४ अवक्षिप्त, ५. अतिक्षिप्त और ६. तिर्यक्क्षिप्त। यह सुश्रुतोक्त भेद है। इन प्रकारों के अतिरिक्त सव्रण (Open) विश्लेष और अव्रण (Closed) विश्लेष ऐसे भी दो भेद पाश्चात्य वैद्यक में किये जाते हैं। मधुकोषव्याख्या में श्रीकण्ठदत्त ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है—द्विविधं हि भग्नं सव्रणमव्रणं च ।। **काण्डभग्न के प्रकार**—१. कर्कटक, २. अश्वकर्ण, ३. चूर्णित, ४. पिच्चित, ५. अस्थ्यच्छल्लित, ६. कांडभग्न, ७. मज्जानुगत, ८. अतिपातित, ९. वक्र, १०. छिन्न, ११. पाटित और १२. स्फुटित। सुश्रुत ने संक्षेप से और विशेष महत्व के ये द्वादश प्रकार वर्णन किये हैं, परन्तु वास्तव में कांडभग्न के असंख्य प्रकार होते

हैं—भग्नं तु कांडे बहुधा प्रयाति, समासतो नामभरेवतुल्यम्। (माधवनिदान)। भग्न की परीक्षा में 'क्ष' किरणों का प्रयोग करने से माधवाचार्य का यह सिद्धान्त बिलकुल सत्य प्रमाणित हुआ है। सन्धिविश्लेष के समान भग्न भी **सव्रण** और **अव्रण** करके दो प्रकार के होते हैं। **पूर्ण** और **अपूर्ण** इस तरह से भी भग्न दो प्रकार के होते हैं। इनमें पूर्ण भग्न के भी अनेक प्रकार होते हैं जिनमें से कुछ उसके विकारों में और कुछ उसके भेदों (प्रकार) में गिने जाते हैं। दे० 'पूर्णभग्न विकार' और 'पूर्णभग्न प्रकार'।

भग्न ज्वर—अस्थिभग्नके कारण होनेवाला ज्वर। हड्डी टूटनेका बुखार।

भग्नास्थि ग्रन्थि—वह हड्डी की गिरह (गाँठ) जो टूटी हुई हड्डी पर बन जाती है। (अ०) दिश्बिज। (अं०) कैलस (Callus)।

भञ्जनक—दन्तगतरोग विशेष। सु०।

भयानक स्वप्न—दे० 'कुस्वप्न'।

भस्मक—पाचकाग्नि का एक भेद। बढ़ा हुआ तीक्ष्णाग्नि—वर्धमानो भवत्तीक्ष्णो भस्मकाख्यो महानलः। (वृन्दमाधव)। दे० "तीक्ष्णाग्नि"। यह खाया हुआ क्षणभर में भस्म कर देता है, इसलिये 'भस्मक' कहलाता है (योगरत्नाकर)। सुश्रुत ने इसे 'अत्यग्नि' लिखा है—एवामिवर्धमानोऽत्यग्नि-रित्याभाष्यते। (सुश्रुत)। भस्मकरोग (भस्मकाग्नि) को (अ०) बुलीमिया (Bulimia), बुलीमूस (Bulimus) या पॉलीफेगिया (Polyphegia) कहते हैं। **अन्य पर्याय**—(हिं०) भूख का हूका, बहुत भूख लगना। (यू०) बूलीमूस। (अ०) जूउल् बकर, जूअ बकरी (बैल की 'भूख'), जूउल्कल्ब, जूअकलबी, शहवत कल्बिय्या (कलबी) (कुत्ते की भूख), जूअ मुगश्शी (मूर्च्छित कर देने वाली या असह्य भूख)।

भस्ममेह—राख मिलाये हुए जल का-सा मूत्र। भस्माख्यमेह। भस्म-काख्यमेह। (अ०) मिल्हुल् बोल। (अं०) फॉस्फेट्यूरिया (Phosphaturia)।

भस्माग्नि—दे० 'भस्मक'।

भिन्न व्रण—तीर, बर्छी या भाले का जख्म। (अ०) जुरूह वख्जिय्या। (अं०) पंक्चर्ड ऊंड (Punctured wound)।

भीमकायत्व—देवपन। (अ०) कबीर बदनी। (अं०) जायगंटिज्म (Gigantism)।

भूतकृता बन्ध्या—बन्ध्यारोग का एक भेद।

भूताभिषंगज ज्वर—एक प्रकार का आगन्तुक ज्वर।

भेदनीय शूल—(तोद) भेद। विदारणवत् पीड़ा। (अ०) वजउत्तान। (अं०) स्टैबिंग पेन (Stabbing pain)।

भेषज गंधोत्थ ज्वर—तृणपुष्प ज्वर। (हिं०) घास का बुखार। (फा०) बुखार काही। (अ०) हुम्मा तिब्बिया। (अं०) हे फीवर (Hay fever) एक प्रकार का उन्माद रोग।

भूतोन्माद—एक प्रकार का उन्माद रोग। भौतिक (भूतोत्थ) उन्माद। मनुष्य विभिन्न देवादिजुष्ट उन्माद।

भ्रंश—किसी आन्तरिक अंग का बाहर आ जाना। (अ०) हुबूत, नुतूऽ, खुरूज उज्व। (अं०) प्रोलॅप्स (Prolapse), प्रोलॅप्सस (Prolapsus)।

भ्रंशथु—नासागत रोग विशेष।

भ्रम—(१) एक रोग जिसमें सदैव चक्र के ऊपर आरूढ होने के समान आभास होना है। मा० नि०। शिरोभ्रमण. शिरोघूर्णन। (हिं०) चक्कर मालूम होना, चक्कर, घुमरी, घुमटा, सिर का चक्कर खाना, सिर चकराना। (फा०) दोराने सिर। (अ०) द(दु)वार, दुवारुर्रास। (अं०) वर्टिगो (Vertigo)। **वक्तव्य**—शैखुर्रईसबूअलीसीना और मुल्ला सदीद मुल्ला नफीस और राजी के विपरीत सद्र को दुवार का पूर्वरूप (मुकद्दमा) समझते हैं जो ठीक है। (दे० 'संमोह')। यह विकार सदा कान के कान्तारक (Labyrinth) की या श्रुतिनाडी की तुम्बिकाभिगा शाखा (Vestibular nerve) की विकृति से या अनुमस्तिष्क (Cerebellum) की विकृति से होता है। (२) प्रमाद, अन्यथा ज्ञान, विचारप्रवणता। (अ०) तवह्हुम तवह्हुम फासिद, फसाद तखय्युल। (अं०) हॅल्युसिनेशन (Hallucination)।

भ्रम, अपस्मारजन्य—मृगी से हुआ भ्रमरोग। (अ०) दुवार सरई। (अं०) एपिलेप्टिक वर्टिगो (Epileptic vertigo)।

भ्रमोन्माद—उन्मादरोग विशेष।

(म)

मकेरुक—पुरीषज कृमि भेद।

मक्कल—गर्भाशयगत शूल विशेष। प्रसवोत्तर गर्मदोषनिःसारक वेदना। प्रसवोत्तर वेदना। सु०। मर्कल (अ० सं०)। (अ०) वजा (आलाम) बाद बिलादत। (अं०) आफ्टर पेन्स (After pains)।

मक्कल विद्रधि—जीवाणुओं के उपसर्ग से गर्भाशय में अपरा और जरायु के कुछ बाकी रहे हुए अंश के सड़ने के कारण गर्भाशय में एक विद्रधि-सा हो जाता है। इसी को मक्कल विद्रधि कहते हैं। प्रसूता स्त्रियों का मक्कलसंज्ञक रक्तज विद्रधि। सु० नि०। विद्रधि। (काश्यप)। (अं०) प्यूट्रिड एण्डोमेट्राइटिस (Putrid endometritis), प्योरपेरल एण्डोमेट्राइटिस (Puerperal endometritis)।

मक्कलशूल—गर्भाशयसंकोच के कारण उत्पन्न हुआ शूल। मक्कल (सु०)। दे० 'मक्कल'।

मक्षिका-दंश-ज्वर—रेत की मक्खी के काटने से हुआ ज्वर। मक्खी का बुखार। दे० 'बालुमाक्षिक ज्वर'।

मज्जागत ज्वर—सप्तधातुगत ज्वरों में से एक ज्वर।

मज्जानुगत भग्न—पूर्ण (काण्ड) भग्न का एक प्रकार जिसमें हड्डी का टूटा भाग दूसरे म प्रविष्ट हो जाता है अथवा अस्थि का भाग दूसरे अस्थि के भीतर प्रवेश कर मज्जा को बाहर निकालता है। सु०। मज्जागत भग्न। मा० नि०। (अ०) कस्र मग्रूज। (अं०) इम्पॅक्टेड फ्राक्चर (Impacted fracture)।

मज्जामेह—एक प्रकार का वातज प्रमेह। च०। सुश्रुत और अष्टांगसंग्रह में इसके बदले सर्पिमेह लिखा है। प्रायः ये दोनों समान मालूम पड़ते हैं।

मज्जार्बुद—सुषुम्नार्बुद। (अ०) सलआ नुखाइय्या। (अ०) माइलोमा (Myeloma)।

मज्जा विकार—मज्जास्थित दोषों के विकार। सु०।

मज्जाविकारज श्वेतरक्त—मज्जाविकारजन्य श्वेतकणाभिवृद्धि। (अ०) दम अबयज मुख्खी, अबैजाज दम मुख्खी (नुखा)। (अं०) मिक्लॉइड या मेडुलरी ल्यूकीमिया (Mycloid or Medullary Leukæmia), मिक्लीमिया (Myclæmia), मिक्लोसिस (Myclosis)।

मञ्जिष्ठामेह—पित्तजप्रमेह का एक भेद जिसमें रोगी (मञ्जिष्ठामेही) मँजीठ

के क्वाथ के समान मूत्र त्याग करता है। सु०। इसमें मूत्र का वर्ण 'मञ्जिष्ठोदक-संकाश' अर्थात् पीतवर्ण होता है। (अ०) बोलयकानी। (अं०) कोल्यूरिआ (Choluria), यूरोबिलीन्यूरिआ (Urobilinuria)।

मण्डल—महाकुष्ठ भेद। च०। वा०। यह सुश्रुत में नहीं है। सुश्रुत में इसके बदले 'अरुण' लिखा है।

मद—(१) अफीम, मद्य, धत्तूर इत्यादि पदार्थों के सेवन से उत्पन्न हुआ नशा, मतवालापन, मस्ती, सुरूर। (अ०) सुक्र। (अं०) नारकोमा (Narcoma), इन्टॉक्सिकेशन (Intoxication)। **वक्तव्य**—मद की यह तीन अवस्थाएँ होती है—व्यवस्थश्च मदो ज्ञेयः पूर्वो मध्योऽथ पश्चिमः। पूर्वे वीर्यरतिप्रीतिहर्षभाष्यातिवर्धनम्॥ प्रलापो मध्यमे मोहो युक्तायुक्तक्रियास्तथा। विसंज्ञः पश्चिमे शेते नष्टकर्मक्रिया गुणः॥ (सुश्रुत)। अर्थात् १ हर्षणावस्था (Stage of excitement). २ प्रलापावस्था (Stage of delirium) और ३ विसंज्ञावस्था (Stage of narcosis)। (२) अप्रवृद्ध व तरुण उन्माद (नशा), विषाद, चित्तोद्वेग। (अ०) मालिन्खूलिया, मालीखोलिया। (अं०) मेलनकोलिया (Melancholia)।

मदनातपत्रोच्छ्राय—भगनासाप्रहर्षण।

मदात्यय—दुरुपयुक्त या मिथ्योपयुक्त मद्यज विकार विशेष। पानात्यय। (अ०) मर्ज अल्कुहोली, मर्ज कसरत मैख्वारी। (अं०) अल्कोहोलिज्म (Alcoholism)। **भेद**—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और त्रिदोषज मदात्यय, (पानात्यय), परमद, पानाजीर्ण और पानविभ्रम।

मदात्ययज प्रलाप—नशा या शराब का प्रलाप (या उन्माद)। इसमें शिरोशूल नहीं होता। कम्पोन्माद, मद्योन्माद, मदोन्माद, मदात्यय। (अ०) हजयान सुक्र (सुक्री)। (अं०) डेलीरियम ट्रीमेंस (Delirium Tremens)। दे० 'मद्योन्माद'।

मदोन्माद—मद्योन्माद।

मद्यजदाह—मद्यपानजनित दाह।

मद्यजमूर्च्छा—मद्यसेवनजनित मूर्च्छा। दे० 'मूर्च्छा'।

मद्यजविषमयता—शराब का जहर शरीर में फैल जाना। (अ०)

तसम्मुम अलकुहूली, तसम्मुम खमरी । (अं०) अलकोहोलिक इनटॉक्सिकेशन (Alcoholic intoxication) ।

मद्यजा तृष्णा—मद्यसेवनजनित तृष्णा (पिपासा) । वातपित्तजा तृष्णा । दे० 'तृष्णा' ।

मद्योन्माद—नशा या शराब का उन्माद । (अ०) जुनून सुक्री । (अं०) अलकोहालिक मेनिया (Alcoholic mania), मैथोमेनिया (Mathomania), पोटोमेनिया (Potomania) । दे० 'मदात्ययज प्रलाप' या 'कम्पोन्माद' ।

मधुमेह—(१) बातजप्रमेह का एक भेद । यह एक प्रकार का शकरायुक्त प्रमेह है जिसमें मूत्र मधु के समान (मधु के रस और वर्ण का) आता है । च० । व्यवहार में भी इसे मधुमेह ही कहते हैं । सुश्रुत ने 'क्षौद्रमेह' के नाम से इसका उल्लेख किया है । यह विशेष शर्करायुक्त प्रमेह है जिसमें मूत्र के भीतर "मधुरस्वभाव ओज (Glucose) उपस्थित रहता है । दे० 'इक्षुमेह' । (अ०) जयाबीतुस, जयाबीतुस सुक्री, जयाबीतुस शकरी । (अं०) डायबिटीज मेलिटस (Diabetes Mellitus), डायबिटीज (Diabetes) । **भेद**—मधुमेह दो प्रकार का होता है—१ धातुक्षय के कारण कुपित वायु से (धातुक्षय प्रकुपित-वायुजन्य मधुमेह) यह वातिकमेह है और २ दोषावृत मार्ग से । यह दोषावृत-मार्गजन्य मधुमेह (उपेक्षित प्रमेहरूप मधुमेह) होता है । इसमें आवरक दोष के और वातिक मधुमेह के भी लक्षण होते हैं । (२) सर्वप्रमेह (चक्र०) ।

मधूच्छिष्टोपम यकृत्—मोम जैसा यकृत् । (अ०) कबिद शमई । (अं०) वैक्सी लिव्वर (Waxy liver) ।

मध्यकर्ण शोथ (फ)—कान के मध्य भाग (मध्यकर्ण) का शोथ । (अ०) वरम उज्नी मुत्वस्सित, वरमअज्नीबा । (अं०) ओटाइटिस मीडिया (Ottitis Media) ।

मनोदौर्बल्य—मानसिक दुर्बलता । (अ०) जोफ नफ्स । (अं०) साइकॅस्थीनिया (Psychasthenia) ।

मनोमोह—दे० 'तन्द्रा' ।

मन्थरक ज्वर—एक प्रकार का मिआदी (मर्यादा) सन्निपात ज्वर । यो० र० । आन्त्रिक ज्वर । आन्त्रिक सन्निपात ज्वर । (हिं०) तोरकी । मोती-

झरा । मुबारकी । (अ०) हुम्मा तैफूदिय्या, हुम्मा मुतबिका मुत्लाहिसा (मुत्लाकिसा), हुम्मा मुहरिका बत्नी, हुम्मा मिअविया (हजियानी), हुम्मा इस्हालिय्या । (अं०) टायफॉइड फीवर (Typhoid fever), एन्टरिक फीवर (*Enteric fever*) ।

मन्दज्वर—धीमा या हलका बुखार । स्लाइट फीवर (Slight fever) ।

मन्दवेगात्पहर्ष क्लीब—क्लीब भेद ।

मन्दबीज—अल्पबीजवाले क्लीब । दे० "क्लीब" ।

मन्दाग्नि—पाचकाग्नि का एक भेद जो यथाविधि सेवन किये हुए अल्प भोजन को भी पेट और सिर में भारीपन, खाँसी, श्वास, हृल्लास, वमन और अङ्गों में थकान इत्यादि विकार उत्पन्न करके बहुत देर में पचाती है । कफ से अग्नि मन्द होती है । सु० । अग्निमान्द्य । (अ०) जोफ मेदा । दे० 'अजीर्ण' और 'पाचकाग्नि' ।

मन्यास्तम्भ—एक वातव्याधि जिसमें गर्दन ऐंठ जाती है (गर्दन में बल पड़ जाता है) । सु० । (अ०) इल्तिबाउल् उनुक, वजउल् उनुक । (अं०) टॉर्टिकॉलिस (Torticolis), स्टिफनेक (Stiff-neck), रायनेक (Wryneck) । **भेद**—१ वातज, २ आमवातज, ३ जन्मज और ४ आक्षेपयुक्त ।

मम्प्स—दे० 'कर्णमूलिक ज्वर' ।

मरक—जनपदोद्ध्वसक रोग । महामारी । सु० । अमराज वबाइय्या । (अं०) पँडेमिक (Pandemic) या एपिडेमिक डिजीज (Epidemic disease) ।

मर्कल—प्रसवोत्तर वेदना । (अ० सं०) । दे० 'मक्कल' ।

मर्माभिघातज दाह—दाह रोग का एक भेद । दे० 'दाह' ।

मर्यादा ज्वर—मीआदी बुखार । (अ०) गिब्ब लाजिमा । (अं०) रेमिटेन्ट फीवर (Remittent fever) ।

मलगन्धिच्छर्दि—वह वमन जिसमें मल की तरह गंध आवे । विट्समगन्धिक प्रच्छर्दन । सु० । शकृद्गंधि छर्दि (अ० हृ०) । दे० 'आन्त्रसंमूर्च्छनजन्य छर्दि' ।

मलमूत्रावरोध—मल और मूत्र की अप्रवृत्ति । पाखाना-पेशाब रुकना ।

मलावरोध—मल की अप्रवृत्ति, मलबद्धता, बद्धपुरीषत्व, मलावष्टंभ,

विबंध, कोष्ठबद्धता। (अ०) कब्ज, एअ्तकाल, हुस्र, कब्ज शिकम, कब्जुल् अम्आऽ। (अं०) कॉन्स्टिपेशन (Constipation)।

मलाशयभ्रंश—(अ०) खुरूजुल्मक्अद। (अं०) प्रोलॅप्सस ऑफ दी रेक्टम् (Prolapsus of the rectum)।

मलाशय शोथ—मलाशय की सूजन। (फा०) सोजिश कूज। (अ०) इल्तिहाबुश्शरज, वरम मक्अद (इस्त या शरज)। (अं०) प्रॉक्टायटीज (Proctitis), रेक्टायटीज (Rectitis)।

मशक—क्षुद्ररोगान्तर्गत त्वग्विकार। इसमें शरीर पर पीड़ारहित, स्थिर, उड़द के समान कृष्णवर्ण और उत्सन्न या उन्नत (चिह्न) दीखता है। मषक (सु०); माष (वा०)। (चर्मकील इसी का अधिक उन्नत प्रकार है—अ० सं०।) (हिं०) मसा, मस्सा। (अ०) उस्लूल, सूलूल (बहुव० सालील), आझख। (अं०) एलीव्हेटेड मोल (Elevated mole)।

मषक—दे० "मशक"।

मसूरिका—एक क्षुद्ररोग जिसमें शरीर पर तथा मुँह के भीतर मसूर के तुल्य आकार और वर्ण की पिटकाएं (विस्फोट अर्थात् स्फोट या पिटका) होती है और दाह, ज्वर एवं पीड़ा इनसे युक्त होती है। सु०। च०। अ० सं०। अ० हृ०। शीतला, माता, चेचक, वसन्तरोग। (अ०) जुदरी। (अं०) स्मॉल पॉक्स (Small pox), वॅरिओला (Variola)। **वक्तव्य**—चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगसंग्रह और अष्टांगहृदय में इसका वर्णन बहुत संक्षेप से किया गया है तथा इसका समावेश क्षुद्ररोगों में किया गया है। आर्यवैद्यक के जो ग्रंथ आज उपलब्ध हैं, उनमें सर्वप्रथम माधवनिदान में मसूरिका का विस्तृत वर्णन मिलता है। तत्पश्चात् भावप्रकाश में 'शीतला' नाम से इसका स्वतन्त्र वर्णन किया गया है। परन्तु टीकोपटीका में अन्य ग्रंथकारों के जो उदाहरण मिलते हैं, उससे पता चलता है कि चरक-सुश्रुतेतर अन्य प्राचीन ग्रंथों में मसूरिका का वर्णन अधिक विस्तृत रूप से किया गया था। **भेद**-(आधुनिक) इसके मुख्य तीन भेद हैं-

(१) मसूरिका, इसके दो प्रकार।

(अ) असंमीलित या अल्पस्फोटा जिसके दाने दूर-दूर हों। (अ०) जुदरी मुन्फरिक। (अं०) डिस्क्रीट स्मॉल पॉक्स (Discrete Small-pox)।

(आ) संमीलित या बृहत्स्फोटा जिसके दाने पास-पास हों। (अ०) जुदरी मुत्तसिल। (अं०) कॉन्फ्लूएण्ट स्मॉल पॉक्स (Confluent Small-pox)।

(२) **रक्तस्रावी मसूरिका**—इसमें त्वचा में रक्तस्राव होकर चकत्ते (लोहितोन्नतमण्डला) बन जाते हैं। त्वचा की भाँति श्लेष्मल त्वचा फुफ्फुस इत्यादि अन्य अवयवों में भी स्राव होता है। (अ०) जुदरी दम्वी (नज्फी)। (अं०) हीमोर्हेजिक स्मॉल पॉक्स (Hæmorrhagic Small-pox)।

(३) **सौम्य मसूरिका**—(अ०) वेरिओला माइनर (Variola minor) और (४) लघु मसूरिका और (५) रोमान्तिका। **आयुर्वेदीय भेद**—वातज, पित्तज, रक्तज, कफज, त्रिदोषज (चर्मसंज्ञक चर्मदल-मधुकोश), सप्तधातुगत त्वग्गत-त्वक् (रस धातु)गत, रक्तगत, मांसगत, मेदोज, अस्थिगत, मज्जागत, शुक्रगत—मा० नि०। सर्षपिका, अजका, कोद्रव, कङ्गु, अपाकी, विस्फोटक, विसर्पी, मसूरिका—(उरभ्र)। वातज, पित्तज, कफज, ससगंज, सन्निपातज, विषद्रुम, प्रसवा, आघ्राणज—(भरद्वाज)। वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज और आगन्तुज—(वृद्धकाश्यप)। शीतला—बृहती (बड़ी माता), कोद्रवी, पाणीसहा, सर्षपिका, राजिका, मसूरिका, चर्मजा।

मस्तिष्कगत फिरङ्ग—दे० 'फिरङ्गजन्य मस्तिष्कविकृति'।

मस्तिष्कगत रक्ताभाव—दे० "मस्तिष्कदौर्बल्य"।

मस्तिष्कगत रक्तस्राव—सन्यास।

मस्तिष्कगत वातव्याधि—एक प्रकार की वातव्याधि।

मस्तिष्कगत शिरोशूल—निज शिरोशूल। (फा०) दरदेसिर असली। (अ०) सुदाअ दिमागी या असली। (अं०) इडिओपैथिक हेडेक (Idiopathic headache)।

मस्तिष्क (विकार) जन्य भ्रम—भ्रमरोग का एक भेद।

मस्तिष्कघात—(अं०) न्युरो पॅरालिसिस (Neuro-paralysis)।

मस्तिष्कजलक्षय, मस्तुलुंगजलक्षय—तालुपात। दे० 'तालुपात'।

मस्तिष्कदौर्बल्य—मस्तिष्क में रक्त की कमी होना। मस्तिष्कगत रक्ताल्पता (पांडु)। मस्तिष्क की निर्बलता (कमजोरी)। (अ०) जोफे दिमाग, जोफेदिमाग, फक दिमागी, किल्लतदम मुखी। (अं०) सेरीब्रल अनीमिया (Cerebral anæmia)।

मस्तिष्कपीडन—मस्तिष्क में रक्तस्रावजन्य पीडन (दबाव) । (अं०) सेरीब्रल कम्प्रेशन (Cerebral compression) ।

मस्तिष्क संक्षोभ, आघातजन्य—सेरीब्रल कन्कशन (Cerebral concussion) ।

मस्तिष्क-मस्तिष्कावरण शोथ—(अ०) वरमुद्दिमाग व अग्शियतहा । (अं०) सेरिब्रो-मेनिन्जायटिस (Cerebro-meningitis) ।

मस्तिष्कमार्दव—मेजे का नरम और पिलपिला हो जाना । (अ०) लीनुद्दिमाग । (अ०) सॉफेनिंग ऑफ दी ब्रेन (Softening of the brain) ।

मस्तिष्कविद्रधि—(अं०) ब्रेन अब्सेस (Brain abscess) ।

मस्तिष्कपीडन, आघातजन्य—शिर के ऊपर आघात होने से मस्तिष्क के भीतर (Apoplexy) या मस्तिष्कावरण के भीतर ओर मस्तिष्क के बाहर रक्तस्राव होना (Cerebral compression from trauma) ।

मस्तिष्क प्रक्षोभ—मस्तिष्कगत संक्षोभ । (अं०) सेरीब्रल इरिटेशन (Cerebral irritation) ।

मस्तिष्क वृद्धि—(अ०) फत्क दिमागा, कोला दिमागी । (अं०) सेरीब्रल हर्निया (Cerebral hernia), एनकेफॅलोसील (Encephalocele) ।

मस्तिष्कशूल—खोपड़ी का दर्द । शिरोशूल । (अ०) वजउर्रास । (अं०) केफॅलोडानिया (Cephalodynia) ।

मस्तिष्कशोथ—मस्तिष्क (भेजा) को सूजन । (अ०) इल्तिहाबुल् मुख, वरम दिमाग, सरसाम दिमागी (मुखी), फलगमूनी (तजकिरा के लेखक) । (अ०) सेरीब्राइटिस (Cerebritis) । (फा०) सोजिश दिमाग ।

मस्तिष्क सौषुम्नज्वर—मस्तिष्क सौषुम्नज्वर—शीर्षसौषुम्नज्वर । आक्षेपकज्वर, गरदनतोड़ बुखार । (अ०) हुम्मा दिमागिया नुखाइय्या, हुम्मा मुखिया नुखाइय्या, हुम्मा गशिय्या । (फा०) तपे दिमागी व नुखाई, तपे बेहोशी । (अं०) सेरीब्रो-स्पाइनल फीवर (Cerebro spinal fever) । ब्रेन फीवर (Brain fever) ।

मस्तिष्कसंघट्टन—(अं०) सेरीब्रल कनकशन (Cerebral concussoin) ।

मस्तिष्काघात—सिर पर चोट (आघात) लगना। (अं०) न्यूरो पॅरालिसिस (Neuro-paralysis)।

मस्तिष्कार्बुद—(अं०) ट्यूमर ऑफ दि ब्रेन (Tumour of the brain)।

मस्तिष्कावरण शोथ—मस्तिष्क की झिल्ली की सूजन। (अ०) वरम अग्शिया दिमाग, सरसाम गिलाई, करानीतुस, वरम अग्शिय्या अद्दिमाग। (अं०) मेनिनजाइटिस (Meningitis)।

मस्तिष्कास्रकाभाव—दे० 'मस्तिष्क दौर्बल्य'।

मस्तिष्कावरणवृद्धि—(अ०) फत्क (या कीला) सिहाई, फत्क अग्शियतुद्दिमाग (अग्शियतुन्नुखाअ)। (अं०) मेनिंजोसील (Meningocele)।

महती हिक्का—महा हिक्का। दे० "हिक्का"।

महाकुष्ठ—कुष्ठ भेद। सु०। कोढ़। इसका निर्देश प्रायः केवल 'कुष्ठ' शब्द से किया जाता है। (अ०) दाउल्असद, जुजाम। (अं०) लेप्रोसी (Leprosy)। **भेद**—(आयुर्वेदोक्त) १ अरुण, २ औदुम्बर, ३ ऋष्यजिह्व, ४ कपाल, ५ काकणक, ६ पुण्डरीक और ७ दद्रु। सुश्रुत का 'अरुण' कुष्ठ चरक और वाग्भट में नहीं है, उसके बदले 'मण्डल' कुष्ठ मिलता है। 'मण्डल' सुश्रुत में नहीं मिलता। चरक में 'दद्रु' क्षुद्रकुष्ठों में दिया है और उसके बदले 'सिध्म' महाकुष्ठों में लिया है। आयुर्वेदोक्त सप्त महाकुष्ठ कोढ़ (Leprosy) के विविध रूप मालूम होते हैं। कोढ़ के आधुनिक भेद—(१) नाडी कुष्ठ। आयुर्वेद में इसे वातिक कुष्ठ कह सकते हैं। (अ०) जुजाम असबी। (अं०) नर्व लेप्रोसी (Nerve Leprosy)। **स्वाप कुष्ठ**—इसी का एक भेद है। इसमें सुन्नता भी होती है। (अ०) जुजाम खद्री, जुजाम मुखद्दिर। (अं०) अनस्थेटिक लेप्रोसी (Anæsthetic Leprosy)। (२) ग्रन्थिक कुष्ठ। आयुर्वेद में इसे पित्तकफज कह सकते। गिरहदार कोढ। गुठलीदार कोढ। जुजाम अक्दी। जुजाम दर्नी। (अं०) नोड्यूलर (या ट्यूबरक्यूलर) लेप्रोसी (Nodular (or Tubercular) Leprosy)। (३) मिश्र कुष्ठ। आयुर्वेद में इसे सान्निपातिक कुष्ठ कह सकते हैं। मिक्स्ड लेप्रोसी (Mixed Leprosy)।

महागद—अतत्वाभिनिवेश। विक्षिप्तता। नाडीदौर्बल्य। (अ०) जोफ आसाब। (अं०) न्यूरस्थीनिया (Neurasthenia)। दे०। 'गदोद्वेग'।

महागुद—आभ्यन्तर कृमिरोग भेद ।

महाधमनी ग्रन्थि—महाधमनी विस्तृति, महाधमनिज रक्तार्बुद । (उ०) अवरता की दम्वी रसोली । (अ०) अनूरस्मा अव्रती । (अं०) अन्यूरिज्म् आफ दी अवोर्टा (Aneurism of the Aorta) ।

महाधमनी-द्वार-संकोच (हृदयस्थ)—(अ०) जोक अव्रता । (अं०) ॲवोर्टिक स्टीनोसिस (Aortic Stenosis) ।

महापद्म—एक प्रकार का बालरोग । पद्मवर्ण त्रिदोषज प्राणनाशक वस्ति और शिरोगत वातविसर्प । अ० सं० । यह विसर्प है । इसे 'नवजात विसर्प' कहते हैं । (अं०) एरिसिपेलस निओनॅटोरम (Erysipelas Neonatorum) । (अ०) हुम्रा, सुर्खबादए अत्फाल । सुश्रुत परिभाषा के अनुसार इस विसर्प का समावेश क्षतज विसर्प (निदान । १९) में होता है ।

महाप्राचीराधः विद्रधि—(अं०) सब्फ्रेनिक ॲब्सेस (Subphrenic abscess) ।

महाप्रचीरापेशी वृद्धि—(अ०) फत्क दियाफरगमी । (अं०) डायफ्रागमेटिक हर्निया (Diaphragmatic hernia) ।

महाप्राचीरापेशी शोथ—वक्षोदरमध्यस्थ पेशी की सूजन । (उ०) हजाब हाजिज (महाप्राचीरापेशी) का वरम । (अ०) बरसाम, वरम सद्र । (अं०) डायफ्रॅग्माइटिस (Diaphragmitis), इन्फ्लमेशन ऑफ दि डायफ्रग्मा (Inflamation of the diaphragma) ।

महामारी - दे० "मरक" ।

महायोनि—एक प्रकार का योनिरोग ।

महाशौषिर—एक दन्तमूलगत रोग । सु० । अ० सं० । मोज । (फा०) गोश्तखोरए दहन, बादखोरए दहन । (अ०) आकिलतुल्फम, कुरूह खबीसा (जालीनूस), दब्बावा, कुलाअ गानगरानी, गानगरानाए फम । (उ०) मुंह का सड़ना-गलना, मुंह का गोश्तखोरा । (अं०) गंग्रीनस स्टोमाटायटीज (Gangrenous stomatitis), कॅन्क्रम ऑरिस (Cancrum oris) ।

महाश्वास—श्वास रोग का एक भेद । महान (लंबा) श्वास । यह वात-संसृष्ट होता है । (अ०) इन्तिसाबुन्नफस, तनफ्फुस इन्तेसाबी । (अं०) डिस्प्नीआ

ऑफ फेलिंग हार्ट या रेसपिरेशन (Dyspnœa of failing heart or respiration), ऑर्थोप्नीआ (Orthopnœa) ।

महाहिक्का—हिक्का का एक भेद । महती हिक्का ।

मांसगत ज्वर—सप्तधातुगत ज्वरों में से एक ।

मांस ग्रन्थि—ग्रन्थि का एक भेद । चरक । अ० सं० । सुश्रुत में इसका उल्लेख नहीं है । दे० 'ग्रन्थि' ।

मांसज अर्बुद—(१) नासागत अर्बुद का एक भेद । मांसज नासागत अर्बुद । (२) अर्बुद का एक भेद । मांसार्बुद । दे० 'मांसार्बुद' ।

मांसज ओष्ठप्रकोप—ओष्ठप्रकोप का एक भेद जिसमें मांसदुष्ट होंठ भारी, मोटे, मांसपिण्ड के समान उभरे हुए होते हैं । सु० । अर्बुद (वाग्भट) । दे० "ओष्ठप्रकोप" ।

मांसज कर्णार्बुद—कर्णार्बुद का एक भेद । दे० "कर्णार्बुद" ।

मांसज वृद्धि—वृद्धि का एक भेद । (अ०) उद्रतुल्लह्म्, कर्ब लहमी । सार्कोसील (Sarcocele) । दे० "वृद्धि" ।

मांसज रोग—मांसज विकार । मांसस्थ दोषजन्य विकार । सु० ।

मांसतान—एक कण्ठगत रोग । सु० ।

मांसपाक—शूककोष । सु० ।

मांसपेशीय आक्षेप—पेशी का आक्षेप (ऐंठन) । (अ०) तशन्नुज अज्लात (अजली) । (अं०) स्पैज़्म ऑफ दि मसल्स (Spasm of the Muscles) ।

मांस प्ररोह—मांसांकुर, मस्सा, अर्श । दे० 'अर्श' ।

मांस संघात—तालुगत रोग का एक भेद । कफ के कारण तालु में उत्पन्न हुए पीड़ारहित दुष्ट मांस । सु० । (अ०) सल्आ गुददियुल् हनक । (अं०) ऍडीनोमा ऑफ दि पॅलेट (Adenoma of the palate) ।

मांसाङ्कुर—दे० 'मांस प्ररोह' ।

मांसातिसार—अतिसार भेद । (अ०) इस्हाल लहमी । (अं०) डायरिया कार्नोसा (Diarrhœa carnosa) ।

मांसार्बुद—(१) अर्बुद का एक भेद । सु० । मांसज अर्बुद । यह कैन्सर का स्कीर्हस (Scirrhus) नामक प्रकार हो सकता है । पेश्यर्बुद ।

(अ०) सल्आ अज्लिय्या । (उ०) अजलाती (लहमी) रसोली । (अं०) मायोमा (Myoma), मस्क्युलर ट्यूमर (Muscular tumour) । (२) शूकदोष । सु० ।

मांसीय सार्कोमा—मांसपेश्यर्बुद । (अ०) सल्आ लह्मिय्या अज्लिय्या । (अं०) मायोसार्कोमा (Myosarcoma) ।

मातर—रक्तजकृमि भेद ।

मातारोग—दे० "मसूरिका" ।

मानसिकविकार—मानसिक रोग । मानस रोग । सु० ।

मानिया—उन्माद । (फा०) जुनून दरिंदगी । (अ०) जुनून सबई । (अं०) मेनिया (Mania) । **भेद**—दाउल्कल्ब । दे० 'उन्माद' ।

माल्टा ज्वर—भूमध्यसागर का ज्वर, लहरदार बुखार । (अ०) हुम्मा बुह्रुरूम, हुम्मा माल्ता, हुम्मा मुतमव्वज (जा) । (अं०) माल्टा फीवर (Malta Fever), मेडिटेरेनियन फीवर (Maditerranian Fever), अन्ड्यूलेंट फीवर (Undulent Fever) ।

माष—मस्सा । मसा । वा० । दे० 'मशक' ।

मिथ्या गर्भ—झूठा हमल । (अ०) रजाऽ, हमल काजिब । (अं०) स्प्युरिअस प्रेगनॅन्सी (Spurious pregnancy), फाल्स (मोलर) प्रेग्नन्सी (False (molar) Pregnancy) ।

मिथ्या ग्रन्थिक ज्वर—ग्रन्थिक ज्वर का एक भेद । (अं०) लाग्रिप (Lagrippe) ।

मिथ्याप्रसवोत्तर वेदना—मिथ्या वेदना । आध्मानमूत्रसंगजन्य प्रसवोत्तर वेदना । नाभिवस्त्युदरशूल । (अं०) फाल्स आफ्टर-पेन्स (False after pains) ।

मिथ्यागर्भावस्था—(अं०) स्यूडो-सायसिस (Pseudo-cyesis) ।

मिथ्यारसज्ञान—स्वाद का अन्यथा ज्ञान, रस (स्वाद) का यथावत् ज्ञान न होना । (अ०) फसादुज्जौक । (अं०) अगूष्टिया (Ageustia) ।

मिथ्यावी—प्राय: पचनसंस्थान की खराबी से होनेवाली प्रसवपूर्ववेदना । (अं०) फाल्स पेन्स (False pains) ।

मिथ्याश्वेतरक्त—(अ०) दम अब्यज काजिब । (अं०) स्यूडो ल्यूकीमिया (Pseudo-Leukæmia) ।

मिन्मिन—जिसका उच्चारण नासा में (अनुनासिक) होता है। सु०।

मिन्मिनत्व—नासा या अनुनासिक उच्चारण (वाक्यत्व) नकुआना, गुनगुनी आवाज। (अ०) गुन्ना। (अं०) नेजल वॉइस (Nasal voice)।

मिश्रकुष्ठ—महाकुष्ठ का एक आधुनिक भेद। दे० 'महाकुष्ठ'।

मुखगतरोग—मुख में होने वाले रोग, मुखरोग। (अ०) अमराजुल्फम, अमराजदहन। (अं०) माउथ डिजीज (Mouth disease)। **इनके स्थान (आयतन)**—ओष्ठ, दन्तमूल, दन्त, जिह्वा, तालु, कण्ठ, सम्पूर्णमुख (सर्वसर) और गण्ड।

मुखगत विसर्प—(अ०) माशिरा (सुरियानी)। (अं०) फेशियल एरिसिपेलस (Facial Frysipelas)।

मुख दर्शन—प्रसूति का एक प्रकार। (अं०) फेस प्रेजेन्टेशन (Face Presentation)।

मुखदूषिका—एक प्रकार का क्षुद्ररोग। सु०। अ० सं०। (हिं०) मुँहासा, यौवनपिड़का, युवानपिड़का, कील, डोंडसा। (अ०) अकना, बुसूर लुब्नियया, बुसुर दुह्नियया, हब्बुस्सबा। (अं०) एक्नी वल्गारिस (Acne Vulgaris), पस्च्युलर एक्नी (Pustular acne)। **भेद**—अरुण (गुलाबी) मुँहासा। (अ०) बुसूर लुब्नियया वर्दिया। (अ०) एक्नी रोजेशिया (Acne Rosacea)।

मुखदौर्गन्ध्य—मुँह से दुर्गंध (बदबू) आना, मुँह की दुर्गंधि (बदबू)। (फा०) गंदा दहनी। (अ०) बख्खल्फम, उफूनत फम, नतानतुल्फम। (अं०) ओरल सेप्सिस (Oral Sepsis), ओजोस्टोमिया (Ozostomia)।

मुखपाक—बालरोग विशेष। शार्ङ्ग०। मुँह आना। (फा०) जोशश दहन। (अ०) कुलाअ, कुलाउल्फम, कुलाअ दहन। (२) एक प्रकार का मुखरोग (वा०; शार्ङ्ग०), सर्वसर (सु०)। (हिं०) मुँह आना। (उ०) मुँह का वरम। (अ०) वरम (मुल्) फम, इल्तिहाबफम। (अं०) स्टोमाटायटीज (Stomatitis)। **वक्तव्य**—माधव ने इसे अन्य रोगों का लक्षण माना है। इसका अन्तर्भाव (पैत्तिक वा रक्तज) मुखरोग में है। **भेद**—वातज, पित्तज, कफज। **अन्यभेद**—मुँह के छाले या फुंसियां, मुँह के दाने,

निनावा। (अ०) बुसूरुल्फम, बुसूरदहन, वरमफम बुसूरी। (अं०) ॲप्थी (Apthi), ॲफ्थस स्टोमाटायटीज (Aphthous Stomatitis)।

मुखमण्डिका—(स्त्री) ग्रहजुष्ट बालरोग विशेष। सु०। वा०। मा०। नि०। कोई कोई इसे और शार्ङ्गधरोक्त गात्रशोष (बालरोग) को एक रोग मानते हैं।

मुखमैथुन—(अं०) फेलाशिया (Fellatia)।

मुखयोनि क्लीब—एक प्रकार का क्लीब।

मुखरोग—दे० 'मुखगतरोग'।

मुखव्रण—मुखगत व्रण। (उ०) मुँह के जख्म। (अ०) कुरूहुल्फम। (अं०) अलसरेटिव्ह स्टोमटायटीज (Ulcerative Stomatitis), अल्सर आफ दी माउथ (Ulcer of the mouth)।

मुखशोष—मुँह सूखना। (फा०) खुश्की दहन। (अ०) किल्लत बुजाक। (अं०) जीरोस्टोमिया (Zerostomia)।

मुखस्राव—एक बालरोग। शार्ङ्ग०। लालास्राव। लार बहना। (फा०) कसरत लुआब, कसरत बुजाक, कसरत रीक। (अ०) तलउउब, सैलानुल्लुआब। (अं०) टायलिज्म (Ptyalism)।

मुखाक्षेप—(अ०) तशन्नुज वजा। (अं०) फेशियल स्पैज्म (Facial Spasm)।

मुखार्धघात—मुखार्धघातयुक्त पक्षाघात (चक्र०), एकायाम (अ० सं०)। दे० 'अर्दित'।

मुखार्श—मुखगत अर्श।

मूक—गूंगा। जो बोल नहीं सकता। (अ०) अब्कम, बकीम। (अं०) डम (Dum)।

मूकत्व—बोल न सकना, मूकपन। गूंगापन। (अ०) बकम फकदुत्-कल्लुम। (अं०) अफेसिया (Aphasia), अफीमिया (Aphemia), डमनेस (Dumbness), म्यूटनेस (Muteness)।

मूढगर्भ—योनिमार्ग में अयोग्य रीति से आया हुआ सर्वावयवसम्पन्न गर्भ। (अं०) माल-प्रेजेन्टेशन ऑफ दी फीट्स (Mal-Presentation of the Fœtus)। **भेद**—(१) तिरश्चीनजनन या तिर्यक्दर्शन। इसके प्रकार—१. कील (सु०) संकीलक (मा० नि०) तथा २. परिघ। (२) संकीर्ण दर्शन। इसके

प्रकार—३. प्रतिखुर (सु०) विष्कंभ (क) भेद (अ० हृ०) तथा ४. बीजक। सुश्रुत मूढगर्भचिकित्साऽध्याय और अष्टांगसंग्रह में असंख्य गतियों का संकलन इन तीन वर्गों में किया है जो आधुनिक पाश्चात्य वर्गीकरण के साथ ठीक-ठीक मिलता है—(१) शिरोगति या न्युब्जा गति, (२) असंगति या तिर्यग्गति और (३) जघनगति या ऊर्ध्वगति। मूढगर्भ की असंख्य गतियों में से व्यवहार में प्रायः मिलने वाली आठ गतियों में से चार प्रकार जघन गति (Pelvic Presentations) के तथा शेष चार तिर्यक् गति के हैं। (सु० नि० ८ अ०)।

मूत्रकृच्छ्र—एक प्रकार का मूत्ररोग जिसमें मूत्रत्याग करते समय दुःख होता है। पेशाब का मुश्किल से आना। पेशाब का लग के आना। कष्ट से मूत्र का त्याग शिश्नप्रसेक की खराबी से होता है। कृच्छ्रमूत्रता, अल्पमूत्रता (थोड़ा-थोड़ा मूत्र आना)। (अ०) उस्रुल्बौल। (अं०) डिस्यूरिआ (Dysuria)। दे० 'वेदनायुक्त विदुमूत्रता'। **भेद**—१. वातज, २. पित्तज, ३. श्लैष्मिक, ४. सान्निपातिक, ५. शल्याघात वा क्षतजन्य मूत्रकृच्छ्र (वातिक मूत्रकृच्छ्रवत्), ६. पुरीषज मूत्रकृच्छ्र (मूत्रनाश), ७ अश्मरीहेतुक (अश्मरीज मूत्रकृच्छ्र)—**सुश्रुत में शर्कराज मूत्रकृच्छ्र**—मूत्रशर्करा और ८. शुक्रज मूत्रकृच्छ्र।

मूत्रक्षय—दे० 'मूत्रशोष'।

मूत्रग्रन्थि—रक्तग्रन्थि। (अं०) ट्यूमर ऑफ दि ब्लैडर (Tumour of the bladder)।

मूत्रजठर—मूत्र के रुकने से बस्ति का परिमाण बढ़ना। (अ०) इन्तिफाखुल्मसाना। (अं०) डिस्टेंडेड ब्लैडर (Distended bladder)।

मूत्रज (वृषण) वृद्धि—वृषणकोष (फोतों) में पानी भर जाना। इसका 'जलवृषण' नाम रखना उचित है। (अ०) उद्रतुल्माई (उदरए माइय्या), इस्तिस्काउल् खुस्या, फत्कमाई, कीला माइय्या (कीलतुल्माऽ)। (अं०) हैड्रोसील (Hydrocele)।

मूत्रदाह—पेशाब में दाह और चिनक होना। (फा०) सोजिश बोल, सोजिश नाइजा। (अ०) हुर्कत बोल, हुर्कत इहलील। (अं०) यूरेथ्राइटिस (Urethritis)। दे० 'सदाहमूत्र'।

मूत्रदोष—मूत्रविकार। मूत्र के रोग। मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और अश्मरी ये चार प्रकार के मूत्र के रोग हैं।

मूत्र धारासंग—मूत्र की धारा रुक जाना (बंद हो जाना)।

मूत्रनिग्रहज उदावर्त—एक प्रकार का उदावर्त जो मूत्र के रोकने से होता है। दे० "उदावर्त"।

मूत्रमार्ग निरोध—मूत्रमार्गसंकोच। मूत्रोत्संग। पेशाब की नाली का तंग हो जाना। (योनिमार्गसंकोच)। (अ०) जीक मज्रा बोल, जीक इह्लील, तजय्युक इन्सिदाद इह्लील। (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ यूरेथ्रा (Stricture of urethra)।

मूत्रमार्ग विस्तृति—मूत्रमार्ग (पेशाब की नाली—मजरी कजीब या मूत्रद्वार—सूराख इह्लील) का फैल जाना। (अ०) इत्तिसा अमज्रा कजीब; बंद कुशाद। (अं०) एक्सपॅन्शन ऑफ दि यूरेथ्रा (Expansion of the urethra)।

मूत्रमार्गशूल—मूत्रनलिका का दर्द। (अ०) अलम मजरल् बोल, दर्द नाइजा। (अं०) यूरेथ्रल्जिया (Urethralgia)।

मूत्रमार्गशोथ—पेशाब की नाली की सूजन। (अ०) इल्तिहाब मजरल् बोल, वरम मज्रल् (मजरा) बोल, वरम नाइजा। (अं०) यूरेथ्राइटिस (Urethritis)।

मूत्रमार्गस्थ रक्तस्राव—मूत्र की नाली से रक्त आना। (खून जारी होना)। (अ०) नजीफ मजरी। (अं०) यूरेथ्रोरहेजिया (Urethrorrhagia)।

मूत्ररोग—मूत्र के रोग। दे० 'मूत्रदोष'।

मूत्रविषमयता, मूत्रविषमयावस्था--पेशाब का जहर (विष) सम्पूर्ण शरीर में फैल जाना। मूत्रविषता। (उ०) पेशाब का जहर। (अ०) तसम्मुम बौली सम्मियत बौली, दाउल् बौलीना। (अं०) यूरीमिया (Uræmia)।

मूत्र वृद्धि--दे० 'मूत्रज (वृषण) वृद्धि'।

मूत्रशुक्र--शुक्रमिश्रमूत्र, शुक्रमेह। दे० 'शुक्रमेह'।

मूत्रशोष--एक मूत्ररोग जिसमें मूत्र बनता ही नहीं। यह वृक्क में मूत्रोत्पत्ति न होने से होता है। मूत्रक्षय, प्रनष्टमेहन (सु०)। (उ०) पेशाब का पैदा न होना। इन्केताउल्बौल, उस्लबौल। (अं०) सप्रेशन ऑफ यूरिन (Suppression of urine), इस्क्यूरिया (Ischuria)।

मूत्रसंस्थानीय रोग--मूत्रसंस्थानके रोग। (अ०)अम्राज निजाम बौली।

मूत्रसङ्ग—मूत्रावरोध । वातबस्ति । दे० 'मूत्रावरोध' ।

मूत्रसाद—मूत्ररोग । (Cystitis) ।

मूत्रस्थ सिकता—वस्तिस्थ सिकता । (अ०) रमल बौली । (इं०) यूरिनरी सैण्ड् (ग्रेवल) (Urinary sand) (Gravel) । (उ०) पेशाब का रेग ।

मूत्रस्रावीव्रण—व्रण भेद ।

मूत्रस्वेदता—मूत्रवत्स्वेद आना । (अ०) अर्क बौली । (अं०) यूरिड्रोसिस (Uridrosis) ।

मूत्राघात—एक मूत्ररोग जिसमें मूत्र बंद हो जाता है । (सु०) । इसमें मूत्रकृच्छ्र, मूत्रावरोध या मूत्रशोष हो सकता है । वाताष्ठीला इसका एक भेद है (दे० 'वाताष्ठीला') । (अं०) ऑब्स्ट्रक्टेड मिक्ट्यूरिशन (Obstructed micturition) ।

मूत्रातिसार—बहुमूत्रमेह । बहुमेह ।

मूत्रातीत—बिना इच्छाके मूत्रोत्सर्ग होना । बिना इरादा पेशाब निकलना (अ०) बौल बेखबरी, इस्तिरखाउल् मसाना, सलसुल् बौल, सल्सलुल बौल, तसल्सलुल्बौल । (अं०) इन्कॉन्टिनेन्स ऑफ यूरिन (Incontinence of urine) ।

मूत्रावरोध—एक मूत्ररोग जिसमें पेशाब बिलकुल बंद हो जाता है । मूत्रसङ्ग, वातबस्ति । (अ०) इह्तिबासुल बौल, इन्हिबासुल् बौल । (अं०) रिटेन्शन ऑफ यूरिन (Retention of urine) ।

मूत्राशयशोथ—बस्तिशोथ । दे० 'उष्णवात' ।

मूत्राश्मरी—मूत्रस्थ पथरी । (अ०) हसात बौलिय्या । (अं०) यूरोलिथ (Urolith) ।

मूत्रीयार्बुद—मूत्रार्बुद । (उ०) बौली रसौली । (अ०) सल्आ बौलिय्या । (अं०) यूरोसील (Urocele) ।

मूत्रोत्सङ्ग—मूत्रमार्गनिरोध । सु० । दे० 'मूत्रमार्गनिरोध' ।

मूर्च्छा—मस्तिष्क में रक्त की कमी होने से उत्पन्न हुई संज्ञानाश की वह अवस्था जो एकाएक आती है, थोड़ी देर के लिए रहती है और प्रायः आप से आप ठीक हो जाती है । च० । संज्ञानाश, संज्ञादौर्बल्य, संज्ञोपघात । (फा०)

बेहोशी। (अ०) गशी, गश्यान, इग्माऽ। (अं०) सिंकोपी (Syncope), फेंटिंग फिट (Fainting fit)। **भेद**—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, त्रिदोषज (सन्निपातज—यह सुश्रुत मे नहीं है) (च०), रक्तज (सु०) विषज, मद्यज, प्रकृतिवैशिष्ट्यजन्य और अतिरक्तस्रावजन्य।

मूलाधार (भग) पीठ विदार—मूलाधारपीठ (सीवन या भग और गुदा के मध्यवर्ती भाग) का विदीर्ण होना। (अ०) शुकाकुल इजान। (अं०) रॅप्चर (लैसरेशन) ऑफ दि पेरिनियम (Rupture (Laceration) of the Perineum)।

मूलरोग—अर्श। बवासीर। दे० 'अर्श'।

मूषकज्वर—चूहा के काटने का बुखार। आखोविष (दंश) जन्य ज्वर। (अ०) हुम्मा लद्गुल्फार (अक्सीर आजम), हुम्मा फारिय्या। (अं०) रैट-बाइट फीवर (Rat-bite fever)।

मृतवत्सा—एक प्रकार की बन्ध्या जो गर्भधारण होने के सातवें महीने के (२८ वें सप्ताह के) पश्चात् प्रत्येक समय मृतगर्भ को जन्म देती है। (हारीत)। मृतापत्या (पद्मपुराण)। मृतपुत्रिक बन्ध्या।

मृतांगकोथ—किसी अङ्ग का निर्जीव और निश्चेष्ट होना, नाश, मरण। (अ०) मोतुल् इन्जिमाद, शफाकलूस। (अं०) कोग्यूलेशन नेक्रोसिस (Coagulation necrosis), स्फैकलस (Sphacelus)।

मृतावस्था— मुर्दा की-सी हालत। (अ०) हयातोमअल्लक। (अं०) सस्पेंडेड अनीमेशन (Suspended animation)।

मृत्भक्षणज पाण्डु, मृत्भक्षणोत्थ पाण्डु—मिट्टी खानेसे हुआ पाण्डुरोग।

मृदित—शूकदोष। सु०।

मृदु कैन्सर—नरम किस्म का कैन्सर। (अ०) सरतान लय्यिन। (अं०) सॉफ्ट कैन्सर (Soft-Cancer)।

मेदग्रन्थि—मेदोग्रन्थि।

मेदवृद्धि—मेदोवृद्धि।

मेदस्वी—मेदावी (अतिस्थूल)। (अ०) समीना, फर्बा। (अं०) कॉप्युलेंट (Corpulent), फैटी (Fatty)।

मेदगत ज्वर—मेदोगत ज्वर।

मेदार्बुद—दे० 'मेदोर्बुद'।

मेदावी—दे० 'मेदस्वी'।

मेदोगत ज्वर—सप्तधातुगत ज्वर का एक भेद।

मेदोग्रन्थि—ग्रंथि का एक भेद। मेदोजग्रन्थि। (अ०) कीसा दुहनिय्या। (अं०) सिबेसिअस सिस्ट (Sebaceous Cyst)।

मेदोज अर्बुद—नासागत अर्बुद का एक भेद। भेदार्बुद।

मेदोज ओष्ठप्रकोप—ओष्ठगत रोग का एक भेद। ओष्ठप्रकोप भेद। (सु०) यह संभवतः म्याक्रोचेलिया (Macrochelia) होगा।

मेदोज कर्णार्बुद—कर्णार्बुद का एक भेद।

मेदोज गलगण्ड—गलगण्ड का एक भेद। दे० 'गलगण्ड'।

मेदोज ग्रन्थि—दे० 'मेदोग्रन्थि'।

मेदोज स्वरभेद—स्वरभेद का एक भेद। दे० 'स्वरभेद'।

मेदोभव अपची (गण्डमाला)—गण्डमाला का एक भेद।

मेदोरोग—अत्यन्त मोटापा, स्थौल्य, मेदोऽभिवृद्धि, स्थूलता। (हिं०) मोटापा। (फा०) फर्बही जायद। (अ०) सिमन मुफ्रित (समन मुफ्रत)। (अं०) ओबेसिटी (Obesity), कॉप्युलेन्सी (Cropulency), फैटनेस (Fatness), ॲडिपोसिस (Adiposis)। **वक्तव्य**—इसका उलटा दौर्बल्य, कार्श्य, क्षय या क्षीणता है। दे० 'कार्श्य'।

मेदोर्बुद—रसौली (अर्बुद) का एक भेद। सु०। मेदार्बुद। (हिं०, उ०), चर्बीकी रसौली। (अ०) सल्आ दुह्निय्या, सल्आ शह्मिय्या। (अं०) लाइपोमा (Lipoma), लाइपोमेटा (Lipomata), फैटी ट्यूमर (Fatty tumour)।

मेदोवृद्धि—वृषणगत श्लीपद, मेदोज वृद्धि। सु०। अ० सं०। मा० नि०। मेदोज वृषणवृद्धि। इसमें वृषण की त्वचा मोटी पड़ जाती है। (उ०) फोता का फीलपाव। (अ०) फीलफोता, दाउल्फीलसफ्नी। (अं०) एलीफंटिअसिस ऑफ दि स्क्रोटम् (Elephantiasis of the scrotum), एलिफन्टिआसिस स्क्रोटाई (Elephantiasis scroti)।

मेदः सूत्राख्य हृद्यन्त्ररोग—वह हृदयरोग जिसमें हृदय के कोष्ठों में स्थित मांससूत्रों में मेदस कणों का संचय हो जाता है। हृदय की रचना का

वसा (मेद) में परिणत हो जाना। (फा०) फसाद कल्ब शह्मी। (अ०) तशह्हुमुल्कल्ब। (अं) फैटी डिजेनरेशन ऑफ दी हार्ट (Fatty degeneration of the heart)।

मेह—प्रमेह।

मैथुनजन्य व्याधि—मैथुन से उत्पन्न रोग। (अ०) अम्राज जुह्रिय्या। (अं०) वीनीरिअल डिजीज (Venereal disease)। **भेद**—१. **उपदंश**—(क) दोषज और (ख) जीवाणुज अर्थात् फिरङ्ग।

२. **औपसर्गिक पूयमेह**—(सूजाक); ३. **गुह्यवंक्षणीय कणार्बुद** (लिङ्गार्श) और ४. **वर्ध**--(ब्रध्न) बाघी।

मैथुनासहिष्णुत्व, मैथुनासहिष्णुता--मैथुन सहन करने का असामर्थ्य। मैथुन में असहिष्णुता। यह असहिष्णुता (असामर्थ्य) मैथुन के समय होने वाली पीड़ा से उत्पन्न होती है। (अं०) डिस्पारयूनिआ (Dyspareunia)।

मैथुनासामर्थ्य--मैथुन में असामर्थ्य। कामावसाय। दे० 'कामावसाय'।

मैथुनीय कामाक्षेप--(अ०) तशन्नुजात शह्वानिय्या।

मोच--कण्डरावितान। (अ०) वस्त्र। (अं०) स्प्रेन (Sprain)।

मोह--(१) संमोह। (२) दे० 'मूर्च्छा'।

मौषिक जनपदोद्ध्वंसन—एक प्रकार का मरक रोग। सु० कल्प०। ग्रन्थिक ज्वर, प्लेग, ताऊन। दे० 'ग्रन्थिक ज्वर'।

(य)

यकृताभिवृद्धि--यकृत् (जिगर) का छोटा हो जाना, यकृत् क्षय। (अ०) सिग्र (सिग्रुल्) कबिद, तलय्युफुल्कबिद (नवीन)। (अं०) सिर्रोसिस ऑफ दि लिवर (Cirrhosis of the liver), अट्रोफी ऑफ दि लिवर (Atrophy of the liver)। **भेद**--तंतुमय यकृताभिवृद्धि--यकृत् में तंतुओं का उत्पन्न हो जाना और उसका छोटा हो जाना। (अ०) सिग्रुल् कबिद लीफी। (अं०) अॅट्रोफिक सिर्रोसिस (Atrophic cirrhosis)।

यकृतीय अतिसार--दे० 'रक्तातिसार'।

यकृतीय प्रवाहिका--यकृत् की खराबी से होने वाली प्रवाहिका। (अ०) जुसन्तारिया कबिदी, जहीर कबिदी। (अं०) डिसेंटेरिक डायरिया (Dysenteric diarrhœa)। दे० 'रक्तातिसार'।

यकृत् अतिवृद्धि—यकृत् (जिगर) का बड़ा हो जाना। (अ०) इजमुल् कबिद। (अं०) हाइपरट्रोफी ऑफ दि लिव्हर (Hypertrophy of the liver)।

यकृत अर्बुद—यकृत् का घातकार्बुद (कैन्सर)। (अ०) सरतान कबिद। (अं०) कैन्सर ऑफ दि लिव्हर (Cancer of the liver)।

यकृत् अश्मरी—जिगर की पथरी। (अ०) हसातुल्कबिद, हसात कबिदिय्या। (अं०) हिपैटोलिथ (Hepatolith), हेपैटिक कल्क्यूलाई (Hepatic calculi), स्टोन ऑफ दि लिव्हर (Stone of the liver)।

यकृत् कृमिग्रंथि—कीड़े की थैलियाँ जो कभी-कभी यकृत् में होती हैं। (अ०) अवयास दोदानिया। (अं०) हायडेटिड सिस्ट (Hydatid cyst)।

यकृत् क्षय—यकृत् का दौर्बल्य (क्षीणता)। (अ०) हुजालुल् बिद। (अं०) ॲट्रोफी ऑफ दि लिव्हर (Atrophy of the liver)।

यकृत् क्षय, तन्तुजन्य—तन्तुजन्य यकृत् क्षय। हुजाजुल्कबिद लीफी। (अं०) ॲट्रोफिक सिर्रोसिस ऑफ दि लिव्हर (Atrophic cirrhosis of the liver)।

यकृत् ग्रन्थ्यर्बुद—यकृत् का ग्रन्थ्यर्बुद। जिगर की ग्रन्थिक (कीसी) रसौली। (अ०) कीसुल् कबिद। (अ०) हायडेटिड ऑफ दि लिव्हर (Hydatid of the liver)।

यकृद्दाल्युदर—प्लीहावृद्धि के साथ-साथ हुई यकृत् की वृद्धि (सुश्रुत-डल्हण)। यकृत्प्लीहोदर (चरक)। यकृद्दाली (यकृदुदर रोग)। इसका समावेश प्लीहोदर में हो किया गया है, स्वतन्त्र नहीं तथा चिकित्सा भी प्लीहोदरवत् होती है। केवल यकृत् वृद्धि को यकृद्दाल्युदर नहीं कहते। एन्लार्जमेंट ऑफ दि स्प्लीन विथ एन्लार्ज्ड लिवर (Enlargement of the spleen with enlarged liver)।

यकृत प्रदाह—दे० 'यकृत् शोथ'।

यकृत् रोग—यकृत् विकार। यकृत् के रोग। (अ०) अम्राज जिगर, अम्राजुल्कबिद। (अं०) डिजीजेज ऑफ दी लिव्हर (Diseases of the liver)।

यकृत्विद्रधि—जिगर (यकृत्) का फोड़ा। (अ०) दुदैलतुल्कबिद। (अं०) हेपैटिक ॲब्सेस (Hepatic abscess), लिव्हर अब्सेस (liver abscess)।

यकृत् वृद्धि (यकृद्वृद्धि)—केवल यकृत् की वृद्धि। इसमें ज्वर नहीं होता। (अ०) इजम जिगर, इजमुल्कबिद, (इजम कबिद), तजख्खुमुल्कबिद। (अं०) एन्लार्ज्ड लिव्हर (Enlarged liver), हेपैटिक एन्लार्जमेंट (Hepatic enlargement), एन्लार्जमेंट ऑफ लिव्हर (Enlargement of liver)।

यकृत्शूल—यकृत् का शूल। यकृदश्मरी के कारण जो दर्द जिगर में होता है। (अ०) वज्उल्कबिद, कुलंज कबिद, कुलंज सफरावी। (अं०) हेपैटिक कॉलिक (Hepatic colic)।

यकृत् शोथ—यकृत् की सूजन। यकृच्छोथ की दशा में यकृद्वृद्धि भी पाई जा सकती है परंतु यकृद्वृद्धि में शोथ का पाया जाना अनिवार्य नहीं है। इसमें ज्वर होता है। (अ०) वरम (वरमुल्) कबिद, इल्तिहाबुल् कबिद, वरमे जिगर। (अं०) हेपेटायटिस (Hepatitis)।

यक्ष्मा—क्षयरोग। दे० 'राजयक्ष्मा'।

यक्ष्माजन्यकणार्बुद—(अ०) फुरित दरनी। (अं०) ट्यूबरक्यूलर मायोसील (Tubercular myocele)।

यक्ष्माजन्य विप्रकृति—(अ०) सूएमिजाज सिल्ली (दरनी)। (अं०) ट्यूबरक्यूलर ककेक्सिया (Tubercular cachexia)।

यक्ष्माव्रण—(अ०) कहींखंजूनिय्या (सिल्लिया)। (अं०) ट्यूबरक्यूलस अल्सर (Tuberculous ulcer)।

यक्ष्मीय कणार्बुद—(अ०) खनाजीरी या सिल्ली सल्आ दरनी। (अं०) ट्यूबरक्यूलस ग्रान्यूलोमा (Tuberculus granuloma)।

यमला—हिक्का का एक भेद। यमिका। (व्यपेता-चरक)। दे० 'हिक्का'।

यवप्रख्या—यवाकार बहुत कठिन गाँठदार पिड़का। सु०। क्षुद्ररोग। वा०। मा० नि०।

यूका—बाह्यमलज क्रिमिभेद। जूँ। (अ०) कम्ल (बहुव० कुमुल)। (अं०) लाउस (Louse), पेडिक्यूलस (Pediculous)। **वक्तव्य**—जुएँ अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे—(१) एक सफेद बारीक-बारीक जो बालों से चिमटी रहती हैं। यह वस्तुतः, जुओं के अंडे होते हैं। इनके पर्याय आदि के लिए दे० 'लिक्षा'। (२) वह जो स्रोतों (छिद्रों) से धँस जाती हैं और बालों की जड़ों की तरह दिखाई देती हैं। इनको अरबी में तयूअ, फारसी में कमकाम और हिन्दी

में जम्जुं एवं घक कहते हैं। (३) बड़ी बड़ी जुएँ जो सिर में और शरीर के कपड़ों में चलती-फिरती दिखाई देती हैं इनको अरबी में 'कम्ल' और फारसी में 'शुपुश' कहते हैं।

युवानपिड़का—दे० 'मुखदूषिका'। मा० नि०।

योनिकन्द—योनिज कंदरोग। (अं०) वेजाइनल पॉलिपस (Vaginal Polypus)। **भेद**—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और सन्निपातज।

योनिकण्डू—योनि की खुजली। (उ०) अंदामनेहानी की खारिश। (अ०) हिक्कतुल् मह्बिल। (अं०) वेजाइनल प्रूराइटीज (Vaginal pruritis)।

योनिगत रोग—योनिव्यापत्। दे० 'योनिरोग'।

योनिघात—(अ०) इस्तिरखाउल् मह्बिल। (अं०) पॅरालिसिस ऑफ दि वॅजाइना (Paralysis of the vagina)।

योनिगर्भाशयान्तःस्तर विकार—(अं०) एन्डोमेट्रायटीज (Endometritis), वेजायनायटीज (Vaginitis)।

योनिद्वारस्थ छिद्राभाव—योनिद्वार के पर्दे (Hymen) में छिद्र न होना। (अ०) इन्गलाकुल् फर्ज, बकारत गैर मस्कूब। (अं०) इम्पर्फोरेट हायमीन (Imperforate hymen)।

योनिपरिसर्पण—एक योनिरोग, प्रस्रंसिनी, योनिभ्रंश।

योनिभ्रंश—योनि का बाहर निकल आना। (अं०) खुरूजुल (सुकूतुल् या नुतूउल्) मह्बिल। (अं०) प्रोलॅप्सस वेजाइनी (Prolapsus vaginæ), कोल्टिओप्टोसिस (Coltioptosis)।

योनिमार्गाभाव—अब्सेन्स ऑफ वेजाइना। (Absence of vagina)।

योनि (गर्भाशय) मुखावरोध—गर्भाशय के मुँह (या योनिमार्ग) का बंद हो जाना। (अ०) इन्सिदाद फम रहम। (अं०) अट्रेसिया ऑफ दि ऑस यूटराई (Atresia of the os Uteri)।

योनिरोग—योनि के रोग, योनिव्यापत्। च०; सु०; वा०; शार्ङ्ग०। (अ०) अमराजुल्फर्ज। (अं०) डिजीजेज ऑफ वेजाइना (Diseases of Vagina)। **रोगनाम और संख्या**—(१) उदावृत्त (सु०); (२) बन्ध्यायोनि (सु०); (३) विप्लुता (सु०; वा०; शार्ङ्ग०), उपप्लुता (च०); (४) परिप्लुता (सु०; च०, वा; शार्ङ्ग०); (५) वातला (सु०; च० वा; शार्ङ्ग०),

कष्टार्तवा; (६) लोहितक्षया। (वा०; शार्ङ्ग०), लोहितक्षरा, रुधिरक्षरा (सु०), शुष्का (च०); (७) वामिनी (सु०; च०; वा०; शार्ङ्ग०); (८) प्रस्रंसिनी (स्थानापवृता—च०) अथवा रक्तयोनि (च०; शार्ङ्ग०;) अथवा अन्तर्मुखी (च०; वा०), योनिभ्रंश, योनिपरिसर्पण; (९) पुत्रघ्नी (सु०; च०), जातघ्नी (वा०; शार्ङ्ग०); (१०) पित्तला (च०, सु०; वा०; शार्ङ्ग०); (११) अत्यानन्दा (सु०), नन्दा (शार्ङ्ग०), कण्डूरा योनि (वा०), अचरणा (अग्निवेश), चिरचरणा, अतिरतिप्रिया (मैथुन से तृप्त न होने वाली); (१२) कर्णिनी (च०; वा०), कर्णिका; (१३) प्राक्चरणा (सु०, च०, वा०), (१४) अतिचरणा; (१५) श्लेष्मल; (१६) षण्डी (षण्डयोनि), (१७) अण्डिनी, अण्डली (सु०) अन्तर्मुखी; (१८) विवृत्त (महायोनि) और (१९) सूचिवक्त्रा।

योनिविकृति—विकृत योनि। (अं०) मॅल्फार्मेशन आफ दि वेजाइना (Malformation of the Vagina)।

योनिव्यापत्—योनिरोग।

योनिशोथ—योनि की सूजन। (अ०) वरमुल् महबिल, इल्तिहाबुल् महबिल। (उ०) अन्दाम निहानी का वरम या इल्तिहाब। (अं०) वेजाइनायटीज (Vaginitis)।

योनिसंकोच—योनि का संकुचित हो जाना। दे० 'योन्याक्षेप'।

योनिसंवरण—गर्भाशय का संकोच या आक्षेप। सु०। (अं०) टेटनस यूटराई या क्लोरिक स्पैज्म ऑफ दि यूटरस (Tetanus uteri or cloric Spasm of the uterus)।

योनिसंवृत्ति—गर्भाशय का अधिक काल तक संकोच की स्थिति में अवस्थान (सु०)। टोनिक स्पैज्म ऑफ दि यूटरस या टेटनस यूटराई (Tonic Spasm of the Uterus or Tetanus Uteri)।

योनिसरलान्त्रमध्यनाडी—(अ०) नासूर मुस्तकीमी महबिली। (अं०) रेक्टो वेजाइनल फिस्चुला (Recto-Vaginal fistula)।

योनिस्थानापवृत्ति—गर्भाशय स्थानापवृत्ति।

योन्यर्श—योनिमार्ग या गर्भाशय में प्राप्त अर्श, गर्भाशयगत बवासीर, योनिमार्ग या गर्भाशय के मस्से। (अ०) बवासीरुर्रिहम। (अं०) पॉलिपस यूटराई (Polypus Uteri), पॉलिपस ऑफ यूटरस (Polypus of Uterus)।

योन्यवरोध—योनिमार्ग का बन्द हो जाना। (अ०) रतक, इन्सिदाद मह्बिल। (अं०) अट्रेसिया ऑफ दि वेजाइना (Atresia of the Vagina)।

योन्याक्षेप—योनि का संकोच। (अ०) तकल्लुस मह्बिल, तशन्नुज मह्बिल। (अं०) वेजिनिस्मस (Vaginismus)।

योषापस्मार—अपतन्त्रक का नवीन नाम। दे० 'अपतन्त्रक'।

यौवनपिडका—मुँहासा। डोंडसा। दे० 'मुखदूषिका'।

यौवनोन्माद—दे० 'उन्माद'।

(र)

रंगीन स्वेद—रंगयुक्त स्वेद। (अ०) अरक रंगीन। (अं०) क्रोमिडरोसिस (Chromiderosis)।

रक्तसा—क्षुद्रकुष्ठ का एक भेद जिसमें कण्डूयुक्त और स्रावरहित फुंसियाँ शरीर में उत्पन्न होती हैं। सु०। चरक, वाग्भट और माधवनिदान में इसका उल्लेख नहीं मिलता। (अं०) ड्राई एक्ज़ीमा (Dry Eczema)।

रक्तव्य—कण्डू भी एक प्रकार की सूखी खुजली का रोग है; परन्तु उसमें फुंसियाँ (दाने) नहीं होतीं।

रक्तक्षय—पाण्डुरोगभेद। असृक्क्षय। दे० 'पाण्डु'।

रक्तक्षयजन्य कामला—रक्तक्षय के कारण उत्पन्न कामला रोग। पीतपाण्डु। (अ०) यर्कान जूबानी दम्बी, फक्रुद्म यरकानी। (अं०) हीमोलिटिक जॉन्डिस् (Hæmolytic Jaundice)।

रक्तक्षीणता—वृक्करोग भेद। रक्तहीनता। रक्तक्षय।

रक्तगुल्म—गर्भाशय के लचकीले मांसतंतुओं का शण जैसे कठिन तंतुओं से परिवृत्ति। रक्तजगुल्म। (अं०) फाइब्रोसिस् यूटराई (Fibrosis Uteri), यूटराइन फाइब्रॉइड्स (Uterine fibroids)।

रक्तग्रन्थि—ग्रन्थिरोग का अष्टाङ्गसंग्रहोक्त एक भेद। सुश्रुत में इसका उल्लेख नहीं है। दे० 'ग्रंथि'।

रक्तचाप—रक्तभार।

रक्तज अतिसार—रक्तातिसार।

रक्तज अधिमन्थ—वाताधिमन्थ की उपेक्षा से उत्पन्न हुआ एक प्रकार

का अधिमन्थ रोग। ओपसर्गिक नेत्राभिष्यन्द का एक भेद जिसमें आँख गुलाबी रंग की (अरुणवर्ण) हो जाती है। (अ०) रमद वबाई, वरदीनज, यनग। (अं०) एपिडेमिक कन्जंक्टिवाइटिस (Epidemic Conjunctivitis), पिंक आई (Pink eye)।

रक्तज अपस्मार—यूनानी वैद्यक में अपस्मार का एक भेद। (अ०) सरअ दम्वी।

रक्तज अर्म—रक्तार्म।

रक्तज ओष्ठप्रकोप—ओष्ठप्रकोप का एक भेद जिसमें रक्तदूषित होंठ खजूर के फल के वर्ण के समान फुंसियों से व्याप्त, रक्त स्रवने वाले और रक्तवर्ण होते हैं। सु०। अर्बुद (वाग्भट)। (अ०) बवासीर शफत (लब)। (अं०) एपिथेलिओमा ऑफ दि लिप्स (Epithelioma of the lips)। दे० 'ओष्ठप्रकोप'।

रक्तज कृमि—कुष्ठरोगजनक आभ्यन्तर कृमि। **भेद**—१. केशाद, २. रोमविध्वंस, ३. रोमद्वीप, ४. उदुम्बर, ५. सौरस और ६. (जन्तु) मातर।

रक्तज गर्भाशयशोथ—गर्भाशयशोथ का एक भेद।

रक्तजगुल्म—रक्तगुल्म।

रक्तज ग्रन्थि—रक्तग्रन्थि।

रक्तजज्वर—(१) यूनानी वैद्यक के मत से ज्वर का एक भेद। रक्तज्वर। इसके यह दो अवान्तर भेद है—(क) रक्तोल्वण—(अ०) सुनूखुस हुम्मा दमिव्या। (अं०) सिनाकस (Synochus) और (ख) रक्तदूषक—(अ०) मुत्बिका। (अं०) टायफाइड (Typhoid) और टायफस (Typhus)। (२) लाल बुखार। लोहितज्वर; (फा०) तपेसुर्ख। (अ०) हुम्मा किर्मिजिय्या। (अं०) स्कार्लेट फीवर (Scarlet fever), स्कार्लेटिना (Scarlatina)।

रक्तजतिमिर—तिमिर रोग का एक भेद। दे० 'दाह'।

रक्तज दाह—दाह रोग का एक भेद। दे० 'तिमिर'।

रक्तज प्रदर—रक्तप्रदर, असृग्दर।

रक्तज भगशोथ—भगशोथ का एक भेद।

रक्तज मुखपाक—रक्तजन्य मुखपाक। मुखपाक का एक भेद। सु०। (अ०) कुलाम हार्र दम्वी।

रक्तजमूर्च्छा—मूर्च्छारोग का एक भेद।

रक्तज विद्रधि—(१) बाह्यविद्रधि का एक भेद। रक्तविद्रधि। दे० 'रक्तविद्रधि'। (२) प्रसूत स्त्रीजात (मक्कल सज्ञक) रक्तविद्रधि।

रक्तज विसर्प (शोथ)—(उ०) वरम दम्वी अजीम, फल्गमूनी हुमूरः। (अं०) फ्लेग्मोन (Phlegmon)।

रक्तज विस्फोट—विस्फोट का एक भेद।

रक्तजवृद्धि—वृद्धि का एक भेद। रक्तजवृषणवृद्धि। दे० 'रक्तवृद्धि'।

रक्तजव्रण—शरीरव्रणभेद। दोषजन्य व्रण का एक भेद। दे० 'व्रण'।

रक्तज (रक्तजन्य रक्तोल्वण) शिरोरोग—पित्तोल्वण या पित्तजन्य शिरोरोग के लक्षण वाला शिरोरोग विशेष। (उ०) दर्दे सर दम्वी। (अ०) सुदाअ दम्वी। (अं०) कन्जेस्टिव्ह हेडेक (Congestive headache)।

रक्तजस्राव—नेत्रसंधिगतरोगान्तर्गत नेत्रस्राव रोग का एक भेद।

रक्तज स्वप्न—दे० 'कुस्वप्न'।

रक्तज्वर—लोहित ज्वर। दे० 'रक्तज ज्वर (२)'।

रक्तदोष—रक्तविकार।

रक्तधातुगत ज्वर—सप्तधातुगत ज्वरों में से एक।

रक्तपित्त—(अ०) अमराज नज्फी (नजीफी)। (अं) हीमोरेजिक डिजीज (Hæmorrhagic disease)। **भेद**—(आयुर्वेदीय) वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक। उर्ध्वग और अधोग। अन्य **भेद**—(पाश्चात्य)—(१) नीलरक्तता या श्यावरक्तता—इसके अवांतर भेद—१. साधारण, २. रक्तस्रावी, ३. आमवातिक (शॉन्लोनी) और ४. हीनकी। (२) **स्कर्वी**—इसके अवांतर **भेद**—१. बाल. २. फक्कीय और ३. मोलरबार्लो।

रक्तपित्तज विसर्प—विसर्प का एक भेद। (अ०) वरम मुरक्कब, हुमूरए गैर खालिस।

रक्तपित्तज विस्फोट—विस्फोट का एक भेद।

रक्तप्रदर—दे० 'असृग्दर'।

रक्तप्रवृत्ति—रक्तस्राव। रक्त का उत्सर्ग।

रक्तभार—रक्तचाप, रक्त का दबाव। (अ०) जग्ता दम्वी, जग्ततुद्दम। (अं०) ब्लड-प्रेसर (Blood-Pressure)। **भेद**—(१) वर्धित—रक्त का

बढ़ा हुआ दबाव, रक्तभारवृद्धि, रक्तभाराधिक्य। अजीर्णमूलक वातपित्त विकृति, रक्तो(शोणितो)त्क्लेश, शोणितोत्क्लेद (च०), रक्ताधिक्यरोग (गणनाथसेन), रक्तोद्गम (हरिप्रपन्नजी)। (अ०) जग्ता दम्वी कवी, फशार खून कवी। (अं०) हाईब्लडप्रेसर (Highblood Pressure)। (२) ह्रसित वा क्षीण--रक्त के दबाव की कमी। (अ०) जग्तादम्बी जईफ। (अं०) लो ब्लड प्रेसर (Lowblood Pressure)।

रक्तभारवृद्धि--वर्धित रक्तचाप। दे० 'रक्तभार'।

रक्तभाराधिक्य--वर्धित रक्तभार। दे० 'रक्तभार'।

रक्तमूत्र--एक प्रकार का प्रमेह जिसमें रुधिरवर्ण मूत्र होता है। इसमें मूत्र में रक्त होता (पूर्ण रक्त उपस्थित होता) है। (सु०)। (सं०) शोणितमेह। सरुधिरमूत्रता। रक्तमिश्रमूत्र। रक्तमेह। (उ०) पेशाब में खून आना। (अ०) बोलुद्दम, बोल दम्वी (खूनी)। (अं०) हीमाट्यूरिया (Hæmaturia)।

रक्तमेह--पित्तज प्रमेह का एक भेद। सु०। दे० 'रक्तमूत्र'।

रक्तवमन--रक्त का वमन, वमन में रक्त आना। (उ०) खूनी कै। (अ०) कैउद्दम, कैदम्वी, (नफ्फुद्दम), कैमुत्दम्मिम। (अं०) हीमाटेमेसिस (Hæmatemesis), ब्लड वॉमिट (Blood vomit)। **भेद**--श्याव वमन।

रक्तवाहिनीगत रक्तस्कन्दन--वाहिन्यवरोध। धमन्यवरोध। रगों के अन्दर खून जम जाना। (उ०) खूनी सुद्दे। (अ०) सुद्दा दम्विय्या। तखस्सुरुद्दम (तजल्लुदुद्दम) फिल ओइय्या। (अं०) थ्राम्बोसिस (Thrombosis), जायमोसिस (Zymosis)।

रक्तवाहिनीनियंत्रणअस्थैर्य--रक्तवाहिनी नियन्त्रणसंस्थान का अस्थैर्य। (अं०) वेसोमोटर इन्स्टेबिलिटी (Vasomotor instability)।

रक्तवाहिन्यर्बुद--उरू की रसौली। (अ०) सलआ अरूक़िय्या। (अं०) केवर्नस ट्यूमर (Cavernous tumour), केवर्नोमा (Cavernoma)।

रक्तविद्रधि--पित्तविद्रधि के लक्षण का विद्रधि। दे० 'विद्रधि'।

रक्तविषमयता, रक्तविषमयावस्था--(अ०) तसम्मुमुद्दम। (अं०) टॉक्सीमिया (Toxæmia)।

रक्तवृद्धि--वृद्धि का एक भेद जिसमें वृषणकोष के भीतर रक्त संचित हो

जाता है। रक्तजवृद्धि। सु०। अ० सं०। मा० नि०। (अ०) कीला दम्विय्या, उद्रह दम्विय्या। (अ०) हीमाटोसील (Hæmatocele)।

रक्तष्ठीवन—खून थूकना। थूक में खून आना। उरःक्षत (चरक)। (अ०) नफ्सुद्दम। (अं०) हीमोप्टिसिस (Hæmoptysis)।

रक्तशुक्रता—शुक्र में रक्त मिला रहने की अवस्था। (अं०) हीमोस्पर्मिआ (Hæmospermia)। दे० 'शोणितशुक्रता'।

रक्तसंचय—रक्त संचय होना। रक्ताधिक्य। (अ०) इज्तिमाअ् खून, इहतिकान, इम्तलाअ्। (अं०) कन्जेश्चन हाइपरीमिया (Congestion hyperemia)। **भेद**—१. **धामनिक रक्तसंचय**—(अ०) इह्तिकान जाती। (अं०) ऐक्टिव्ह हाइपरीमिआ (Active hyperemia)। २. **सिरागत रक्तसंचय**—(अ०) इह्तिकान कस्री (कहरी)। (अं०) पैसिव्ह हाइपरीमिआ (Passive hyperemia)।

रक्तसंचयजन्य शोथ—रक्तसंचित होने से उत्पन्न हुआ शोथ। (अ०) तहब्बुज दम्वी, ओजीमाए इह्तिकानिय्या। (अं०) कन्जेस्टिव्ह एडिमा (Congestive Oedema)।

रक्तसंचयजन्य संन्यास—कोष्ठरक्तज सन्यास। (अ०) सक्ता इह्तिकानिय्या, सक्ता इम्तिलाइय्या। (अं०) कन्जेस्टिव्ह ॲपोप्लेक्सी (Congestive apoplexy)।

रक्तस्थ पित्तजन्य कामला—रक्तजन्य कामला। (अ०) यरकान दम्वी कबिदी, यरकान दम्वी। (अं०) हिमेटो-हीपेटोजीनस जॉन्डिस (Hæmato-hepatogenous jaundice)।

रक्तस्थ श्वेतकणाभिवृद्धि—श्वेतरक्त, सफेद खून। (अ०) दमकैलूसी (प्राचीन, दम अब्यज, अबैजाज दम। (अं०) ल्यूकीमिया (Leukæmia)।

रक्तस्राव(-ण)—रगों से खून जारी होना। जख्म से खून बहना। रक्तक्षरण। (अ०) नजफ, जर्व, नज्फुद्दम। (अं०) हीमोरेज (Hæmorrhage)।

रक्तस्रावजन्य संन्यास—(अ०) सक्ता दम्विय्या। (अं०) सैंग्विनस अपोप्लेक्सी (Sanguinous apoplexy)।

रक्तस्रावी अग्न्याशय शोथ—वह अग्न्याशय शोथ जिसमें रक्तस्राव

होता है। (अ०) वरम बानकरास हाद्द जरयानी। (अं०) अॅक्यूट हीमोरेजिक पैन्क्रिअॅटायटिस (Acute Hæmorrhagic Pancreatitis)।

रक्तस्रावी ज्वर—(अ०) हुम्मा नजीफिय्या । (अं०) हीमोरेजिक फीवर (Hæmorrhagic fever Remittent)।

रक्तस्रावी दुष्टज्वर—(अ०) हुम्मा नज्फिय्या खबीसा । (अं०) हीमोरेजिक पर्निशस फीवर (Hæmorrhagic pernicious fever Remittent)।

रक्तस्रावी कुलज (सहज) पाण्डु—एक प्रकार का पाण्डुरोग। (अ०) फक्रुद्दमजिरयानी, रिक्कत खून। (अं०) हीमोफायलिया (Hæmophilia)।

रक्तस्रावी प्लेग—खूनी प्लेग। (अ०) ताऊन दम्वी, ताऊन नज्फी। (अं०) हीमोरेजिक प्लेग (Hæmorrhagic Plague)।

रक्तस्रावी मध्यकर्णशोथ—(अं०) ओटायटिस मीडिया हीमोरेजिका (Otitis media hæmorrhagica)।

रक्तातिसार—अतिसार का एक भेद। बिना ऐंठन खूनी दस्त। दे० 'अतिसार'। (अ०) इस्हाल दम्वी, इसहालुद्दम, बराज दम्वी, इख्तिलाफुद्दम, जूसन्तारियाए दम्वी। (उ०) खूनी या दम्वी दस्त। (अं०) हीमाटोकेझिआ (Hæmatochezia), मेलीना (Malæna)। **भेद**—यूनानी वैद्यक में इसके यह दो भेद हैं--(१) आन्त्रदोषज--इसे जूसन्तारियाए मिअवी कहते हैं। संभवत: यह आयुर्वेदोक्त 'रक्तातिसार' है और (२) यकृद्दोषज--यकृतीय प्रवाहिका। जिगर का खूनी दस्त। यह ऐंठनयुक्त खूनी दस्त है। इसे अरबी में जूसन्तारियाए कबिदी या कियाम कब्दी और अँग्रेजी में डिसेंटेरिक डायरिआ (Dysenteric Diarrhœa) अथवा हेपैटिक डायरिया (Hepatic diarrhœa) कहते हैं।

रक्ताधिक्य--रक्तसंचय।

रक्तान्वित शुक्र--शुक्रदोष भेद।

रक्तार्बुद--अर्बुद का एक भेद। खूनी रसोली (इसमें खून भरा होता है)। (अ०) सल्आ दम्विय्या। (अं०) हीमाटोमा (Hæmatoma)।

वक्तव्य--आयुर्वेदोक्त रक्तार्बुद केन्सर का एपिथेलिओमा (Epithelioma) नामक प्रकार हो सकता है जिसे अरबी में 'सल्आ बुश्रिय्या' कहते हैं।

रक्तार्म—(१) एक नेत्रश्वेतभागगत रोग। एक प्रकार का अर्म जिसमें नेत्र के शुक्ल भाग में रक्तवर्ण एवं कोमल मांस (अर्म) उपचित होता है। यह रक्तज एवं छेदनसाध्य है। (सु०) लोहितार्म। शोणितार्म। (उ०) सुर्ख नर्म अक्ज़ूनी। (अ०) लह्मा। (२) नेत्रश्वेतभागगत वह रक्त मांसोपचय जो आन्तरिक नेत्रकोण में दिखाई देता है—(अ०) लह्मा दमृइय्या। (अं०) पंक्टा लॅक्रिमॅलिस (Puncta Lacrimalis)।

रक्तार्श—स्रावी अर्श। खूनी बवासीर। दे० 'परिस्रावी अर्श'।

रक्ताल्पता—खून की कमी। दे० 'पाण्डु'।

रक्तोत्क्लेश—रक्तभार।

रक्तोरस्—शोणितपूर्णकोष्ठता। (अं०) हीमोथोरक्स (Hæmothorax)।

रक्तोल्बण रक्तपित्तज विसर्प—(अ०) फल्गमूनी हुमूर:।

रक्तोल्बण सरसाम (सन्निपात)—यूनानी वैद्यक के मत से सरसाम हकीकी का एक भेद। (अ०) सरसाम दम्वी, सरसाम हार्र, करानीतुस (शुद्ध फ़्रानीतुस)। (अं०) फ्रेनायटिस (Phrenitis)।

रंगीन स्वेद—रँगा हुआ पसीना। (उ०) अर्करंगीन। (अं०) क्रोमिडेरोसिस (Chromiderosis)।

रजक्षय—रज की क्षीणता।

रजोनिवृत्ति—बहि: पुष्प निवृत्ति। आर्तवनिवृत्ति। (उ०) सिनयास। (अ०) इन्कित़ाउत्तमस, इह्तिबासुत्तम्स। (अं०) मेनोपॉज (Menopause), मेनोलिप्सिस (Menolipsis), मेनोस्टेसिस (Menostasis)।

रजोविष—रजस्वला स्त्री के रक्त में होने वाला विष विशेष। (अं०) मेन्स्ट्रुअल टॉक्सिन (Menstrual toxin)।

रजः कृच्छ्र—मासिक धर्म के समय आर्तवस्राव बाहर निकलने में बहुत कठिनता होना। कृच्छ्रार्तव।

रसकृत व्याधि—रस तथा विशेष प्रकार का अन्न निरन्तर सेवन करने से होने वाला विकार। सु०।

रसज अतिसार—अतिसार भेद। (अ०) इसहाल मस्ली (सदीदी)। (अं०) सीरस डायरिया (Serous diarrhœa)।

रसजन्यरोग—रसज विकार। रसस्थ दोष के विकार। सु०।

रसपरिवर्तन—स्वाद का बदल जाना। (अ०) फसादुज्जोक। (अं०) अगूष्टिया (Ageustia), डिसगूसिया (Dysgeuesia)।

रस शेषाजीर्ण—अजीर्ण भेद। आहार का असम्यक् परिणत रस की भाँति अवशिष्ट पतला भाग के कारण हुआ अजीर्ण।

रसस्थ ज्वर—सप्तधातुगत ज्वरों में से एक।

रसाज्ञान—रसज्ञान का नाश, स्वाद मालूम न कर सकना, स्वाद नष्ट हो जाना, रसज्ञानविरहित, रसानवबोध, अरसज्ञता। (अ०) बुत्लान जौक (बुत्लानुज्जोक), फक़्दुज्जोक। (अं०) अगूसिया (Ageuesia), लॉस ऑफ सेन्सिबिलिटी टु टेस्ट (Loss of sensibility to taste)।

रसायनी ग्रन्थिशोथ, रसायनी शोथ—(अ०) इल्तिहाबुल् गुद्दतिल्लिम्फाविय्या (अं०) लिम्फॅञ्जाइटिस (Lymphangitis), लिम्फेडीनाइटिस (Lymphadenitis)।

रसायन्यार्बुद—रसायनी का अर्बुद। (उ०) लिम्फावी रसौली। (अ०) सल्आ लिम्फाविय्या। (अं०) लिम्फोमा (Lymphoma)।

राक्षस—विकृत गर्भ। (अं०) मॉन्स्टर्स (Monsters)।

राजयक्ष्मा—(सं०) शोष, क्षय, राजयक्ष्मा। (हि०, उ०) खाँसी-बुखार, दिक का बुखार, पुराना बुखार, बारीक बुखार, दिक तप। (अ०) हुम्मा दिक्किया, हुम्मा दिक, सिल्ल रियवी, तदर्रुन, कर्हारिया मै-तपे-दिक। (फा०) तपे दिक। (अं०) थाय्सिस (Pthisis), पल्मोनरी ट्यूबरक्यूलोसिस (Pulmonory tuberculosis), कन्जम्प्शन (Consumption), टेबीज (Tabes)। **भेद**—(१) अनुलोमक्षय और (२) प्रतिलोमक्षय। अन्य भेद—१. आंत्रिक क्षय, २. सर्वांग क्षय, ३. अस्थिक्षय, ४. त्वग्जन्यक्षय और ५. उदरक्षय आदि।

राजयक्ष्मज ग्रंथि—राजयक्ष्मा रोग की ग्रन्थि (उभार)। (अ०) दरन। (अं०) ट्यूबर्कल (Tubercle)।

राजयक्ष्मज रोग—(अ०) अम्राज सिल्लिया, अम्राज दरनिया। (अं०) ट्यूबरक्यूलर डिजीजेज (Tubercular diseases)।

राजिका—अम्होरियाँ, अम्होरी, गर्मीदाना। (वाग्भट)। (अ०) हस्फा,

हसफ, बुसूर शौकी (शौकिया) । (अं०) प्रिक्ली हीट (Prickly heat), हीट रैश (Heat rash), लिचिन ट्रॉपिकस (Lichen tropicus) ।

भेद—१. श्वेत दाने की अम्हौरियाँ । मोतियों की तरह झलकदार गर्मीदाने । इसके दाने बाजरे के बराबर होते हैं । (अ०) दुख्निय्या, जावरसिय्या । (अं०) सुडामिना (Sudamina), मिलिएरिया अल्बा (Miliaria alba) । २ लाल दाने की अम्हौरियाँ । इसमें दाने की जड़ लाल रंग की होती है । (अ०) हसफा । (अं०) मिलिएरिया रूब्रा (Miliaria rubra) ।

रात्रिज्वर—रात में आने वाला बुखार । (अ०) हुम्मा लैलिया । (अं०) नाइट फीवर (Night fever) ।

रुक्षताजन्य आक्षेप—आक्षेप का एक भेद । (अ०) तशन्नुज युबसी, तशन्नुज याबिस, तशन्नुज इस्तिफ्रागी ।

रूक्षदग्ध—अग्नि से जला हुआ । अग्निदग्ध । (अ०) हर्क, हर्क्नार । (अं०) बर्न (Burn) ।

रुज्या—एक क्षुद्ररोग जिसमें बाल गिरते हैं । खालित्य । इन्द्रलुप्त । सु० ।

रुह्या—एक क्षुद्ररोग जिसमें बाल गिरते हैं । (मा० नि०) । खालित्य । इन्द्रलुप्त । श्रीकण्ठदत्त के मत से संपूर्ण शरीर के बाल गिरने को 'रुह्या' कहते हैं। इस मत के अनुसार 'रुह्या' को ॲलोपेशिया युनिवर्सेलिस (Alopecia Universalis) कह सकते हैं । सुश्रुतादि में इसे इन्द्रलुप्त का पर्याय लिखा है । (अ०) दाउस्सालब । (फा०) बालखोरा । (हिं०) बालखोरा, बालचर । (अं०) अलोपेशिया ईरीएटा (Alopecia Aereata) । **वक्तव्य**—यूनानी वैद्यक में इसके अलावा इसका एक भेद दाउल्हय्या लिखा है जिसमें बालों के अतिरिक्त त्वचा भी साँप की केंचुली की भाँति उतर जाती है । अंगरेजी में इसे ॲलोपेशिया फर्फुरेशिआ (Alopecia furfuracea) कहते हैं ।

रूढ़धान्याङ्कुराकार कृमि—आभ्यन्तर कृमिभेद । दे० 'अंकुशमुखकृमि'।

रूह्या—एक क्षुद्ररोग जिसमें बाल गिरते हैं । चाच । इन्द्रलुप्त । अ० ह्० ।

रुधिरक्षरा—एक योनिरोग । लोहितक्षरा । सु० । लोहितक्षया । वा० शा० । शुष्का । च० । दे० 'योनिरोग' ।

रोग—व्याधि, दोष । (उ०) बीमारी । (अ०) मर्ज (बहुव० अमराज) । (अं०) डिजीज (Disease) । **भेद**—(१) आगन्तु (संघातबलप्रवृत्त,

दैवबलप्रवृत्त और कालबलप्रवृत्त), (२) शारीर वा निज, (३) मानस (मानसिक) और (४) स्वाभाविक । अन्य भेद—१. स्वतंत्र (Simple) और २. संमिश्रस्वरूप, संपिश्ररूज, संसृष्ट (Compound) । इनमें से प्रथम को अरबी में 'मर्ज मुफ्रद' और दूसरे को 'मर्ज मुरक्कब' कहते हैं ।

रोगनिवृत्तिकालीन दौर्बल्य—रोगोत्तरकालीन दोर्बल्य । (अ०) नकाहत । (अं०) कॉन्वैलेसेन्स (Convalescence) ।

रोगमोक्षकालिक अतिसार—(अ०) इसहाल बुह्रानी । (अं०) क्रिटिकल डायरिया (Critical diarrhœa) ।

रोगसंप्राप्तिकाल—संचयकाल । (अं०) इन्क्यूबेशन पीरिअँड (Incubation period) ।

रोगजन्य शिरोशूल—(अ०) सुदाअ (दर्द) मसयानी । (अं०) सिक हेडेक (Sick-headache) ।

रोदन—बालरोग विशेष । शार्ङ्ग० । माधवनिदानोक्त शिशो स्वभावातिरिक्त रोदन । बालक स्वस्थावस्था में जितना रोता है उससे न्यूनाधिक रोना । अ०सं० ।

रोमद्वीप कुष्ठरोगजनक रक्तज आभ्यन्तर क्रिमि भेद ।

रोमविध्वंस—कुष्ठरोगजनक रक्तज आभ्यन्तर कृमि भेद ।

रोमहर्ष—त्वचा पर रोंगटे खड़ा होना ।

रोमान्तिका—एक स्वतन्त्र विस्फोटक ज्वर । मा०नि० । (हिं०) खसरा, छोटी चेचक । (फा०) सुर्खंचा । (अ०) हुस्बा । (अं०) मीजल्स (Measles), मॉर्बिलाई (Morbili) ।

वक्तव्य—इसके साधारण (सलीम) और घातक (रद्दी) यह प्रधान दो भेद हैं । इसमें साधारण (मसूरिका) घातक नहीं है । यूनानी वैद्यकोक्त हरित रोमान्तिका (हुस्बा अख्जर), नील रोमान्तिका (हुस्बा बनफसजी), श्याव रोमान्तिका (हुस्बा अस्वद या सौदा) और कठिन रोमान्तिका (हुस्बा सलिब) ये चार घातक होती हैं । पाश्चात्य वैद्यक में इन घातक भेदों को ब्लैक मीजल्स Black Measles (श्याव रोमान्तिका) और हीमोरेजिक मीजल्स Hæmorrhagic measles (रक्तस्रावी रोमान्तिका—हुस्बा दम्विय्या या नज्फिय्या) कहते हैं । इनके अतिरिक्त विषैली और फुफ्फुसगत रोमान्तिका भी घातक होती है । इसका भेद जर्मन खसरा (German measles) भी है । माधवनिदान में

रोमान्तिका का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—रोमकूपोन्नतिः समारागिण्य कफ-पित्तजः। कासारोचकसंयुक्ता रोमान्त्यो ज्वरपूर्विकाः ॥ यूनानी वैद्यक के मत से रोमान्तिका (खसरा) और मसूरिका (चेचक) में भेद सर्वप्रथम विद्वद्वर **राजी** ने वर्णन किया। शैख ने भी यद्यपि खसरा और चेचक में विभेद वर्णन किया है, तथापि वह वैसा स्पष्ट नहीं है।

रोहिणी—एक प्राणनाशक कण्ठगतरोग। सु०। च०। (अ०) खुनाक खबाई (कलबी), जुबहा खबीसा। (अं०) डिफ्थीरिआ (Diphtheria), डिफ्थीरिक (-रिअल) इन्फ्लमेशन ऑफ दि थ्रोट (Diphtheric (-ial) inflamation of the throat)। **भेद**—(आयुर्वेदीय) १. वातज, २. पित्तज (पित्तनिमित्तज), ३. कफज, ४. सन्निपातज और ५. रक्तज।

(ल)

लकवा—अर्दित। दे० 'अर्दित' तथा 'पक्षाघात'।

लगण—एक नेत्रवर्त्मगतरोग। वर्त्म में होनेवाली पाकरहित, कठिन, स्थूल एवं पीड़ारहित ग्रन्थि। मा० नि०। (अं०) कलाज़िऑन (Chalazion), कलाज़िआ (Chalazia)। लगण की सूजन=इन्फ्लेम्ड कलाज़ियान (Inflamed Chalazion)।

लघुमसूरिका—सौम्य मसूरिका से बहुत कुछ समता रखने वाला एक स्वतन्त्र विस्फोटक ज्वर। (हिं०) मोतिया शीतला। (फा०) बाद आबला। (अ०) जुद्री काज़िब, जुदैरी, हुमैका। (अं०) चिकेनपॉक्स (Chickenpox), वेरिसिल्ला (Vericilla)।

ललाटभेद—सिर फटना। मस्तक में भेदनवत् पीड़ा होना।

लवणमेह—एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमें मूत्र 'लवणाम्बुनिभ' होता है। सु०। चरक और वाग्भट में इसका उल्लेख नहीं मिलता। ऑक्झल्यूरिआ (Oxaluria)।

लसिकाग्रन्थि शोथ—रसायनी (ग्रन्थि) शोथ। (अ०) वरम गुदद जाज़िबा। (अं०) लिम्फअडीनाइटिस (Lymphadenitis)।

लसिकाजन्य श्वेतरक्त—(अ०) दमे अब्यज लिम्फावी (काज़िब)।

अवेंजाज दम गुददो (काजिब)। (अं०) लिम्फैटिक ल्यूकीमिया (Lymphatic Leukæmia), स्यूडो ल्यूकीमिया (Pseudo Leukæmia)।

लसिकाभधातुवृद्धि की अवस्था—(अ०) स्टेटस लिम्फैटिकस (Status Lymphaticus)।

लसिकार्बुद—(अ०) सल्आ लिम्फाविय्या । (अं०) लिम्फोमा (Lymphoma)।

लसिकावाहिनी शोथ—(अ०) वरम जाजिबात, इल्तिहाब जाजिबात। (अं०) लिम्फैञ्जाइटिस (Lymphangitis)।

लसिकीय सार्कोमा—(अ०) सल्आ लह्मिया लिम्फावी। (अं०) लिम्फो सार्कोमा (Lympho Sarcoma)।

लाञ्छन—लच्छन। न्यच्छ (वाग्भट)। दे० 'न्यच्छ'।

लालमेह—एक प्रकार का कफजप्रमेह। (वाग्भट)। दे० 'लालामेह'।

लालामेह—एक प्रकार का कफजप्रमेह। (चरक)। लालमेह (वाग्भट)। इसे ॲल्ब्यूमिन्यूरिआ (Albuminuria) कह सकते हैं। (अ०) बौल जुलाली। **भेद**—(पाश्चात्य) (१) विषमय—(अ०) बौल जुलाली सम्मी। (अं०) टॉक्सिक अल्ब्यूमिन्यूरिया (Toxic A...)। (२) वातज—(अ०) बौल जुलाली असबी। (अं०) न्यूरोटिक ॲल्ब्यूमिन्यूरिया (Neurotic Albuminuria)। (३) वृक्करचना विकारज—(अ०) बौल जुलाली उज्वी। (अं०) ऑर्गेनिक अ० (Organic A...)।

लिक्षा—बाह्यमलजकृमिभेद। सफेद बारीक-बारीक जुएँ जो बालों से चिमटी रहती हैं। यह वस्तुतः जुओं के अण्डे होते हैं। लीख। (फा०) रिश्क। (अ०) सीबान। दे० 'यूका'।

लिङ्गछेदनजध्वजभंग—ध्वजभंग क्लैब्य रोग का एक भेद।

लिङ्गनाश—नेत्रदृष्टिभागगतरोग का एक भेद। काच या तिमिरकाचरोग की उत्तरावस्था विशेष। लिङ्गनाशक काच। नीलिका। नीलिका काच। यह चतुर्थ पटल स्थित (तिमिर की दूसरी अवस्था—प्रथम अवस्था=तिमिर) राग या नेत्रेन्द्रिय की शक्ति से रहित तिमिर है। (हिं०) मोतियाबिन्द। (फा०) आब मरवारीद। (अ०) नुजुलुल्माऽ, माउल्ऐन, कत्रक्ता। (अं०) कॅटरॅक्ट (Cataract)। **भेद**—१ वातिक, २ पैत्तिक, ३ श्लैष्मिक, ४ रक्तज, ५ सान्नि-

पातिक और ६ परिम्लायि (संज्ञक) लिङ्गनाश (कुछ दर्शननाशक परिम्लायि रोग)। दे० 'परिम्लायि लिङ्गनाश'।

लिङ्गार्श—एक मैथुनजन्य व्याधि जिसमें शिश्न या योनि पर छत्रसन्निभ मांसांकुर उत्पन्न होते हैं। सु० अर्शनि० ७ सू०। अ० सं० गुह्यरोग वि० उ० ३८ अ०। **वक्तव्य**—आधुनिक परिभाषा में इसे गुह्यवंक्षणीय कणाबुंद कहते हैं। (अं०) ग्रान्युलोमा जेनिटो इंग्वीनली (Granuloma Genito Inguinale)। आयुर्वेदोक्त अन्यस्थानगत अर्श को पाश्चात्य परिभाषा के अनुसार पेपिलोमा (Papilloma), वार्ट (Wart), कॉन्डिलोमा (Condyloma), ग्रानुलोमा (Granuloma) और पॉलिपस (Polypus) कहते हैं। (मा० गो० घाणेकर)।

लीनगर्भ—(अं०) मिस्ड अबॉर्शन (Missed abortion)।

लेखकीय अङ्गघात—एक प्रकार का अङ्गघात जो लेखकों, मुहर्रिरों और तार बाबुओं को हुआ करता है। (अ०) फालिजुल् कुत्ताब, फालिजुल् किताबत, फालिजुल् कातिबैन, इस्तिरखाऽ किताबत, इस्तिरखाउल् कातिबैन, शललुल् कातिबैन। (अं०) राइटर्स पाल्सी (पॅरालिसिस) (Writer's-Palsy Paralysis)।

लेखनासामर्थ्य—लिखने का असामर्थ्य। (अ०) फक्दान किताबत, जवाल कुव्वत तहरीर। (अं०) अग्रोफिया (Agrophia)।

लेलिह—पुरीषज कृमि भेद।

लोहितक्षया—एक योनिरोग। वा०। शा०। रुधिरक्षरा।

लोहितक्षरा—दे० 'लोहितक्षया'।

लोहितज्वर—दे० 'रक्तजज्वर'।

लोहितवर्णता—सुर्खी। ललाई। रक्तिमा। रागिमा।

लौल्य—सर्वरसाभिकाङ्क्षा। लोलुपता।

(व)

वंक्षणविद्रधि—(अं०) सोआस अॅब्सेस (Psoas abscess)।

वंक्षण वृद्धि (वंक्षणीयान्त्र वृद्धि)—वंक्षणगत (जंघासा-कुंजेरान) अन्त्रवृद्धि। दे० 'अन्त्रवृद्धि'।

वक्रभग्न—पूर्ण भग्न का एक विकार जिसमें अस्थि टेढ़ा हो जाय, परन्तु

टूटे नहीं। सु०। बच्चा में हड्डी मुलायम होने के कारण केवल आर्द्रदण्ड के समान टेढ़ी हो जाती है। (अ०) कस्रजुज्ई, कस्रसादेम। (अं०) पार्शल फ्राक्चर (Partial fracture), ग्रीन स्टिक फ्राक्चर (Green-Stick fracture)।

वक्री—षण्ढ (क्लीब) मेद। च०।

वक्षतोद—उर शूल। सीना (छाती) का दर्द। (अ०) वज्उस्सद्र।

वध—बध। घात। दे० 'घात'।

वन्ध्य—(१) वह पुरुष जो प्रजोत्पादन में असमर्थ हो, जिसमें प्रजोत्पादन का सामर्थ्य नहीं होता। (अ०) अकीम। (अ०) स्टराइल (Sterile)। (२) स्त्री और पुरुष उभय षण्ढ अर्थात् नरनारिषण्ढ (वा क्लैब्य—बीज अर्थात् शुक्र या आर्तव का अभाव)। अँगरेजी में इसे स्टेरिलिटि (Sterility) और (अरबी में) आकीर कहते हैं। (३) पुरुष का वन्ध्यात्व। (उ०) मर्दाना बाँझपन। (अ०) उकम। (अं०) स्टेरिलिटि इन मैन (Sterility in man), असायसिस (Acyesis)।

वन्ध्यता, वन्ध्यात्व—वन्ध्यापन। बाँझपन। दे० 'वन्ध्यात्व'।

वन्ध्या - वह स्त्री जो प्रजोत्पादन में असमर्थ हो। बाँझ। (अ०) अकीमा।

भेद—गर्भस्रावणी (स्राविणी), मृत्वत्सा (मृत्पुत्रिका), स्त्रीप्रसविनी (कन्या प्रसविनी), काकवन्ध्या (एक ही बार प्रसव करने वाली), आदिवन्ध्या, रक्तजावन्ध्या, वातजा, पित्तजा, कफजा, सन्निपातजा, भूतकृता, देवकृता और अभिचारकृता।

वन्ध्यात्व—(स्त्री और पुरुष दोनों का) गर्भोत्पादन का असामर्थ्य। नरनारिषण्ढता (क्लैब्य)। वन्ध्य की अवस्था। बन्ध्यत्व। वन्ध्यता। (हिं०) बाँझपन। (अं०) स्टेरिलिटि (Sterility)। (स्त्री वन्ध्यात्व को अरबी में अकर कहते हैं)।

वन्ध्यायोनि—योनिव्यापत्। सु०। अरजस्का (च०), लोहितक्षया (वा०; शार्ङ्ग०) नष्टार्तवा, अजननी, शुष्का (च०)। (Amenorrhœa)।

वपाजन्य वृषणवृद्धि—वह वृषणवृद्धि जिसमें आन्त्र न होकर वपा (सर्ब) होती है। इसमें वपा नामक झिल्ली उदर से हटकर किसी दूसरी जगह फँस जाती है। वपावृद्धि। (अ०) कीला सर्बी, फत्क सर्बी। (अं०) ओमेंटल हर्निया (Omental hernia)।

वमन, वमि—दे० 'छर्दि'।

वराहदंष्ट्र—एक क्षुद्ररोग। शूकरदंष्ट्र। वराहदाढ। मा० नि०। दे० 'शूकरदंष्ट्र'।

वर्णांधता—वर्णादर्शन। रंगों का अन्धापन, रङ्गान्धता।

वर्णादर्शन—वर्ण का दिखाई न देना। रंग नजर न आना। (अ०) अमयुल्लौन, अमयुल अल्वान। (अं०) ॲक्रोमॅटोप्सिया (Achromatopsia), कलर ब्लाइन्डनस (Colour Blindness)।

वर्त्मकर्दम—पलक (वर्त्म) में होनेवाला एक रोग। इसमें पित्तान्वित रक्त से दूषित होकर क्लिष्टवर्त्म आर्द्रपन को प्राप्त हो जाता है। सु०।

वर्त्मगत रोग—वर्त्म (पलक या पपोटा) में होनेवाले रोग। (अ०) अमराजुल् जफन। (अं०) डिजीजेज आफ दी आई लिड्स (Diseases of the eye-lids)। **भेद**—१. उत्सङ्गपिडका (उत्सङ्गिनी), २. कुम्भीका, ३. प्रोथकी, ४. वर्त्मशर्करा, ५. अर्शोवर्त्म (वर्त्मार्श), ६. शुष्कार्श, ७. अञ्जननामिका, ८. बह(हु)ल वर्त्म, ९. वर्त्मबन्धक (वर्त्मविबन्धक), १०. क्लिष्टवर्त्म, ११. वर्त्मकर्दम, १२. श्याववर्त्म, १३. प्रक्लिन्नवर्त्म, १४. अ(परि)क्लिन्नवर्त्म (पिल्ल), १५. वातहतवर्त्म, १६. वर्त्मार्बुद, १७ निमे(मि)ष, १८. शोणितार्श, १९. लगण, २०. विसवर्त्म और २१. पक्ष्मकोप। (तन्त्रान्तर में कुच्चन, कुकूणक और पक्ष्मशात ये तीन रोग अधिक लिखे हैं।)

वर्त्मघात—पलक या पपोटा (वर्त्म) का ढीला पड़ जाना। (अ०) इस्तिरखाऽ (उल्) जफन, सुकूतुल जफन। (अं०) टोसिस (Ptosis), ब्लीफेरोप्टोसिस (Blepharoptosis)।

वर्त्मबन्धक—एक वर्त्मगत रोग जिसमें मनुष्य कण्डू (खुजली) वाले, अल्पतोदयुक्त वर्त्मशोथ से नेत्र को बन्द नहीं कर सकता। मा० नि०।

वर्त्मशर्करा—एक नेत्रवर्त्मगत रोग जिसमें नेत्र के वर्त्म भाग में खरस्पर्श, स्थूल एवं छोटी-छोटी पिडकाओं से व्यावृत पिडका होती है। सु०। (अं०) बुसूरुल्चश्म। हर्पिस ऑफ्थॅल्मिकस (Herpes ophthalmicus)।

वर्त्माक्षेप—पपोटों की ऐंठन। (अ०) तशन्नुज अज्फान। (अं०) ब्लीफेरोस्पैज्म् (Blepharospasm)।

वर्त्मार्बुद—वर्त्मगत अर्बुद। सु०।

वर्त्मार्श—दे० 'अर्शोवर्त्म'।

वर्त्मावरोध—वर्त्म (पलक) की गति में रुकावट। सु०।

वर्धन—दन्तमूलगत रोग। सु०। वाग्भट में इसका दंतरोगों में वर्णन किया है। अधिक दाँत निकलना। अधिदन्त, खल (-लि) वर्धन (अ० सं०)। दे० 'अधिदन्त'।

वलय—एक कण्ठगत रोग। सु०। विडालिका। चक्र०। गलौघ (अ०सं०)।

व (ब) लास—एक कण्ठगत रोग जिसमें कफवातजन्य श्वास और पीडायुक्त मर्मघाती गलशोथ होता है। वलासग्रथित।

वलि, वली—झुर्री। सिकुड़न।

वल्मीक—एक क्षुद्ररोग। सुश्रुत और माधवाचार्य के लक्षणों को मिलाकर वल्मीक का जो स्वरूप बनता है उसका बहुत कुछ साम्य ॲक्टिनोमायकोसिस (Actinomycosis) और मायसीटोमा (Mycetoma) या मदुरापाद (Madurafoot) नामक विकारों के साथ होता है। (भा० गो० घाणेकर)।

वसामेह—एक प्रकार का वातप्रमेह जिसमें रोगी वसोमिश्र, वसासदृश, एवं बार-बार मूत्र करता है। इसमें रोगी चर्बी के समान (मूत्र त्याग करता है)। सु०। यदि वसाका योगार्थ लिया जाय तो वसामेह को लायप्यूरिआ (Lipuria) कह सकते हैं।

वस्तिकुण्डल—वस्तिदौर्बल्य, मूत्राशय की कमजोरी। वातान्वित और कफान्वित भेद से यह दो प्रकार का होता है। (अ०) जोफ (फुल्) मसाना। (अं०) ॲटोनी ऑफ दि ब्लैडर (Atony of the bladder)।

वस्तिगह्वरस्थ विद्रधि—पेंडू की अन्तर्विद्रधि। (अ०) खुराज आना। (अं०) पेल्विक ॲब्सेस (Pelvic abscess)।

वस्तिदाह—वस्तिशोथ।

वस्तिवध (वस्तिघात)—मूत्राशय का घात। (उ०) मसाने की कमजोरी। (अ०) इस्तिरखाउल्-मसाना। (अं०) वेसिकल परालिसिस (Vesical Paralysis)।

वस्तिविद्रधि—वस्तिगत विद्रधि। (अं०) सिस्टायटिस (Cystitis), प्रोस्टेटिक अब्सेस (Prostatic abscess)।

वस्तिशोथ—वस्ति की सूजन, वस्तिदाह, उष्णवात (सु०)। (अ०) वरम (-मुल्) मसाना। (अं०) सिस्टायटिस (Cystitis)। दे० 'उष्णवात' या 'वस्तिविद्रधि'।

वस्तिस्थ संक्षोभ—मूत्राशय की खराश। (अ०) लजउल् मसाना, हुर्कत मसाना, मसाना आलिमा, जरबुल् मसाना। (फा०) सोजिश मसाना। (अ०) वेसिकल इरिटेबिलिटी (Vesical irritability)। इरिटेबल ब्लैडर (Irritable bladder)।

वस्त्यश्मरी—मूत्राशय की पथरी। (अ०) हसातुल् मसाना। (अं०) वेसिकल कॅलक्यूलाई (Vesical calculi)।

वस्त्याक्षेप—मसाना (मूत्राशय) की ऐंठन। (अ०) तशन्नुजुल्मसाना, तशन्नुज मसाना। (अं०) वेसिकल स्पैझम (Vesical Spasm)।

वहिर्नेत्र गलगण्ड—दे० 'बहिर्नेत्र गलगण्ड'।

वहिर्विद्रधि—बाह्यविद्रधि। **भेद**—वात, पित्त, कफ, सान्निपातिक (असाध्य) आगन्तु (पित्तविद्रधि के समान लक्षण) और क्षतज (अभिघातज)। इनमें वात और पित्तबहिर्विद्रधि को अरबी में खराज तथा कफबहिर्विद्रधि को दुबेला और अँग्रेजी में ट्यूबरक्यूलर अब्सेस (Tubercular abscess) कहते हैं।

वहु (-ह) ल वर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग। दे० 'बहलवर्त्म'।

वाक्संग—वाणी का ठीक निर्गम न होना। वाक्शक्तिलोप। वाक्ग्रह। (अ०) फक्दान तकल्लुम। (अं०) अफेजिया (Aphasia)। **भेद**—(१) चेष्टावह—(अ०) फक्दान तकल्लुम, हिरकी, वकम हिरकी। (अं०) मोटर अफेजिया (Motor aphasia)। (२) संज्ञावाहिक—(अ०) फक्दान तकल्लुम हिस्सी। (अं०) सेन्सरी अफेजिया (Sensory aphasia)।

वातकण्टक—वातप्रकोपज जिह्वाकण्टक। दे० 'जिह्वाकण्टक'।

वातकफज नाडीव्रण—द्वन्द्वज नाडीव्रण। दे० 'नाडीव्रण'।

वातकफज्वर—वातकफात्मक ज्वर।

वातकफाल्वण सन्निपात—न्युमोनिया।

वातकुण्डलिका—(अं०) स्पझमोडिक स्ट्रिक्चर (Spasmodic Stricture)।

वातग्रंथि—ग्रन्थिरोग का एक भेद। दे० 'ग्रंथि'।

वातग्रस्त—घातित (नाड़ियाँ)। (अ०) मुस्तरख़ी। (अं०) पॅरालाइज्ड (Paralysed)।

वातग्रस्त रोगी—अधरंग का रोगी। अङ्गघात का रोगी। (अ०) मफ्लूज, मुस्तरख़ी। (अ०) पॅरालाइजन्ट (Paralyzant); पॅरालिटिक (Paralytic)।

वातज अंगशोथ—वायुजन्य अङ्ग की सूजन।

वातज अतिसार—अतिसार का एक भेद। वातिक अतिसार। वातातिसार। (अ०) इसहाल असबी, (इसहाल सौदावी ?) इसहाल दिमागी। (अं०) नरवस डायरिआ (Nervous Diarrhœa), लायेंटरिक डायरिआ (Lienteric Diarrhœa)।

वातज अधिमन्थ—एक प्रकार का अधिमन्थ रोग। वाताधिमन्थ।

वातज (सौदाजन्य) अपस्मार—अपस्मार का एक भेद। वातिक अपस्मार। (अ०) सरअ सौदावी।

वातज अरोचक—अरोचक का एक भेद। वातिक अरोचक। (अं०) अनोरेक्सिया नर्वोसा (Anorexia nervosa)।

वातज अर्बुद—अर्बुद का एक भेद। वातार्बुद। (अ०) सल्आ रीहिय्या। (अं०) फायसोसील (Physocele)। यूनानी वैद्यक में इसे सल्आ सौदाऽ (अर्थात् स्याह रसौली या वरम और खबीस सौदावी रसौली या वरम) भी कहते हैं। सल्आ सौदाऽ को अँगरेजी में मॅलानोमा (Malanoma) कहते हैं।

वातज अर्श—अर्श का एक भेद। वातार्श। वातजन्य अर्श (च०। सु०। वा०)। बादी बवासीर। (अ०) बवासीर रीही, रीहुल् बवासीर। (उ०) रीही बवासीर।

वातज आक्षेप—आक्षेप का एक भेद। (अ०) तशन्नुज रीही, उकाल, रीही तशन्नुज। (अं०) स्पैज़म (Spasm)।

वातज ओष्ठ प्रकोप—ओष्ठप्रकोप का एक भेद। मारुतज ओष्ठप्रकोप। दे० 'ओष्ठप्रकोप'।

वातज कर्णशोथ—कर्णशोथ का एक भेद। दे० 'कर्णशोथ'।

वातज कास—कास (खाँसी) का एक भेद । दे० 'कास' ।

वातज कुस्वप्न—कुस्वप्न का एक भेद । दे० 'कुस्वप्न' ।

वातज क्षीरालस—वातदुष्टस्तन्यज बालरोग । क्षीरालस रोग का एक भेद । (शार्ङ्ग०) ।

वातज गलगण्ड—गलगण्ड रोग का एक भेद । दे० 'गलगण्ड' ।

वातज गुल्म—गुल्म का एक भेद । वातिक गुल्म । (अं०) गॅसिअस ट्यूमर (Gaseous tumour) । दे० 'गुल्म' ।

वातज छर्दि—छर्दिरोग का एक भेद । वातिक छर्दि (च०) । (अ०) कै सोदावी । दे० 'छर्दि' ।

वातज ज्वर—ज्वर का एक भेद । वातिक ज्वर । (अ०) सोदावी बुखार, हुम्मा सोदावी ? । दे० 'ज्वर' ।

वातज दुष्ट शुक्र—वातदुष्ट शुक्रदोष । दे० 'शुक्रदोष' ।

वातज नाडीशोथ—वातनाडीशोथ । (अ०) असबी सोजिश, इल्तिहाबुल् असब । (अं०) न्यूराइटिस (Neuritis) ।

वातज प्रमेह—दे० "वातप्रमेह" ।

वातज विद्रधि—वातविद्रधि । बाह्यविद्रधि भेद । (अ०) खुराज ।

वातज विसर्प—विसर्प का एक भेद ।

वातज वृद्धि—वृद्धि का एक भेद जिसमें वृषणकोषों (फोता) के भीतर वायु (रियाह) भर जाता है । वातवृद्धि । वातज अन्त्र (वृषण) वृद्धि । (अ०) कीला रीहिय्या, कीलारीही, फत्क हवाई, नफ्खतुस्सफन । (अं०) फायसोसील (Physocele) । दे० 'वृद्धि' और 'वातज अर्बुद' ।

वातज व्रण—शरीरव्रण का एक भेद । दे० 'व्रण' ।

वातज शिरोरोग—वातिक शिरोरोग । (उ०) असबी दर्दे सिर । (अ०) सुदाअ असबी, सुदाअ जोफ आसाब, सुदाअ खफा (खुश्की का दर्दसिर) । (अं०) नर्वस हेडेक (Nervous Headache), न्यूरल्जिक हेडेक (Neuralgic Headache) । **वक्तव्य**—यूनानी वैद्यकोक्त 'सुदाअ सौदावी' और 'सुदाअ रीही' (दर्दे सिर रीही) का भी इसमें समावेश होता है ।

वातज शोथ—शोथ का एक भेद । दे० 'शोथ' ।

वातज वृषणवृद्धि—दे० 'वातज वृद्धि' ।

वातज श्वास—क्षुद्र श्वास । सांस फूलना । हांफा लगना । सांस चलना । (अ०) बुहर । (अ०) ब्रेथलेसनेस (Breathlessness) ।

वातज सन्यास—सन्यास का एक भेद । (अ०) सक्ता असबिय्या, सक्ता बुखारिय्या । (अं०) नर्वस अपोप्लेक्सी (Nervous apoplexy) ।

वातनाडीदौर्बल्य—नाडीदौर्बल्य । गदोद्वेग । दे० 'महागद' ।

वातनाडीशूल—वातवेदना ।

वातनाडीशोथ—नाडी की सूजन । नाडीशोथ । (उ०) असबी सोजिश (अ०) इल्तिहाबुल् असब । (अं०) न्यूराइटिस (Neuritis) । भेद—१. तीव्र (हाद्—Acute); २. अर्धतीव्र (तह्तल्हाद्—Sub-acute) और ३. चिरज (मुज्मिन—Chronic) । अन्य भेद—१. एकनाडीशोथ या स्थानिक नाडीशोथ । (महदूद असबी सोजिश) और २. बहुनाडीशोथ ।

वातनिमित्त व्रणशोफ—वातजन्य व्रणशोफ ।

वातनिरोधज उदावर्त—उदावर्त का एक भेद । दे० 'उदावर्त' ।

वातपर्यय—नेत्रसर्वभागगत रोग । अनिलपर्यय ।

वातपूर्णकोष्ठता—दे० 'वातोरस' । वातप्रकोपज जिह्वागत रोग—जिह्वाकण्टक विशेष । वातकण्टक । दे० 'जिह्वाकण्टक' ।

वातप्रमेह—प्रमेह का एक भेद । भेद—सुश्रुत के मत से सर्पिमेह, वसामेह, क्षौद्रमेह और हस्तिमेह वातज प्रमेह के ये चार भेद होते हैं । इनमें से क्षौद्रमेह को चरक में मधुमेह कहा है । सर्पिमेह के बदले मज्जामेह मिलता है । प्रायः ये दोनों समान मालूम होते हैं ।

वातबलासकज्वर—एक प्रकार का ज्वर जो वातश्लैष्मिक ज्वर से भिन्न है । (अं०) बेरी-बेरी (Beri-Beri) ।

वातबस्ति—एक मूत्ररोग । मूत्रसङ्ग । वातबस्ति । दे० 'मूत्रावरोध' ।

वातरक्त—एक प्रकार की वातव्याधि । वातप्रधान रक्त । सु० । अढ्यरोग (च०) । खुड (खुण्डरुक्) । वातबलास । वातशोणित । अ० सं० । छोटे जोड़ों का दर्द । (अ०) नक्रिस या निक्रिस । (अ०) गाउट (Gout), पोडाग्रा (Podagra) । भेद—(आयुर्वेदीय) वातिक (वातप्रधानरक्त), पित्तरक्तज, कफाधिक और सान्निपातिक । उत्तान (Acute) और गम्भीर (Chronic) भेद से इसके दो भेद होते हैं । (च० । अ० सं०) ।

वातला योनि—योनिरोग का एक भेद। च०। सु०। वा०। शार्ङ्ग०। कष्टार्तवा। (कृच्छ्रार्तव)। (अ०) उस्रुत्तम्स। (अं०) डिस्मेनोरिआ (Dysmenorrhœa)।

वातविपर्यय—वातपर्यय (मा० नि०)। दे० 'वातपर्यय'।

वातवृद्धि—दे० 'वातज वृद्धि'।

वातवेदना—वायुशूल। वातनाडीशूल। वातशूल। (उ०) पुट्ठों का दर्द, असबी दर्द। (अ०) रीही दर्द, (प्राचीन), वजउल् असब, वजा असबी। (अं०) न्यूरल्जिया (Neuralgia), न्यूरल्जिकपेन (Neuralgic Pain)।

वातव्याधि—वातरोग, वातविकृति। (उ०) पट्ठों के अमराज। (अ०) अमराज (-जुल्) आसाब, अमराज निजाम असबी, अमराजुल् निजामेल असबी। (अं०) नर्वस डिजीज (Nervous disease), डिजीजेज ऑफ दी नर्व्ज या नर्वस सिस्टम् (Diseases of the Nerves or nervous System)।

वातश्लेष्मज्वर—वातकफज्वर।

वातश्लैष्मिकज्वर—श्लेष्मकज्वर। दुष्टप्रतिश्याय। (उ०) वबाई नज्ला व जुकाम। (फा०) तप नज्ला वबाई। (अ०) अन्फुल् अन्जा, जुकाम वबाई, नजला वबाइय्या, हुम्मा नज्लिय्या वबाइय्या। (अं०) इन्फ्लूएञ्जा (Influenza), ला ग्रिप (La grippe)। **भेद**—(१) साधारण (वातश्लेष्मज्वर), (२) श्वसनक, (३) आन्त्रिक, (४) वातिक—(अ०) अन्फुल अन्जा असबिय्या (दिमागिय्या)। (अ०) नर्वस इन्फ्लूएञ्जा (Nervous Influenza)।

वातहतवर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग।

वाताजीर्ण—विष्टब्धाजीर्ण।

वाताधिमन्थ—वातज अधिमन्थ।

वातार्बुद—(१) दे० 'वातज अर्बुद'। (२) वातज वृद्धि।

वातार्श—दे० 'वातज अर्श'।

वाताश्मरी—वातिक अश्मरी। (अं०) ऑक्जेलेट ऑफ लाइम (Oxalate of lime) कलक्यूलस (Calculus)।

वाताष्ठीला—एक वातव्याधि जिसमें (पेट में) अष्ठीला के समान ठोस, ऊपर को फैली हुई, उन्नत और बाहर के मार्ग को रोकनेवाली ग्रन्थि होती है। (सु० नि० १ अ०)। **वक्तव्य**—वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला वास्तव में एक

विकार है। वाताष्ठीला में वेदना उत्पन्न होने पर उसे प्रत्यष्ठीला कहते हैं। ये दोनों वातविकार चरक और वाग्भट में नहीं मिलते। उत्तरस्थान के मूत्राघात प्रतिषेध अध्याय में वाताष्ठीला नामक मूत्राघात का एक भेद है। वह रोग इस वाताष्ठीला से अलग है और बहुधा एनलार्जमेंट ऑफ प्रोस्टेट (Enlargement of prostate) होगा। इस अध्याय की वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला गुदनालिका या प्रोस्टेट का अर्बुद (Cancer of the rectum or prostate) हो सकता है।

वातिक अतिसार—दे० 'वातज अतिसार'।

वातिक प्लेग—वातज ग्रंथिक ज्वर। (अ०) ताऊन असबी। (अं०) नर्वस प्लेग (Nervous plague)।

वातिकशूल—आनाहयुक्त वायुजन्य शूल। (अ०) कुलंज तशन्नुजी, कुलंज असबी, कुलंज रीही। (अं०) स्पैज्मोडिक कॉलिक (Spasmodic colic), नर्वस कॉलिक (Nervous colic); फ्लैच्युलेंट कॉलिक (Flatulent colic)।

वातिक षंढ—वृषणों का अभाव, वृषणों की ठीक वृद्धि न होना या उदरगुहा में दोनों की स्थिति इत्यादि सहज कारणों से होनेवाली नपुंसकता—वाय्वग्निदोषाद् वृषणौ तु यस्य नाशं गतौ वातिकषण्ढकः सः। (चरक)। (अ०) अनॉर्किज्म (Anorchism)।

वातोदर—उदररोग का एक भेद। कुक्षि, पेट, पीठ और नाभि इनका आश्रय करके, काली सिराओं के जाल से युक्त, शूल, अफारा, तीव्र गुड़गुड़ शब्द, तोदन और भेदन की पीड़ा इनसे युक्त जो उदर बढ़ता है वह वातजन्य (उदर) है। सु० नि० ७ अ०। (उ०) हवाई जलन्धर। (अ०) इस्तिस्काऽ तब्ली, इस्तिस्काऽ याबिस,-इस्तिस्काऽखुश्क (बुकरात)। असाइटीस सक्केटस (Ascites succatus)। **वक्तव्य**—यूनानी वैद्यक के मत से इस्तिस्काऽ तब्ली का एक मुख्य भेद **इस्तिस्काऽ हवन** है। इसमें इस्तिस्काऽतब्ली की भाँति पेट में पानी की जगह कठिनता से लीन होने वाले द्रव और वायु संचित होते हैं। इसमें वायु से फूली हुई मशक के समान तनाव (उत्सेध) होता है। पेट पर हाथ मारने से तबला के समान (डिम डिम) शब्द होता है। नाभि अत्यधिक उभर जाती है। इसमें पेट की कड़ाई इस्तिस्काऽतब्ली से भी अधिक होती है। इसको आयुर्वेद के मत से **कफोदर** कह सकते हैं। इसके यह दो भेद हैं—१. इस्तिस्काऽ

कसूरी (Passive dropsy) और २ इस्तिस्काऽ फाएली (Active dropsy)। दे० 'कफोदर'।

वातोरस—वातपूर्णकोष्ठता। (अं०) न्यूमोथोरॅक्स (Pneumothorax)।

वातोल्वण सन्निपात—यूनानी वैद्यक में सरसाम का एक भेद। (अ०) सरसाम सोदावी, सरसाम बारिद, लीसार्गुस। दे० 'कफोल्वण सन्निपात'।

वामनत्व—चुल्लिकाग्रन्थि के विकार से होने वाला एक रोग जिसमें कद छोटा, बुद्धि मंद तथा जननेन्द्रियाँ सूक्ष्म होती हैं। वामनपन, बौनापन, स्मृति-भ्रष्टता (-नष्टता)। (उ०) पैदाइशी बेवकूफी और ठिगनापन। (अ०) कुसम, बलकी अब्लहा, अब्लहा में नुक्सुल्आजाऽ। (अं०) क्रेटिनिझम (Cretinism)।

वामिनी—योनिरोग विशेष। च०। सु०। वा०। शार्ङ्ग०।

वायुकोषविस्फार—फेफड़ों का वायु से फूल जाना। (अ०) इन्तिफाखुरिया, नफ्खतुर्रिया। (अं०) एम्फायसीमा (Emphysema)।

वायुजन्य गर्भाशयविस्फार—गर्भाशय के कोषों में वायु भर जाना। (अ०) नफखतुर्रिहम। (अं०) फायसोमेट्रा (Physometra)।

वायुप्रणालिका विस्फार—हवा की नालियों का फैल जाना। (अ०) इत्तिसाअ शोअब। (अं०) ब्राङ्क्टिअक्टेसिस (Bronchiectasis)।

वायुप्रणालिका शोथ—हवा की नालियों की सूजन। कास। (अ०) इल्तिहाबुश्शोअ्ब, सुआल शोअबी। (अं०) ब्राङ्काइटिस (Bronchitis)। दे० 'कास'।

वायुप्रणालीय श्लेष्मप्रसेक—(अ०) नजला शोअबिया। (अं०) ब्रॉङ्कोरिआ (Bronchorrhœa)।

वायुशूल—दे० 'वातवेदना'।

वार्धक्य—जरारोग।

वाहिनीगत अन्तःशल्यता—वाहिन्यवरोध। रगों के सुद्दे। (अ०) इन्सिदाद ऊरूकिय्या, सुद्दए उरूकिय्या। (अं०) एम्बोलिझ्म (Embolism)।

वाहिनीगत रक्तस्कंदन—दे० 'रक्तवाहिनीगत रक्तस्कंदन'।

वाहिनीनियन्त्रणघात—रक्तवाहिनीनियन्त्रण संस्थान का घात। (अं०) वॅसोमोटर पॅरालिसिस (Vasomotor paralysis)।

वाहिनीविदारण—किसी रग का फट जाना। (अ०) इन्फिजार, इंसिदाअ। (अं०) रॅप्चर ऑफ दि वेसेल (Rupture of the vessel)।

वाहिन्यन्तःशोथ—वाहिनियों की आंतरिक कला का शोथ। (अ०) वरम बतानी उरूक, वरम उरूकी तख़स्सुरी। (अं०) थ्राम्बो-अन्जाइटिस (Thrombo-angiitis)। **भेद**—बृहत्—(अ०) वरम बतानए तख़स्सुरी शराईन कबीर। (अं०) थ्रॉम्बोअन्जिआइटिस ओलिटरन्श (Thrombo-angiitis Oliterans)।

वाहिन्यर्बुद—धमनी या सिरा की रसौली। रक्तवाहिन्यर्बुद। (उ०) उरू की रसौली। (अ०) सल्आ बिआइय्या, सल्आ अरूकिय्या। (अं०) अन्जिओमा (Angioma), अन्जिओमेटा (Angiomata), केवर्नस ट्यूमर (Cavernus tumour), केवर्नोमा (Cavernoma)।

वाहिन्यवरोध—दे० 'रक्तवाहिनीगत रक्तस्कन्दन'।

वाहिन्यवरोधजन्य विद्रधि—(अ०) खुराज सुद्दी। (अं०) एम्बोलिक अॅब्सेस (Embolic abscess)।

वाह्यकृमि—क्रिमि भेद।

वाह्यमलज कृमि—बहिर्मलज क्रिमि भेद। जैसे—यूका, लिक्षा।

वाह्य विद्रधि—दे० 'बहिर्विद्रधि'।

वाह्यशीतज कुस्वप्न—कुस्वप्न का एक भेद। दे० 'कुस्वप्न'।

विकृति—किसी अंग की रचना का विकृत हो जाना। रोग के लिये एक विशेष प्रकार की सहजानुकूलता। (अ०) फसाद बु(बि)न्या, फसाद तरकीब। (अं०) डायाथेसिस (Diathesis)।

विक्षेपिकाक्य हृद्यन्त्ररोग—हृदय कोष्ठ को आक्षिप्त करनेवाली पीडा। विक्षेपिका।

विचर्चिका—एक प्रकार का क्षुद्र कुष्ठ जिसमें (हाथ, पाँव इत्यादि) गात्रों में अतिशय खाज और पीडायुक्त रूखी रेखाएँ उत्पन्न होती हैं। सु०। (अ०) शर्हे। (अं०) हॅगेड्स (Rhagades)।

विचारप्रवणता—भ्रम। (अ०) फसाद तख़य्युल, तवह्हुम, तवह्हुम फासिद। (अं०) हॅल्युसिनेशन (Hallucination), इल्युज़न (Illusion)।

विच्छिन्न—(१) सद्योव्रण का एक भेद। छिन्न। (अं०) स्लैश्ड

(Slashed)। दे० 'सद्योव्रण'। (२) बालरोग विशेष। शाङ्र्ग०। किसी-किसी के मत से यह माधवोक्त तालुपात है।

विठसमगंधिक छर्दि (प्रच्छर्दन)—मल के समान गंध की उलटी, वमन में मेल की उपस्थित तथा गंध, मल(शकृत्)गंधि छर्दि। सु० (अ०हृ०)।

विडालिका—एक कण्ठगत रोग। च०। दे० 'वलय'।

वितान—कण्डराविताान। मोच आना। दे० 'कण्डरा वितान'।

विदार—फटना। चिरना। (अ०) अश्शुकाक, शुकाक, तमज्जुक। (अं०) रॅप्चर (Rupture), लेसरेशन (Laceration)।

विदारिका—एक क्षुद्ररोग जिसमें काँख (कक्षा) और वंक्षण की लसिकाग्रन्थियों में शोथ उत्पन्न होता है। पित्त के अल्पबल होने से सन्निपातज होने पर भी यह साध्य होती है। सु०। चरक के अनुसार इसमें कुछ ज्वर भी होता है।

विदारी—एक कण्ठगत रोग।

विदीर्ण तालु—बालरोग। (अं०) क्लेफ्ट पॅलेट (Cleft palate)।

विद्धव्रण—सद्योव्रण भेद।

विद्युद्दग्ध—बिजली से जला हुआ।

विद्रधि—शोफ की पक्वावस्था का ही दूसरा नाम 'विद्रधि' है। विद्रधि को अँगरेजी में साधारणतया अॅब्सेस (Abscess) कहते हैं, परन्तु आभ्यंतरीय विद्रधियों में कहीं-कहीं इन्फ्लमेशन (Inflamation) का भी अर्थ निकलता है। दे० 'शोथ'। (हिं०) फोड़ा, बड़ा फोड़ा। (अ०) खुराज, दुबैला। वक्तव्य—छोटा फोड़ा या बालतोड़ (अर्थात् पिड़का) को अरबी में 'दुम्मुल' या 'दुंबुल' और (अं०) बॉइल (Boil), फ्युरंकल (Furuncle) तथा सोर (Sore) कहते हैं। **भेद**—चरक के मत से इसके प्रधान दो भेद हैं—१ बाह्य और आभ्यन्तर। इनमें बाह्य विद्रधि के ये छः भेद होते हैं—१ वात विद्रधि, २ पित्त विद्रधि, ३ कफ विद्रधि, ४ सन्निपातज विद्रधि, ५ आगन्तु विद्रधि (अभिघात या क्षतजन्य—पित्त विद्रधि के समान लक्षणवाली) और ६ रक्त विद्रधि (**रक्तज**—पित्तविद्रधि के समान लक्षण का विद्रधि)। आभ्यन्तर विद्रधि (अन्तर्विद्रधि) के (दोषानुसार) लक्षण या भेद बाह्य-विद्रधि के (दोषानुसार) लक्षणों से जान लेने चाहिये। स्थानभेद से इसके नाना भेद होते हैं। शिरोगुहा, उरोगुहा और उदरगुहा में उत्पन्न होने वाला

विद्रधि आभ्यन्तर और शाखाओं में तथा उरोगुहा, उदरगुहा और शिरोगुहा की प्राचीर में होने वाला विद्रधि बाह्य है।

विनामिका—नाभि (नाभितुण्डि) का एक भेद जो सदा के लिये फूली हुई रहती है। च ।

विपादिका—एक प्रकार का क्षुद्रकुष्ठ। जब यह (विचर्चिका) पाँवों में स्थित होकर खाज, दाह और वेदनायुक्त होती है तब 'विपादिका' कहलाती है। सु० । वैपादिक कुष्ठ। मा० नि० । (हिं०) बिवाई। (अ०) तज्लीदुल्अत्राफ, इन्तिफ़ाखुल् असाबेअ। (अं०) चिल्ब्लेन (Chilblain) ।

विपाशित अन्त्रवृद्धि—वह अन्त्रवृद्धि जिसमें अन्त्र फँसकर घुट जाय। (उ०) फँसा हुआ फतक। (अ०) फतक इख्तिनाकी। (अं०) स्ट्रैङ्गुलेटेड हर्निया (Strangulated hernia) ।

विप्लुता—योनिरोग विशेष। सु० । वा० । शार्ङ्ग० । उपप्लुता। च० ।

विलम्बिका—एक रोग जिसमें कफ और वायु से दुष्ट भुक्त अन्न न ऊपर से और न नीचे से प्रवृत्त होता है। यह अत्यन्त कष्टसाध्य है। सु० । मा० नि० ।

अलसक और विलम्बिका में भेद—यह दोनों रोग वात-कफ से होने वाले तथा नीचे और ऊपर से अपरिवर्तनशील होने से समान लक्षण वाले होते हैं। इनका परस्पर भेद यही है कि अलसक में शूलादि तीव्र होते हैं और विलम्बिका में मन्द (मधु०) ।

विवमिषा—उत्क्लेश, मिचली।

विवर्तित—संधिमुक्त का एक भेद जिसमें वाम या दक्षिण विभाग में हड्डी सरकती है। इसमें संधि पार्श्व की तरफ चली जाने से अंग टेढ़ा हो जाता है और पीड़ा होती है। सु० । (अं०) लेट्रल डिस्प्लेसमेंट (Lateral displacement) ।

विवृत योनि—योनिरोग विशेष। महायोनि ।

विवृता—एक क्षुद्ररोग जिसमें चौड़े मुँहवाली, अत्यन्त जलन (और ज्वर) करने वाली, पके गूलर के समान (वर्ण की) और गोल पित्तजन्य (पिड़का) होती है, उसे विवृता समझना चाहिये। सु० । वा० ।

विशेष ज्वर—विशिष्ट दोष या कीटाणुजन्य ज्वर। (अ०) हुम्मा नोइय्या। (अं०) स्पेसिफिक फीवर (Specific fever) ।

विश्लिष्ट—संधिविश्लेष का वह भेद जिसमें जरा-सा विश्लेष हो जाता है। सु०। (अं०) सबलक्सेशन (Subluxation), इन्कंप्लीट डिस्लोकेशन (Incomplete dislocation)।

विश्लिष्ट संधि—(अं०) डिस्लोकेटेड जॉइन्ट (Dislocated joint)।

विश्लेष—किसी अंग का अपने स्थान से टल जाना। स्थानभ्रष्टता। मुक्ति। जोड़ उखड़ना। (अ०) इन्खिलाअ (खलअ), इन्जिआज। (अं०) डिस्लोकेशन (Dislocation)।

विश्वाची—एक वातव्याधि जो बाहुपृष्ठ से लेकर अँगुलियों के तल तक जो कण्डरा (वातामिभूत होने पर) बाहुओं के (आकुंचन, प्रसारणादि) कर्मों का क्षय करती है। सु०। यह भुजनाडीजाल (Brachial plexus) की विकृति से उत्पन्न होती है। इसको ब्रेकियल पॅरालिसिस (Brachial paralysis), अर्ब्स पॅरालिसिस (Erb's paralysis) या मोनोप्लेजिया ब्रेकिअलिस (Monoplegia Brachialis) कह सकते हैं। (अ०) इम्तिरखाउल् यद।

विष—जहर। (अ०) सम्म। (अ०) पॉइजन (Poison)।

भेद—१. स्थावर अर्थात् मूलाद्यात्मक, २. जंगम अर्थात् सर्पादिसंभव और ३. गर। इनमें प्रथम दोनों अकृत्रिम और तीसरा कृत्रिम विष है। कृत्रिम विष अर्थात् गर दो प्रकार का होता है। १. निर्विष द्रव्यों के संयोग से और २. सविष द्रव्यों के संयोग से। जंगम और स्थावर विषों के अनेक भेद होते हैं।

विषज उन्माद—विष से उत्पन्न हुआ उन्माद।

विषज ज्वर—जहर का बुखार। (अ०) हुम्मा सम्मिया। (अं०) टॉक्सिक फीवर (Toxic fever)।

विषरूप उष्णता—(अं०) टॉक्सीमिया (Toxœmia)।

विषमज्वर—एक प्रकार का विसर्गी ज्वर जो मुक्तानुबन्धित्व होने से विषम होता है। छोड़-छोड़कर आने वाला ज्वर। चढ़-उतर कर आने वाला ज्वर। बारी का बुखार। बारी से आने वाला बुखार। मलेरिया ज्वर। फसली बुखार। (फा०) तपे नौबत, तपे लरजा, तपे मौसमी, तपे नैजारी, तपे दलदली। (अ०) हुम्मा मुतक्तिअ, हुम्मा नाइबा, हुम्मा मुफत्तिरा, हुम्मा दाइरा (या नाफिज), हुम्मा अजामिया, हुम्मा फस्लिय्या, हुम्मा बतोहा (बताइह)। (अं०) इन्टरमिटेंट फीवर (Intermittent fever), एग्यू फीवर (Ague fever), क्लाइमेटिक फीवर (Climatic fever), मलेरिअल या मार्श

फ़ावर (Malarial or marsh fever) । **भेद**—(आयुर्वेदीय) १. सन्तत, २. सतत, ३. अन्येद्युष्क, ४. तृतीयक, ५. चतुर्थक और प्रलेपक ।

विषज मूर्च्छा—मूर्च्छा का एक भेद । दे० "मूर्च्छा" ।

विषजन्य कामला—वह कामला जो विषों के सेवन से तथा कुछ उपसर्गजन्य रोगों से उत्पन्न होती है । उपसर्गजन्य (संसर्गज या विषमय) कामला । (अ०) यरकान सम्मी, यरकान मुतअद्दी कबिदी । (अं०) टॉक्सीमिक जॉन्डिस (Toxæmic jaundice), इन्फेक्टिव्ह जॉन्डिस (Infective jaundice) ।

विषमज्वरजन्य विप्रकृति (दुःस्वास्थ्य)—ऋतुज्वर (विषमज्वर) के लगातार रहने से उत्पन्न हुआ दुःस्वास्थ्य । (अ०) सूएमिजाज अजामी; फ़साद मिजाज अजामी । (अं०) मलेरियल ककेक्सिया (Malarial cachexia)।

विषमयता—(१) शरीर में विष फैल जाना । विषैला हो जाना । मद । नशा । (अ०) तसम्मुम । (अं०) इन्टॉक्सिकेशन (Intoxication) । (२) दे० 'बिषरक्तता' ।

विषमांगता—अंगविकृति, अंगवैषम्य । (अं०) डिफॉर्मिटी (Deformity)।

विषमाग्नि—पाचकाग्नि का वह भेद जो कभी-कभी अन्न का ठीक पाचन कर देती है, और कभी-कभी अफारा, पेट में शूल, मलावरोध, अतिसार, पेट में भारीपन, आँतों में गुड़गुड़ाहट, कुन्थन इत्यादि विकार उत्पन्न करके अन्न का परिपाक कर देती है । सु० । यह वायु से होती है । (Neurosis of Stomach)।

विषरक्तता—रक्त में विष (जहर) प्रविष्ट होकर समस्त शरीर में फैलना । रक्त में जहर फैल जाना । जहरबाद । रक्तविषमयता । रक्तविषता, विषमयता । विषमयावस्था । (अ०) तसम्मुम दम, (तसम्मुमुद्दम) । (अं०) टॉक्सीमिया (Toxœmia) ।

विषाक्त व्रण—जहरीला घाव । (अ०) जुरूह सम्मिय्या । (अं०) पॉइजन्ड ऊंड (Poisoned wound) ।

विष्टब्धाजीर्ण—अजीर्ण का एक भेद । वाताजीर्ण । (अ०) सूएहज्म असबी । (अं०) नर्वस डिस्पेप्सिया (Nervous dyspepsia) ।

विसर्गी—वह ज्वर जो दिन-रात में एक बार अवश्यमेव स्वाभाविक अंश तक या उससे भी कम अंश तक उतरता है । जैसे—विषम ज्वर, प्रलेपक ज्वरादि ।

सविराम ज्वर। उतर-चढ़कर आने वाला बुखार। (अ०) हुम्मा मुतकतिआ। (अं०) इन्टर्मिटेंट फीबर (Intermittent fever)।

विसर्प—(१) क्षुद्र कुष्ठ का एक भेद। सु०। (२) एक रोग जिसमें त्वचा (तथा त्वचाश्रित लसिका), मांस और रक्त में प्राप्त हुए (वातादि) कुपित दोष सर्व शरीर में फैलने वाला (सर्वांगसारी), उत्पत्ति के स्थान में (अधिक देर तक) स्थित (स्थिर) न होने वाला (वातादि दोषों के) अपने लक्षणों से युक्त, विस्तृत और कुछ ऊपर को उठा हुआ (अनुन्नत अर्थात् विद्रधि, ग्रन्थि, गुल्म इत्यादि के समान बहुत उठा हुआ नहीं) शोथ शीघ्रता से उत्पन्न करते हैं। चारों ओर फैलने के स्वभाव के कारण इसे विसर्प कहते हैं। सु०। विसर्प। परिसर्प। च०। कुष्ठ के भी विसर्प और परिसर्प ऐसे दो भेद हैं, परन्तु उनका इस विसर्प से कोई संबंध नहीं है। यूनानी वैद्यक में इसे त्वचा का पित्तज उष्ण शोथ समझते हैं। (अ०) हुमरा। (फा०) सुर्खबादा। (अं०) एरिसिपेलस (Erysipelas)। सर्वाङ्गसारी विसर्प को अंगरेजी में एरिसिपेलस माइग्रंस (Erysipelas migrans) कहते हैं। **भेद**—१. दोषज—पाश्चात्य परिभाषा में इडिओपैथिक (Idiopathic)। (अ०) मादी या असली। २. क्षतज—(अ०) जरबी। (अं०) ट्रामैटिक (Traumatic)। दोष-प्राधान्यानुसार भेद—(सुश्रुत) १. वातज (वातिक विसर्प), २. पित्तज (हुमरए खालिस), ३. कफज, ४. सान्निपातिक और ५. क्षतज। चरक में क्षतज विसर्प का स्वतन्त्र निर्देश नहीं हैं, परन्तु उसके निदान में क्षतज का स्पष्ट निर्देश किया गया है। पाश्चात्य वैद्यक में सब विसर्प क्षतज ही मानते हैं। चरक के अग्निविसर्प, ग्रन्थिविसर्प और कर्दमविसर्प सुश्रुत में स्वतन्त्र रूप से नहीं मिलते। चरक और वाग्भट में आग्नेयादि विसर्प के जो तीन स्वतन्त्र प्रकार दिये हैं वे विसर्प में कभी-कभी जो विशेष लक्षण या उपद्रव उत्पन्न होते हैं उनकी दृष्टि से किये गये हैं। यूनानी वैद्यक में विसर्प को त्वचा का पित्तज उष्ण शोथ समझते हैं। उनके मत से इसके भेद यह हैं—(एक दोषज) १. पित्तज (हुमरए खालिस) और २. रक्तज (फलगमूनी—बरम दमवी अजीम)। इनमें से प्रथम को अंगरेजी में एरिसिपेलस फ्लेग्मोनस (Erysipelas phlegmonous) और द्वितीय को फ्लेग्मोन (Phlegmon) कहते हैं। (द्विदोषज या द्वंद्वज) रक्तपित्तज (बरम मुरक्कबहुमरए गैर खालिस) जिसके यह दो भेद हैं—१. पित्तोल्वण रक्तपित्तज विसर्प (हुमरए फलगमूनी) और २. रक्तोल्वण रक्तपित्तज विसर्प (फलगमूनी हुमरा)।

विसर्प कुष्ठ—क्षुद्रकुष्ठ का एक भेद। सु०। दे० "विसर्प (१)"।

विसवर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग। दे० "बिसवर्त्म"।

विसूचिका—दोषजन्य वमनातिसार रोग विशेष। च०। मा० नि०। (हिं०, उ०) हैजा। (अ०) हैजा, हवाए अस्फर। (अं०) कॉलरा (Cholera)। **भेद**—**औपसर्गिक विसूचिका** जो उपसर्गज होता है और महामारी के रूप मे फैलता है।

विस्फोट, विस्फोटक—शरीर के किसी एक भाग में या सारे शरीर में रक्तपित्त से उत्पन्न हुए, ज्वरयुक्त अग्निदग्ध के समान स्फोट (फफोले, छाले) विस्फोटक कहलाते हैं। सु०। मा० नि०। (हिं०) फोटका, झलकई भवानी। (फा०) आबला। (अ०) नफ्फाखात, दाउल् फुकाअ, नफ्फातात। (अं०) बुलस इरप्शन्स (Bullous eruptions), पॅफोगस (Pemphigus), एक्सेन्थीमेटा (Exanthemata)। **भेद**—१ वातज, २ पित्तज, ३ कफज, ४ वातपित्तज, ५ वातकफज, ६ पित्तकफज, ७ सान्निपातिक और ८ रक्तज। इनमें सान्निपातिक और रक्तज असाध्य होते हैं। इनको अंगरेजी में पॅफोगस अक्यूटस मैलिग्नस (Pemphigus acutus malignus) कह सकते हैं। **वक्तव्य**—माधवनिदान में इसका स्वतन्त्र विस्तृत वर्णन आया है।

विस्फोटक ज्वर—(फा०) बुखार आबला। (अ०) हुम्मा नफा (फ्फा) तिय्या, हुम्मा तफहिय्या, हुम्मा इन्दिफाइय्या। (अं०) इरप्टिव या एक्सैन्थेमेटस फीवर (Eruptive or Exanthematus fever), बुलस फीवर (Bullous fever)।

विस्मरण, विस्मृति—भूलने का रोग। भूलना। (फा०) फरामोशी। (अ०) निस्यॉं, फसाद जुक्र, फक्दुज्जाकिरा। (अं०) अम्नेशिया Amnesia (Amnetia)।

विस्वरता—दे० 'स्वरभेद'।

वृक्ककार्यशैथिल्य—गुर्दे की कमजोरी। वृक्क दौर्बल्य। (अ०) जोफ गुर्दा। (अं०) अटोनी ऑफ दि किड्नी (Atony of the kidney)।

वृक्कक्षय—(१) वृक्क (गुर्दे) का छोटा हो जाना। (अ०) सिग्गुल कुलया। (अं०) अट्रोफी ऑफ दि किड्नी (Atrophy of the kidney)। (२) वृक्क का क्षय। (उ०) गुर्दे की लागरी, गुर्दे की सिल्ल। (अ०) हुजालुल

कुलया, सिल्लुल् कुलया। (अं०) रेनल थाइसिस (Renal Pthisis), ट्यूबरक्यूलोसिस ऑफ दि किड्नी (Tuberculosis of the kidney)।

वृक्कगतरोग—वृक्करोग।

वृक्कग्रन्थि—(उ०) कीसी रसौलियाँ। (अ०) कीसातुल् कुल्या। (अं०) सिस्ट्स ऑफ दि किड्नी (Cysts of the kidney)।

वृक्करोग—वृक्क वा गुर्दे के रोग। वृक्कगत रोग। (अ०) अमराज गुर्दा, अमराजुल् कुल्या। (अं०) डिजीजेज ऑफ दि किड्नी (Diseases of the kidney)।

वृक्कवस्तिव्रण—वृक्क और वस्तिगत व्रण। (उ०) गुर्दे और मसाना के जख्म। (अ०) कुरूह गुर्दा व मसाना, कुरूहुल् कुल्या वल्मसाना। (अं०) अल्सर ऑफ दि किड्नी एण्ड ब्लैडर (Ulcer of the kidney and bladder)।

वृक्कविकारजन्य जलोदर– जलोदर का एक भेद। दे० 'जलोदर'।

वृक्कविद्रधि—(अं०) पायलोनेफ्राइटिस (Pyelonephritis), पायोनेफ्राइटिस (Pyonephritis), पेरिनेफ्राइटिक अब्सेस (Perinephritic abscess), लंबर अब्सेस (Lumbar abscess)।

वृक्कशूल—गुर्दे का दर्द। (फा०) दर्दे गुर्दा, कुलंज गुर्दा। (अ०) कुलंज कुलवी, वज्उल कुल्या। (अं०) रेनल कॉलिक (Renal colic)।

वृक्क शैथिल्य—दे० "वृक्ककार्य शैथिल्य"।

वृक्कशोथ—वृक्क की सूजन। (उ०) गुर्दे का वरम। (फा०) वरम गुर्दा। (अ०) वरम कुल्या। (अं०) नेफ्राइटिस (Nephritis)।

वृक्कशोथ, चिरज—वृक्क का पुराना (चिरकारी) शोथ।

वृक्कस्थित शर्करा—गुर्दे की रेत। (फा०) रेगे गुर्दा। (अ०) रमलुल् कुल्या। (अं०) रेनल सैन्ड (Renal sand)।

वृक्कार्बुद—वृक्क (गुर्दे) की रसौलियाँ। (अ०) सलआतुलकुल्या। (अं०) ट्यूमर्स ऑफ दि किड्नी (Tumours of the kidney)।

वृक्काश्मरी—वृक्क (गुर्दे) की पथरी। (फा०) संगे गुर्दा। (अ०) हसातुलकुल्या, हसात कुल्विया। (अं०) रेनल कल्क्यूलाइ (Renal calculi)

(Icalculus), रेनल स्टोन (Renal stone), स्टोन इन दि किड्नी (Stone in the kidney), नेफ्रोलिथ (Nephrolith)।

वृद्धि—एक रोग जिसमें (उदरगुहा के) निचले हिस्से में कुपित हुआ कोई दोष वृषणकोषवाहिनी धमनी में प्राप्त होकर वृषणकोशों (अंड और उसके कोश) को मोटा (की वृद्धि) करता है। सु० । अ० सं० । वृषणवृद्धि। चरकसंहिता में वृद्धि को 'ब्रध्न' कहा है और रक्तज को छोड़कर उसके पाँच भेद दिये हैं (चि० अ० १२)। (उ०) फोता का फत्क। (फा०) दबा खाया। (अ०) कीला, कर्व, उदरः, कील, फत्क सुफ्नी। (अ०) स्क्रोटल हर्निया (Scrotal hernia), स्क्रोटल स्वेलिंग (एनलार्जमेंट) (Scrotal swelling) (Enlargement), स्क्रोटोसील (Scrotocele) । **भेद**—१ वातज, २ पित्तज और ३ कफज (ये तीनों बहुधा वृषणप्रकोप Orchitis के तीव्र Acute, पुराना Chronic इत्यादि प्रकार हैं), ४ रक्तज, ५ मेदोवृद्धि, ६ मूत्रवृद्धि और ७ अन्त्रवृद्धि। **प्रधान भेद**—(१) द्रवगर्भ—(क) मूत्रज और (ख) रक्तज। (२) घनगर्भ—(क) मेदोज वृद्धि, (ख) प्रकोपज (कुरण्ड प्रकोप)—तीव्र, पुराना—फिरंग तथा राजयक्ष्माजन्य और (ग) अर्बुदजन्य वृद्धि।

वृषणकच्छू—एक क्षुद्ररोग। वृषकच्छु। सु०। वाग्भट में इसका उल्लेख नहीं मिलता। वृषणकोष (फोता) की पामा (फुंसियाँ)। (अ०) बुसूर खुसया। (अं०) एक्झामा ऑफ दि स्क्रोटम् (Eczema of the scrotum), स्क्रोटल एक्झीमा (Scrotal eczema)।

वृषणकण्डू—(१) वृषणकोषों (फोता) की खुजली। (अ०) हिक्कतुस्सुफन। (अं०) प्रूराइगो स्क्रोटाइ (Prurigo scroti)। (२) वृषणग्रन्थि की खुजली। (अ०) हिक्कतुल्खुसया। (अं०) प्रूराइगो टेस्टस (Prurigo testis)।

वृषणकोषगत रोग—वृषणकोषों के रोग। (अ०) अमराज सफन। (अं०) स्क्रोटल डिजीजेज (Scrotal diseases)।

वृषणकोषगत सिराकुटिलता—वृषणकोषों की गाँठीली सिरायें। फोतों की रगों का फूल जाना। द० "सिराजन्य वृषणवृद्धि"।

वृषणकोष विस्तृति—वृषणकोषों (फोतों) का ढीला होकर फैल जाना।

और लंबा हो जाना। (अ०) इस्तिरखाय सफन। (अं०) डायलेटेशन ऑफ दि स्क्रोटम् (Dilatation of the scrotum)।

वृषणगतरोग—दे० "वृषणकोषगत रोग"।

वृषणगत श्लीपद—दे० "मेदोवृद्धि"।

वृषणगत वृद्धि—वृषणवृद्धि जिसमें आन्त्र आदि फलकोषों में उतर आती हैं। दे० "वृद्धि"।

वृषणगत व्रण—अंड का घाव। (अ०) कुरूह खुसया। (अं०) स्क्रोटल अल्सर (Scrotal ulcer)।

वृषण प्रकोप—कुरण्डप्रकोप। **भेद**—तीव्र (Acute) और पुराना (Chronic)। पुराना कुरण्डप्रकोप फिरंग या राजयक्ष्माजन्य होता है। दे० 'अण्डप्रकोप'।

वृषण विकृति—वृषण विकार।

वृषण वृद्धि—(१) वृषणगत वृद्धि। दे०। "वृद्धि"। (२) वृषण का बड़ा हो जाना। अण्डवृद्धि। (अ०) अज्म खुसया। (अं०) हाइपरट्रोफी ऑफ दि टेस्टिकल (Hypertrophy of the testicle)। (३) वृषणग्रन्थि का चढ़ जाना। (अ०) इतिफाअ खुसया। (अं०) अनडिसेंडेड टेस्टिकल्स (Undescended testicle)।

वृषणशूल—वृषणगत शूल। वृषणवेदना। वृषणों में होनेवाला दर्द। (उ०) खुसयों का दर्द। (फा०) दर्दे खुसया। (अ०) वजउल् उन्सयैन, वजउल् खुस्यतैन। (अ०) न्यूरल्जिया ऑफ दि टेस्टिकल्ज (Neuralgia of the testicles)।

वृषणशोथ—(१) वृषणकोषों (फोतों) की सूजन (भुरभुराहट, ढीला वरम)। (अ०) तहब्बुजुस्सफन। (अं०) एडीमा ऑफ दि स्क्रोटम (Oedema of the scrotum)। (२) वृषण प्रकोप।

वृषणाद्वृद्धि—वृषणग्रन्थि का छोटा हो जाना। वृषणक्षय। (अ०) सिग्र खुस्या। (अं०) अट्रोफी ऑफ दि टेस्टिकल (Atrophy of the testicle)।

वृषणोत्पाटनज ध्वजभङ्ग—ध्वजभंग या क्लैब्य रोग का एक भेद।

वृहती शीतला—बड़ी माता। दे० "शीतला"।

वेदना—पीड़ा। दर्द। (अ०) पेन (Pain)।

वेदनायुक्त बिंदुमूत्रता—दर्द और जलन से बूँद-बूँद पेशाब आना। (अ०) तक्तीरुल बौल, तन्कीतुल् बौल। (अं०) स्ट्रैङ्गुअरी (Stranguary), पेनफुल मिक्ट्यूरिशन (Painful micturition)। दे० 'मूत्रकृच्छ्र'।

वेपथुवात—कम्पवात। कम्पवायु। मा. नि.। कम्पकरी। दे० 'कम्पवात'।

वैकल्पिक अतिसार—एक प्रकार का अतिसार। विकल्पातिसार। प्रातिनिधिक अतिसार। (अ०) इसहाल एवजी। (अ०) विकेरियस डायरिया (Vicarious Diarrhœa)।

वैकारिक प्रजागरण—प्रजागरण विकार। आदत से अधिक जागना। अस्वाभाविक प्रजागरण दोष। (फा०) बेख्वाबी। (अ०) मर्ज बेदारी। (अं०) विजिलन्स (Vigilance), पर विजलियम् (Per Viglium)।

वैकारिकी निद्रा—नींद न आने का रोग। सु०। दे० 'अनिद्रा'।

वैकारिकी निद्रानिद्रा—यूनानी वैद्यक में सुबात (सन्यास—तामसी निद्रा) का एक भेद। इसके यह दो अवांतर भेद हैं—(१) पित्तभूयिष्टकफ-पित्तसंभव पित्तोल्वण निद्रानिद्रा रोग। (२) कफभूयिष्ठ—कफपित्तसंभव कफोल्वण निद्रानिद्रा रोग।

वैकारिकी संज्ञानाशावस्था—तन्द्रा का विशेष अर्थ अर्थात् सन्यास या तामसी निद्रा का हलका स्वरूप। दे० 'तन्द्रा'।

वैकृत ज्वर—एक प्रकार का ज्वर। च०।

वैदर्भ—दन्तमूलगत अभिघातज रोग। दन्तवैदर्भ। सु०। यह दन्तवेष्टप्रकोप का एक प्रकार है। दे० 'दन्तमूलगतरोग'।

वैपादिक कुष्ठ—विपादिका। मा० नि०। दे० 'विपादिका'।

वैसूचिकीय अतिसार—पित्तातिसार एवं विसूचिका के लक्षणवाला अतिसार रोग। (अ०) इसहाल हैजानुमा (मानिंद हैजा)। (अं०) कॉलेरिफॉर्म डायरिया (Choleriform Diarrhœa), कॉलेरिक डायरिया (Choleric Diarrhœa)।

व्यङ्ग—(१) अस्वाभाविक-वृद्धि। विकृताकार। व्यङ्ग। मालफॉर्मेशन या डेव्हलपमेंटल एरर (Malformation or Developemental

error)। (२) एक त्वग्गत क्षुद्ररोग जिसमें क्रोध और परिश्रम से कुपित हुई वायु पित्त से मिलकर अकस्मात् मुख (की त्वचा) में प्राप्त होकर मण्डल उत्पन्न करती है। तब उस पीडा-रहित छोटे, श्यामलवर्ण मुखगत मण्डल को व्यङ्ग कहते हैं। सु०। झाईं। झाइयाँ। छाहीं। (अ०) बरश, कलफ, (कुंजदक)। (अं०) फ्रेकिल्ज (Freckles), क्लोआज्मा (Chloasma), लेंटिगो (Lentigo)। **वक्तव्य**—मुख के अतिरिक्त अन्य स्थानगत व्यंग को 'नीलिका' कहते हैं। दे० 'नीलिका'।

व्यत्यस्त अंगघात—दे० 'स्वस्तिक घात'।

व्यत्यस्त भग्न—पूर्ण भग्न का एक प्रकार जिसमें हड्डी चौड़ाई में पूर्णतया टूट जाती है। (अ०) कस्र मुस्तअरिज। (अं०) ट्रान्सवर्स फ्राक्चर (Transverse fracture)।

व्याधि—रोग।

व्याधिजनक (जन्य) वेदना—(अ०) वजा मुमरिज। (अं०) एकिंग पेन (Aching paln), सिकेनिंग पेन (Sickening pain)।

व्याधिजन्य संधिविश्लेष—(अ०) खल्अ मर्जी। (अं०) पॅथोलॉजिकल डिस्लोकेशन (Pathological dislocation)।

व्रण—विदीर्ण हुआ शरीरएकदेशोत्थित दोषसंघात। आगन्तु या निज (दोष) कारणों से स्थानिक शरीरपरमाणुओं का नाश होकर त्वचा या श्लैष्मिक त्वचा के पृष्ठ पर बना हुआ खुला घाव। मांस का वह घाव जिसमें पीप पड़ गई हो। जख्म जिसमें पीप भी हो। (अ०) कहं, कर्हा (बहुव० कुरूह)। (अं०) अल्सर (Ulcer), अलकस (Ulcus), सोर (Sore)।

भेद—शारीर और आगन्तुज भेद से व्रण दो प्रकार का होता है। इनमें प्रथम शारीर व्रण दोषों से होता है जिसके निम्न भेद होते हैं—१ वातिक (वातज), २ पैत्तिक (पित्तज), ३ श्लैष्मिक (कफज), ४ रक्तज, ५ द्वन्द्वज और ६ सान्निपातिक। दूसरा (आगन्तु व्रण) शस्त्रादिकों के लगने से क्षत के कारण-शस्त्रादि के आघातजन्य क्षत से (शस्त्रादिक्षतसंभव) होता है। इसको 'सद्योव्रण' या 'क्षत' कहते हैं। अंग्रेजी में इसे ट्रॉमॅटिक वुन्ड (Traumatic wound) कहते हैं।

इसके निम्न अवांतर भेद हैं—१ छिन्न, २ भिन्न, ३ विद्ध, ४ क्षत

(व्रण), ५ पिच्छित और ६ पूष्ठ। व्रण के अन्य भेद वर्णानुक्रम से इस ग्रन्थ में आये हैं।

व्रणकिण—दे० 'व्रणचिह्न'।

व्रणग्रन्थि—ग्रन्थि का एक भेद। (अ० सं० उत्तरतन्त्र अ० ३४)। सुश्रुत में इसका उल्लेख नहीं है। यह फाल्स या अलिबर्ट्स कीलॉइड (False or Alibert's keloid) हो सकता है।

व्रणचिह्न—व्रण का चिह्न जो व्रण के अच्छा होने पर रह जाता है। व्रणकिण। वृक्षवस्तु। सु०। (अ०) नुदबा। (अं०) सिकॅट्रिक्स (Cicatrix), स्कार (Scar)।

व्रणवस्तु—(१) दे० 'व्रणचिह्न'। (२) व्रण होने के स्थान। व्रण के अधिष्ठान। व्रणोपादानभूत वस्तु।

व्रणवेदन—व्रणवेदना।

व्रणशोफ—शोथ (व्रणशोथ)।

व्रणशोष—शोषरोग का एक भेद। दे० 'राजयक्ष्मा'।

व्रणित—घाव या व्रणयुक्त। (फा०) जख्मीशुदा, कर्हाशुदा। (अ०) मुतकर्रह। (अं०) अल्सरेटिड (Ulcerative)।

(श)

शकाकलूस—दे० 'सकाकलूस'।

शकुनीगृहीत—ग्रहजुष्ट बालरोग विशेष। सु०। मा० नि०।

शङ्खक—एक शिरोरोग।

शङ्खभेद—कनपटी में भेदनवत् शूल होना।

शतघ्नी—एक कण्ठगत रोग। सु०।

शतपोनक—(१) सुश्रुत के मत से भगन्दर का एक भेद। यह वात से होता है। सु०। सहस्रधारा। चालनिका (छननी, छालनी, चलवी)। (अं०) मल्टिपल फिस्चुली (Multiple fistulæ)। (२) शूकदोष का एक भेद। सु०।

शतारू—एक प्रकार का क्षुद्र कुष्ठ। च०।

शनैर्मेह—एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमें रोगी धीरे-धीरे कफयुक्त लसदार मूत्र का त्याग करता है। सु०। च०। वा०। यह प्रमेह सिकता से मूत्रमार्ग कुछ अवरुद्ध होने से होता है—मूत्रेण युक्तः सिकताप्रमेहः। मन्देन मूत्रेण शनैः प्रमेहः॥

शम्बूकावर्त—भगन्दर का एक भेद। यह सन्निपातजन्य होता है। सु०।

शय्यामूत्र—एक बालरोग जिसमें बालक बड़ी अवस्था मे आ जाने पर भी रात को बिस्तर में मूत देता है। सोने की हालत में पेशाब हो जाना। शार्ङ्ग०। (अ०) बोल बिस्तरी, बोलफिल्फिराश। (अं०) बेड वेटिङ्ग (Bed wetting), एन्यूरेसिस नॉक्टर्नल (Enuresis nocturnal)।

शय्याव्रण—बिछौने का घाव। (फा०) जख्म बिस्तर (री)। (अ०) जुरूहुल् फिराश, कुरूहुल् फिराश, कुरूह कतात। (अ०) बेड सोर। (Bed Sore)।

शरीरावयवावसाद—स्तब्धता।

शर्करामेह—अश्मरी का एक विकार जिसमें अश्मरी-पीड़ित को पेशाब में कभी-कभी शर्करा निकलती है। सु०। पासिंग ऑफ ग्रेवल (Passing of gravel)।

शर्करार्बुद—एक क्षुद्ररोग। (सु०। मधुकोश०। भोज)। यह या तो सिबेसिअस हॉर्न (Sebaceous horn) होगा या कॉक्स पिक्यूलियर ट्यूमर (Cock's peculiar tumour) होगा।

शर्करा विकार—सिकता।

शल्य—समस्त शरीर में पीड़ा करनेवाला। इसके शारीर और आगन्तु यह दो भेद हैं। सु०। आगन्तुक शल्य को अँग्रेजी में 'फॉरिन बॉडी' (Foreign body) कह सकते हैं।

शल्यज नाडीव्रण—शल्यनाडी। दे० 'नाडी'।

शशक नेत्रत्व—एक प्रकार का नेत्ररोग। (अ०) शतरा। (अं०) लगॉफ्थल्मोस (Lagophthalmos)।

शशकीय नेत्रच्छद—(अ०) शतरा अर्नबिय्या।

शस्त्रकर्मजन्य—शस्त्रकर्म से होनेवाला। (अं०) (Surgical)।

शस्त्रप्रहारप्रसृत रक्तपूर्ण कोष्ठज—दाह का एक भेद। दे० 'दाह'।

शारीररोग—निज रोग।

शारीर व्रण—व्रण का एक भेद। दोषज व्रण। शरीर व्रण। व्रण। ईडियोपैथिक अलसर (Idiopathic ulcer)। दे० 'व्रण'। **भेद**—वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, द्वन्द्वज और सान्निपातिक।

शालूक रोग—एक कण्ठगत रोग। (चरक। अ० सं०)। दे० 'कण्ठ-शालूक'।

शिरा (वृषण) वृद्धि—सिराजन्य वृषणवृद्धि। दे० 'सिरावृद्धि'।

शिरोगति—मूढगर्भ की एक गति। न्युब्जागति। (Cephalic presentation)।

शिरोरोग—शिरोशूल, शिरोऽभिताप, शिरःपीड़ा, शिरोवेदना, शिरोरुक्। (हिं०) सिर दर्द, सिर का दर्द। (फा०) दर्दे सिर। (अ०) सुदाअ। (अं०) हेडेक (Headache), सेफालल्जिया (Cephalalgia)। **भेद**—(आयुर्वेदीय : १ वातज, २ पित्तज, ३ कफज (श्लैष्मिक), ४ सान्निपातिक, ५ रक्तज, ६ क्षयज, ७ क्रिमिज, ८ सूर्या(र्य)वर्त, ९ अर्धावभेद, १० अनन्तवात और ११ शङ्खक।

शिरोवृद्धि—अस्थिवक्रता और जलशीर्ष के कारण सिर बड़ा हो जाना।

शिरोव्याधि—सिर (कपाल और मस्तिष्क) के रोग। शिरोरुक्। (उ०) सिर की बीमारियाँ। (अ०) अमराजुर्रास (अमराज सर), अमराजुद्दिमाग (अमराज दिमाग)। (अं०) डिजीजेज ऑफ दि ब्रेन (Diseases of the brain)।

शिश्नकण्डू—शिश्नगत खुजली। (अ०) हिक्कतुल्कजीब (हिक्कए कजीब)। (अं०) इचिंग ऑफ दि पेनिस (Itching of the penis)।

शिश्नचर्मास्वच्छता—घूँघट की मलिनता।

शिश्नचर्मकच्छू—घूँघट की तर खुजली।

शिश्नमुण्डपिडका—सुपारी (शिश्नमणि) की फुंसियाँ। शिश्नमुण्डजात फक्षा। (अ०) नमूला हश्फा, बुसूर हश्फा। (अं०) हर्पिस ऑफ दि ग्लैन्स (Herpes of the glans)।

शिश्नमुण्ड (मणि) शोथ—सुपारी की सूजन। (अ०) बरम हशफा। (अं०) बॅलनाइटिस (Balanitis)।

शिश्नमूलग्रन्थि (अष्ठीला) रसमेह—अष्ठीलास्राव। अष्ठीलाग्रन्थि

रसमेह। (अ०) जरयान मजी दुरूर मजी, सैलान मजी। (अं०) प्रॉस्टेटोरिया (Prosta torrœa)।

शिश्नमूलग्रन्थिशोथ—दे० 'अण्डीला शोथ'।

शिश्नशोथ—लिंग शोथ। (उ०) जकर का वरम। (अ०) वरम कजीब। (अं०) पीनाइटिस (Penitis), फेलायटिस (Phallaitis)।

शिश्नस्फुरण—आकूना, अरसातून, इख्तिलाज जकर। (अं०) ट्विम्परिंग ऑफ पेनिस (Wimpering of Penis)।

शिश्वातिसार—शिशुओं को होनेवाला अतिसार। (अ०) इसहाल अत्फाल। (अं०) इन्फन्टाइल डायरिया (Infantile diarrhœa)।

शीघ्रपतन—प्रसङ्गकाल में शीघ्र वीर्यपात होना। शीघ्रस्खलन। (अ०) सुरअत इन्जाल। (अं०) रॅपिड या प्रिमेचर इजाक्यूलेशन (Rapid or Premature ejaculation)।

शीत—संकोच। (अ०) नाक्रिज, लर्जा। (अं०) रीगर (Rigor)।

शीतदग्ध—शीतवातातपदग्ध।

शीतदन्त—दन्तरोग विशेष। अ० सं०। दालन। दन्तशूल।

शीतपित्त—वह उदर्द जिसमें (त्रिदोषजन्य होने पर भी) वायु की अधिकता होती है। मा० नि०। (हिं०) जुड़पित्ती, पित्ती उछलना, छपाकी। (अ०) शिरा। (अं०) अर्टिकेरिया (Urticaria), अन्जीसन्युरोटिक इडीमा (Angiosneurotic Oedema), नेटल रैश (Nettle-rash)। दे० 'उदर्द'।

शीतपूतना—(स्त्री) ग्रहजुष्ट बालरोग विशेष। सु०। मा० नि०।

शीतपूर्व ज्वर—जाड़ा का बुखार। दलदल का बुखार। (फा०) तपे लरजा, तपे मोसमी। (अ०) हुम्मा बताइख। (अं०) मार्श फीवर (Marsh fever), अग्यू फीवर (Ague fever)।

शीतमेह—कफज प्रमेह का एक भेद। च०। वा०।

शीतला—मसूरिका। दे० 'मसूरिका'।

शीतवातातपदग्ध—सर्दी से किसी अंग का निर्जीव (मृत) हो जाना। पाला मारना। शीतदग्ध। (अ०) खत्र, तस्कीअ, इस्लाज, तजल्लुद। (अं०) फ्रॉस्ट बाइट (Frost bite)। (फा०) सर्माजदगी। पाला मारा हुआ=

(फा०) सर्माजदा । (अ०) मुतजल्लद । (अं०) फ्रॉस्ट बिटेन (Frost Bitten) ।

शीताद—(१) कफरक्तजन्य दन्तमूलगत रोग । मसूढ़े से खून आना । सु० । अ० सं० । (अ०) लिस्सा दामिया । ब्लीडिंग या स्पजी गम्स (Bleeding or Spongy gums) । (२) मसूढ़ा पिलपिला या ढीला होना । (अ) इस्तिरखाउल्लिसा । (अं०) स्पंजी गम्स (Spongy gums) ।

शीर्षसौषुम्न ज्वर—दे० 'मस्तिष्क सौषुम्न ज्वर' ।

शीर्षावरणक्षय—मस्तिष्कावरणक्षय । (अथर्व०) ।

शीर्षावरण प्रदाह (शोथ)—दे० 'मस्तिष्कावरण शोथ' ।

शुक्तिसंज्ञक, शुक्तिका—नेत्रश्वेतभागगत मांस के समान श्यामवर्ण के सीपियों जैसे बिंदु ।

शुक्र—(१) वीर्य । (२) शुक्ल । फूला । दे० 'शुक्ल' ।

शुक्रक्षय—शुक्रदोष का एक भेद जिसमें शुक्र का उत्सर्ग होता ही नहीं । वीर्य की क्षीणता । (अं०) अस्पर्मिया (Aspermia) ।

शुक्रक्षयज ध्वजभङ्ग—ध्वजभङ्गक्लैब्य भेद । दे० 'क्लैब्य' ।

शुक्रगत ज्वर—शुक्रधातुगत ज्वर । धातुगतज्वर का एक भेद ।

शुक्रतारल्य—शुक्र का पतलापन । (अ०) रिक्कत मनी ।

शुक्रदार्ढ्य—शुक्रसांद्रत्व । (अ०) गिल्जतमनी ।

शुक्रदोष—शुक्रस्थित दोष । शुक्र के विकार । शुक्र के रोग । (अ०) अमराज मादए मनविया । **भेद**—वातदुष्ट, पित्तदुष्ट, श्लेष्म दुष्ट, रक्तान्वित शुक्र, शुद्ध शुक्र ।

शुक्रनिरोधज उदावर्त—आते (स्खलित होते) हुए शुक्र को रोकने से हुआ उदावर्त ।

शुक्रमिश्रमूत्र—शुक्रमेह ।

शुक्रमेह—कफजप्रमेह का एक भेद जिसमें रोगी (शुक्रमेही) शुक्रतुल्य या शुक्रयुक्त मूत्र त्याग करता है—शुक्रतुल्यं शुक्रमेही । सु० "शुक्राभं शुक्र-मिश्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति" वा० । शुक्रतुल्य मूत्र को अँगरेजी में अल्ब्यूमिन्यूरिआ (Albuminuria) तथा अरबी में बोल जुलाली और शुक्रमिश्रमूत्र को अँग्रेजी में स्पर्माट्यूरिआ (Spermaturia) या स्पर्मेटोरिआ (Spermatorrhœa)

तथा अरबी में जिरयान (जर्यान) एवं जिरयानुल् मनी, कहते हैं। जरयान मनी, सैलानुलमनी, सैलान मनवी।

शुक्रविकार—शुक्रदोष।

शुक्रसान्द्रत्व—शुक्र का गाढापन। (अ०) गिल्जत मनी।

शुक्रस्खलनकालीन मलोत्सर्ग—शुक्रस्खलन के समय मलोत्सर्ग हो जाना। (अ०) इज्योत, अजीता। (अं०) डिफीकेशन विथ इजाक्यूलेशन (Defecation with Ejaculation)।

शुक्रस्रवण, शुक्रस्राव—शुक्रप्रवर्तन।

शुक्राश्मरी—वीर्य की पथरी। सु०। (अं०) सेमिनल या स्पर्मेटिक कन्क्रीशन्स (Seminal or Spermatic concretions), स्पर्मोलिथ (Spermolith)।

शुक्ल—नेत्रकृष्णभागगत रोग विशेष। कनीनिका के अपारदर्शक दाग। शुक्र। सु०। फूल। फूला। फूली। (अ०) बयाज, इयाज ऐन (चश्म), अतामतुल् कर्निया। (अं०) ओपेसिटी ऑफ दि कॉर्निया (Opacity of the cornea)। **भेद**—अव्रण और सव्रण भेद से शुक्ल दो प्रकार का होता है।

शुक्लार्म—एक नेत्रश्वेतभागगत रोग। एक प्रकार का अर्म जिसमें नेत्र के शुक्ल भाग में (अर्धचंद्राकार या त्रिकोणाकार प्रायः आभ्यन्तरिक नेत्रकोण में) एक चिरवृद्धिशील, श्वेतता और कोमलता लिये हुए मांसप्रचय होता है। यह कफज और छेदनसाध्य है। सु०। (उ०) नाखू (खु) ना। (अ०) जुफ्रा जफरा। (अं०) टेरीजियम (Pterygium)। दे० 'अर्म' या 'रक्तार्म'।

शुक्लास्तर अर्म—

शुक्लास्तर दाह—

शुद्ध शुक्र—

शुष्क फुफ्फुसावरण प्रदाह (शोथ)—दे० 'फुफ्फुसावरण शोथ'।

शुष्काक्षिपाक—एक नेत्रसर्वभागगत रोग। (फा०) आशोबचश्म खुश्क। (अ०) रमद याबिस, रमद जाफ, जसाद्दा मुल्तहिमा, जफाफुल् ऐन। (अं०) जीरॉफ्थल्मिया (Xerophthalmia)।

शुष्कार्श—एक प्रकार का अर्श जो वातश्लेष्मोल्वणजन्य होता है। च०।

अ० हृ० । बाह्यार्श । वातार्श । (हिं०) अंधी बवासीर, शुष्क या बादी बवासीर । (अ०) बवासीर अमिया, बवासीर सम्म, बवासीर जामिदा । (अं०) एक्सटर्नल या ब्लाइंड पाइल्स (External or Blind piles), नॉन ब्लीडिंग पाइल्स (Non-bleeding piles) । दे० 'अर्श' ।

शुष्कगर्भ—वह गर्भ जिसकी ठीक वृद्धि न होवे या उसकी मृत्यु होकर वह शुष्क हो जाता है । (अं०) फीटस पेपिरेसिअस (Fœtus Papyr. ceous), फीटस कॉम्प्रेसस (Fœtus Compressus) ।

शूकदोष—शूकप्रयोग के कारण उत्पन्न हुए दोष यानि रोग । शूक व्याधि । **भेद**—सर्षपिका, अष्ठीलिका, ग्रथित, कुम्भीका, अलजी, मृदित, समूढ पिड़का, अवमन्थ, शूकरदंष्ट्र (वराहदंष्ट्र), पुष्करिका, स्पर्शहानि (सुन्नता), उत्तमा, शतपोनक, त्वक्पाक, शोणितार्बुद, मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि और तिलकालक ।

शूकरदंष्ट्र—शूकदोष का एक भेद । सु० । दे० 'वराहदंष्ट्र' ।

शूकव्याधि—शूकदोष ।

शूल—पेट का मरोड़ युक्त दर्द, पक्वाशयगतशूल, शूल । (उ) कुलंज का दर्द । (अ०) कुलज, दर्दे कुलंज । (अं०) कॉलिक (Colic) । **भेद**—(आयुर्वेदीय) वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक, द्विदोषज (कफवातिक, कफपैत्तिक, वातपैत्तिक) । अन्य भेद—आन्त्रशूल, आमाशयशूल, जीर्णविड्विबंधज शूल (पुरीषजन्य), यकृत्शूल, वृक्कशूल, क्रिमिजन्य, अवरोधजन्य, आन्त्रसंमूर्च्छनज (आन्त्रपरिवर्तनज) इत्यादि ।

शैफस्तम्भ—शिश्न की वक्रता । (अं०) कॉर्डी (Chordee) ।

शैशवसन्यास—(अ०) इन्फन्टाइल कोमा (Infantile coma) ।

शैशवीय अंगघात—बच्चों का फालिज । (अ०) शललुल् अतफाल, फालिजुल् अत्फाल । (अं०) इन्फैन्टाइल पैरालिसिस (Infantile paralysis) ।

शोकातिसार—अतिसार का एक भेद । शोकजातिसार । शोक से होने वाला (मानसिक) अतिसार । इसे कई रक्तातिसार भी कहते हैं । दे० 'अतिसार' ।

शोणित क्षय—रक्तक्षय ।

शोणितजन्य अर्श—*अर्श का एक भेद । रक्तार्श । च० । सु० । वा० ।* दे० "रक्तार्श" ।

शोणितजन्य क्रिमि—बाह्यक्रिमि भेद।

शोणित ज्वर—दे० 'रक्तज्वर'।

शोणितनिमित्त शोथ—शोणितजन्य व्रणशोफ।

शोणितपित्त—नासागत रोग। नाक से खून बहना। नकसीर फूटना। नासागत रक्तपित्त। (अ०) रुआफ, नजीफुल् अन्फ। (अं०) एपिसटैक्सिस (Epistaxis), रिनोरेजिया (Rhinorrhagia)।

शोणितमेह—रक्तमेह। खून का पेशाब। दे० "रक्तमूत्र"।

शोणितमेहज्वर—(अं०) ब्लैक वॉटर फीवर (Black water fever)।

शोणित शुक्रता—शुक्र का एक दोष जिसमें शुक्र में रक्त मिला रहता है। शुक्र में रक्त मिलने से शुक्र का वर्ण लाल (शोणितवर्णवेदन) हो जाता है। यह अवस्था अतिमैथुनजन्य शुक्रक्षय में होती है। रक्तशुक्रता। (अं) हीमोस्पर्मिआ (Hæmospermia)।

शोणितस्राव—रक्तस्राव। खून बहना।

शोणितस्राव प्रवृत्ति—रक्तस्राव की प्रवृत्ति। (अ०) सैलानुत्तम्स। (अं०) मेनोरिआ (Menorrhœa)।

शोणितातियोगोपद्रव—शोणितातियोगजन्य उपद्रव। शोणितातिप्रवृत्तिजन्य उपद्रव। अत्यधिक मात्रा में रक्त निकलने से उत्पन्न हुए रक्तहीनता के लक्षण। इसके लक्षण सु० सू० अ० १४ सू० ३० में देखें।

शोणितार्बुद—शूकदोष का एक भेद। सु०।

शोणितार्श—(१) रक्तार्श। दे० 'परिस्रावी अर्श'। (२) नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष।

शोणितावबन्ध—मासिक धर्म का बंद होना। नष्टार्तव। (अं०) अमेनोरिया (Amenorrhœa)।

शोणितोत्क्लेद—रक्तभार।

शोथ—(१) एक प्रकार का शोफ (अर्धाङ्ग वा सर्वाङ्ग) जो हृदय, वृक्क, यकृत् इत्यादि प्रधान अंगों के विकार से उत्पन्न होता है और उसमें सूजन के अतिरिक्त इन्द्रियविकृति के लक्षण भी होते हैं। इसका (उत्सेधलिंगशोथ) का प्रधान कारण स्रोतों की अत्यधिक स्रवणक्षमता अर्थात् पर्याय से स्रोतोदुष्टि

है। इसके अतिरिक्त रक्तभाराधिक्य भी शोथोत्पत्ति में सहायता करता है। शोथ जब त्वचा या यकृतादि अंगों में होता है तब शोथ ही कहा जाता है, जब किसी अवकाशयुक्त स्थान में होता है तब उस स्थान के साथ जल शब्द का उपयोग किया जाता है। जैसे--उदर में जलोदर इत्यादि। जलोदर शोथ का ही एक स्थानविशिष्ट स्वरूप है। वाग्भट में लिखा है--प्रदुष्ट वायु, प्रदुष्ट रक्त, पित्त और कफ को बाहर की सिराओं में ले जाकर पुनः उनसे अवरुद्धगति होकर त्वचा और मांस में स्थान कर लेता है (त्वङ्मांससंश्रय कहने से व्रणशोथ से भेद दर्शाया है; क्योंकि व्रणशोथ आठ स्थानों में होता है)। इस प्रकार रक्त-सहित तीनों दोषों से होने वाले इस उठाव और कठिनता को 'शोथ' कहते हैं।

लक्षण--भारीपन, अनवस्थितता, त्वचा में उठाव तथा सिराओं की सूक्ष्मता और लोमहर्ष, विवर्णता ये शोथ के सामान्य लक्षण हैं। (चरक)।

पर्याय--(सं०) श्वयथु, शोफ, शोथ। (हिं०) जलंधर। सूजन। (अ०) इस्तिस्काऽ, इस्तिस्काऽ लह्मी, इस्तिस्काऽ आम, वरम। (फा०) आमास, आमास तन। (अं०) ड्रॉप्सी (Dropsy), हाइड्रॉप्स (Hydrops), अनासरका (Anasarca), जेनरल ड्रॉप्सी (General dropsy), स्वेलिंग (Swelling)।

भेद--(१) **वातज (वातिक) शोथ**। शोफ। फूलापन। ढीला वरम। मुरमुराहट। सूजन जो दबाने से दब जाय, वायु की सूजन। (अ०) वरम रिख, तहब्बुज, औजीमा। (फा०) वरमनर्म। (अं०) इडीमा (Oedema)। यूनानी वैद्यकोक्त वरम रीही या इन्तिफाख अर्थात् रियाही सूजन (आमास रीही--Emphysema) का भी वातिक शोफ में ही अन्तर्भाव होता है। (२) **पित्तज (पैत्तिक) शोथ**--पित्त की सूजन। (३) **कफज (श्लैष्मिक) शोथ**--यह शोथ कठिन (घन) होता है। (अ०) औजीमाए मुखातिया, तहब्बुज मुखातो। (अं०) मिक्सेडीमा (Myxœdema), सॉलिड इडीमा (Solid œdema)। द्वंद्वज--(४) **वातपित्तज**, (५) **वातकफज**, (६) **पित्तकफज**, (७) **सन्निपातज**। (८) **अभिघातज** और (९) **विषज**। (२) शोफ। दे० 'शोफ' (२)।

शोथजन्य अतिसार--शोथ के कारण होने वाला अतिसार। (अ०) इसहाल वरमी। (अं०) इन्फ्लमेटरी या कन्जेस्टिव्ह डायरिया (Inflamatory or cangestive Diarrhœa)।

शोथजन्य ज्वर—शोथ के कारण होने वाला ज्वर। (फा०) तपे वरमी, तपे सोजिशी। (अ०) हुम्मा इल्तिहाबिय्या, हुम्मा वर्मिय्या। (अं०) इन्फ्लमेटरी फीवर (Inflamatory fever)। **भेद**—तीव्र—(अ०) हुम्मा वर्मिय्या (इल्तिहाबिय्या) कविय्या। (अं०) अस्थीनिक इन्फ्लमेटरी फीवर (Asthenic Inflamatory fever)।

शोथयुक्त कोथ—(अं०) इन्फ्लमेटरी गॅङ्ग्रीन (Inflammatory gangrene)।

शोफ—(१) शोथ। दे० 'शोथ'। (२) छोटे-मोटे आकार के उत्सेधयुक्त ग्रन्थि, विद्रधि, अलजी इत्यादि प्रायः जो रोग होते हैं उन रोगों के लक्षणों से पृथक् लक्षणयुक्त (किंचित्) फैला हुआ, गाँठदार, सम या विषम आकार का, त्वचा और मांस में स्थित (त्वचा मांसादि अष्टविध व्रणवस्तु के स्थान में स्थित) वातादि दोषों का संघात जो शरीर के एक हिस्से में (अर्धांग वा सर्वांग शोफ से भिन्न) उत्पन्न होता है। गात्रावयव शोथ ! एकदेशोत्थित शोथ (इसमें स्थानिक लक्षणों का ही प्राधान्य होता है, सार्वदैहिक लक्षण थोड़े होते हैं)। व्रणशोफ, शोथ, प्रदाह, सूजन, (परिदाह, ओष, पाक)। (फा०) सोजिश (भारतीयों द्वारा प्रयुक्त नवीन फारसी), आमास (प्राचीन फारसी)। (अ०) इल्तिहाब, तलह्हुब, वरम हार्र (गरम वरम), वरम। (अं०) इन्फ्लमेटरी इडीमा (Inflammatory œdema), सदाह शोफ=तह्हुब इल्तिहाबी (वर्मी), ओजीमाए वर्मिय्या, फ्लेग्मेशिया (Phlegmasia), स्वेलिंग (Swelling), इन्फ्लमेशन (Inflamation): **वक्तव्य**—किसी स्थान में जब 'इन्फ्लमेशन' (ओष या परिदाह) उत्पन्न होता है तब प्रायः सूजन हुआ ही करती है। इस साहचर्य का परिणाम यह हुआ है कि भीतरी 'इन्फ्लमेशन' के लिए बाह्य शोथ शब्द रूढ हो गया है। जब तक यह आमावस्था और पच्यमानावस्था (अर्धपक्वावस्था) में रहता है तब तक 'शोफ' (व्रणशोफ) ही कहलाता, परंतु जब यह, 'पक्वावस्था' को पहुँचता है तब उसे 'विद्रधि' कहते हैं। शोफ की पक्वावस्था का ही दूसरा नाम 'विद्रधि' है (दे० 'विद्रधि')। जब शोथ पक्व हो जाता है, तब भीतरी पूय बाह्य त्वचा की ओर धीरे-धीरे बढ़कर उसका निर्जीव करता है और कुछ समय के पश्चात् अत्यंत निर्जीव स्थान को फाड़कर बाहर निकल आता है, तब उस अवस्था को 'व्रण' कहते हैं अर्थात् व्रण बाह्य त्वचा पर बने हुए उस

खुले घाव को कहते हैं जिसमें पूय होती है (दे० 'व्रण')। **भेद**—निज या दोषज—१. वातनिमित्त, २. पित्तनिमित्त, ३. कफनिमित्त, ४. शोणितनिमित्त, ५. सन्निपातनिमित्त और ६. आगन्तुनिमित्त—मुखानि खल्वागन्तोः नखदशनपतनाभिचाराभिशापाभिषङ्गाभिघातवधबंधपीडनज्जुदहनशस्त्राशनिभूतोपसर्गादीनि। (चरक)।

शोष—धातुशोषजन्य क्षय। इसको राजयक्ष्मा नहीं कहते हैं। (अ०) लागरी, हुजाल, जबूल, सिल्ल। (अं०) कन्जम्प्शन (Comsumption), टेबीज (Tabes)। **भेद**—१. व्यवायशोष (मैथुनजन्य शोष), २. शोकशोष, ३. जराशोष वा वार्धक्य शोष (दिक्कुश्शैखूखत या दिक्कुल्हरिम), ४ अध्वशोष (मार्ग के बहुत चलने से उत्पन्न शोष), ५. व्यायामशोष, ६. व्रणशोष और ७. उरःक्षत।

शौषिर—एक दन्तमूलगत रोग जिसमें दाँतों की जड़ों में शोथ होता है। सु०। यह दन्तवेष्टप्रकोप (Gingivitis) का एक प्रकार मालूम पड़ता है।

श्यावदन्तक—एक दन्तरोग जिसमें दाँत काला या नीला पड़ जाता है। सु०। (अं०) ब्लैक या नेक्रोज्ड टूथ (Black or necrosed tooth)।

श्याववर्त्म—नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष।

श्याववमन—काले रंग का वमन आना। कृष्ण वमन। (उ०) स्याह कै। (अ०) कै अस्वद। (अं०) ब्लैक वामिट (Black vomit), वामिट नाइग्रा (Vomit nigra)।

श्रांतगर्भाशय—गर्भाशयसग। थका हुआ गर्भाशय। (अं०) एक्झॉस्टेड यूटरस (Exhausted uterus)।

श्रोणिगुहा शोथ—श्रोणिगुहागत शोथ। (अं०) पेल्विक सेल्यूलायटिस (Pelvic cellulitis)।

श्लीपद—श्लीपदकृमि के उपसर्ग से होने वाला रोग। च०। सु०। अ० सं०। मा० नि०। श्लीपदरोग। (हिं०, उ०) फीलपाव, हाथीपांव। (फा०) फीलपा, मर्ज फीलपा। (अ०) दाउल्फील। (अं०) एलीफन्टिआसिस (Elephantiasis), फायलेरिआसिस (Filariasis)। **भेद**—(आयुर्वेदीय) वातज, पित्तज और कफज—(कफाधिक्य)। (अन्य) १. अरबी श्लीपद—(अ०) फीलपा, फीलपा अरबी, दाउल्फील अरबी। (अं०) एलीफन्टिआसिस अॅरॅबियम् (Elephantiasis arabium)। २. कुष्ठ—(अ०) दाउल्फील यूनानी,

जुजाम । (अं०) एलीफन्टिआसिस ग्रेंकोरम (Elephautiasis gracorum) । दे० 'कुष्ठ' । ३. **श्वापकुष्ठ**—सुप्तता का कोढ । दे० 'कुष्ठ' ।

श्लेष्म प्रसेक—किसी धरातल से प्रचुर श्लेष्मल द्रव उत्सर्गित होना, श्लेष्मल कला का उष्ण शोथ । (अ०) नजला । (अं०) कॅटार (Catarrh) ।

श्लेष्मल योनि—योनिरोग ।

श्लेष्मविदग्ध दृष्टि—एक दृष्टिभागगत रोग जिसमें दुष्ट कफ के कारण दृष्टि सदैव कुछ श्वेत-सी रहती है । इसलिये वह सभी रूपों को श्वेत वर्ण के देखता है । श्वेतदर्शन । ये लक्षण दोष के प्रथम और द्वितीय पटल मे ही होते हैं; क्योंकि तृतीय पटल में वक्ष्यमाण नक्तान्ध दृष्टि (जो उसकी एक अवस्था विशेष है) रोग होता है । दे० *'नक्तान्ध्य'* ।

श्लेष्माश्मरी—श्लैष्मिक अश्मरी । (अं०) फॉस्फेटिक कल्यूलस (Phosphatic calculus) ।

श्लैपदिक ज्वर—श्लीपद का बुखार ।

श्लैष्मिक ग्रहणी—कफज ग्रहणी ।

श्लैष्मिक शूल—दे० 'कफजशूल' ।

श्वसनक ज्वर—एक प्रकार का वातकफोल्वण सन्निपात ज्वर, न्युमोनिया, पार्श्वरुक्, फुप्फुसशोथ (प्रदाह), कर्कटक सन्निपात (मा०) । (उ०) फेफड़ों का गरम वरम, खास फेफड़ों का वरम । (फा०) वरम शुश । (अ०) जातुरिया, इल्तिहाबुरिया । (अं०) न्युमोनिया Pneumonia, (न्युमाइटिस Neumitis) । **भेद**—१ प्रणालीय फुप्फुस शोथ (प्रदाह), २ खण्डीय फुप्फुस शोथ (प्रदाह) और ३ दूषित या पूयमय फुप्फुसशोथ ।

श्वास—एक रोग । श्वासरोग । (हिं०) दमा, साँस । (फा०) दमकुशी । (अं०) ऐस्थमा, ऐज्मा, आस्मा (Asthma) । **भेद**—१ कृच्छ्रश्वास, २ क्षुद्रश्वास, ३ तमक श्वास, ४ छिन्न श्वास, ५ महाश्वास और ६ ऊर्ध्वश्वास ।

श्वासकास—साँस और खाँसी ।

श्वासकृच्छ्र—श्वास-प्रश्वास में कठिनाई । दे० 'कृच्छ्रश्वास' ।

श्वित्र—श्वेत कुष्ठ । दे० 'किलास' ।

श्वासावरोध—(१) साँस लेने में रुकावट होना । साँस रुकना ।

दम घुटना। उच्छ्वासावरोधन। (अ०) इख्तिनाक। (अं०) अस्फिक्सिया (Asphyxia), सफोकेशन (Suffocation)। (२) साँस बंद होना। (अं०) ॲप्नोआ (Apnœa)।

श्वेतकणाभिवृद्धि—रक्त में श्वेत कणों का अधिक होना। रक्तस्थ श्वेतकणाभिवृद्धि। श्वेतरक्त। (उ०) सफेद खून। (अ०) दमअब्यज, दमे कैलूसी (प्राचीन), अबैजाजुद्दम। (अं०) ल्यूकीमिया (Leukæmia), ल्युकोसाइथीमिई (Leucocythæmiæ)। **भेद**—१ प्लीहमज्जानुगत श्वेतरक्त। (अ०) दम अब्यजमुखी तिहाली। (अं०) स्प्लीनो मेडुलरी ल्यूकीमिया (Spleno-medullary leukæmia), लायनो-मेडुलरी ल्यूकीमिया (Lieno-medullary leukæmia)। (२) **लसिकाजन्य श्वेतरक्त**—(अ०) दम अब्यज लिम्फावी अबैजाजुद्दम गुद्दी। (अ०) लिम्फाटिक ल्यूकीमिया (Lymphatic Leukæmia), लिम्फामिया (Lymphæmia), लिम्फाडीनोसिस (Lymphadenosis)। (३) **मिश्र**—(अ०) मिक्स्ड ल्यूकीमिया (Mixed Leukæmia)। (४) **मज्जाविकारज (मज्जानुगत) श्वेतरक्त**—(अ०) दम अबयज मुखी, अबैजाज दम मुखी (नुखा)। (अं०) माइलॉइड या मेडुलरी ल्यूकीमिया (Myeloid or medullary leukæmia), माइलीमिया (Myelæmia), माइलोसिस (Myelosis)। (५) **अस्थिगत श्वेतरक्त**—दमे अबयज अजमी। (अं०) ऑसियस ल्यूकीमिया (Osseus leukæmia)। (६) **प्लीहजन्य (प्लैहिक) श्वेतरक्त**—(अ०) दमे अब्यज तिहाली, अबैजाज दम तिहाली। (अं०) स्प्लीनिक ल्यूकीमिया (Splenic leukæmia), लाइएनलिस ल्यूकीमिया (Lienalis leukæmia)। (७) **मिथ्या श्वेतरक्त**—दमे अब्यज (अबैजाज दम) काजिब। (अ०) स्यूडो ल्यूकीमिया (Pseudo leukæmia)। (८) **त्वग्गत श्वेतरक्त**—(अ०) दमे अब्यज जिल्दी। (अं०) ल्यूकीमाइटिस (Leukæmitis)।

श्वेतपाद—सूतिका का एक रोग। सूतिका के पैर की सफेद सूजन। (अं०) फ्लेग्मसिया अल्बाडोलेन्स (Phlegmasia albadolens)।

श्वेतप्रदर—एक प्रकार का प्रदर जिसमें स्त्री की योनि से सफेद पानी आता है। सफेदा (अ०) मजं अब्यज, सैलानुर्रिहम, सैलाने अबयज महबिली। (अं०)

ल्यूकोरिया (Leucorrhœa), ह्वाइट्स (Whites) । **भेद**—१ कफज, २ पित्तज, ३ वातज और ४ सन्निपातज ।

श्वेतमण्डलशोथ—नेत्र के सफेद मण्डल की सूजन । (अं०) स्क्लीराइटिस (Scleritis) ।

श्वेतरक्त—दे० 'श्वेतकणाभिवृद्धि' ।

श्वेतसार विकार—श्वेतसार जैसे द्रव्य में शारीर धातुओं का परिणत हो जाना । (अ०) फसाद तरकीब नशाई । (अं०) अमीलॉइड डीजनरेशन (Amyloid degeneration) ।

श्वेतार्बुद—सफेद रसौली । (अ०) सलअ बैजाऽ, वरम् अब्यज । (अं०) ट्यूमर अल्बस (Tumour albus), ह्वाइट स्वेलिंग (White swelling) ।

श्वेतातिसार—सफेद दस्त । (अ०) इसहाल अब्यज । (अं०) डायरिया अल्बा (Diarrhœa alba) ।

(ष)

षटाह्निकज्वर—छठे दिन आने वाला ज्वर । (फा०) तपे शशरोजा । (अ०) हुम्मा सुदुस । (यू०) बरूताऊस । (अं०) सिक्स-डेज फीवर (Six days fever) ।

षण्ड (क), षण्ढ (क)—दे० 'क्लीब' और 'क्लैब्य' ।

(स)

संकोच, सन्निरोध—नाली का तंग या बंद हो जाना । (अ०) तजय्युक, तजय्युक मजरा, जीक । (अं०) स्ट्रिक्चर (Stricture) ।

संक्षोभजन्य अतिसार—प्रक्षोभ के कारण होने वाला अतिसार । (अ०) इसहाल लजई, इसहाल तहय्युजी । (अं०) इरिटेटिव्ह डायरिया (Irritative diarrhœa) ।

संखिया विष—संखिया का जहर । (अ०) तसम्मुम् सम्मुलफार । (अं०) आर्सेनिक पॉइजनिंग (Arsenic poisoning) ।

संग्रह-ग्रहणी—एक प्रकार की ग्रहणी (पुराना अतिसार) जिसमें अंत्रों में कूजन, किसी कर्म करने में सामर्थ्य होने पर भी अनुत्साह, शरीर में दुर्बलता और अङ्गों में पीड़ा तथा कटिपीडा के साथ-साथ तरल, शीतल, घन वा स्निग्ध आम मल का पिच्छिलता लिये हुए बहुत मात्रा में कुछ वेदना और शब्द के साथ

पन्द्रह दिन बाद, महीने बाद वा दस दिन बाद अथवा प्रतिदिन वेग के रूप में आना, एवं दिन में उसकी वृद्धि और रात्रि को शांति होना जिसमें होता है वह दुश्चिकित्स्य दुर्विज्ञेय और चिरकालानुबंधी आम वात से होने वाली संग्रह-ग्रहणी (संग्रहणी) होती है। मा० नि०। (अ०) जरब मुज्मिन, जरब, खिल्फा। (अं०) स्प्रू (Sprue), साइलोसिस (Psilosis)।

संग्रहणी—(१) दे० 'संग्रह-ग्रहणी'। (२) दे० 'ग्रहणी'।

संघातबलप्रवृत्तव्याधि—दुर्बल को बलवान् के साथ लड़ने (आदि) से हुए आगन्तुक रोग। आघात, प्रहार, पीड़न इत्यादि के बल से उत्पन्न हुए रोग। सु०। (अं०) ड्यू टु मेकॅनिकल कॉज (Due to mechanical cause)। ये दो प्रकार के होते हैं—शस्त्रकृत और व्यालकृत।

संज्ञानाश—अचेतनता। बेहोशी। अचेतता।

संततज्वर—(१) एक प्रकार का अविसर्गी ज्वर। सु०। (२) एक प्रकार का विषम ज्वर। (उ०) लाजमी (रोजाना) बुखार। मा० नि०। (अ०) हुम्मा मुफत्तिरा, हुम्मा मुतरद्दिदा। (अं०) मलेरिअल् रेमिटेंट फीवर (Malarial remittent fever), कन्टिन्यूड मलेरिअल् फीवर (Continued malarial fever)।

संतमक—तमक श्वासरोग का एक भेद। दे० 'तमक'।

संताप—दाह, औष्ण्य, उष्णता। (फा०) तपिश, सोजिश। (अ०) हरारत। (अं०) पाइरेक्सिया (Pyrexia)।

संधानीय शोथ—(अ०) इल्तिहाब (वरम) मुंबित। (अं०) प्लास्टिक इन्फ्लमेशन (Plastic inflammation)।

संधिकज्वर—आमवातिकज्वर। गठिया का बुखार। (अ०) हुम्मा वजउल् मफासिल(-सिली)। (अं०) रह्यूमॉटिक फीवर (Rheumatic fever)।

संधिक सन्निपात—सन्निपात ज्वर का एक भेद।

संधिभग्न (भङ्ग)—एक प्रकार का भग्न जिसमें अस्थियों के सिरे अपना स्थान छोड़कर दूर हट जाते हैं या संधिकोष के छिद्र में से बाहर निकल जाते हैं। मा० नि०। संधिमुक्त। सु०। संधिविश्लेष। संधिच्युति। (हि०) जोड़ उखड़ना। (अ०) खलअ्। (अं०) डिस्लोकेशन (Dislocation), लक्सेसन (Luxation)।

संधिमुक्त—दे० 'संधिभग्न'।

संधिविच्युति—दे० 'संधिभग्न'।

संधिविश्लेष—दे० "संधिभग्न"।

संधिशोथ—जोड़ों की सूजन (वरम)। (अ०) वरम मफासिल। (अं०) आर्थ्राइटिस (Arthritis)। **भेद**—**विरूप संधिशोथ**—(अ०) वरम मफासिल तशव्वुहिय्य। (अं०) डिफॉर्मंड आर्थ्राइटिस (Deformed Arthritis), रह्यूमॅटॉइड आर्थ्राइटिस (Rheumatoid Arthritis)।

संपूर्णमुखगतरोग—मुखगतरोग विशेष। सु०। दे० 'सर्वसररोग'।

संमोह—हृदय दौर्बल्य के कारण मस्तिष्क में अकस्मात् रक्त की कमी होने से हुआ चक्कर। प्रमोह, मोह (सु०), भ्रम (सु०; मा० नि०; भा०)। (हिं०) आँखों के सामने अँधेरा आना या सरसों फूलना या चिनगारी छूटना। (अ०) सुदर। (अं०) गिड्डीनेस (Giddiness), फेंटिंग (Fainting)। दे० 'भ्रम'। **भेद**—(यूनानी) १. संज्ञाशून्यता (शीत वा शीतल दोषज)। (अ०) सदर खदरी। २. आघातजन्य (आघात प्रत्याघातजन्य)। (अ०) सदर मुवल्लिम। ३. मस्तिष्कजन्य (दोषज)। (अ०) दायमी।

संयोजकधातुगत शोथ—(अ०) इल्तिहाब (वरम) खलाली। (अं०) इन्टर्स्टिशियल इन्फ्लमेशन (Interstitial inflammation)।

संवर्तनीय रोग—संवर्तनजन्य रोग। आहारगति या परिवर्तन के रोग। (अ०) अमराज इस्तिहाला मिजाइय्या। (अं०) मेटाबोलिक डिजीजेज (Metabolic Diseases)।

संवेदनाविरहित—अचेतन। (अं०) सेन्सलेस (Senseless)।

संसक्ति—चिपक जाना, जुड़ जाना, संश्लेष। (अ०) इल्तिसाक। (अं०) अडीअरंस (Adherence)। **भेद**—(१) अगोष्ठीय संसक्ति—(अ०) इल्तिसाकुश्शुफ्रैन। (अं०) यूनिअन ऑफ दि लेबिया (Union of the labia)। (२) अस्थिजन्य संसक्ति—(अ०) इल्तिसाक अज्मी। (अं०) ऑसिअस अङ्किलोसिस (Osseous ankylosis)। (३) हृदयावरणगत ससक्ति—(अ०) इल्तिसाक गिलाफुल् कल्ब। (अं०) अड्हीयरेंट पेरिकार्डियम् (Adherent pericardium)। (४) जिह्वागत संसक्ति—(अ०)

इल्तिसाकुल्लिसान । (अ०) अङ्किलोग्लोसया (Ankylo-glossia) । (५) संधिगत संसक्ति—(अ०) इल्तिसाकुल्मफासिल । (अं०) अङ्किलोसिस (Ankylosis) ।

संसर्गज—अत्यंत समीप आने से या स्पर्श से होने वाले रोग । छूतदार । (अ०) मुस्री; मुअ्दी, मुन्तकिला, मुत्अद्दी । (अं०) कॉन्टेजिअस (Contagious) ।

संसर्गजन्य अर्श—अर्श का एक भेद । च० । वा० ।

संस्कारवाही—एक प्रकार की विप्रकृति जिसमें सिर्फ एक विशिष्ट अवस्था में मनुष्य मैथुन करने में समर्थ होता है और उसके सिवाय षण्ढ रहता है । च० । इस अवस्था को 'संस्कारवाहिता' कहते हैं । अँग्रेजी में इसे फेटीशिज्म (Fetishism) कह सकते हैं । यह अवस्था मानसिक दौर्बल्य या मनोव्यावर्तन (Psycho neurosis) के कारण होती है ।

संस्पर्शासह—बराबर अधिक स्पर्श को न सहन करनेवाला । अस्पर्शसह ।

सकम्पांगघात, सकम्पार्धांगवायु—एक प्रकार का अङ्गघात वा पक्षाघात जिसमें अङ्गघात (वा पक्षाघात) के साथ कम्पवात भी हुआ करता है । प्रायः वृद्ध मनुष्य उससे पीड़ित हुआ करते हैं । (उ०) फालिज मैं रेअ्शा, अधरंग मे राअ्शा । (अ०) फालिज मुर्तजिफ, शलल इहतिजाजी, इस्तिरखाइ-इर्तिआशी । (अं०) पॅरालिसिस अजिटन्स (Paralysis agitans) ।

सकाकलूस—दे० 'मृतांगकोथ' । **वक्तव्य**—सकाकलूस या शफाकलूस दोनों यूनानी स्फेकेलूस (Sphace lus) से अरबी बनाये गये शब्द हैं । अस्तु, उनका शुद्ध अरबी रूपांतर 'शफाकलूस' है ।

सतत ज्वर—एक प्रकार का विषमज्वर जो दिन-रात्रि में दो बार (द्वन्द्वोल्वण होने पर चार बार-सतत विपर्यय) होता है । मा० नि० । अन्येद्युष्क विपर्यय । (अ०) हुम्मा मुवाजिबा मुजाअफा । (अं०) डबल कोटिडिअन फीवर (Double quotidian fever) ।

सदन—(अं०) अस्थीनिया (Asthenia) ।

सदनाधिक्य—(अं०) हाइपरास्थीनिया (Hyperasthenia) ।

सदाहमूत्र—पेशाब की जलन । जलनयुक्त मूत्र आना । (अ०) हुर्कत

इह्लील, हुर्कतुल् बौल। (फा०) सोजिश बौल (या नाइजा)। (अं०) इरिटेबल यूरिन (Irritable urine), इरिटेबिलिटी ऑफ दि यूरिन (Irritability of the urine)। दे० 'मूत्रदाह'।

सदाह वेदन (शूल)—जलनदार शूल। (अ०) वजा मुहरिक, अलम हराक। (अं०) बर्निंग पेन (Burning pain)।

सद्योव्रण—आगन्तु व्रण। शस्त्रादिकों के लगने से मांस में बना हुआ वह क्षत जिसमें पीप न पड़ी हो। (हिं०) घाव। (फा०) रीश, जख्म। (उ०) जख्म बेपीप। (अ०) जुर्ह (बहुव० जुरूह), जराहत। (अं०) वूण्ड (Wound), ट्रॉमटिक वूंड (Traumatic Wound)। दे० 'व्रण'।

सन्निपातज—दे० "त्रिदोषज"।

सन्निपातज (सान्निपातिक) अपस्मार—त्रिदोषज असाध्य अपस्मार। दे० 'अपस्मार'।

सन्निपातज ओष्ठप्रकोप—दे० "ओष्ठप्रकोप"।

सन्निपातजन्य अर्श—अर्श का एक भेद। संसर्गज अर्श। सु०। दे० "अर्श"।

सन्निपातजा योनि—योनिरोग।

सन्निपातज्वर—तीनों विषम दोषों (प्रकुपित वात, पित्त, कफ) के संयोग से उत्पन्न हुआ ज्वर, त्रिदोषोल्वण सन्निपात ज्वर, सन्निपात। (फा०) तपे मुरक्कब। (अ०) हुम्मा मुरक्कबा, हुम्माखिल्ती मुरक्कबा लाजिमा। (अं०) टायफाइड स्टेट (Typhoid state)। **वक्तव्य**—सरसाम सन्निपात ज्वर का एक भेद है। यूनानी वैद्यक में स(सि)रसाम मस्तिष्क के शोथ को कहते हैं जिसको अँग्रेजी में सेरीब्राइटिस (Cerebritis) तथा अरबी में वरम दिमाग (सरसाम दिमागी) कहते हैं। यह शोथ मस्तिष्क की झिल्लियों में भी होता है जिसको मस्तिष्कावरणशोथ, अँगरेजी में मेनिन्जाइटिस (Meningitis) तथा अरबी में वरमअग़िशयादिमाग (सरसाम गिशाई) कहते हैं। मस्तिष्क और उसको आवरण करने वाली झिल्ली इन दोनों के शोथ को अँग्रेजी में सेरिब्रोमेनिन्जाइटिस (Cerebromeningitis) और अरबी में सरसाम कहते

है। यूनानी वैद्यक में भी इसका कारण चतुर्दोष तथा ज्वर, प्रलाप और ज्ञानविभ्रम आदि इसके प्रधान लक्षण माने जाते हैं।

सन्निपातज शिरोरोग—सान्निपातिक शिरोरोग। शोथ और अशोथ के विचार से यूनानी में इसके यह दो भेद किये गये हैं—(१) **सरसाम हकीकी** जिसमें मस्तिष्क और मस्तिष्कावरण में शोथ हो जाता है। (२) **सरसाम गैर हकीकी** जिसमें मस्तिष्क और उसकी झिल्लियों में सूजन नहीं होती, अपितु कोष्ठ (आमाशयांत्र) के विकार से दूषित वाष्प मस्तिष्क की ओर आरोहण करने से *सरसामी अवस्था (Typhoid state)* उत्पन्न हो जाती है और शिरःशूल, प्रलाप बुद्धिविभ्रम आदि लक्षण प्रकट हो जाते हैं। इसको डॉक्टरी में फ्रेनाइटिस (Phrenitis) और डेलीरिअम (Delerium) कहते हैं। दोष के विचारानुसार **सरसाम हकीकी** के ये चार भेद होते हैं—(१) **रक्तोल्वण** (अ०) सरसाम दम्वी या गिशाई करानीतुस (शुद्ध फ्रानीतुस= यू० बुद्धिविकार एवं प्रलाप); (अं०) फ्रेनाइटिस (Phrenitis)। (२) **पित्तोल्वण** (अ०) सरसाम सफरावी, करानीतुस (फरानीतुस) खालिस। यह दोनों उष्ण (सरसाम हारं, वर्म हारं) हैं। (३) **कफोल्वण** (अ०) सरसाम बल्गमी, लीसुर्गुस (यू० लीथार्गस) (Lethargus=विस्मृति, निद्रारोग का अन्यतम नाम)। (४) **सौदोल्वण** (अ०) सरसाम सौदावी, लीसाग्रुंस। यह दोनों शीतल (सरसाम बारिद) हैं। सन्निपातज्वर के आयुर्वेदिक भेदों के लिए ज्वर में देखें।

सन्निपातोदर—तीनों दोषों के प्रकोप से होने वाला उदर रोग। सु०। दे० "दूष्युदर"।

सन्निरुद्धगुद—गुदा का संकुचित हो जाना। निरुद्धगुद, रुद्धगुद, गुद सन्निरोध। सु०। (अ०) तजय्युकुल् मक्अद। (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ दि एनस् (रेक्टम्) (Stricture of anus (rectum)।

सन्निरोध—दे० "संकोच"।

सन्यस्त—सन्यासावस्था।

सन्यास—(१) मस्तिष्क का एक विकार। मृत्युपूर्वकालीन गम्भीर संज्ञा-नाश की स्थिति। च०। तामसी निद्रा। सु०। दे० 'तामसी निद्रा'। (२) मस्तिष्क-

गत रक्तस्राव। (फा०) बेहोशी मिस्लमुर्दा। (अ०) सक्ता। (अं०) ॲपोप्लेक्सी (Apoplexy)। **भेद**—वातज, कफज, रक्तज, सौदाजन्य, शोथज, आघात-प्रतीघातजन्य, स्रोतरक्तपूर्णजन्य, इत्यादि। (३) मूर्च्छा।

सन्यासावस्था—सन्यस्त।

सपूयनेत्राभिष्यंद—पीपदार आँख आना। (अ०) रमद सदीदी (रीमी)। (अं०) पुरुलंट ऑफ्थल्मिया (Purulent ophthalmia (Conjunctivitis), ऑफ्थल्मोब्लीनोरिया (Ophthalmoblenorrhœa)।

सपूयप्रतिहारिणीसिराशोथ—प्रतिहारिणीसिराका पूययुक्त शोथ। (अ०) वरम बाबुल्कबिद अफूनी। (अं०) सप्यूरेटिव्ह पायलेफ्लेबायटिस (Suppurative pylephlebitis)।

सपूयमेह—पूययुक्त मूत्र होना। (अ०) बौल सदीदी, बौल मिद्दा। (अ०) पायूरिआ (Pyuria)।

सपूय व्रण—व्रण।

सपूयातिसार—वह अतिसार जिसमें दस्त के साथ पीप आती है। (अ०) इसहाल मिद्दी, इसहालुल्मिद्दा, इसहाल कैही।

सप्ताहक ज्वर—(१) दे० 'दण्डकज्वर'। (२) सप्ताह में आने वाला ज्वर। सात रोज का बुखार। साप्ताहिक ज्वर। (अ०) हुम्मा सुबुअ। (अं०) सेविन-डेज फीवर (Seven day's fever)।

समाग्नि—एक प्रकार की पाचकाग्नि जो समय पर सेवन किये हुए अन्न को अच्छे प्रकार पचाती है और यह दोषों के साम्य (दोषानमिपन्न) से होती है। सु०।

सम्यग्दग्ध—अग्निदग्ध का एक भेद जिसमें घाव नीचा नहीं होता, वर्ण लाडफल के समान होता है, जिसमें नतोन्नता नहीं होती और जो पहले कहे हुए लक्षणों से युक्त होता है। सु०। इस अवस्था (सम्यग्दग्धावस्था) का पाश्चात्य वैद्यक में वर्णित दग्ध की तृतीय अवस्था से कुछ सादृश्य हो सकता है।

सरलान्त्र शोथ—(अ०) वरम मिआऽ मुस्तकीम। (अं०) रेक्टाइटिस (Rectitis)।

सरलान्त्रावरोध—सरलान्त्र की रुकावट। (अ०) इन्सिदाद मुस्तकीम। (अं०) अट्रेसिया ऑफ दि रेक्टम् (Atresia of the rectum)।

सरलान्त्रीयतन्तुजन्य संकोच—(अ०) जीक लीफी। (अं०) फाइब्रस स्ट्रिक्चर (Fibrous Stricture)।

सरसाम—दे० 'सन्निपात ज्वर'।

सरुधिर मूत्रता—मूत्र के साथ खून आना। मूत्र में खून आना। दे० 'रक्तमूत्र'।

सर्पदंशन—साँप का डँसना। साँप काटना। (अ०) लद्गुलहय्यः। स्नेक बाइट (Snake-bite)।

सर्पिमेह—एक प्रकार का वातज प्रमेह जिसमें रोगी (सर्पिमेही) घी (पतले) के समान मूत्र त्याग करता है। सु०। अ० सं०। चरक में इसके बदले मज्जामेह मिलता है। प्रायः ये दोनों समान मालूम पड़ते हैं।

सर्वशरीरगत रोग—सर्वदेहगत (सर्वदेहाश्रित) रोग। यथा-ज्वरातिसार, रक्तपित्त आदि। सार्वदैहिक। शरीरव्यापी।

सर्वसर रोग—सर्वसर। सु०। मुखपाक। वा०; शार्ङ्ग०। **भेद**—(सुश्रुतोक्त) १. वातज (कुलाअ सौदावी), २. पित्तज (कुलाअ सफरावी), ३. कफज (कुलाअ बलगमी), ४. रक्तज (कुलाअ दम्वी), वाग्भट (अ० सं०) और शार्ङ्गधर में इनके अतिरिक्त ५. सन्निपातज (कुलाअ मुरक्कबा) लिखा है। अन्य भेद—फिरङ्गजन्य (कु० आतशकी) और पारदजन्य (कु० सीमाबी) इत्यादि। दे० 'मुखपाक (२)'।

सर्वाङ्गक्षय—सार्वदैहिक क्षय। अथर्व०। (अं०) जेनरल ट्यूबरक्यूलोसिस (General Tuberculosis)।

सर्वांगरोग—एक वातव्याधि जिसमें संपूर्ण शरीर का घात होना है—सर्वाङ्गं सर्वदेहजम्। (चरक)। सर्वाङ्गवात। सर्व शरीर का घात (सर्वाङ्गघात)। (अ०) इस्तिरखाऽ आम्मा, फालिज आम, अबु बलिकया (चेहरे को छोड़कर शेष संपूर्ण शरीर का घात), सकात, अबुब्रलकसया (= चेहरे के सिवाय दोनों तरफ का फालिज। (अं०) डायप्लीजिया (Diplegia), जेनरल पैरालिसिस (General Paralysis)।

सर्वांग कम्पवात—शरीर के समस्त अंगों में होने वाली कँपकँपी।

सर्वांग शोफ (थ)—शोथ। दे० 'शोथ'।

सर्वांगसारी विसर्प—संपूर्णशरीरव्यापी विसर्प। (अं०) इरिसिपेलस मिग्रन्स (Erysipelas migrans)।

सर्षपिका—(१) एक प्रकार की शीतला जिसके दाने सरसों की तरह होते हैं। (२) शुक्रदोष भेद। सु०।

सविष द्रव्यसंयोगजन्य कृत्रिम गर—विषरोग।

सवेदन विंदुमूत्रता—वेदनायुक्त विंदुमूत्रता।

सव्रणभग्न—भग्न का एक भेद जिसमें बाह्यत्वचा तथा भग्न के ऊपर के मांसादि धातु विदीर्ण होकर वायु भीतर पहुँच जाती है।

सव्रण विश्लेष—एक प्रकार का विश्लेष जिसमें त्वचा विदीर्ण होकर संधि का संबन्ध बाह्य वायु के साथ हो जाता है। (मधुकोश)। (अं०) ओपेन डिस्लोकेशन (Open dislocation)।

सव्रणशुक्ल—नेत्रकृष्णभागगतरोग। शुक्र (शुक्ल) का एक भेद जो श्वेत, गंभीरजात, घन और उष्णस्रावी होता है। नेत्रव्रणशुक्ल। (हिं०) आँख का गाढ़ा फूला। (फा०) गुलचश्म, सफेदी चश्म, बयाज चश्म। (अ०) बयाज (जुल्) ऐन, बयाजुल्कर्निया, अतामतुल्कर्निया। (अं०) मेक्युला कॉर्नीई (Macula corneæ)।

सशब्द स्वरयन्त्राक्षेप—स्वरयन्त्र का शब्दयुक्त आक्षेप (ऐंठन)। नरखरा की आवाजदार ऐंठन। स्वरयन्त्र की ऐंठन जिसके साथ आवाज मारी हो गई हो। (अ०) तशन्नुज हंजरा शीखरी। (अं०) लेरिञ्जिस्ट्रिड्युलस (Laryngistridulus)।

सशल्य व्रण—व्रण का एक भेद। शल्ययुक्त व्रण।

सशूलकृमि—पुरीषजकृमिभेद।

सशोथ नेत्रपाक—नेत्रसर्वभागगत रोग, शोथज नेत्रपाक, सशोफपाक, सारे नेत्र की सूजन, संपूर्ण नेत्रगोलक का शोथ। (अ०) इल्तिहाबुल्ऐन। (फा०) वरम चश्म। (अं०) ऑफ्थैल्माइटिस (Ophthalmitis), पन-ऑफ्थैल्माइटिस (Panophthalmitis)।

सशोथान्त्रवृद्धि—वह अन्त्रवृद्धि जिसमें सूजन पैदा हो जाय। (अ०) फत्क मुत्वर्रिम, फत्क वर्मिय्य, फत्क इल्तिहाबी। (अं०) इन्फ्लेम्ड हर्निया (Inflammed hernia)।

सशोफ स्वरयन्त्रशोथ—स्वरयन्त्र का वह शोथ जिसमें सूजन हो।

(अ०) वरम हंजरी तहय्युजी । (अं०) इडीमेटस लेरिंजायटिस (Oedematous Laryngitis) ।

सहजअर्श—अर्श का एक भेद । जन्मज अर्श । च० । सु० । अ० सं० । यूनानी और पाश्चात्य वैद्यक में इसका उल्लेख नहीं मिलता । अँग्रेजी में इसे कान्जेनिटल (Congenital) कह सकते हैं ।

सहज उपदंश—जन्मज उपदंश ।

सहज पांडु—कुलज पाण्डु ।

सहज फिरंग—जन्मज फिरंग । दायशी आतशक । (अ०) आतशक मौलूदी, आतशक, मौरूसी, अफरंजी वरासी । (अं०) कॉन्जेनटल सिफिलस (Congenital syphilis) ।

सहज व्यंग—आदिबलप्रवृत्त और जन्मबलप्रवृत्त अस्वाभाविक वृद्धि वा व्यङ्ग । दे० 'व्यङ्ग (१)' ।

सहज हर्निया (अन्त्रवृद्धि)—जन्मज अन्त्रवृद्धि । (अ०) फत्क खिल्की, फत्क मौलूदी । (अं०) कान्जेनिटल् हर्निया (Congenital hernia) ।

सान्द्रप्रसादमेह—चरकोक्त एक प्रकार का कफज प्रमेह । यह सुश्रुत के सुरामेह के समान मालूम होता है ।

सांद्रमेह—एक प्रकार का कफजप्रमेह जिसमें रोगी गंदला और गाढ़ा मूत्र त्याग करता है । सु० । इसमें मूत्र थोड़ी देर रखने के बाद गाढ़ा हो जाता है । च० ।

साधारण वातश्लेष्मज्वर—दे० 'वातश्लैष्मिकज्वर' ।

साधारण फुफ्फुसप्रदाह—दे० 'श्वसनकज्वर' ।

सार्कोमा—घातकार्बुद का एक भेद जो अस्थ्यावरण, अस्थि, मज्जा इनमें प्रायः उत्पन्न होता है और बचपन तथा जवानी में अधिक दिखाई देता है । **सोम्य**—शनैः शनैः बढ़ने वाले (और कठिन) तथा अत्यंत घातक—तेजी से बढ़ने वाले (और मृदु) ऐसे इसके दो भेद हैं । सार्कोमा हन्वस्थि, प्रगण्डास्थि, प्रकोष्ठास्थि, उर्वस्थि, नासास्थि और लसिकाग्रंथियाँ इनमें अधिक उत्पन्न होता है । घातक मांसार्बुद । (मांसार्बुद, रक्तार्बुद) । (हिं०) अदीढ, राजफोड़ा, मांस की रसौली, मांस की घातक रसौली । (अ०) वरम सरतानी, सल्आ लहमिय्या खबीसा, सरतान, फुत्र । (उ०) दम्वी रसौली । (अं०) सार्कोमा (Sarcoma) ।

सार्वदैहिक क्षय—समस्त शरीर का क्षय (क्षीण होना) । (अ०) इन्सिलालुल् बदन । (अं०) जेनरल अट्रोफी (General atrophy) ।

सार्वदैहिक जलोदर—संपूर्ण शरीर का जलंधर । (उ०) आम जलंधर । (अ०) इस्तिस्काइकुल्ली, इस्तिस्काइ आम्मा । (अं०) जेनरल ड्रॉप्सी (General dropsy) ।

सार्वदैहिक या दूरवर्ती विकृतियाँ—जेनरल और रिमोट लीजन्स (General or remote lesions) ।

सार्वदैहिक रक्तक्षयजन्य पाण्डु—रक्तक्षयजन्य पाण्डुभेद । (अ०) फक्रुद्दम यरकानी आम । (अं०) कॉन्स्टिट्यूशनल हीमोलाइटिक अनीमिया (Constitutional hæmolytic Anæmia) । इसे 'कुलज रक्तक्षयजन्य कामला' भी कहते हैं ।

सार्वदैहिक शोथ—सर्वांगशोफ । दे० 'शोथ' ।

सिकता—अश्मरी के छोटे छोटे कण मूत्र के साथ आना । (फा०) रेग, रेत । (अ०) रमल । (अं०) ग्रेवल (Gravel), सैण्ड (Sand) ।

सिकतामेह—(१) एक अश्मरी विकार जिसमें मूत्र में लाल रंग का तलछट जम जाता है । (अं०) ब्रिकडस्ट डिपॉजिट (Brickdust deposit) । (२) एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमें रोगी पीड़ा के साथ छोटी-छोटी बालुकायुक्त मूत्र का त्याग करता है । सु० । इसमें मूत्र त्यागते समय पथरी के छोटे-छोटे कण निकल आते हैं । इसको अंग्रेजी में पासिंग ऑफ ग्रेवल (Passing of gravel) कहते हैं ।

सिध्म—एक प्रकार का कुष्ठ (त्वग्) रोग, सिध्मपुष्पिका । सु० । च० । (हिं०) सेहुआँ, सफेद छीप । (अ०) बहक अब्यज, नुखालिया बैजा । (अं०) पिटिरिआसिस वर्सिकलर (Pityriasis versicolor), पिटिरिआसिस ॲल्बा (Pityriasis alba) । दे० 'नीलिका' । **वक्तव्य**—लाल छीप के पर्याय—(उ०) सुर्ख छीप । (अ०) नुखालिया हमरा, बहक अह्मर, नुखालिया शॉनलीबी । (अं०) पिटिरिआसिस रुब्रा (Pityriasis rubra), अकोरिओन शॉनलीनिआई (Achorion shonleinii) ।

सिरसाम—सरसाम । दे० 'सन्निपात ज्वर' ।

सिराकुटिलता—पिंडली की सिराओं (रगों) का फूलकर उभर जाना। फूली हुई (गँठीली) सिरायें (रगें)। (अ०) दुवाली। (अं०) वेरीकोज वेन्स (Varicose veins), वेरिकोसिटी ऑफ वेन्स (Varicosity of veins)।

सिरागत अवरोध—(अ०) सुद्दए दम्विया वरीदी। (अं०) वेनस थ्रॉम्बोसिस (Venous thrombosis)।

सिरागत अश्मरी—सिरा की पथरी। (अ०) हसातुल् अव्रिदा। (अं०) फ्लेबोलिथ (Phlebolith)।

सिरागत शल्य—सिरा में शल्य होना। सिरा में शल्य होने से (रक्त-प्रवाह रुक जाने से) सिरा का फूलना, सिरा में वेदना तथा शोथ होता है। सु०।

सिराज ग्रन्थि—ग्रन्थिरोग का एक भेद। सु०। यह विकृति रक्तवाहिनियों के एक भाग का पूर्ण विस्फार या अपूर्ण विस्फार होने से होती है। (उ०) शिरयानी रसौली। (अ०) अबुरस्मा, इनोरस्मा, इनोरज्मा, उम्मुद्दम। (अं०) अन्युरिज्म (Aneurism), अन्युरिज्मा (Aneurisma)। **भेद**—(आकृति के विचार से) १. पूर्णविस्फारजन्य (Fusiform) और २. अपूर्ण विस्फार-जन्य (Sacculated)। (गति के विचार से) १. स्फुरणयुक्त या स्फुरणशील (Pulsating or Thrilling)। च०। २. निस्फुर (Consolidated) इन्दु। पाश्चात्यवैद्यक में सिराज ग्रंथि के तीन भेद किये हैं—१. धमनिज ग्रन्थि (शिरयानी रसौली), २. धमनिसिराज (Arteriovenous) ग्रन्थि और ३. आघातजन्य (Traumatic) ग्रन्थि। सिराज ग्रन्थि में गँठीली सिराओं (Varicose veins) का भी समावेश करना चाहिये।

सिराजन्य वृषणवृद्धि—वृषणकोषों की (अण्डरज्जु के साथ होने वाली) सिराओं (रगों) का फूलकर मोटा हो जाना, वृषणों की गंठीली (फूली हुई) सिराएँ, सिरावृद्धि। (अं०) दवाली सफत, कर्व दवाली, कीला दवालिय्या, उद्रए दवालिया। (अं०) वेरिकोसील (Varicocele), सिर्सोसील (Cirsocele)। दे० 'वृषणकोषगत सिराकुटिलता'।

सिराज पिड़का—नेत्रश्वेत-भागगत रोग। नयनीय कृष्णभाग के समीपवर्ती शुक्ल भाग में होने वाली सिराओं से आच्छन्न (आवृत) श्वेत वर्ण की पिड़काएँ। यह सन्निपातज, साध्य एवं छेद्य हैं।

सिराजवाहिनीगत रक्तस्कन्दन—सिराओं में रक्त जम जाने से उत्पन्न

हुआ अवरोध। (अ०) सुद्दए दम्विया वरीदी। (अं०) वेनस थ्रॉम्बोसिस (Venous thrombosis)।

सिराजाल—नेत्र के श्वेत भाग में होने वाला (सिरा) जालसंज्ञक रोग जो जाल के समान आभा वाला, कठिन सिराओं से युक्त, महत्ता से अन्वित, कुछ लालिमा वाला और आच्छन्न किये हुए शिराजाल पर होता है। आंख के पर्दा पर रगों का जाल हो जाना। (हिं०) जाला। (अ०) सबल (गुब्बारी पर्दा), वरम कर्निया उरूकिया। (अं०) पैनस (Panus), वेस्क्यूलर केरेटायटिस (Vascular keratitis)। **वक्तव्य**—यूनानी वैद्यक में इसके यह तीन भेद हैं—१ आर्द्र (रतब) २ शुष्क (याबिस) और ३ दृढ (मुस्तहकम)।

सिराप्रहर्ष—नेत्रसर्वभागगत रोग। सिरोत्पात का उग्र रूप जिसमें नेत्र से रक्त स्रावित होता है। वा०। मा० नि०।

सिराविकृति—सिरा की खराबी। सिराकुटिलता। (अ०) दवाली, अव्रिदा दबालिय्या। (अं०) वैरिक्स (Varix), वेरिकोसिटी (Varicosity)।

सिराविस्तृति—(अं०) फ्लेबक्टसिस (Phlebectasis)।

सिरावृद्धि—सिराजन्य वृषणवृद्धि।

सिराशूल—सिरागत शूल।

सिराशोथ—सिरागत सूजन। (अ०) इल्तिहाबुल् वरीद, वरम वरीद। (अं०) फ्लेबायटिस (Phlebitis)।

सिरोत्पात—नेत्रसर्वभागगत रोग। इसमें नेत्र की सिराएँ ताम्रवर्ण हो जाती हैं। वा०।

सीस(क)विष—सीसविषमयता। (अं०) लेड पॉइजनिंग (Lead poisoning)।

सीसक (नाग) विषजन्य अंगघात—सीसे के विष से होने वाला अङ्गघात। (अ०) शलल रसासी, इस्तिरखाऽरसासी (सुर्बी), फालिज रसासी। (अं०) लेड पाल्सी (पॅरालिसिस) Lead palsy (Paralysis)।

सुगन्धक्रिमि—आभ्यन्तर कृमिरोग का एक भेद।

सुन्न—सुप्त।

सुन्नता—सुन्न हो जाना। शरीर का सुन्न पड़ना। किसी अङ्ग का सुन्न या संवेदनाविरहित हो जाना। स्पर्शज्ञान की कमी। (सं०) स्वाप, सुप्तता,

प्रसुप्तता (प्ति), स्पर्शाज्ञान, स्पर्शहानि, स्पर्शाज्ञता, त्वक्स्वाप, स्पर्शज्ञानाभाव। (उ०) सुन्नबहरी। (अ०) खद्र, फक्दुल्एहसास, कलालुल्हिस्स। (अं०) लोकल अनस्थेसिया (Local anæsthesia), नम्नेस (Numbness)।

सुप्त—सुन्न।

सुराबीजजन्य (कृत) त्वक्शोथ—(अ०) वरम जिल्दी खमीरी, इल्तिहाब जिल्दी फुत्री। (अं०) ब्लास्टोमायकोटिक डर्मटायटिस (Blastomycotic dermatitis)।

सुरामेह—एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमें रोगी (सुरामेही) सुरा के समान मूत्र त्याग करता है। सु०। चरक में इसके बदले सान्द्रप्रसादमेह मिलता है। प्रायः ये दोनों समान मालूम होते हैं।

सुषुम्नाक्षय—सुषुम्ना का क्षय। (अ०) हजालुन्नुखाअ, सिल्ल जहरी। (अं०) टेबीज डॉर्सेलिस (Tabes dorsalis)।

सुषुम्नागत व्याधि—सुषुम्नानलिका रोग। सुषुम्ना के रोग। (उ०) हराम मग्ज की बीमारियाँ। (अ०) मर्ज मुख्खुन्नुखाअ, मर्ज हराम मग्ज, अमराजुन्नुखाअ, (अमराज नुखाअ)। (अं०) डिजीजेज ऑफ दि स्पाइनल कॉर्ड (Diseases of the spinal cord), सिरिंजोमायलिया (Syringomyelia)।

सुषुम्नार्बुद, मज्जार्बुद—(अ०) सल्आ नुखाइय्या। (अं०) माइलोमा (Myeloma)।

सुषुम्नावरण ग्रन्थि—सुषुम्नावरण की ग्रन्थियाँ। (अं०) मेनिंजोसील (Meningocele)।

सुषुम्नावरण शोथ—सुषुम्नावरण की सूजन। (उ०) हराममग्ज के पर्दों का वरम। (अ०) वरम अग्शिया नुखाअ। (अं०) स्पाइनल मेनिन्जाइटिस (Spinal meningitis)। **भेद**—(१) तीव्र। (अ०) वरम हाद् अग्शिया नुखाअ। (अं०) ॲक्यूट स्पाइनल मेनिंजायटिस (Acute spinal meningitis)। (२) चिरज-(अ०) वरम मुज्मिन नुखाअ। (अं०) क्रॉनिक स्पाइनल मेनिन्जाइटिस (Chronic spinal meningitis)।

सुषुम्नाशोथ—सुषुम्ना का शोथ। (फा०) सोजिश मुख। (अ०) वरम हराममग्ज, वरम नुखाअ। (अं०) माइलाइटिस (Myelitis)। **भेद**—एकदे-

शोत्थ शोथ। (अ०) वरम नुखाअ मुकामी। (अं०) लोकलाइज माइलाइटिस (Localised myelitis)।

सूचिवक्त्रा—योनिरोग विशेष।

सूजाक—दे० 'औपसर्गिक पूयमेह'।

सूतिकाक्षेप—प्रसूतजापतानक, गर्भाक्षेपक। (अ०) तशन्नुज (-जुन्न) नफसाऽ, तशन्नुजजच्चा। (अं०) प्योरपरल एक्लम्प्सिया (Puerperal eclampsia)। दे० 'गर्भाक्षेपक'।

सूतिका ज्वर—प्रसूति (प्रसूत) ज्वर, प्रसूतयोनिदोषजज्वर (संप्राप्ति-दर्शक नाम), परसूत का बुखार, परसूत। (अ०) हुम्मा जच्चगी, हुम्मा निफासिय्या। (अं०) प्योरपरल सेप्सिस (इन्फेक्शन, टॉक्सीमिया, सेप्टिसीमिया, फीवर) Puerperal sepsis, (Infection, Toxæmia, Septicæmia, Fever), सर्जिकल फीवर ऑफ चाइल्ड-बेड (Surgical fever of child-bed, etc.)।

सूतिकारोग—सूतिका-कालज रोग। सूतिका व्याधि। (अ०) अमराज जच्चगी। (अं०) प्योरपरल पीरिअड डिजीजेज (Puerperal period diseases)। **भेद**—(१) गर्भावस्था (प्रसवपूर्वकालीन) रोग, (२) प्रसवारम्भ से प्रसव-समाप्ति तक के रोग और (३) प्रसूति के रोग-सूतिका रोग-ज्वर एवं अतिसारादि। इसके भेद—कष्टप्रसूति, प्रसवोत्तरवेदना (मक्खेल), सूतिकाक्षेपक, मूत्रावरोध, कटीरसंताप, श्वेतपाद, फुप्फुस की सिराओं में रक्ताबुंद का रुकना, सूतिका विभ्रम; सूतिका ज्वर और सूतिकोन्माद।

सूतिका विभ्रम—(अं०) प्योरपरल मेलन्कोलिया (Puerperal melancholia)।

सूतिकोन्माद—(अ०) प्योरपरल इन्सेनिटी (Puerperal insanity)।

सूर्यातपजन्य ज्वर—आतप ज्वर। (उ०) आफ्ताब का बुखार। (अ०) हुम्मा शाम्सय्या।

सूर्यातपदग्धावस्था—उष्णवातातपदग्ध, उष्णवातातपदग्धावस्था, आतपमूर्च्छा। दे० 'उष्णवातातपदग्ध'।

सूर्यावर्त, सूर्यापवर्त—एक प्रकार का शिरोरोग जिसमें पीड़ा सूर्योदय

से आरम्भ होकर (उसके साथ-साथ ही) धीरे-धीरे बढ़ती हुई नेत्र और भ्रुवों को प्राप्त कर लेती है तथा जो सूर्य के साथ-साथ ही प्रगाढ़ होकर बढ़ती चली जाती है और जो मध्याह्न के बाद सूर्य के साथ-साथ ही निवृत्त होती चली जाती है। यह सर्वदोषज एवं कष्टसाध्य होती है। मा० नि०। (अ०) शकीका। **भेद**—सूर्यावर्तविपर्यय। **वक्तव्य**—सारे सिर में होने वाले दर्द को अरबी में 'शकीका आम' कहते हैं। यह 'सुदाअ खोजा व बैजा' से भिन्न है।

सोमरोग—मूत्रातिसार। सोम के क्षय से होने वाला स्त्रियों का मूत्रातिसार रोग। मा०।

सौगन्धिक—एक प्रकार का नपुंसक जो दुर्गन्धित योनि में उत्पन्न होता है। यह योनि और मेढ्र (शैफ) की गंध सूँघने पर (स्त्री के साथ मैथुन करने के लिए) बल को प्राप्त करता है। सु०। डल्हण ने इसका अपर पर्याय 'नासायोनि' लिखा है।

सौत्रिक तन्त्वर्बुद—(अ०) सल्मा इल्हाकिय्या। (अं०) कनेक्टिव टिशू ट्यूमर (Connective tissue tumour)।

सौम्यार्बुद—दे० 'अनात्ययि (क) अर्बुद'।

सौरस क्रिमि—'रक्तज कृमिभेद'। दे० 'क्रिमि'।

सौसुराद क्रिमि—पुरीषज क्रिमि भेद। दे० 'क्रिमि'।

स्कंदग्रहगृहीत—ग्रहजुष्ट बालरोग विशेष। सु०। मा० नि०।

स्कंदापस्मारगृहीत (जुष्ट)—ग्रहजुष्टबालरोग विशेष, स्कदापस्मारी।

स्कंधशूल—कंधे का दर्द। (फा०) दर्द शाना। (अ०) अलमुल्कतिफ। ओमोडिनिआ (Omodynia), स्केपुलोडिनिआ (Scapulodynia)।

स्कर्वी—पाश्चात्य वैद्यक में रक्तपित्त का एक रोग जिसमें मसूढ़े शोथयुक्त और पूययुक्त हो जाते हैं। शरीर दूषित हो जाता है। सामान्य आघात (तहरीक) से रक्त जारी हो जाता है। (अ०) दाउल् हफर, दाउल् कल्ह, मर्जइस्कर्बूत, सकरबूत, लिस्सा दामिय्या। (अं०) स्कर्वी (Scurvy), स्कॉर्ब्यूटस (Scorbutus)।

स्तनकण्डू—स्तन की खुजली। (अ०) हिक्कतुस्सदी। (अं०) प्रूराइटिस ऑफ मैमा (Pruritis of mamma)।

स्तनकोप, स्तनाग्रप्रकोप—चूचकों (चूची-स्तनाग्र) की सूजन,

स्तनाग्रप्रकोप, स्तनरोग। (मधुकोश)। (उ०) सरेपिस्तान का वरम। (अ०) वरम हुलमा, वरम पिस्तान, इल्तिहाबुस्सदी। (अं०) मस्टाइटिस (Mastitis), इन्फ्लमेशन ऑफ दि ब्रेस्ट्स (Inflammation of the breasts) (Mmma)।

स्तनक्षत—स्तन का कुचला जाना। (अ०) रज्जुस्सदी। (अं०) कन्ट्यूज़न ऑफ दि मैमरी ग्लैन्ड (Contusion of the mammary gland)।

स्तनघात—छातियों का ढीला हो चलना। (अ०) इस्तिरखाउस्सदी। (अ०) रिलैक्सेशन ऑफ मैमा (Relaxation of mamma)।

स्तनदाह—दे० 'स्तनकोप'।

स्तनरोग—(१) स्तनविद्रधि। सु०। (२) स्तनकोप (मधुकोश०)। इसे क्षतज विद्रधि भी कह सकते हैं। **भेद**—**तीव्र स्तनप्रकोप**—(अ०) वरम हुलमा शदीद। (अं०) अक्रोमस्टायटिस (Acromastitis)। (३) स्तन के रोग। स्तनगत व्याधि। (उ०) पिस्तान की बीमारियाँ। (अ०) अमराजुस्सदयैन। (अं०) डिजीजेज ऑफ दि ब्रेस्ट्स (Diseases of the breasts)। **भेद**—(आयुर्वेदीय) वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक और आगन्तुज। इनके लक्षण रक्तविद्रधि को छोड़कर वाह्य विद्रधिवत् होते हैं। (पाश्चात्य) अतिदुग्धस्राव, अल्पक्षीरता, चूचकों का चपटा होना, स्तनाग्रों पर बिवाई फटना। (स्तनाग्रस्फटन), स्तनाग्रक्षत, स्तनकण्डू, स्तनार्बुद, स्तनविद्रधि, स्तनव्रण, स्तनवृद्धि, स्तनावृद्धि, स्तनशूल, स्तनघात इत्यादि।

स्तनविद्रधि—स्तनरोग (सु०)। स्तन का फोड़ा। (अ०) दुबैलतुस्सदी। (अं०) मैमरी अॅब्सेस (Mammary abscess)।

स्तनवृद्धि—स्तन का बड़ा हो जाना। (अ०) इजमुस्सदी। (अं०) हाइपरट्रॉफी ऑफ दि मैमा (Hypertrophy of the mamma)।

स्तनशूल—छाती का दर्द। (अ०) अलमुस्सदी। (अं०) मॅस्टॅल्जिया (Mastalgia), मस्टोडीनिया (Mastodynia)।

स्तनस्तन्यदोष—स्तन की खराबी या दोष।

स्तनाग्रक्षत—स्तनाग्र (चूचक) का जख्मी होना। (अ०) जराहत हुलमा। (अं०) सोर निपल (Sore Nipple)। दे० 'स्तनकोप'।

स्तनाग्रस्फटन—स्तनाओं पर बिवाई फटना और दुखना। (अं०) क्रैक्ड एण्ड सोर निपल्ज (Cracked and sore nipples)।

स्तनापनयन—स्तनत्याग। अ० सं०। (अं०) वीनिंग (Weaning)।

स्तनार्बुद—दुग्धार्बुद। (अं०) ॲब्सेस ऑफ दि ब्रेस्ट (Abscess of the breast); गलक्टोसील (Galactocele)।

स्तनावृद्धि—स्तन का छोटा हो जाना। (अ०) सिग्रुस्सदी। (अं०) ॲट्रोफी ऑफ दि मैमा (Atrophy of the mamma)।

स्तन्यज्वर—दूध का बुखार। स्तन्योत्थ ज्वर। (अं०) मिल्क फीवर (Milk fever), फीवर ऑफ लक्टेशन (Fever of lactation)।

स्तन्यतारल्य—स्तनों में दूध का पतला हो जाना। (अ०) रिक्क़त लबन। (अं०) थिनिंग ऑफ मिल्क (Thinuing of milk)।

स्तन्यदुष्टि, स्तन्यदूषण, स्तन्यदोष—छाती में दूध का खराब हो जाना। (अ०) फ़साद लबन। (अं०) डिजीज्ड मिल्क (Diseased milk), डिकम्पोजिशन ऑफ मिल्क (Decomposition of milk)। **भेद**—(१) वातज (लक्षण–विरसता, फेनसंघात एवं रूक्षता), (२) पित्तज (विवर्णता और दुर्गंधता) और (३) कफज (स्निग्धता, पिच्छिलता और गुरुता)।

स्तन्यनाश—स्तन में दूध न बनना।

स्तन्यसांद्रता—स्तनों में दूध गाढ़ा हो जाना। (अ०) गिल्जुल्लबन। (अं०) विसिडिटी ऑफ मिल्क (Viscidity of milk)।

स्तन्यार्बुद—दूध की नालियों की रसौली। (अ०) सल्आ लब्निय्या। (अं०) लैक्टिअल ट्यूमर (Lacteal tumour)।

स्तन्यस्तंभ—क्षीरावरोध। (अ०) इह्तिबासुल्लबन, जुमूदुल्लबन, तजब्बुनुल्लबन। (अं०) रिटेंशन ऑफ मिल्क (Retention of milk), फ्रीजिंग ऑफ मिल्क (Freezing of milk)।

स्तन्याल्पता—अल्पक्षीरता। क्षीराल्पता। **स्तब्ध**—(१) कठिन वा सुन्न। (२) निर्वातित।

स्तब्धता—मर्माघात या क्षत से उत्पन्न हुई तीव्र पीड़ा के सार्वदैहिक प्रभाव से प्रत्यावर्तन क्रिया द्वारा हृदय के कार्य में कुछ अवरोध उत्पन्न होकर मनुष्य

स्तब्ध और मूर्च्छित हो जाता है। इस अवस्था को 'स्तब्धता' कहते हैं। इसमें शरीर के महत्व के कार्य (Vital functions) उत्तरोत्तर क्षीण होते जाते हैं और अन्त में मृत्यु होती है। निर्घात। (अ०) सक्ता जबिय्या, सग्मा, शाक। (अं०) शॉक (Shock), ट्रॉमैटिक शॉक (Traumatic shock)। **भेद**—(पाश्चात्य) आघातजन्य (Traumatic), क्षतजन्य (Wound), शस्त्रकर्मजन्य (Surgical), विषजन्य (Toxic), वैद्युतिक या विद्युत्संयोगजन्य (Electric) इत्यादि।

स्तब्धताजन्यमृत्यु—मर्माघातजन्य मृत्यु। सबल आघात से गाढ़ी स्तब्धता।

स्तम्भ—(१) शरीर का अकड़ जाना, जाड्य, निस्तब्धता, निश्चिलता, हक्का-बक्का और बेखबर रह जाना, तीव्र सर्वांगग्रह (सर्व शरीर में सख्त जकड़न)। (अ०) आखिजा (अकस्मात् पकड़ने वाला), मुद्दरिका, जुमूद, शुखूस (आँखों का पथरा जाना=स्तब्धनेत्र, निश्चलनेत्रता, विष्टब्धाक्ष), कातूखुस (यूनानी कॅटालेप्सी का अरबीकृत=पकड़ना)। (फा०) हवास बाफ्तगी, बेखुदी। (अं०) कॅटालेप्सी (Catalepsy), एक्सटेसी (Eestasy)। (२) एक वातव्याधि। स्तंभन (स्तंभ)। जकड़न। अकडाव। (अं०) स्टिफनेस (Stiffness)।

स्त्रीचेष्टिता—क्लीब भेद। षण्ड। जनाना।

स्त्रीपुंसलिंगी—क्लीब भेद। द्विरेत। च०। द्विलिङ्गी।

स्त्रीप्रसविनि—कन्याप्रसविनि। स्त्रीप्रसूति।

स्त्रीबीजवाहिनीगत (-न्यस्थ) विद्रधि—स्त्रीबीजवाहिनी (नगानिग नाली) की विद्रधि (पीप पड़ जाना)। (अ०) तक्य्युह नगानिग। (अं०) पायो सर्प्लिक्स (Pyosaplinx)।

स्त्रीरोग—स्त्रियों को होने वाले रोग। (अ०) अमराज निसवाँ (मस्तूरात)।

स्थानापवृत्तायोनि—योनिरोग विशेष। च०। प्रस्रंसिनी। सु०। योनिपरिसर्पण। योनिभ्रंश।

स्थानिकशोथ—शोथ भेद। दे० 'शोथ'।

स्थायी संकोच—(अं०) कॉन्ट्रैक्चर (Contracture)।

स्थावरविष—मूलाद्यात्मक अकृत्रिम विष। विष रोग।

स्थूलारुष्क—एक प्रकार का क्षुद्र कुष्ठ।

स्नायुककृमि—गोल, तन्तु सदृश, श्वेतवर्ण और मृदु कृमि विशेष। सु० । शार्ङ्ग० । भा० । यो० र० । (हिं०) नारू, नारुवा, नाहरू, नहरुवा। (फा०) रिश्ता। (अ०) इर्क मदनी। (अं०) गिनी वर्म (Guinea worm)। (ले०) फाइलिरिआ मीडो (Filiria Medæ), ड्राकंक्यूलस मेडिनेन्सिस (Dracunculus medinensis)।

स्नाय्वर्म—नेत्रश्वेतभागगत अर्म रोग का एक भेद।

स्नायुक कृमिरोग—स्नायुक कृमि के उपसर्ग से होने वाला रोग। (अं०) गिनीवर्म डिजीज (Guineaworm disease), ड्रॉकंटिआसिस (Dracontiasis)।

स्निग्धदग्ध—उष्ण तैल, घृत जलादि से जला हुआ, स्नेहदग्ध। (अ०) सल्क, हर्कल्माऽ, हर्कुल्माइस्सखिन। (अं०) स्कैं(का)ल्ड (Scald)।

स्पंदन—फड़कना, फड़फड़ाना। (अ०) इख्तिलाज। (अं०) ट्रेंम्बिलग (Trembling), बीटिंग (Beating)।

स्पर्शद्वेष—स्पर्श सहन न होना। स्पर्शासहिष्णुता। दे० 'स्पर्शासहिष्णुता'।

स्पर्शनासहिष्णुता—पीडनाक्षमता। किसी अंग का सामान्य कारण से वेदनायुक्त (दर्दनाक) होना। दे० 'स्पर्शासहिष्णुता'।

स्पर्शहानि—(१) स्पर्शशक्ति का न रहना (नष्ट हो जाना), प्रसुप्तता, शरीर का सुन्न पड़ना, सुप्तता। दे० 'सुन्नता'। (२) शूकदोष। सु०।

स्पर्शसहिष्णुता—स्पर्श सहन न होना।

स्पर्शाज्ञान—स्पर्शहानि। दे० "सुन्नता"।

स्पर्शासहिष्णुता—स्पर्श सहन न होना। स्पर्शनाक्षमता। पीड़नाक्षमता। स्पर्शाक्षमता। स्पर्शनासहिष्णुता। स्पर्शासहत्व। पीड़नासहिष्णुता। (अ०) जकावत, मजाजत, जोकावतुल् एह्सास (जकावत एहसास), जियादतुल् एह्सास, (स्पर्श को तेजी से जान जाना)। (अं०) हाइपरअस्थेसिया (Hyperæsthesia), टेंडरनेस (Tenderness)।

स्पर्शोद्विग्न—तीव्र स्पर्शासहिष्णुता।

स्फीतकृमि—ब्रध्नाकार कृमि। कद्दूदाना। दे० 'ब्रध्नाकार क्रिमि'।

स्फुटित भग्न—काण्डभग्न का एक भेद जो धान्य के शूकों से भरा

हुआ-सा पीडायुक्त और खूब फूटा हुआ होता है। सु०। अंग्रेजी में इसे भी 'फिशर्ड फ्राक्चर' कहते हैं। दे० 'पाटित'।

स्मरोन्माद—वह उन्माद जो पुरुषों एवं स्त्रियों को दयिता की प्राप्ति न होने पर वा शुक्र की विकृति होने पर अथवा जननेन्द्रिय के दोष से वा वायु की विगुणता के कारण होता है।

स्मृतिभ्रष्टता—चुल्लिकाग्रन्थि के विकार से होने वाला एक रोग जिसमें स्मृति नष्ट हो जाती है। दे० 'वामनत्व'।

स्फुरणयुक्त ग्रन्थि—वह सिराज ग्रन्थि जिसमें स्फुरण प्रतीत होता है। (अं०) पल्सेटिंग या थ्रिलिंग (Pulsating or Thrilling aneurism)।

स्फुरण वेदना—स्फुरणजन्य वेदना। (अ०) वजा जर्बाई। (अं०) थ्रॉबिंग पेन (Throbbing pain)।

स्फुरमूत्र—मूत्र में फॉस्फोरस (भास्वर या स्फुर) आना। (अ०) तफस्फरुल् बौल। (अं०) फॉस्फेट्यूरिया (Phosphaturia)। **वक्तव्य**—यह आयुर्वेदोक्त बहुधा सुरामेह होगा।

स्रावी अर्श—दे० 'परिस्रावी अर्श'।

स्रोतरक्तपूर्णजन्य सन्यास—(अ०) सकता इह्तिकानी, सकता इह्तिकानिय्या, सकता इम्तिलाइया। (अ०) कन्जेश्टिव्ह अपोप्लेक्सी (Congestive apoplexy)।

स्रोतसीय (रक्तवाहिनीगत) रोग—रक्तवाहिनी में होने वाले रोग। भेद—(वाहिन्यवरोध) रक्तवाहिनीगत अवरोध, हृदयस्थ वाहिन्यवरोध, सिरागत अवरोध, महाधमनी विस्तृति, महाधमनी ग्रन्थि, धमनि(नी)ज ग्रन्थि, सिराज ग्रंथि, धमन्यबुंद (रक्ताबुंद), धमनी काठिन्य आदि।

स्रोतसीय अन्तःशल्यता—वाहिनीगत अन्तःशल्यता, वाहिन्यवरोध। (उ०) रगों के सुद्दे। (अ०) इन्सिदाद उरूकिय्या, सुद्दए उरूकिय्या। (अं०) एम्बोलिज्म (Embolism)।

स्वप्नदोष—स्वप्नप्रमेह। स्वप्न में शुक्रस्खलित होना। (उ०) ख्वाब में सैलान आना। (अ०) एह्तेलाम्, कस्रतें एह्तेलाम, सैलाने मन्वी लैली। (अं०) पाल्यूशन (Pollution), नॉकटर्नल एमिशन (Nocturnal emission)।

स्वरक्षय—दे० 'स्वरभेद'।

स्वरघ्न—स्वरनाशक गलगत रोग भेद। एक कण्ठगतरोग जिसमें (गलगत शोथ) के कारण मनुष्य अन्धकार-सा देखता है वा मूर्च्छित-सा होता है तथा उसका स्वर टूटा-फूटा तथा वह शुष्क एवं भोजन को भीतर करने की शक्ति से रहित होता है। यह रोग वातिक स्थानों के कफ से आवृत हो जाने से होता है तथा इसमें वायु की प्रधानता होती है। (उ०) आवाज या गला बैठना। (अ०) बुह्हतुस्सौत, बुहूहतुस्सौत, फक्दुस्सौत, बुत्लानुस्सौत। (अं०) अफोनिया (Aphonia)। दे० 'स्वरभेद'।

स्वकृत रोग—जन्मोत्तर रोग। दे० 'जन्मोत्तर'।

स्वप्नमैथुन—स्वप्न में मैथुन का अनुभव करना। सु०। स्वप्नदोष। दे० 'स्वप्नदोष'।

स्वभावबलप्रवृत्त—क्षुत्पिपासाजरामृत्युनिद्राप्रभृति स्वभावबल के कारण या प्रकृतिशक्ति के कारण होने वाले विकार (रोग)। स्वाभाविक रोग। स्वाभाविक रोगों की चिकित्सा असंभव होने के कारण उनका निर्देश आयुर्वेद में रोगों में नहीं किया गया है। जहाँ इनका उल्लेख रोगों में किया गया है वहाँ उससे अकालकृत स्वाभाविक रोग समझना चाहिये। वे भी दो प्रकार के होते हैं—कालकृत और अकालकृत।

स्वरपरिवर्तन—आवाज बदल जाना।

स्वरभंग—दे० 'स्वरभेद'।

स्वरभेद—स्वरनाशक रोग विशेष, आवाज या गला बैठना, स्वरामय, स्वरक्षय, वैस्वर्य, विस्वरता, स्वरभंग। (आवाज मरना)। (अ०) फसादुस्सौत, खुशूनतुस्सौत। (अं०) होर्सनेस ऑफ वाइस (Hoarseness of voice)। **भेद**—वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक, क्षयज और मेदोज।

स्वरयन्त्ररोग—स्वरयन्त्र के रोग। (उ०) नरखरे की बीमारियाँ। (अ०) अम्राज हन्जरा। (अं०) डिजीजेज ऑफ दि लेरिक्स (Diseases of the larynx)।

स्वरयन्त्रव्रण—स्वरयन्त्रस्थ व्रण। (उ०) नरखरे का जख्म। (अ०) कुरूह हंजरा। (अं०) अल्सर ऑफ दि लेरिक्स (Ulcer of the larynx)।

स्वरयन्त्रशोथ—स्वरयन्त्र की सूजन। (उ०) नरखरे की सूजन या सोजिश। (अ०) इल्तिहाबुल् हन्जरा (इल्तिहाब हन्जरा), वरम हन्जरा, बुह् हत्कसीन (प्राचीन)। (अं०) इन्फ्लमेशन ऑफ दि लेरिक्स (Inflammation of the Larynx), लेरिंजायटिस (Laryngitis)।

स्वरयन्त्राक्षेप—स्वरयन्त्र का आक्षेप। (उ०) नरखरा की ऐंठन। (अ० तश्नुज हन्जरा। (अं०) लेरिंजिस्मस (Laryngismus)।

स्वराघात—एक रोग जिसमें रोगी आवाज निकालने में असमर्थ होता है। (अ०) फक्दान सौत। (अं०) अफीमिया (Aphemia)।

स्वरामय—दे० 'स्वरभेद'।

स्वरोपघात—स्वरभंग। दे० 'स्वरभेद'।

स्वस्तिकघात—एक प्रकार का घात। व्यत्यस्त घात। (अ०) फालिज सलीबी, इस्तरखाऽमुकाबिल। (अं०) क्रॉस्ड पॅरालिसिस (Crossed paralysis)।

स्वस्थक्षत—निरोग घाव। (अ०) जराहत सहीहा (सलीमा)। (अं०) हेल्दी वूंड (*Healthy wound*)।

स्वांतविषता—मलावरोध आदि के कारण आँत में मल के सड़ने से उत्पन्न हुए विष का रक्त में मिलने से उत्पन्न हुई विषमयावस्था। (अं०) ऑटो-इन्टॉक्सिकेशन (Auto-intoxication)।

स्वाप—दे० 'सुन्नता'।

स्वापकुष्ठ—सुन्नता का कोढ़। (अ०) जुजाम खद्री, जुजाम मुखद्दिर। (अं०) अनस्थेटिक लेप्रसी (Anæsthetic leprcsy)।

स्वाभाविक निद्रा—कालस्वभावप्रभवा निद्रा। निद्रा। नींद। (Natural Sleep)। दे० 'निद्रा'।

स्वाभाविक व्याधि—स्वभाव से होने वाला रोग, जैसे—स्वाभाविकास्तु क्षुत्पिपासाजरामृत्युनिद्रा प्रभृतयः।

स्वेदज कृमि—बाह्यमलज क्रिमियों का एक भेद।

स्वेददौर्गन्ध्य—दे० "दुर्गन्धित स्वेद"।

स्वेदपरिवर्तन—स्वेद बदलना।

स्वेदबहुल ज्वर—वह दुष्ट (घातक) ज्वर जिसके साथ अधिकता से

पसीना आये। स्वेद ज्वर। (फा०) तपे पसीना। (अ०) हुम्मा अर्किय्या खबीसा। (अं०) डायफोरेटिक पर्निशस फीवर (Diaphoretic pernicious fever)।

स्वेदबाहुल्य—अत्यन्त स्वेद आना। स्वेदाभि(ति)प्रवर्तन। स्वेदाधिकता। दे० 'अतिस्वेद'।

स्वेदाल्पता—स्वेद की कमी। (अ०) किल्लतुल् अरक। (अं०) अनहाइड्रोसिस (Anhidrosis)।

स्वेदावरोध—पसीना बन्द हो जाना।

(ह)

हताधिमन्थ—एक प्रकार का अधिमन्थ रोग। उपेक्षा करने से जब वाताधिमन्थ नामक रोग नेत्र को एकदम शुष्क कर देता है तब उग्र निस्तोद आदि पीड़ाओं से युक्त वह हताधिमन्थ नामक रोग कहलाता है। मा० नि०।

हनुग्रह—अपतानक का एक प्रधान और पूर्व लक्षण। इसमें पहले-पहल मुख की पेशियों का संकोच होता है, जिससे रोगी अपने जबड़े को खोल नहीं सकता। दोनों जबड़ों का जुड़ जाना। बतीसी बंद होना। दाँती लगना। (अ०) इन्तिबाकुल्फक्कैन, कुजाजुल्फक, तमद्दुदुल्फक। (अं०) लॉकजॉ (Lockjaw), ट्रिस्मस (Trismus)।

हनुनाश—(अ०) मौत अज्मिल्फक। (अं०) नेक्रोसिस ऑफ दि जॉ (Necrosis of the jaw)।

हनुमोक्ष—सुश्रुत के अनुसार एक दन्तरोग जिसमें उन-उन भावों को करके वायु से हनुसंधि बिगड़ जाती है, उसे हनुमोक्ष जानना चाहिये। यह व्याधि अर्दित लक्षणों से युक्त होता है। सु०। हनुसंधिबंध ढीला होना। हनुसंधिविश्लेष। (अ०) खल्उल्फक्किल्अस्फल। (अं०) डिस्लोकेशन ऑफ दि लोवर जॉ (Dislocation of the lowerjaw)। **वक्तव्य**—अर्दित और हनुमोक्ष के लक्षणों की समता पूर्ण नहीं है अपूर्ण है; जैसे वक्त्री भवति वक्त्रार्धं वाक्संगः, हनुग्रह इत्यादि। हनुमोक्ष वास्तव में दन्तरोग नहीं है; परन्तु 'दन्तस्थानसामीप्या-दन्तपीडाकरत्वाच्च' दन्तरोग में इसका समावेश किया गया है। च क और

अष्टाङ्गसंग्रह में वात रोगों में अनुग्रह और हनुस्रंस करके इसका समावेश किया गया है—हनुस्रंसः तेन कृच्छ्राच्चर्वणभाषणम् । (अष्टाङ्गसंग्रह) ।

हनुसंधिविक्षेप, हनुसन्धिविश्लेष—दे० 'हनुमोक्ष' ।

हप्पु—कर्णमूलिक ज्वर । कनपेड । मम्प्स ।

हरितातिसार—हरे दस्त । (अ०) इसहाल अख्जर । (अं०) ग्रीन डायरिया (Green Diarrhœa) ।

हरितार्बुद—(अ०) सल्आ अख्जर । (अं०) क्लोरोमा (Chloroma) ।

हरिद्रामेह—एक प्रकार का पित्तज प्रमेह जिसमें रोगी (हरिद्रामेही) जलन के साथ हल्दी के समान (पीतवर्ण) मूत्र त्याग करता है । सु० । हारिद्रमेह । च० । (अ०) बोल अह्मर दम्बी । (अं०) हीमोग्लोबिन्यूरिआ (Hæmoglobinuria), बाइल इन यूरिन (Bile in urine), कोल्यूरिआ (Choluria) ।

(हारिद्रमेह और रक्तमेह)

वक्तव्य—यह मूत्र में रक्त की उपस्थिति से उत्पन्न होते हैं । मूत्रमार्ग के रक्तपित्त में भी हारिद्र और रक्तवर्ण मूत्र निकलता है, परन्तु इसमें प्रमेह के अन्य लक्षण उपस्थित न होने से वह प्रमेह नहीं कहलाया जाता—हारिद्रवर्णं रुधिरं च मूत्रं विना प्रमेहस्य पूर्वरूपैः । यो मूत्रयेत्तं न वदेत् प्रमेहं रक्तस्य पित्तस्य हि स प्रकोपः । (चरक, प्रमेह चिकित्सित) । यह रक्त जब केवल रंगद्रव्य के रूप में उपस्थित होता है तब उस प्रमेह को 'हीमोग्लोबिन्यूरिया' कहते हैं । इसमें मूत्र में रक्त कण नहीं होते । दे० 'रक्तमेह' । **भेद**—पर्यायजन्य हरिद्रामेह=बारी से मूत्र का रक्तवर्ण हो जाना । बारी का हरिद्रामेह । (अ०) एह्मरारबोलजुन-वाएब । (अं०) पॅराक्सिझमल हीमोग्लोबिन्यूरिआ (Paroxysmal hæmoglobinuria) ।

हलीमक—पाण्डुरोगावस्थान्तर स्वरूप पाण्डु का वह भेद जिसमें रोगी (पाण्डुरोगी) का वर्ण हरित (सागों के पत्ते के से वर्ण वाला), नील या पीत वर्ण वाला हो जाता है । यह वातपित्तजन्य होता है । (उ०) सब्ज बीमारी, सब्ज बुहुस, खलोरोज, कमी खून । (अ०) फक्रुद्दम अख्जर, मर्ज अख्जर, नुक्सुद्दम । (अं०) क्लोरोसिस (Chlorosis) । ग्रीन सिक्नेस (Green Sickness) । दे० 'पाण्डु' ।

हस्तपादासाधारण वृद्धि—हाथ पाँव असाधारणतया बड़ा हो जाना। (अ०) कुब्रुल् अतराफ। (अं०) ॲक्रोमीगॅली (Acromegaly)।

हस्तपाददाह—हाथ, पैर में जलन होना। दे० 'पाददाह'।

हस्तमैथुन—हथलस। (फा०) मुश्तजनी। (अ०) जलक, इस्तमना-बिल्यद्, जलद उमैरा। (अं०) मॅस्टरबेशन (Masturbation), आनैनिझम् (Onanism)।

हस्तिमेह—एक प्रकार का वातज प्रमेह जिसमें रोगी (हस्तिमेही) मदोन्मत्त हाथी के समान सतत मूत्र त्याग करता है। सु०। हस्तिमेह में रोगी के मूत्र मार्ग से मूत्र वेगवर्जित अर्थात् बूँद-बूँद करके निरन्तर टपकता रहता है। (अ० सं०)। (अ०) सल्सुल् बोल, तसल्सलुल् बोल। (अं०) फॉल्स इन्कान्टिनन्स ऑफ यूरिन (False Incontinence of urine), इन्कान्टिनन्स फ्रॉम ओव्हरफ्लो (Incontinence from overflow)।

हाजकिन का रोग—हाजकिन व्याधि। (अ०) मर्ज हाजकिन। (अं०) हॉजकिन्स डिर्जीज (Hodgkin's disease)।

हारिद्रप्रमेह—पित्तज प्रमेह का एक भेद। दे० 'हरिद्रामेह'।

हिक्का—हिचकी, हिड़की। (अ०) फुवाक, जग्ता। (अं०) हिक्कप (Hiccup), हिक्कफ (Hiccough), सिगल्टस (Sigultus)। **भेद**—१ अन्नजा (सु०); २ यमला या यमिका (सु०), व्यपेता (चरक); ३ क्षुद्रा या क्षुद्रिका (सु०); ४ गम्भारी और ५ महती (महा)।

हिष्टीरिया—दे० 'अपतन्त्रक'।

हृच्छीघ्रता—शीघ्रहृदयता। (अ०) इख्तिलाजुल् कल्ब। (अं०) टैकिकार्डिआ (Tachycardia)।

हृच्छूल—हृदय का दर्द, हृत्पीडा। (फा०) दर्दे दिल। (अ०) वजउल् कल्ब, जबहा सद्रिया। (अं०) अन्जाइना पेक्टोरिस (Angina pectoris), अन्जाइना कॉर्डिस (Angina cordis)।

हृच्छोथ—हृदय की सूजन। दे० 'हृदयशोथ'।

हृत्कपाटीयरोग—हृदय के कपाटों (किवाड़ों) के रोग। (अ०) अमराज सिमामात कल्ब, अमराज सिमामी। (अं०) वॉल्व्युलर डिजीजेज ऑफ दि हार्ट (Valvular diseases of the heart)।

हृत्कार्यावरोध—दे० 'हृदयकार्यावरोध'।

हृत्कोष्ठविस्तृति—हृदय के कोष्ठों की विस्तृति। आयामिक हृद्यन्त्र।

हृत्कोष्ठीयावरण व्याधि—हृदयावरणिक व्याधि।

हृत्तालवैषम्य—हृदय की अनियमित गति (शीघ्र, क्षीणादि गतिविकार)। हृदय की गति की विषमता। (अ०) कज्फुल् कल्ब। (अं०) इर्रेग्युलॅरिटी (Irregularity)।

हृत्पेशीशोथ—हृदय के पेशीय भाग का शोथ। (अ०) वरम अजली कल्ब। (अं०) मायोकार्डाइटिस (Myocarditis)।

हृत्पेशीस्थौल्य—हृत्पेशी की स्थूलता। पृथुक हृद्यन्त्र व्याधि।

हृदय कार्यावरोध—हृदयक्रिया का अवरोध। हृदय की क्रिया बंद होना। हृदयावरोध। (अं०) इन्हिबिशन ऑफ दी हार्टस् ऐक्शन (Inhibition of the hearts action), हार्ट फेल्योर (Heart failure)।

हृदयकोष्ठगतशोथ—हृदय के कोष्ठों की सूजन। कोष्ठिक हृद्यन्त्ररोग।

हृदयगतिविकार—हृदय के अनियमित, शीघ्र और क्षीण गति आदि विकार।

हृदयदौर्बल्य—हृदय की गति का कमजोर और शिथिल हो जाना। दिल की कमजोरी। (अ०) जोफुल् कल्ब। (अं०) ब्रैडीकार्डिया (Bradycardia)।

हृदयदौर्बल्यजन्य स्तब्धता—हृद्भेद। दे० 'हृदयावसाद'।

हृदयद्रव—छाती में बेचैनी। हृदयस्पंदन (व्यथा)। हृद्द्रव। दिल का फड़कना। (अ०) खफकान, इख्तिलाज कल्ब। (अं०) पॅल्पिटेशन ऑफ दि हार्ट (Palpitation of the heart)।

हृदयपेशीशोथ—दे० 'हृत्पेशीशोथ'।

हृदयरोग—हृदय के रोग, हृदामय, हृद्रोग, हृदयविकार, हृद्यन्त्ररोग।

(अ०) अम्राजुल्कल्ब । (अं०) डिजीजेज ऑफ दि हार्ट (Diseases of the heart) । **भेद**—(आयुर्वेदीय) वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक और क्रिमिज । **अन्य भेद**—(आधुनिक) हृत्कोष्ठीयावरण (हृदयावरणिक) व्याधि, कौष्टिक हृद्यन्त्ररोग (हृदयकोष्ठगत सूजन), पृथुक हृद्यन्त्र व्याधि (हृत्पेशी की स्थूलता), आयामिक हृद्यन्त्र (हृदयकोष्ठों की विस्तृति), परिक्षय हृद्यन्त्र, भेदः—सूत्राख्य हृद्यन्त्र और विक्षेपिकाख्य हृद्यन्त्र ।

हृदयविकार—हृद्रोग ।

हृदयविदारण—हृदय का विदीर्ण होना । (अं०) रैप्चर ऑफ दि हार्ट (Rupture of the heart) ।

हृदयविद्रधि—(अं०) पुरुलंटपेरिकार्डाइटिस (Purulent pericarditis)

हृदयविस्तृति—हृदय का फैल जाना । हृदय का फैलकर प्रसृत हो जाना । (अ०) इत्तिसाउल् कल्ब, तवस्सोउल्कल्ब । (अं०) कार्डियक डायालेटेशन (Cardiae dilatation), डायालेटेशन ऑफ दि हार्ट (Dilatation of the heart) । **भेद**—१ क्रमिक (तद्रीजी), २ द्वितीयक वा गौण (सानवी), ३ अंगघातिक (इस्तिरखाई) और ४ तीव्र (हाद्) ।

हृदयवृद्धि—दिल (हृदय) का बड़ा हो जाना । हृदयातिवृद्धि । (अ०) अजमुल् कल्ब । (अं०) कार्डिअक हाइपरट्रोफी (Cardiac hypertrophy); हाइपरट्रोफी ऑफ दि हार्ट (Hypertrophy of the heart) । **भेद**—(१) **केन्द्रिक हृदयवृद्धि**—अज्मुल्कल्ब मर्कजी । (अं०) कॅन्सेंट्रिक हाइपरट्रोफी ऑफ दि हार्ट (Concentric hypertrophy of the heart) । (२) **साधारण हृदयवृद्धि**—अज्मुल्कल्ब सादा । (अं०) सिम्पल् हाइपरट्रोफी (Simple hypertrophy) । (३) **परिवृत हृदयवृद्धि**—अज्मुल्कल्ब मुहीती । (अ०) एक्सेंट्रिक हाइपरट्रोफी ऑफ दी हार्ट (Excentric hypertrophy of the heart) ।

हृदयव्यथा—हृदयस्पंदन । अ० हृ० । दे० 'हृदयस्पंदन' ।

हृदयशीघ्रता—हृदय की शीघ्र गति । हृदय की गति का तीव्र होना ।

शीघ्रहृदयता। हृच्छीघ्रता। (उ०) हौलदिल। (अ०) इस्तिलाजुल् कल्ब, सुर्अत कल्ब। (अं०) टेकीकार्डिया (Tachycardia)।

हृदयशूल—दे० 'हृच्छूल'।

हृदयशोथ—हृदय की सूजन। हृच्छोथ। (उ०) दिल का वरम। (अ०) वरमकल्ब। (अं०) कार्डाइटिस (Carditis), मायोकार्डाइटिस (Myocarditis)।

हृदयस्पंदन—दिल की धड़कन। दिल धड़कना। हृत्कंप। हृदयव्यथा (अ० हृ०)। (अ०) खफकान। (अं०) पॅल्पिटेशन ऑफ दि हार्ट (Palpitation of the heart)।

हृदयस्थ वाहिन्यवरोध—(अ०) सुद्दए दम्विया कलबी। (अं०) कार्डिअक थ्रॉम्बोसिस (Cardiac thrombosis)।

हृदयाद क्रिमि—आभ्यंतर क्रिमि भेद। दे० 'क्रिमि'।

हृदयाबाध—हृदयस्थानवरोध। (चरक)।

हृदयावरणशोथ—हृदयावरक झिल्ली की सूजन। (अ०) वरम गिलाफ कल्ब (अं०) पेरिकार्डाइटिस (Pericarditis)।

हृदयावरणिक व्याधि—हृत्कोष्ठीयावरण व्याधि। दे० 'हृदयरोग'।

हृदयावसाद—हृदय की गति का बंद हो जाना। रक्तपरिभ्रण का अकस्मात् रुक जाना। हृत्भेद। हृदयावरोध। (अ०) सुकूतुल् कल्ब। सुकूतुल् कुव्वत। (अं०) हार्ट फेल्योर (Heart failure)। **भेद**—(१) प्रत्यक्ष हृदयावसाद (हृद्भेद)। (अं०) डायरेक्ट हार्ट फेल्योर (Direct heart failure)। (२) *प्रत्यावर्तनजन्य (प्रत्यावर्तनजनित क्रियाजन्य)* हृदयावसाद (हृद्भेद)। (अं०) रिफ्लेक्स इन्हिबिशन ऑफ दि हार्ट (Reflex Inhibition of the heart)।

हृदयोत्क्लेश, हृदयोद्वेष्टन (सु०)—हृदय का उत्क्लेश (पीड़ा)। कलेजा का जलना। (उ०) दर्द दिल। (अ०) वजउल् फुवाद। (अं०) कार्डिअल्जिया (Cardialgia)। दे० 'उत्क्लेश'।

हृदामय—हृद्रोग। दे० 'हृदयरोग'।

हृद्ग्रह—हृदय जकड़ा-सा रहना। (अं०) अनजाइनल अटैक्स (Anginal attacks)।

हृद्द्रव—दे० 'हृदयद्रव'।

हृद्भेद—हृदय का एका-एक जवाब देना। हृदय दौर्बल्यजन्य स्तब्धता। दे० 'हृदयावसाद'।

हृद्यन्त्ररोग—दे० 'हृदयरोग'।

हृद्रोग—(१) दे० 'हृदयरोग'। (२) दे० 'हलीमक'।

हृद्विकारजन्य जलोदर—हृदय विकार (हृद्रोग) से उत्पन्न हुआ जलोदर रोग।

हल्लास—मिचली। दे० 'उत्क्लेश'।

ह्रस्वजाड्य—नेत्रदृष्टिमागगत रोग जिसमें रोगी सभी रूपों को छोटा देखता है। यह असाध्य है।

रोगनामावलीकोश समाप्त हुआ।

वैद्यकीय मान-तौल ।

इसमें आयुर्वेदीय, यूनानी (तथा अरबी, फारसी) और पाश्चात्य वैद्यकीय (डॉक्टरी-अँगरेजी) आदि के लगभग सभी मान-तौल हिन्दी-वर्ण क्रमानुसार नागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा में लिखे हैं ।

—— o ——

(अ)

अंगुल—[सं०] (लम्बाई का मान) ८ यवों को मध्य भाग में सूई में पिरोने से जो लम्बाई होती है वह (लगभग ¾ इञ्च) ।

अण्डिका—[सं०] अर्थात् निष्पाव (सेम का बीज) = २ रक्तिका । सु०, शाङ्ग० ।

अकसूनाफिन—[यू०] लगभग ७ तोले ।

अक्ष—[अ०] ४ टङ्क (=१६ माशा) ।

अखलात—[सं०] एक (द्रवयमान) मान जो तेल (जैतून) से ९ रतल, मद्य से १० रतल और मधु से १३॥ रतल होता है ।

अतरतूस, अतरानूस—[अ०] १॥ ओकिया (=४ तोला ४ माशा) ।

अतालीतून—[यू०] ३३ तोला वाले रतल से १२५ रतल ।

अबूनस, अबूस—[अ०] मिस्कालका छठवाँ भाग अर्थात् ६ रत्ती ।

अबोलू—[अ०] ३ कीरात (=६ यव) अर्थात् ३ रत्ती ।

अयात अस्ल—[अ०] २॥ रतल या २ मन तिब्बी ।

अयात दुह्न—[अ०] तिब्बी मन से १॥ मन ।

अरत्नि—[सं०] (लम्बाई का मान) लगभग २२ अंगुल (=१६॥ इञ्च) ।

अवाकी—[अ०, ओकिया का बहुव०] यूनानी वैद्यों के अनुसार २४ ओकिया ।

(आ)

आढक--[सं०] ४ प्रस्थ (=२५६ तोला)। सु०, शार्ङ्ग०।

आना--[१] भारतीय रुपये का १६ वाँ हिस्सा अर्थात् ५ रत्ती। सिक्के का आना इससे १ चावल अधिक होता है। (करावादीन कबीर)।

आसार--१ सेर। कभी इसको सार लिखते हैं।

(इ)

इव्रीक--[अ०] लगभग २॥ सेर (=२ मन तिब्बी या ५ रतल)।

इस्तार--[अ०, बहुव० असातिर] ४॥ मिस्काल (=१ तो० ८ मा० २ रत्ती), बुरहानकातेअ में ६॥ दिरम (=लगभग १ तो० ९ मा०) और **शैख के** मत से ६॥ दिरम (=१ तो० १०॥। माशा) के बराबर होता है।

(उ)

उरुज़ः--[अ०=चावल] साधारण चावल, २ राई या ४ राई (खर्दल)। बिरञ्ज (फा०)। व्रीहि (सं०)।

उस्कुरुज्जा--[अ०] (द्रुवयमान) १२ तोला ८ माशा। सकुरंजा, सकूरः, सकुरं: (अ०)।

उस्कुरुज्जा कबीरः--[अ०] लगभग २४ तोला, मतांतर से लगभग १९ तोला। सकुरंजा कबीरः।

उस्कुरुज्जा सगीरः--[अ०] लगभग ८ तोला ३ माशा। सकुरंजा सगीरः।

(औ)

औंस, आउंस--[अं० Ounce] ४३७॥ ग्रेन (=२ तोला ८ माशा) या १ ओकिया या १ औन।

औकिया (य्यः), ओकिया--[अ०, बहुव० अवकी] सुवर्ण मिस्काल से ७ या ७॥ मिस्काल (=३३॥। माशा), दिरम से लगभग १० दिरम (=३५ मा०), आधुनिक मान के अनुसार २ तोला ३ माशा ६ रत्ती और आउंस से लगभग १ आउंस (=२॥ तोला)। वकिया। अवकिय्याः।

औन, अवन--[अ०] औकिया अर्थात् ७ मिस्काल (लगभग २॥। तो०)। स्यात् अंग्रेजी आउंस या औंस (Ounce) इसी से व्युत्पन्न है।

(क)

कँवा—[बिहारी] ५ छंटाक ।

कन्तार—[अ०] १२० रतल लगभग ५२ सेर ।

कंस—[सं०] २ आढक (८ प्रस्थ) अर्थात् ५१२ तोला । सु०, शार्ङ्ग०।

कज़्मा—[अ०] चौथाई दिरमसे चौथाई मिस्काल तक अर्थात् ७ से ९ रत्ती तक । कर्मा ।

कतीरा—[अ० | १२ अणु (जर्रा) ।

कफीज़—[अ०] बड़े मन से २५ मन ।

कफे दस्त—[फा० हथेली या मुट्ठी भर] १ तोला से २ तोला तक ।

कफ्फ—[फा० एक मुट्ठी] लगभग २। तोला । कफ । कब्जा ।

करस्ना—[अ०=मटर] चौथाई दिरम से चौथाई मिस्काल तक अर्थात् ७ से ९ रत्ती तक ।

कर्ष—[सं०] २ द्रङ्क्षण (=१ रुपया भर, १ तोला) । सु०, शार्ङ्ग० । सुश्रुत का मतांतर से लिखा हुआ १ कर्ष=२॥ धरण । (१ धरण=१९ निष्पाव अर्थात् सेम के बीज) ।

कल्ला—[अ०] ६ दिरम ।

कवानूस—[यू०] ३ औकिया, शैख के मत से १॥ औकिया ।

कसूनानी—[यू०] ८ कीरात अर्थात् २ माशा ।

किलोग्राम—[फ्रें०] १ हजार ग्राम ।

किस्त, कुस्त—[अ०] बगदादी रतल से ४ रतल (=१३५ तोला); मतांतर से २० औकिया ।

किस्त अंताकी (अंतालीकी)—[अ०] १८ औकिया ।

किस्त कुतरी (फितरी)—[अ०] २४ औकिया ।

किस्त रूमी—[अ०] लगभग ६८ तोला । मतांतर से २ मन तिब्बी और ½ साअ ।

किस्त शहद—[अ०] १ रतल या १॥ रतल, या २७ औकिया या २॥ रतल ।

किस्त रोगन—[अ०] १८ औकिया ।

किस्त शराब—[अ०] ८ रतल, मतान्तर से २० औंकिया।

कीरात—[अ०, बहुव० करातीत] २ तस्सूज (चार जौ = अर्ध दांग = ४ ग्रेन = २ सुर्ख) अर्थात् २ रत्ती। किरात। कैरट Carat (अं०)। **वक्तव्य**—कीरात अरबी शब्द से ही अँगरेजी 'कैरट' व्युत्पन्न है। **कीरात, दानक** और **तौह** संज्ञाओं में यह अन्तर है—कीरात अर्ध दानक (दांग) है। एक दांग २ कीरात के बराबर, एक कीरात २ तौह, और १ तौह २ हब्बा के बराबर होता है। हब्बा गेहूँ के दाने के प्रमाण का एक मान है।

कुड़व—[सं०] २ प्रसृति (४ पल) अर्थात् १६ तोला। सु०। शार्ङ्ग०।

कुर—[अ०] एक नाप जो १२ वस्क (१ वस्क=६० साअ) के बराबर होता है। मतान्तर से १२० कफीज।

कूब—[अ०=आबखोरा, गिलास] ३ रतल (=१०१ तोला ३ माशा) या ३ किस्त।

कूर—[अ०=मिट्टी की मठ्ठी, मक्खी का छत्ता। बहुव० अकार, अकोर, कीरान] ६ किस्त।

कैल—[अ०=तोलन, मापन] ६६ मन मतांतर से ३६ मन तिब्बी।

कैलजा, कीलजा—[अ०; बहुव० कियालजः, कियालीज] $\frac{५}{६}$ मन, मतांतर से ४ रतल।

कैला—[अ०] कुछ अधिक ३०० दिरम।

कोतील—[अ०] ७२ मिस्क्राल।

कोतूली—[अ०] ७ मिस्काल अर्थात् ३॥ तोला।

कोल—[सं०=बेर] २ टङ्क या ३ कैलजा।

कोलून—[अ०] तेल से ९ औंकिया, मद्य से २ औंकिया और मधु से १८॥ औंकिया।

क्वार्ट—[अं०] एक गैलन का चौथाई मान (१ सेर २६ तोला)।

क्वार्टर—[अं०] २८ पौंड।

(ख)

खज्मा—[अ०] एक चुटकी या हथेली भर या १८ माशे।

खर्दला, खर्दल बरी—[अ० खर्दल=राई] $\frac{१}{२}$ चावल (=२ खशखश) मतांतर से राई ($\frac{१}{२}$ जौ)।

खर्नूब—[अ०] १ कीरात।

खर्नूबशामी, खर्नूबः शामिया—[अ०] १ कीरात (=२ रत्ती)।

खारक—[सं०] ४ द्रोणी।

खारी—[सं०] ४ वाह (=१६३८४ तोला)। सु०; शार्ङ्ग०।

(ग)

गाज (जा) बेगी—[ईरान] ८ माशा।

गेलन—[अं०] (द्रवयमान) ८ पाइण्ट (=५ सेर २४ तोला)।

गोणी—[सं०] वाह।

गौर सर्षप—[सं०=पीली सरसों] २ रक्त सर्षप। सु०; शार्ङ्ग०।

ग्राम—[फ्रें०] लगभग १५॥ ग्रेन या कमहा। यह चरक के लगभग १ माशे के बराबर याने ½ रत्ती कम १ माशा=१५॥ ग्रेन या कमहा होता है।

ग्रेन—[अं०] १ गेहूँ (कमहा) भर या लगभग १ यव या माष के बराबर (=लगभग ½ रत्ती) होता है।

(घ)

घुंघची—[हिं०] एक सुर्ख (=२ यव) = १ रत्ती।

(च)

चना—[हिं०] लगभग १ माशा। पर चने प्रायः लगभग ४ रत्ती के होते हैं। अरबी में इसे 'नखुद' कहते हैं।

चमचा—[फा०] ४॥ माशे का द्रव पदार्थ का यूनानी मान।

(छ)

छटांक—[हिं०] ५ तोला।

(ज)

जर्रः—[अ०=अणु, कण; बहुव० अर्रात] बाजरा से लेकर छोटी मसूर तक।

जौ—[सं० यव] ४ चावल या ८ सरसों या २४ राई।

जौजः जवजः—[अ०] ६ या ७ दिरम या १४ सामुनः या १ बुन्दुक़ः

या ९ दिरह्मी या ४ मिस्काल (=१।। तोला) या १ मिस्काल (४।। माशा= ३६ रत्ती)।

जौजः नब्तिया--[अ०] ४।। माशा।

जौजः मल्किया--[अ०] ६ दिरम (२१ माशा) या २। तोला।

जौरक, जौसक (का)--[अ०] ३ रतल (=१।। सेर)।

(ट)

टङ्क--[सं०] १ शाण, (=४ सुवर्णमाष; ४ या ४।। माशा)।

टन--[अं०] २० हंड्रवेट।

टम्लरफुल--[अं०] जल का गिलास (४ छटांक)।

टीकपफुल--[अं०] चाय की प्याली। (२ छटांक)।

टीस्पूनफुल--[अं०] चाय का चमचा (४ माशा)।

टेबलस्पूनफुल--[अं०] बड़ा चमचा (१। तोला)।

(ड)

डेजर्टस्पूनफुले--[अं०] साधारण चमचा अर्थात् ८ माशा।

डेसिग्राम--[फ्रें०] ग्राम का दशांश।

डेसमीटर--[फ्रें०] मीटर का दशांश।

ड्राम--[अं०] ६० ग्रेन (लगभग ४ माशा) दिरहम।

(त)

तण्डुल--[सं० = लाल चावल] ४ गोर सर्षप। सु०, शार्ङ्ग०।

तस्सूज--[अ०, बहुव० तसासीज] अर्ध कीरात जो सामान्य जौ से दो जौ प्रमाण होता है (=१ सुर्ख = १ रत्ती)।

तुर्मुसः--[अ०=बाकला शामी] २ कीरात (=८ जौ = ४ रत्ती)।

तुला--[सं०] १०० पल (= ४००० तोला)। सु०, शार्ङ्ग०।

तोला--[हिं०] १२ माशा या १८० ग्रेन। तोल, तोलः (अ०)।

(द)

दमड़ी--[हिं०] २।। माशा।

दाँग--[फा०] साधारण ८ जौ या ३।। रत्ती, मतांतर से ६ रत्ती (=६ सुर्ख या १ आना)। दानिक।

दानिक—[अ०, फारसी दांग । बहुव० दवानीक] दे० 'दांग' ।

दाम—दामेखाम [अ०] १४ माशा ।

दाम पोख्ता—[अ०] २० या २१ माशा अर्थात् १।।। तोला ।

दिरम—[फा०] ३।। माशा (२८ रत्ती), मतांतर से ४ माशा । दिर्हम (अ०) । ड्राम (Drachm) (अं०) । **वक्तव्य**—अरबी संज्ञा दिर्हम और अंग्रेजी ड्राम दोनों यूनानी ड्राख्मी (Drakhme) से व्युत्पन्न हैं । ड्राम तोल में १ रत्ती कम चार माशे होता है; परन्तु अधुना दिर्हम की तोल ३।। माशे सर्ववादिसम्मत हो चुकी है ।

दिर्खम, दिर्खमी—[अ०] ३।। माशा (२८ रत्ती) । मतांतर से ४।। मा० या २ माशा २ रत्ती । दिर्हम (अ०) । ड्राम (अं०) । **वक्तव्य**—दिर्खम या दिर्खमी यूनानी ड्राख्मी (Drakhme) से व्युत्पन्न है और दिर्हम इसी दिर्खम का अरबी रूपांतर है ।

दीनार—[फा०] २० कीरात (=४० रत्ती) ।

दूगाजी—[ईरान] १६ माशा ।

द्रोण—[सं०] ४ आढक (=१०२४ तोला) ।

दौरक—[अ०] २७२ तोला या मतान्तर से १३६ तोला ।

द्रङ्क्षण—[सं०] अर्थात् चाँदी की अठन्नी (=२ शाण) । सु०; शार्ङ्ग० ।

(ध)

धरण—[सं०] १९ निष्पाव (सेम के बीज) । सु० ।

धान्यमाष—[सं०] २ तण्डुल या उड़द या यव (जौ) । सु०; शार्ङ्ग० ।

(न)

नकीर—[अ०] ८ कीरात अर्थात् २ माशा (अथवा ८ रत्ती) ।

नस्तून कबीर—[अ०] ३ औकिया अर्थात् लगभग ८। तोला ।

नस्तून सगीर—[अ०] २। तोला ।

नियातल कबीर—[अ०] २ तोला या २।। तोला या ३।। तोला ।

वात—[अ०] ३ मिस्काल या ५ दिरम, मतांतर से २ दांग या ½ दिरमा

(प)

पंसेरी—[हिं०] ५ सेर ।

पल--[सं०] २ शुक्ति=४ तोला। सु०; शार्ङ्ग० ।

पाइंट्--[अं०] २० फ्लुइड् आउंस (लगभग ५३ तोला)।

पाणिशुक्ति--[स०] (द्रवपदार्थ) ६० बिंदु।

पाव--[हिं०] ४ छटाँक।

पियाला, प्याला--[हिं०] २० तोला।

पियाली, प्याली--[हिं०] १२॥ तोला।

पैसा--[हिं०] वर्तमान अंग्रेजी=६ माशा।

पैसा गोरखपुरी या मंसूरी--[हिं०] १ तोला अर्थात् १२ माशा।

पौंड, पाउंड -[अं०] लगभग ½ सेर या १ रतल (=४२ तो० ८ मा०) =१६ आउंस या ७००० ग्रेन।

प्रसृति--[सं०] २ पल अर्थात् ८ तोला। सु०; शार्ङ्ग० ।

प्रस्थ--[सं०] २ मानिका (४ कुडव) अर्थात् ६४ तोला। सु०; शार्ङ्ग० ।

(फ)

फरक, फर्क--[अ०] लगभग ७ सेर या ८ सेर।

फल--[सं० 'पल' से अरबीकृत] ५ मिस्काल, मतांतर से १२ मिस्काल।

फलंजार--[अ०] ५ या ७ माशा।

फल्स--[अ०] १ तोला ६ माशा।

फूमायूस--[यू०] ३ माशा।

फ्लुइड आउंस--[अं०] ८ फ्लुइड् ड्राम (=२ तोला ८ माशा)। औंकिया सय्याला, औंकिया यकतोला (अ०)।

फ्लुइड् ड्राम--[अं०] ६० मिनिम (बूँद)। या ४ माशा।

फ्लुइड् पौंड--[अं०] १६ फ्लुइड् औंस।

(ब)

बल--[सं० पल] ४ अक्ष (५ तोला ४ माशा) (खजाइनुल् अदविया)।

बहलूली--[फा०] ९ माशा।

बाकिल्लाए इ कंदरानी--[अ०] ९ कीरात अर्थात् २ माशा २ रत्ती। इस्कंदरिया बाकला। बाकिल्लाऽ(-त) इस्कंदरियः।

बाकिल्लाए मिस्री--[अ०] १२ कीरात अर्थात् ३ माशा बाकिल्लाऽ(-त) मिस्रिय्यः।

बाकिल्लाए यूनानी—[अ०] ६ कीरात अर्थात् १॥ माशा। बाक़िल्ला। बाकिल्लाऽ(-त) यूनानिट्यः।

बिन्दु—[सं०] प्रदेशिनी अंगुली के दो पर्वों को द्रव पदार्थों में डुबोकर ऊँचे उठाने से गिरी हुई एक बूँद (टोपा-कतरा)। मिनिम (अं०)।

बिरंज—[फा० चावल] एक चावल या ४ राई (खर्दल) के बराबर।

बुंदुकः—[अ०, बहुव० बुनादक] १ दिरम (=३॥ माशा या १ मिस्काल (=४॥ माशा)।

(भ)

भार—[सं०] २००० पल (८००० तोला)। सु०, शाङ्ग०।

(म)

मक्कूक—[अ०] अरबी मन से ७॥ मन या ३ कैलजा या १॥ साअ।

मटर—[हिं०] लगभग ६-७ रत्ती।

मन—[अ०। बहुव० अम्नाऽ] ४० तोला ८ माशा, मतांतर से २ रतल बगदादी या लगभग ६८ तोला। **वक्तव्य**—भारतवर्ष में मन बहुधा ४० सेर का होता है। तिब्बी मन साधारणत: २ रतल का माना जाता है।

मनअंताकी (अतालीकी)—[अ०] १६ ओकिया (लगभग ४६ तोला)।

मन स्कंदरानी—[अ०] ३० ओकिया अर्थात् लगभग ८८ तोले।

मन आलमगीरी—[अ०] ४० सेर।

मन तबरेजी—[अ०] ६०० मिस्काल (=२०० या २२५ तोला)।

मन तिब्बी—[अ०] २ रतल (तिब्बी या बगदादी) अर्थात् लगभग ६७॥ या ६८ तोला मतांतर से ४० इस्तार अर्थात् लगभग ६४॥ तोला।

मन बुजुर्ग—[अ०] ८ मक्कूक अर्थात् लगभग २५ सेर।

मन मिस्री—[अ०] मन अंताकी=१६ ओकिया=४५ या ४६ तोला।

मन मुल्की—[अ०] २०६ दिरम। मतांतर से २६० दिर्हम या लगभग ७६ तोला।

मन रूमी—[अ०] २० ओकिया अर्थात् लगभग ५६ या ५८ तोला।

मन शाही—[अ०] १२०० मिस्काल (=४०० या ४३५ तोला)।

मन हिन्दी--[अ०] ४० सेर (पक्के ४० और कच्चे २० सेर) प्रचलित है। मात्र मनेहिंदी से पोख्ता मन अभिप्रेत होता है।

मना--[अ०, बहुव० अमना] दो रतल या लगभग ६८ तोला।

मस्तरून कबीर--[अ०] ३ औकिया अर्थात् लगभग ८।।। तोला।

मस्तरून सगीर--[अ०] लगभग २ तोला।

महर, मुहर--[अ०] अशरफी का मान भारतवर्ष में ९ माशा ६ रत्ती और खोटी का मान ९ माशा ४ रत्ती या मतांतर से ५ रत्ती होता है। मोहर।

माढक--[सं० ?] ४ सेर २१ तोला।

मातल--[अ०] २ औकिया अर्थात् लगभग ३।। तोला।

मानिका--[सं०] शराव (२ कुडव) अर्थात् ३२ तोला।

माशा--[हि० । सं० माषः। अरबी मासा, बहुव० मासात, मासजात] ८ रत्ती (८ सुर्ख=८ घुँघची या गुजा)।

मिलअका--[अ०=चमस, चमचा] शहद और माजूनका १ मेलअका ४ मिस्काल अर्थात् १।। तोला का और शुष्क औषधि का १ मिस्काल (=४।। या ५ माशा) से २ मिस्काल (=९ माशा) तक होता है।

मिनिम--[अं० Minim] १ बूँद, कतरा, टोप। दे० 'बिंदु'।

मिलिग्राम--[फ्रें०] १ ग्राम का सहस्रांश।

मिलिमिटर--[अं०] मिटर का सहस्रांश।

मिसकाल--[अ०] ४।। माशा (=३६ रत्ती)। जवक्षः, जोजः। मिस्काल तिब्बी।

मिसकाल सीरफी--[ईरान] ४ माशा।

मुद--[अ०] अरबी मन से १ मन अर्थात् लगभग ४१ तोला, मतांतर से १$\frac{1}{3}$ रतल अर्थात् लगभग ४५ तोला।

मुद तिब्बी--[अ०] २ रतल बगदादी या २। रतल।

मुद नबी, मुद शरई--[अ०] साअका चतुर्थांश या २७ तोला ६ माशा।

(य)

यक चहार यक--[फा०] अरबी मन का चतुर्थांश अर्थात् १० तोला २ माशा।

(र)

रक्त सर्षप--[सं०] लाल सरसों। ३ राजिका (राई)। सु०। शार्ङ्ग०।

रक्तिका--[सं०=रत्ती] गुंजा अर्थात् २ धान्यमाष या यव। सु०, शार्ङ्ग०।

रत्ती--[हिं०। सं० रक्तिका] साधारण २ जो (२ शईरा) या आठ चावल। तस्सूज। किसी-किसी ने इसे 'सुर्ख' और 'हब्बा' का पर्याय लिखा है। दे० 'रक्तिका'।

रतल—[अ०] बगदादी रतल (=९० मिस्काल अर्थात् लगभग ३३ तोला ९ माशा) इसे 'रतल तिब्बी' कहते हैं।

रतल तिब्बी—[अ०] लगभग ३४ तोले। दिल्ली में अकबरशाही सेर से अर्ध सेर। शैख के मत से १२ ओकिया अर्थात् लगभग ३३ तोले, इस्तार से २० इस्तार।

राई—[हिं०] खर्दल (राजिका) का पर्याय है। सरसों के दाने से $\frac{1}{3}$ सरसों के बराबर और चावल से $\frac{1}{2}$ चावल के बराबर होती है।

रुपया—[हिं०] १ तोला या कुछ कम होता है। अँग्रेजी रुपया ११ माशा ४ रत्ती, कहीं १० माशा, कहीं १०॥ माशा और कहीं ११ माशा अर्थात् १ तोला या कुछ कम होता है।

(व)

वाइन ग्लासफुल—[अं०] मद्यपान का गिलास (=१ छटांक)।

वाह—[सं०] गोणी अर्थात् २ शूर्प या ४ आढक अर्थात् ४०९६ तोला। सु०; शार्ङ्ग०।

वितस्ति—[सं०] (पाय्यमान-लम्बाई का मान) बिलांद, बित्ता, बालिश्त (=१२ अंगुल लगभग ९ इंच)।

व्याम—[सं०] (लंबाई का मान) ४ हाथ (=६ फीट)।

(श)

शईरः—[अ०=जौ] भारतवर्ष में जौ की तौल चार चावल (४ उरुज:) के बराबर मानी जाती है जो प्रसिद्ध है। यह १ हब्बा (अ०) या १ गेहूँ या १ ग्रेन (अं०) के बराबर होता है।

शराब--[सं०] दे० 'मानिका'।

शाण--[सं०] (चाँदी की चवन्नी) ४ सुवर्ण माष । सु०; शार्ङ्ग० । मतांतर से ३ सुवर्ण माष (२४ रत्ती) । च० । (द्रव पदार्थ का मान) = ८ बिंदु (बूँद) ।

शारक--छटाँक ।

शुक्ति--[सं०] २ कर्ष अर्थात् २ तोला । सु०; शार्ङ्ग० । (द्रव पदार्थ का) ३२ बिंदु ।

शूर्प--[सं०] २ द्रोण अर्थात् २०४८ तोला । सु० । शार्ङ्ग० ।

(स)

सकुर्रजा--[अ०] दे० 'उस्कुरुज्जा' ।

सकूरा--[फा०] सकुर्रः । दे० 'उस्कुरुज्जा' ।

सद्फः कबीरः--[अ०] (१) बड़ी सीप भर का माप जो बहुधा १०-१२ माशा होता है । (२) १४ सामूना । (३) ६ दिरम ।

सद्फः सगीरः--[अ०] (१) क्षुद्र शुक्ति भर का माप जो प्रायः ५-६ माशा होता है । (२) ६ या ७ सामूना । (३) ३॥ दिरम ।

साअ--[अ०] मदीना तैबा में ४ मुद् और कूफा में ८ रतल अर्थात् लगभग ४ सेर ।

सामून, सामूनः, सामूना--[अ०] ३ किरात अर्थात् ६ रत्ती; मतांतर से तिब्बी मन से २॥ मन ।

सार--[सं०] इससे 'आसार' अर्थात् 'सेर' अभिप्रेत होता है । दे० 'आसार' ।

सुर्ख--[फा०] १ सुर्ख दो साधारण जौ के बराबर (२ शईरः) होता है । जौ चार चावल का होता है । रत्ती, गुंजा (हिं०); तस्सूज (अ०) ।

सुवर्णमाष--[सं०] माशा अर्थात् ४ अंडिका (सेम के बीज--८ रत्ती) । चरक ।

सुवर्णमाषक--[सं०] माशा अर्थात् ६ रक्तिका । सु०; शार्ङ्ग० ।

सेन्टिग्राम--[फ्रें०] ग्राम का शतांश ।

सेन्टिमीटर--[फ्रें०] १ घन शतांशमीटर (१ सी० सी०) लगभग १ माशा जल आता है ।

सेर--[अ०] दिल्ली आदि के बाजारों में प्रचलित सेर ८० तोले का होता है । अंग्रेजी सेर जिसे नंबरी कहते हैं, कलदार चेहराशाही रुपये से ८० रुपया

भर अर्थात् ७६ तोला ४ माशा=९२० माशा=२॥ पौंड=३० आउंस=४ पाव (१६ छटांक) होता है ।

सेर अकबरी, सेर अकबरशाही--[अ०] इसे 'सेर शाही' और साधारणतया 'सरसाही' भी कहते हैं। यह ८४ तोला या ८० दाम पोख्ता अर्थात् १४० तोले और मतांतर से ७२ दाम पोख्ता अर्थात् १३६ तोले होता है ।

सेर आलमगीरी--[अ०] ४४ दाम पोख्ता अर्थात् ७७ तोले और मतांतर से ६४ तोले (= प्रस्थ) होता है ।

सेर तिब्बी--[अ० [दे० 'सेरशाही' ।

सेर फर्रुखशाही, सेर फर्रुखसीरी--[अ०] ४८ दाम पक्के अर्थात् ८४ तोले ।

सेर लखनऊ--[अ०] पक्के ८८ तोला ।

सेर शाहजहाँनी--[अ०] ४० दाम पोख्ता अर्थात् ७७ तोला ।

सेर शाही--[अ०] एक दाम पोख्ता अर्थात् २१ माशा ।

सौनूफि (फु) स--[यू०] २॥ किस्त या २७० दिरम अर्थात् ७८ तोला ९ माशा ।

स्क्रूपल--[अं०] १ माशा १॥ रत्ती ।

स्टोन--[अं०] १४ पौंड ।

(ह)

हंडरवेट--[अं०] ४ क्वार्टर ।

हज्मा--[अ०] खज्मा ।

हब्बा--[अ०] २ जौ अर्थात् १ रत्ती । दे० 'रत्ती' ।

हस्त--[सं०] (पाय्यमान–लम्बाई का मान) हाथ (१८ इञ्च)=२ वितस्ति (२४ अंगुल) ।

हिम्मसा--[अ० चना] $\frac{1}{8}$ या $\frac{1}{6}$ दिरम अर्थात् ७ रत्ती से ९ रत्ती तक या १ माशा ।

हूतल--[अ०] ३ ओकिया भर (=लगभग ८। तोला) । (अक्सीर आजम) ।

वक्तव्य—प्राचीन-अर्वाचीन वैद्यकीय मान-तौलों को बोधगम्य एवं व्यवहारोपयोगी बनाने के लिए ऊपर उनका साम्प्रत प्रचलित मान के साथ तुलनात्मक

अर्थात् रत्ती, माशा और तोला आदि में वर्णन कर दिया गया है। आधुनिक मान यह है—

४ राई	१ चावल
३ वा ४ चावल	१ रत्ती
८ रत्ती	१ माशा
४॥ माशा	१ मिस्काल (अस्तु आधा माशा दिरम का सातवाँ और मिस्काल का नवाँ भाग है।
१२ माशा	तोला (=१८० ग्रेन)
१४ माशा	दाम आलमगीरी
२१ माशा	१ दाम पोस्ता
४ तोला १० माशा ६ रत्ती	१ छटाँक (अँग्रेजी अर्थात् नम्बरी)
२ छटाँक	आधा पाव
२ अध पौवे	१ पाव
२ पाव	आधा सेर
२ अधसेरों (४ पाव या १६ छ०)	१ सेर अँग्रेजी
२॥ सेर	१ पंसेरी
५ सेर	१ धड़ी (पंसेरी अंग्रेजी)
४ धड़ी	१ मन खाम (कच्चा)
२ कच्चा (खाम) मन	१ पोस्ता मन (४० सेर)
२॥ पोस्ता मन	१ पल्ला

वैद्यकीय मान-तौल समाप्त हुआ।

सचित्र

वनौषधिदर्पणः

राजवैद्यश्रीविरजाचरणगुप्त काव्यतीर्थकविभूषणकृतः

Therapeutics, Actions and Uses in English

हिन्दी अनुवादक एवं सम्पादक — **वैद्य इन्द्रदेव त्रिपाठी**

प्रस्तुत ग्रन्थ वनौषधियों के पारिभाषिक नामों के साथ-साथ वनस्पति विज्ञान में परिचित वानस्पतिक नाम तथा विभिन्न भौगलिक क्षेत्र में जाने जानेवाले क्षेत्रीय नामों का पूर्ण विवरण प्रदान करता है जिससे पहचान करने में अत्यन्त सरल कार्य हो गया है। वनौषधियों के वर्णन के साथ उनके गुण-दोष का विवेचन विस्तृत रूप में किया गया है। इतना ही नहीं बल्कि उनका प्रयोग विभिन्न रोगों में किस प्रकार से किया जाता है, कितनी मात्रा में रोगी को दिया जाय, वैद्यकशास्त्र में किस प्रकार से किया जाता है, इसका सम्पूर्ण सांगोपांग विवेचन किया गया है। हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सरल भाषा में की गयी है, जिससे सामान्य व्यक्ति भी सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सकें। आंग्लभाषा में मेटेरिया मेडिका में आये हुए वनौषधि-वर्णन का प्रस्तुत ग्रन्थ में उद्धरण प्राप्त है जैसे—Costituents, Physiological action, Therapeutics, Actions and Uses in English आदि। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थमें वर्णित वनौषधियों के चित्र दे दिये गये हैं जिससे कि सरलता से पहचान किया जा सके। ग्रन्थ के प्रारम्भ में विस्तृत विषयसूची के साथ-साथ निघण्टु व्यवहृत पारिभाषिक शब्दों के अर्थ, भैषज्यकल्पना विषयक पारिभाषिक शब्दों के अर्थ, द्रव्यविज्ञानीय अध्याय तथा रस-वीर्य-विपाक-प्रभाव विज्ञानीय अध्याय दिये गये हैं जिससे आयुर्वेद सम्बन्धी विस्तृत ज्ञान प्राप्त हो सके। इस प्रकार से प्रस्तुत संस्करण सांगोपांगयुक्त सम्पूर्ण ग्रन्थ है।

मूल्य : ४५०.००

Also can be had from : **Chowkhamba Krishna**

designed by Shreyashi GRAPHICS, mo. 9839814784